हिंदी उपन्यासों में ट्रांसजेंडर विमर्श : एक अध्ययन

A STUDY OF TRANSGENDER DISCOURSE IN HINDI NOVELS

शोध प्रबंध

(Thesis)

कालिकट विश्वविद्यालय की डॉक्टर ऑफ फिलोसफ़ी उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध

This is submitted to the University of Calicut for the Degree of

DOCTOR OF PHILOSOPHY IN HINDI

निर्देशक :

प्रो. (डॉ.) प्रमोद कोवप्रत
प्रोफेसर
हिंदी विभाग
कालिकट विश्वविद्यालय

प्रस्तुतकर्ता :

बिजी नायर सी.वी
शोध छात्रा
हिंदी विभाग
कालिकट विश्वविद्यालय

हिंदी विभाग

कालिकट विश्वविद्यालय

2024

D E C L A R A T I O N

I, BIJI NAIR C.V, do hereby declare that this thesis entitled **'A STUDY OF TRANSGENDER DISCOURSE IN HINDI NOVELS'** is a record of bonafide research work carried out by me and this has not previously formed the basis for the award of any Degree, Diploma, Associateship or other similar Title or Recognition. Further, declare that the thesis is free from AI generated contents. This research work was supervised by Dr. PRAMOD KOVVAPRATH, Professor, Department of Hindi, University of Calicut.

BNcv

C U Campus

Date :

Biji Nair C.V
Research Scholar
Department of Hindi
University of Calicut

DEPARTMENT OF HINDI

UNIVERSITY OF CALICUT

DH/HoD/2025 **Dated: 27.06.2025**

CERTIFICATE

This is to certify that there is no corrections & modifications suggested by the adjudicators in the thesis submitted by Mrs.Biji Nair C.V

C.U.Campus

Prof. Pramod Kovvaprath
(Research Supervisor)

Dr. PRAMOD KOVVAPRATH
Senior Professor
Department of Hindi
University of Calicut, Malappuram Dt.
Kerala - 673635

Dr. PRAMOD KOVVAPRATH
Professor
Department of Hindi
University of Calicut

C E R T I F I C A T E

This is to certify that the thesis entitled **'A STUDY OF TRANSGENDER DISCOURSE IN HINDI NOVELS'** is a bonafide record of research work carried out by Smt. Biji Nair C.V under my supervision and that no part of this thesis has hitherto been submitted for a Research Degree in any other University.

C.U.Campus

Prof. Pramod Kovvaprath
(Research Supervisor)

Dr. PRAMOD KOVVAPRATH
Senior Professor
Department of Hindi
University of Calicut, Malappuram Dt.
Kerala - 673635

अनुक्रमणिका

प्राक्कथन i - v

पहला अध्याय

ट्रांसजेंडर विमर्श : एक विश्लेषण **1 - 44**

1.1. ट्रांसजेंडर - अर्थ

1.2. ट्रांसजेंडर - परिभाषा

1.3. ट्रांसजेंडर होने की जीव वैज्ञानिक मान्यता

1.4. विभिन्न प्रदेशों में भिन्न-भिन्न नाम

1.5. ट्रांसजेंडर छाता

1.5.1. ट्रांससेक्सुअल

1.5.2. गे

1.5.3. लेस्बियन

1.5.4. उभयलिंगी (बाय-सेक्सुअल)

1.5.5. क्रॉस ड्रेसर

1.5.6. अलैंगिक

1.5.7. शिमेल

1.5.8. पैनसेक्सुअल

1.5.9. डबल डैकर

1.5.10. इंटरसेक्स

1.5.11. एंड्रोगायन

1.6. लिंग सिद्धान्त

1.7. क्वीर का मतलब

1.8. क्वीर सिद्धान्त (Queer Theory)

1.9. लिंग अभिव्यक्ति (Gender Expression)

1.10. लिंग पहचान (Gender Identity)

1.11. यौन रुझान (Sexual Orientation)

1.12. स्टोनवेल विद्रोह

1.13. चार वर्गों में विभक्त ट्रांसजेंडर

1.14. चिकित्सा द्वारा लिंग परिवर्तन

1.15. किन्नर - अर्थ एवं परिभाषा

1.16. ट्रांसजेंडर विमर्श : ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

1.16.1. रामायण

1.16.2. शिखण्डी कथा

1.16.3. महाभारत

1.16.4. इल कथा

1.16.5. सिद्ध-सिद्धान्त पद्धति

1.16.6. मनुस्मृति

1.16.7. वायुपुराण

1.16.8. अष्टाध्यायी

1.16.9. कामसूत्र

1.16.10. मुगलकालीन युग में ट्रांसजेंडरों की भूमिका

1.16.11. मध्यकाल में कला तथा साहित्य में ट्रांसजेंडरों का योगदान

1.16.12. हरम तथा ट्रांसजेंडर

1.16.13. अंग्रेज़ों के समय ट्रांसजेंडर

1.17. विश्व में ट्रांसजेंडर

1.18. संगठन

1.19. अपना वजूद बनानेवाले प्रमुख ट्रांसजेंडर

1.20. राजनीति में ट्रांसजेंडर

1.21. ट्रांसजेंडर : तीसरे लिंग के रूप में मान्यता

1.21.1. ट्रांसजेंडर अधिकार विधेयक 2014,2019,2020

1.22. निष्कर्ष

दूसरा अध्याय

हिन्दी साहित्य और ट्रांसजेंडर विमर्श **45 - 109**

2.1. कहानी

2.1.1. थर्ड जेंडर : हिन्दी कहानियाँ

2.1.2. हम भी इंसान हैं

2.1.3. इस जिन्दगी के उस पार

2.1.4. कथा और किन्नर

2.1.5. थर्ड जेण्डर : अनूदित कहानियाँ

2.1.6. किन्नर समाज की लघुकथाएँ

2.2. कविता

2.3. नाटक

2.4. आत्मकथा

2.5. सिनेमा

2.6. निष्कर्ष

तीसरा अध्याय

चुने हुए उपन्यास : एक सामान्य परिचय **110 - 210**

3.1. मैं भी औरत हूँ

3.2. तीसरी ताली

3.3. किन्नर कथा

3.4. गुलाम मंडी

3.5. मैं पायल

3.6. पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा

3.7. ज़िन्दगी 50-50

3.8. अस्तित्व

3.9. दरमियाना

3.10. यमदीप
3.11. श्रापित किन्नर
3.12. अस्तित्व की तलाश में सिमरन
3.13. ऐ जिन्दगी तुझे सलाम
3.14. मंगलामुखी
3.15. मेरे होने में क्या बुराई है
3.16. वह
3.17. हॉफ मैन
3.18. निष्कर्ष

चौथा अध्याय

ट्रांसजेंडर : जीवन–रीति एवं संस्कृति **211 - 266**

4.1. जीवनयापन के स्रोत
4.1.1. बधाई
4.1.2. भीख
4.1.3. वेश्यावृत्ति
4.2. ट्रांसजेंड़र समुदाय और उनकी संस्कृति
4.2.1. बहुचरा माता
4.2.2. भुजरिया पर्व
4.2.3. कुवागम उत्सव
4.2.4. ट्रांसजेंडर डेरा
4.2.5. गिरिया
4.2.6. गुरु
4.2.7. निर्वाण
4.2.8. गोद भराई रस्म
4.2.9. शवसंस्कार
4.2.10. धार्मिक समन्वय
4.3. प्रेम और मनुष्यता
4.3.1. प्रेम की भावना
4.3.2. अपनों के प्रति प्यार
4.4. निष्कर्ष

पाँचवाँ अध्याय

ट्रांसजेंडरों की प्रमुख समस्याएँ **267 - 351**

5.1. सामाजिक समस्या
5.2. पारिवारिक समस्या
5.3. पितृसत्तात्मक सोच
5.4. विस्थापन की समस्या
5.5. शिक्षा जगत की समस्या
5.6. राजनीतिक समस्या
5.7. यौन शोषण
5.8. नकली ट्रांसजेंडर
5.9. ट्रांसजेंडर - ट्रांसजेंडर का दुश्मन
5.10. ट्रांसजेंडर और मानवाधिकार की समस्या
5.11. जागृति : समस्याओं से राहत
5.11.1. आम लोगों में ट्रांसजेंडर समुदाय के प्रति जागृति
5.11.2. ट्रांसजेंडर समुदाय की जागृति
5.12. निष्कर्ष

उपसंहार **352- 360**

संस्तुतियाँ (Recommendations) **361-362**

सहायक ग्रंथ-सूची **363-376**

प्राक्कथन

वर्तमान साहित्य में विविध विषयों पर विविध विधाओं में लेखन कार्य हो रहा है। 21 वीं सदी के हिन्दी उपन्यासकारों ने कई ज्वलंत मुद्दों को अपना विषय बनाया है। साहित्यकारों का विषयगत फलक विस्तृत रहा है। 21 वीं सदी में अनेक विमर्श उभरकर आये हैं, उनमें एक प्रमुख विमर्श है ट्रांसजेंडर विमर्श। हिन्दी उपन्यासकारों ने ट्रांसजेंडर विमर्श को अपने विषय के रूप में चुना तथा इस समाज में हाशिएकृत जीवन जी रहे, अपनों द्वारा उपेक्षित इस जनसमुदाय को वाणी देकर उन्हें समाज में प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया है।

हमारे भारतीय समाज में पहले से ही स्त्री तथा पुरुष दो लिंग महत्वपूर्ण माने गए। ट्रांसजेंडर समुदाय को हमारे समाज में हेय दृष्टिकोण से देखा गया। मुख्यधारा समाज ने हमेशा इनके अस्तित्व को नकारा है। सिर्फ अपनी स्वार्थ सिद्धि हेतु उनका आशीर्वाद पाने के लिए उन्हें अपनी दहलीज़ पर कदम रखने की इज़ाजत दी। ट्रांसजेंडर व्यक्ति का अस्तित्व हमारे समाज में लंबे समय से मौजूद है। इनकी उपस्थिति पुराणों तथा पौराणिक ग्रंथों में पाई जाती है। मुगलों के समय इनको मान सम्मान प्राप्त था और ये उच्च पद पर आसीन थे। इनकी आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक स्थिति आज से काफी बेहतर थीं। अंग्रेज़ों के समय से इनकी स्थिति बदत्तर बन गई। तब से लेकर आज तक यह समुदाय मुख्यधारा से कटकर जीने को विवश हो गया है।

साहित्य समाज की समस्याओं का खुलासा करके जन सामान्य तक पहुँचाने की बीड़ा उठाता है तथा जिसके द्वारा साहित्य जनसमुदाय में नई चेतना जगाने का प्रयास भी करता है। समाज में अपने अस्तित्व और अस्मिता को स्थापित करने के लिए संघर्षरत ट्रांसजेंडर समुदाय के प्रति समाज के लोगों में जागृति पैदा करने में हमारे हिन्दी उपन्यासकारों ने भरपूर कोशिश की है। ट्रांसजेंडर समुदाय के व्यक्ति हमारे समाज का हिस्सा है और ये अर्सों से अनेक समस्याओं को

भोगकर समाज की मुख्यधारा से कटकर जी रहे हैं। दुर्भाग्य की बात यह है कि इतने समय तक इनको साहित्य में मुख्य विषय नहीं बनाया गया।

बहुत लंबे संघर्ष के बाद आज ट्रांसजेंडर समाज साहित्य के केन्द्र में है। इनसे जुड़े कई शोध अध्ययन हुए हैं, जिनमें प्रमुख हैं सीमा भुवनेश्वर प्रसाद सिंह का 'हिन्दी उपन्यासों में किन्नर समाज : एक विमर्श', दिलीप मेहरा का '21 वीं सदी के हिन्दी उपन्यासों में किन्नर जीवन के विविध रूप :एक अध्ययन', पार्वती कुमारी का 'समकालीन हिन्दी उपन्यासों में किन्नर समाज', प्रखर का 'इक्कीसवीं सदी (2000-2020) के उपन्यासों में किन्नर विमर्श : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन', भावना चोटिया का 'हिन्दी कथा साहित्य में वर्णित किन्नर समाज', मिलन विश्नोई का 'इक्कीसवीं सदी के कथा साहित्य में किन्नर विमर्श', सनोज पी का 'इक्कीसवीं सती की हिन्दी कहानियोँ में किन्नर विमर्श' आदि। आज ट्रांसजेंडर केंद्रित आलोचनात्मक पुस्तकें लिखी जा रही हैं। जिनमें प्रमुख हैं डॉ. एम. फ़ीरोजखान के संपादकत्व में निकली 'थर्ड जेण्डर जिन्दगी 50-50', 'थर्ड जेण्डर साक्षात्कार के आइने में', 'थर्ड जेण्डर अतीत और वर्तमान', डॉ. विजेन्द्र प्रताप सिंह की 'हिन्दी उपन्यासों के आइने में थर्ड जेंडर', 'थर्ड जेण्डर पौराणिक काल से वर्तमान तक', मधु खराटे की 'हिन्दी उपन्यासों में किन्नर विमर्श', वैष्णव पी.वी.की 'थर्ड जेण्डर विमर्श (उपन्यास तीसरी ताली और फिल्म शबनम मौसी के संदर्भ में)', डॉ. शंगुफ़्ता नियाज के संपादकत्व में निकली पुस्तक 'थर्ड जेंडर तीसरी ताली का सच', थर्ड जेंडर के संघर्ष का यथार्थ (चित्रा मुद्गल कृत नाला सोपारा के संदर्भ में)', विनय कुमार पाठक की 'लैंगिक विकलांग विमर्श – दशा और दिशा', डॉ.विजेन्द्र प्रताप सिंह तथा डॉ. रवि कुमार गोंड के संपादकत्व में निकली 'भारतीय साहित्य एवं समाज में तृतीय लिंग विमर्श', डॉ.वनजा के द्वारा रचित 'क्वीर विमर्श-लेस्बियन, गे, बाई-सेक्सुअल, ट्रांसजेंडर', राजकुमार की 'थर्ड जेण्डर भाषा वैज्ञानिक अध्ययन', मिलन विश्नोई की 'मैं हिजड़ा मैं लक्ष्मी में किन्नर विमर्श', प्रियंका नारायण की

'किन्नर सेक्स और सामाजिक स्वीकार्यता', देव्यानी महिड़ा द्वारा लिखित 'किन्नर साहित्य व्यथा, यातना और संघर्ष' आदि। ट्रांसजेंडर विशेषांक पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं, जिनमें प्रमुख है सरस्वती सुमन (किन्नर विशेषांक) अक्तूबर, 2022, निरूप्रह (किन्नर विमर्श विशेषांक) सितम्बर-नवम्बर 2015, जनकृति अंतराष्ट्रीय पत्रिका (थर्ड जेंडर विशेषांक) अगस्त 2016, साथ ही साथ राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ट्रांसजेंडर केंद्रित संगोष्ठियों का आयोजन भी आज हो रहा है।

आज साहित्य में जोर शोर से ट्रांसजेंडर लोगों की चर्चा हो रही है। वर्षों से भोगी हुई इनकी यातनाओं को जन सामान्य तक पहुँचाने का प्रयास साहित्यकार कर रहे हैं। मुख्यधारा समाज से कटकर जी रहे समुदाय को आगे लाने के लिए, उनके अस्तित्व को समाज में स्थापित करने एवं सभी के द्वारा इनके अस्तित्व को स्वीकार किये जाने के लिए साहित्य को ट्रांसजेंडर विमर्श पर चर्चा करना तथा उनपर साहित्यिक रचनाएँ करना अति आवश्यक है। इन्हीं आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर 'हिन्दी उपन्यासों में ट्रांसजेंडर विमर्श' को अपने शोध अध्ययन के लिए विषय के रूप में चुना गया है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध का शीर्षक है 'हिन्दी उपन्यासों में ट्रांसजेंडर विमर्श : एक अध्ययन'। अध्ययन की सुविधा के लिए शोध प्रबंध को पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है। अंत में उपसंहार दिया गया है।

पहला अध्याय है - 'ट्रांसजेंडर विमर्श : एक विश्लेषण'। इस अध्याय में ट्रांसजेंडर शब्द का अर्थ, उसकी परिभाषा ट्रांसजेंडर के अंतर्गत कौन-कौन शामिल हैं उसपर प्रकाश डाला गया है। इस अध्याय में लिंग सिद्धान्त, क्वीर का मतलब, क्वीर सिद्धान्त, अमेरिका में हुए स्टोनबेल विद्रोह का उल्लेख भी किया गया है। पुराणों तथा प्राचीन ग्रंथों में तथा प्राचीन काल में समाज में

ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों की क्या स्थिति थी इस पर भी नज़र डाली गयी है। भारत सरकार द्वारा बनाये गए अधिनियमों का उल्लेख भी इस अध्याय में किया गया है।

दूसरा अध्याय है - 'हिन्दी साहित्य और ट्रांसजेंडर विमर्श'। आज 21 वीं सदी में जहाँ ट्रांसजेंडर विमर्श पर चर्चा हो रही है, वहीं हिन्दी साहित्य जगत में अनेक विधाओं में ट्रांसजेंडर विमर्श पर साहित्यिक रचनाएँ रची जा रही हैं। हिन्दी में ट्रांसजेंडर केंद्रित कई कहानी संग्रह रचे गये हैं तथा अन्य भाषाओं से हिन्दी में कहानियाँ अनूदित भी की गई हैं। ट्रांसजेंडर केंद्रित कविता संग्रह तथा नाटक भी लिखे जा रहे हैं। ट्रांसजेंडर व्यक्तियों ने अपने संघर्ष तथा व्यथा को खुद आत्मकथा के माध्यम से व्यक्त किया है। इनसे संबंधित सिनेमा भी आज निकल रहे हैं। हिन्दी साहित्यकारों ने विभिन्न साहित्यिक विधाओं के माध्यम से ट्रांसजेंडर जीवन के हरेक पहलुओं को अपनी रचनाओं में व्यक्त किया है, जिसका अध्ययन दूसरे अध्याय में किया गया है।

तीसरा अध्याय है - 'चुने हुए उपन्यास : एक सामान्य परिचय'। हिन्दी में आज बड़ी संख्या में ट्रांसजेंडर विषय पर केंद्रित उपन्यास लिखे जा रहे हैं। प्रस्तुत शोध प्रबंध में विभिन्न उपन्यासकारों द्वारा रचित 17 उपन्यास अध्ययन के लिए चुने हैं तथा इस अध्याय में इन उपन्यासों का सामान्य परिचय एवं विश्लेषण किया गया है।

चौथा अध्याय है - 'ट्रांसजेंडर : जीवन-रीति एवं संस्कृति'। प्राचीन काल से लेकर हमारे समाज में ट्रांसजेंडर समुदाय की उपस्थिति रही है। हमारे समाज में बहिष्कृत हशिएकृत जीवन बितानेवाला ट्रांसजेंडर समुदाय उनकी पारंपरिक पेशा बधाई के ज़रिए तथा भीख माँगकर और वेश्यावृत्ति करकर जीवनयापन करता है , जिसका उल्लेख हिन्दी उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में किया है। ट्रांसजेंडर समुदाय की संस्कृति भी समाज के अन्य लोगों की संस्कृति से भिन्न है। ट्रांसजेंडर लोगों के जीवनयापन के स्रोत तथा उनकी संस्कृति का प्रतिपादन इस चौथे अध्याय में किया गया है।

पाँचवाँ अध्याय - 'ट्रांसजेंडरों की प्रमुख समस्याएँ' है। मनुष्य होकर भी मनुष्य न माने जाने वाले ट्रांसजेंडर हमारे समाज के ही सदस्य हैं। इन्हें समाज में मनुष्य के रूप में स्वीकृति नहीं मिलती यही इनकी सबसे बड़ी समस्या है। समाज में हरेक व्यक्ति को कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है, पर ट्रांसजेंडर समुदाय के लोग अपने अस्तित्व को समाज में स्थापित करने के लिए संघर्षरत हैं। परिवार तथा समाज से बहिष्कृत ये जन्म से लेकर अपनी मृत्यु तक कई समस्याओं का सामना करते हैं। हिन्दी उपन्यासकारों द्वारा उपन्यासों में इनके द्वारा भुगते जानेवाले समस्याओं का वर्णन हुआ है। इन विभिन्न समस्याओं का अध्ययन पाँचवें अध्याय में हुआ है।

अंत में उपसंहार दिया गया। इसमें प्रस्तुत अध्ययन का सारांश है। यहाँ इस अध्ययन में उभरे मुख्य बिंदुओं को उजागर किया गया है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध कालिकट विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के प्रोफेसर डॉ. प्रमोद कोवप्रत के निर्देशन में संपन्न हुआ है, जिन्होंने अपने महत्वपूर्ण सुझाव एवं प्रेरणा देकर मेरी शंकाओं का निवारण किया है। मैं उनके प्रति हृदय से आभार व्यक्त करना चाहती हूँ। कालिकट विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागध्यक्ष डॉ.वी.के.सुब्रहमण्यन जी के प्रति भी मैं आभारी हूँ, जिनका पूर्ण सहयोग मुझे मिला है। इस अवसर पर विभाग के उन सभी गुरुजनों, शोध छात्रों, पुस्तकालय के अधिकारियों को भी मैं कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

हमें अपने जीवन के सभी कार्यों में विजय प्राप्ति के लिए परिवालों का पूर्ण सहयोग मिलना चाहिए। स्वर्गीय पिताजी का आशीर्वाद और माताजी की प्रेरणा मुझे मिलती रही। मेरे जीवन साथी श्री मिथुन और मेरा बेटा वैभव तथा परिवारवालों का पूर्ण सहयोग एवं प्रोत्साहन सदा समय मुझे मिलते रहे। उन सभी के प्रति मैं हृदय से आभारी हूँ।

बिजी नायर सी.वी

पहला अध्याय

ट्रांसजेंडर विमर्श : एक विश्लेषण

स्त्री और पुरुष को हमारे समाज का आधार स्तम्भ माना जाता है। ये दोनों मिलकर नई पीढ़ी को बनाते हैं। इन दो वर्गों के अलावा हमारे समाज में ओर एक तीसरा वर्ग भी है, जिसे हम ट्रांसजेंडर कहते हैं। ट्रांसजेंडर से अभिप्राय उन लोगों से है जिनके जननांग पूरी तरह विकसित न हो पाए हो अथवा जिनकी लैंगिक पहचान या अभिव्यक्ति उस लिंग से अलग होती है जो उन्हें उनके जन्म के समय प्राप्त होती है। स्त्री और पुरुष की तरह ही ये भी हमारे समाज का अभिन्न हिस्सा हैं। जब से मनुष्य जन्म है तब से इनका भी अस्तित्व रहा है। दुःख की बात यह है कि जिस प्रकार स्त्री और पुरुष को हमारे समाज में मान्यता प्राप्त हुई है वैसे ट्रांसजेंडर लोगों को प्राप्त नहीं हुई है। समाज में इनका स्थान बहुत ही निचला है। सभी लोग इन्हें घृणा की दृष्टि से देखते हैं। मनुष्य होने पर भी इन्हें मनुष्य का दर्जा प्राप्त नहीं हुआ है। इतिहास और पुराणों में इनका अस्तित्व रहा है। प्राचीन काल में इन्हें सम्मानजनक जीवन प्राप्त था। जहाँ हम वसुधैवकुटुम्बकम् के दर्शन को यानि एकता, सहयोग और आपसी सम्मान को महत्व देकर जीते हैं, वहां हम ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों को हिकारत की दृष्टि से देखते हैं तथा पशुओं से भी नरकीय जीवन जीने के लिए उन्हें विवश करते हैं। खुद इनके परिवारवाले अपने मान को बचाने के लिए इन्हें घर से बाहर कर देते हैं। सभ्य समाज के लोग इनका हँसी मज़ाक उड़ाते हैं। जन्म से लेकर मरने तक पल-पल ये नरकीय तुल्य जीवन जीते हैं। आज 21 वीं सदी के इस दौर में हालातों में कुछ परिवर्तन आने लगा है। ट्रांसजेंडर समाज अपने अधिकारों की माँग कर रहा है। ये एक साधारण मनुष्य की भाँति साधारण जीवन जीना चाहते हैं। सरकार ने इनके लिए कई अधिकार मुहैया कराये हैं। बहुत सारी संस्थाएँ इनकी उन्नति के लिए कार्य कर रही हैं। विश्व भर में विभिन्न भाषाओं के साहित्य में ट्रांसजेंडर विमर्श पर जोरों से लेखनी चलाई जा रही है। जिनका उद्देश्य इन्हें मुख्य धारा में शामिल करना है।

1.1. ट्रांसजेंडर - अर्थ

ट्रांसजेंडर से अभिप्राय उन लोगों से हैं, जिनके जननांग पूरी तरह विकसित न हो पाए हो अथवा जिनकी लैंगिक पहचान या अभिव्यक्ति उस लिंग से अलग होती है, जो उन्हें उनके जन्म के समय प्राप्त होती है। अंग्रेज़ी का Transgender शब्द Trans + Gender दो शब्दों के मेल से बना है। Trans का अर्थ 'के उस पार' या 'के परे है', तो Gender का अर्थ 'लिंग' से जुड़ा है। अर्थात ट्रांसजेंडर शब्द का अर्थ 'दूसरी अवस्था में लिंग है'। ट्रांसमहिला और ट्रांस पुरुष के रूप में ट्रांसजेंडर की पहचान होती है।

यदि किसी व्यक्ति का जन्म स्त्री रूप में हुआ हो लेकिन वह अपने आप को स्त्री न मानकर पुरुष के रूप में देखता है तो ऐसे व्यक्ति को ट्रांसमैन (Transman) या पारलैंगिक पुरुष कहा जाता है। यदि कोई जन्म से पुरुष के रूप में पैदा हुआ हो लेकिन वह अपने आप को स्त्री माने तो उसे ट्रांसवुमन (Transwoman) या पारलैंगिक महिला कहा जायेगा।

पारलैंगिक लोगों की भावनाएँ ही सिर्फ विपरीत लिंगों वाली होती हैं। शारीरिक रूप से ये जन्मना निर्धारित लिंग के मानव अर्थात् स्त्री या पुरुष होते हैं। इनकी प्रजनन क्षमता सामान्य स्त्री या पुरुष की तरह ही होती है। पारलैंगिक पुरुष या पारलैंगिक महिला ट्रांसजेंडर ही कहलाते हैं। जो ट्रांसजेंडर लोग चिकित्सा की सहायता से लिंग परिवर्तन कराते हैं, उन्हें ट्रांससेक्सुअल कहते हैं।

भारत में ट्रांसजेंडर समुदाय के अंतर्गत हिजड़े, अरावनी, कोथिस, जोगत/जोगप्पा, शिवशक्ति आदि शामिल हैं। भारत में ट्रांसजेंडर समुदाय के लिए आमतौर पर ज्यादातर लोग हिजड़ा शब्द का प्रयोग करते हैं। पुरुष से महिला बने ट्रांसजेंडर के लिए 'अरावनी' शब्द का प्रयोग किया जाता है। ये महिला शरीर सेक्स रिअसाइनमेंट सर्जरी द्वारा या बधियाकरण द्वारा प्राप्त करते हैं। 'कोठी' वे हैं जो समान लिंग संबंधों में स्त्री की भूमिका अपनाते हैं। महाराष्ट्र और कर्नाटक में पुरुष से महिला बने ट्रांसजेंडर अपने लिए जोगटा या जोगप्पा संबोधन का प्रयोग करते

हैं। आंध्रप्रदेश में पाई जाने वाली शिव शक्तियाँ पुरुष हैं, इनमें महिला चेष्टाएँ अधिक होती हैं। इन्हें भगवान शिव से विवाहित माना जाता है। ये आध्यात्मिक उपचारक या ज्योतिषी के रूप में काम करते हैं।

1965 में डॉ. जॉन.एफ.ओलिवेन द्वारा प्रकाशित चिकित्सा पाठ 'सेक्सुअल हाइजीनी एंड पथोलजी' में ट्रांसजेंडर शब्द का पहला प्रयोग हुआ। डॉ.जॉन.एफ.ओलिवेन ने ट्रांसजेंडर शब्द का प्रयोग ट्रांससेक्सुअल के पर्याय के रूप में किया था। ट्रांससेक्सुअल वे हैं, जो सर्जरी के माध्यम से दूसरा शरीर प्राप्त करते हैं। इसके बाद 1970 के दशक में ट्रांस पायनियर वर्जीनिया प्रिन्स ने इस शब्द का प्रयोग किया। 1969 में वर्जीनिया प्रिन्स ने अपने आप को ट्रांससेक्सुअल, या उन लोगों से अलग करने के लिए ट्रांसजेंडरल शब्द का प्रयोग किया, जो संक्रमण के लिए सर्जरी का प्रयोग करते हैं। 'ट्रांसजेंडर' शब्द के प्रयोग ने लोगों द्वारा संक्रमण के लिए चुने जानेवाले तरीकों के बीच स्पष्ट रूप से अंतर किया। 1974 में सामाजिक कार्यकर्ताओं, चिकित्सकों तथा अन्य कार्यकर्ताओं ने लीड्स विश्वविद्यालय में ट्रांसवेस्टाइट और ट्रांससेक्सुअल सम्मेलन आयोजित किया। यहाँ ट्रांसवेस्टाइट्स (विपरीत लिंग के रूप में कपड़े पहननेवाले लोग) ट्रांससेक्सुअल (सर्जरी के माध्यम से लिंग परिवर्तन करने वाले लोग) तथा ट्रांसजेंडर लोगों के बीच का अंतर स्पष्ट किया। 1990 के दशक में ट्रांसजेंडर और ट्रांससेक्सुअल के बीच का जो फर्क है वह खत्म होने लगा। आज ट्रांसजेंडर छाता के अंतर्गत ट्रांससेक्सुअल, लिंग गैर-बाइनरी, लिंग गैर-अनुरूपण, एजेंडर, ड्रैगक्वीन, एंड्रोजेनस, इंटरसेक्स, जेंडरक्वीर, जेंडरफुलइड तथा कई अन्य लोग भी शामिल हैं।

1.2. ट्रांसजेंडर - परिभाषा

विभिन्न विद्वानों द्वारा तथा शब्दकोशों में ट्रांसजेंडर शब्दों को परिभाषित किया गया है जो निम्नलिखित हैं-

पुनीत बिसारिया “किन्नर या हिजड़ों से अभिप्राय उन लोगों से है, जिनके जननांग पूरी तरह विकसित न हो पाए हो अथवा पुरुष होकर भी स्त्रैण स्वभाव के लोग, जिन्हें पुरुषों की जगह स्त्रियों के बीच रहने में सहजता महसूस होती है।”[1]

रविकुमार गोंड “किन्नर शब्द हिजड़े के रूप में प्रयुक्त हो चुका है। यह शब्द उन लोगों के लिए प्रयुक्त होता है...जिसका समाज में कोई स्थान नहीं, भोग विलास न कर सके, जो मातृत्व और पिता के सुख से वंचित हो और दोनों के आधिकारिक दायित्व से वंचित हो। ऐसे लोगों को हिजड़ा शब्द का पर्याय माना जाता है।”[2]

विजेन्द्र प्रताप सिंह “अर्थ की दृष्टि से देखें तो बुनियादी स्तर पर ट्रांसजेंडर, ट्रांससेक्सुअल, एंड्रोगायन तथा कोथिस को इस प्रकार पाते हैं - एक ट्रांसजेंडर वह व्यक्ति है, जिसे जन्म के समय गुप्तांग के रूप में एक लिंग प्राप्त होता है, परन्तु वह लिंग झूठा प्रतिनिधित्व लगता है, अर्थात वह यदि पुरुष लिंग के साथ होता भी है तो उसके अंदर भावनाएँ स्त्री की होती है। कई बार ऐसा भी होता है कि शरीर तो स्त्री का होता है, परन्तु हाव-भाव पुरुषों वाले होते हैं।”[3]

प्रोफेसर मेराज अहमद “भारतीय भू-भाग में किन्नर यानी कि हिजड़ा ऐसे लोगों को कहा जाता है जिनके जननांग अस्पष्ट होते हैं अर्थात जिनके जननांग न तो स्पष्ट रूप से स्त्री के होते हैं और न ही पुरुष के। कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जो जन्म तो पुरुष जननांग के साथ लेते हैं परन्तु वे उनके बीच सहज नहीं होते हैं। ऐसे लोगों को भी हिजड़ा कहा जा सकता है।”[4]

भारतीय संस्कृति कोश “महाभारत और पुराणों में हिमालय क्षेत्र में बसनेवाली इस जाति का नामोल्लेख है। किन्नरों को देवताओं का गायक और भक्त कहा गया है। यक्षों और गंधर्वों की तरह वे भी नृत्य और गान में प्रवीन थे। उनके नाम के संबंध में कहा गया है कि वे मंगोल रक्त-प्रधान लोग रहे होंगे जिनमें पुरुषों के मूंछ-दाढ़ी नहीं के बराबर निकलती है और कभी-कभी चेहरा

देखकर तत्काल स्त्री-पुरुष में अंतर ज्ञात नहीं होता । शपतथ ब्राह्मण में एक ऐसे किन्नर का उल्लेख है , जिसका शरीर तो मानव का था, किन्तु मुख अश्व का"[5]

संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर "1. एक प्राकर के देवयोनि में माने जाने वाले प्राणी जिनका मुख घोड़े के सामान होता है । 2. गानेबजाने का पेशा करनेवाली एक जाति"[6]

मानक हिन्दी कोश "ऐसा व्यक्ति जिसमें शारीरिक दृष्टि से स्त्री और पुरुष दोनों के कुछ-कुछ चिह्न तथा लक्षण जन्मजात और प्राकृतिक रूप से हों । ऐसा व्यक्ति न पूर्णतः पुरुष ही होता है न स्त्री ही ।"[7]

लोंगमैन शब्द कोश "A general word for people who feel that they belong to the other sex and not the same sex. They were born with and who express this in their behaviour"[8]

डी.सी.शब्दकोश "A class of demi-gods having a head of a horse and the body of man. They are eminent singers."[9]

ऑक्सफोर्ड शब्द कोश "A person whose identity does not conform to conventional notion of male or female gender, but combines or move between these identities; a transsexual."[10]

अनेक विद्वानों द्वारा तथा विभिन्न शब्द कोशों में ट्रांसजेंडर को परिभाषित किया गया है । ट्रांसजेंडर के लिए किन्नर, हिजड़ा आदि नामों का प्रयोग भी हुआ है । उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि ट्रांसजेंडर, हिजड़ा या किन्नर वे हैं जिनकी जननांग पूरी तरह विकसित नहीं हो पाया हो अथवा जिनकी लैंगिक पहचान उस लिंग से अलग होती है, जो उन्हें उनके जन्म के समय प्राप्त होती है ।

1.3. ट्रांसजेंडर होने की जीववैज्ञानिक मान्यता

ट्रांसजेंडर बनकर जन्म लेना एक जनटिक समस्या है। शुक्लाणु के संयोजन के दौरान तय होता है कि बच्चा नर होगा मादा होगा या ट्रांसजेंडर। मानव में क्रोमोज़ोम की संख्या 46 होती है। जिसमें 44 आटोज़ोम होते हैं बाकि शेष दो सेक्स क्रोमोज़ोम होते हैं। यही दो सेक्स क्रोमोज़ोम बच्चे की लिंग निर्धारित करता है। पुरुष में XY क्रोमोज़ोम पाये जाते है तथा स्त्री में XX क्रोमोज़ोम होते हैं। जब औरत के X के साथ पुरुष का X क्रोमोज़ोम मिलता है तो लड़की पैदा होती है तथा जब औरत के X के साथ पुरुष का Y गुणसूत्र मिलता है तो XY मिलकर लड़का पैदा होता है। लेकिन जब गुणसूत्रों में मादा के 2X और नर का 1X मिल जाता है तो यह X X X बन जाता है और ट्रांसजेंडर बच्चा पैदा होता है। इसके अलावा अन्य क्रोमोज़ोम डिसऑडर के कारण ट्रांसजेंडर बच्चा पैदा होता है।

1.4. विभिन्न प्रदेशों में भिन्न-भिन्न नाम

प्राचीन काल से लेकर ट्रांसजेंडर हमारे समाज में विद्यमान है। इन्हें विभिन्न देशों, तथा प्रदेशों में विभिन्न नामों से पुकारा जाता है। हिंदी में ट्रांसजेंडर लोगों के लिए हिजड़ा, किन्नर, किम्पुरुष, द्विलिंगी, तृतीय प्रकृति, जनका, छक्का आदि कई शब्द प्रयुक्त होते हैं। ज्यादातर हिंदी प्रदेश के लोग इनके लिए हिजड़ा तथा किन्नर शब्दों का प्रयोग करते दिखाई पड़ते हैं। हिजड़ा एक उर्दू, हिन्दुस्तानी शब्द है जो हिंदी में प्रयोग किया जा रहा है। अंग्रेजी में ट्रांसजेंडर शब्द का प्रयोग होता है। तथा इन्हें यूनक भी कहा जाता है। यूनक का अर्थ cartrated है यानि ऐसा पुरुष जिनका लिंग भेद किया गया है। बाईबल में भी यूनक का उल्लेख मिलता है। उर्दू में इन लोगों के लिए खोजवा अथवा खाजासरा, नामर्द आदि शब्द प्रयुक्त है, गुजराती में ये पावैया नाम से जाने जाते हैं। मराठी में इनके लिए हिजड़ा और छक्का नाम दिया गया है तो तेलुंगु में नपुसुकडु, कोज्जा और मादा नाम से ट्रांसजेंडर जाने जाते हैं। पंजाबी में इन्हें खुस्रा या जनखा नाम से लोग

पुकारते हैं। तमिल भाषा में ये अरावनी, अरुवनी, शिरुआन, गाई, आठी आदि नाम से प्रसिद्ध हैं। कन्नड़ में ये जोगप्पा, मराठी में छक्का, उड़िया में हिजड़ा, नापुम्सका आदि नाम से पहचाने जाते हैं।

ट्रांसजेंडर लोगें के लिए स्पानिश में ट्रांससेक्सुवल शब्द का प्रयोग होता है तो ब्रजिल में ट्रांसजेनेरो। इटालियन भाषा इन के लिए ट्रांस्सेस्युल नाम है तो जर्मन में इनके लिए ट्रांसिडड शब्द का प्रयोग होता है। भिन्न-भिन्न जगहों पर ये विभिन्न नामों से जाने जाते है लेकिन सभी देशों के लोगों के लिए इनके लिए प्रयुक्त शब्दों की संकल्पना समान है।

1.5. ट्रांसजेंडर छाता

ट्रांसजेंडर शब्द का प्रयोग एक छाता शब्द के रूप में किया जाता है, जिसमें वे सब शामिल होते हैं जिनकी लैंगिक पहचान, अभिव्यक्ति या व्यवहार उनके जन्म के समय सौंपी गई लैंगिक पहचान से भिन्न होती है। इस छाता के अंतर्गत आने वाले वर्ग हैं -

1.5.1. ट्रांससेक्सुअल

ट्रांसजेंडर लोग शल्य चिकित्सा के माध्यम से लिंग परिवर्तन करते हैं। शल्य चिकित्सा के द्वारा ये लोग अपने जन्म के समय निर्धारित लिंग से अलग लिंग अपनाते हैं ऐसे लिंग परिवर्तित लोगों को ट्रांससेक्सुअल कहते हैं। जो ट्रांसजेंडर व्यक्ति लिंग परिवर्तन या शल्य चिकित्सा द्वारा पुरुष लिंग अपनाता है उसे ट्रांसमेन कहते हैं तथा जब एक ट्रांसजेंडर व्यक्ति जो लिंग परिवर्तन या शल्य चिकित्सा द्वारा स्त्री बनता है उसे ट्रांसवुमन कहते हैं।

1.5.2. गे

वे पुरुष, जो अपने ही समान अन्य पुरुषों के प्रति आकर्षित होते हैं उन्हें गे अथवा पुरुष समलिंगी कहते हैं। ये समुदाय समान लिंग के प्रति आकर्षित होते हैं। पुरुष पुरुष से शारीरिक

संबंध बनाता है। Oxford Dictionary में गे शब्द का अर्थ हैप्पी हैं। इस समुदाय के अंतर्गत टॉप, बॉटम, वरस्टायल आदि का उल्लेख है।

1.5.3. लेस्बियन

जब एक स्त्री अपने ही समान स्त्री के प्रति आकर्षित होती है तो उन्हें लेस्बियन या समलैंगिक महिला कहा जाता है। इसमें एक स्त्री का यौन और स्नेहपूर्ण रूझान समान लिंग के स्त्री के प्रति होता है। 20 वीं. शताब्दी में लेस्बियन की अवधारणा विकसित हुई है।

1.5.4. उभयलिंगी (बाय-सेक्सुअल)

जब एक व्यक्ति समान लिंग और विपरीत लिंग के व्यक्तियों के प्रति आकर्षण महसूस करता है तब उन्हें उभयलिंगी कहते हैं। पुरुषों तथा महिलाओं दोनों के प्रति यौन या रोमांटिक व्यवहार इसमें देखा जाता है। उभय लिंगी शब्द 19 वीं शताब्दी में चार्ल्स गिलवर्ट चाडॉक द्वारा प्रयुक्त हुआ है।

1.5.5. क्रॉस ड्रेसर

क्रॉस ड्रेसर उन्हें कहते है जो व्यक्ति कभी कभी ऐसे कपड़े पहनता है जो आमतौर पर एक अलग लिंग द्वारा पहने जाते हैं, यह महिलाओं और पुरुषों में देखा जा सकता है। आमतौर पर एक पुरुष, महिलाओं द्वारा पहने जाने वाले कपड़े, मेकअप, आभूषण आदि पहनते हैं। एक पुरुष क्रॉसड्रेसर को mtf (पुरुष से महिला) क्रॉसड्रेसर के रूप में जाना जाता है। एक महिला को ftm (महिला से पुरुष) क्रॉसड्रेसर के रूप में जाना जाता है।

1.5.6. अलैंगिक

अलैंगिक लोगों में दूसरों के प्रति यौन आकर्षण की कमी या यौन गतिविधियों में कम रुचि पायी जाती है। अलैंगिक लोग दूसरों के प्रति रोमांटिक भावना रखते हैं, वे प्रेम भी करते हैं

बस वे यौन आकर्षण महसूस नहीं करते। बच्चा पैदा करने तथा रोमांटिक साथी को खुश करने को अलैंगिक लोग सेक्स कर लेते हैं।

1.5.7. शिमेल

शिमेल शब्द यौन कार्य में पुरुष जननांगवाली, ट्रांसमहिलाओं और स्तनवृद्धि या हार्मोन के उपयोग से बढ़े हुए महिला स्तनों का वर्णन करने के लिए किया जाता है। यह पोर्नोग्राफ़ी उद्योग में सबसे इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द है।

1.5.8. पैनसेक्सुअल

जब कोई व्यक्ति यौन, रोमांटिक और भावनात्मक रूप से सभी लिंग के लोगों के प्रति आकर्षित होता है, तो उसे पैनसेक्सुअल कहते हैं।

1.5.9. डबल डैकर

यह ट्रांसजेंडर समुदाय में एक ऐसा वर्ग है जो सेक्स करना और करवाना दोनों पसंद करते हैं। दोनों किरदारों को निभाने के कारण इन्हें डबल डैकर कहा जाता है।

1.5.10. इंटरसेक्स

इंटरसेक्स अथवा अंतरलिंगी वे लोग हैं, जिनका जननांग जन्म के समय से ही अस्पष्ट होता है। ज्यादातर लोगों में जननांग पुरुष जननांग जैसा होता है, लेकिन इनकी आंतरिक बनावट स्त्रियों जैसी होती है। कभी-कभी इनमें महिलाओं की तरह गर्भाशय भी पाया जाता है। कई बार इस वर्ग के लोगों के लिंग में स्त्री-और पुरुष दोनों का रूप दिखाई पड़ता है।

1.5.11. एंड्रोगायन

एक लिंग वाला व्यक्ति जो पुरुष और स्त्री दोनों है या पुरुष और स्त्री के बीच है उन्हें एंड्रोगायन कहते हैं।

1.6. लिंग सिद्धान्त

नारीवाद की दूसरी लहर का प्रतिफल लिंग सिद्धान्त को कहा जा सकता है। 1960 के दशक में उभरी नारीवाद की दूसरी लहर 19 वीं शताब्दी के अंत में उभरी पहली नारीवाद की लहर से भिन्न है। सिमोन द बोउआर की 'द सेकेंड सेक्स' पुस्तक को नारीवाद की दूसरी लहर का मूलभूत दस्तावेज माना जाता है। जिसमें उन्होंने कहा है कि नारी पैदा नहीं होती बल्कि बनाई जाती है। सिमोन द बोउआर के इस वाक्यांश का लिंग सिद्धान्त में महत्वपूर्ण योगदान रहा। कुछ समय पहले तक लिंग को सेक्स के पर्याय के रूप में इस्तेमाल किया जाता था। बाहरी जननांग द्वारा निर्धारित स्थिति को संदर्भित करनेवाले दो शब्द। रॉबर्ट स्टोलर की किताब 'सेक्स एंड जेंडर: ऑन द डेवलपमेंट ऑफ मैस्क्युलिनिटी एंड फेमिनिटी' में पहली बार सेक्स और जेंडर पर चर्चा हुई। जिसमें ट्रांसजेंडर तथा ट्रांसवेस्टिज्म का उल्लेख किया गया। 1950 में उनके तथा डॉ.जॉनमणि द्वारा शुरू की गई जेंडर ऐडेन्डीटी क्लीनिक द्वारा अमेरिका में प्रचार किया गया कि सेक्स ओर जेंडर दोनों अलग है।

लिंग सिद्धान्त के अनुसार पुरुष और महिला की पहचान उनके यौन अंगों के आधर पर नहीं की जानी चाहिए, बल्कि वे क्या अंदर से महसूस करते हैं उसके आधार पर एक व्यक्ति पुरुष है या महिला है, उसकी पहचान निर्धारित की जानी चाहिए। जेंडर, सेक्स और कामुकता तीनों अलग-अलग हैं। यौन अंग सेक्स को चिहित करते हैं तथा यौन अंग स्त्री का हो या पुरुष का एक व्यक्ति अंदर से क्या महसूस करता है अर्थात एक व्यक्ति यौन रूप से स्त्री है लेकिन वह मानसिक रूप से यह महसूस करता है कि वह स्त्री नहीं पुरुष है तो वह उसका जेंडर होगा ना कि स्त्री उसका जेंडर। एक व्यक्ति जिसके प्रति यौन रूप से आकर्षित होता है वह उसकी कामुकता है। भावनाएँ कामुकता का आधार हैं। लिंग सिद्धान्त कहता है कि अगर किसी व्यक्ति को लगता है कि वह पुरुष है, तो उसे पुरुष की तरह जीने का अधिकार है, भले ही उसके शरीर के यौन अंग और

आंतरिक अंग महिलाओं का हो। एक व्यक्ति अपनी पहचान अपनी इच्छानुसार चुन पाता है तो उसे लैंगिक स्वतंत्रता मिलती है।

जेंडर सिद्धांत का उद्भव 1980 के पास हुआ, जिसके उदय मे सिमोन द बोउआर की रचना 'द सेकेंड सेक्स' का प्रमुख स्थान है साथ ही शुलमिथ फायरस्टोन की 'द डायलेक्टिक ऑफ सेक्स: द केस फॉर फेमिनिस्ट रेवोल्यूशन' न्यूयार्क (1970), एंजेला डेविस (अमेरिकी मार्क्स वादी नारीवादी विचारक) उनकी 'वुमन रेस एंड क्लास', न्यूयोर्क (1981), तथा उन्हीं का 'वुमन कल्चर एंड पॉलिटिक्स' (1990) सिद्धान्त के निर्माण में योगदान रहा है।

1.7. क्वीर का मतलब

क्वीर शब्द में विभिन्न प्रकार के यौन पहचान और लिंग पहचान के लोग शामिल हैं। स्ट्रेट या सिसजेंडर के अतिरिक्त सभी लोग क्वीर के अंतर्गत आते हैं। 'queer' का शाब्दिक अर्थ अनोखा या अजनबी है। अतीत में क्वीर शब्द लोगों को चोट पहुँचाने और उनका अपमान करने के लिए इस्तेमाल किया जाता था। आज विषमलैंगिक लोगों के अतिरिक्त लैंगिक पहचान रखनेवाले लोग अपने लिए क्वीर शब्द का प्रयोग गर्व के साथ करते हैं। क्वीर एक छाता के समान है, जिसके अंतर्गत कई लैंगिक पहचान के लोग शामिल हैं। LGBT+ के अंतर्गत आने वाले सभी लोगों को क्वीर शब्द से संबोधित किया जाता है।

1.8. क्वीर सिद्धान्त (Queer Theory)

क्वीरसिद्धान्त की उत्पत्ति को परिभाषित करना आसान नहीं है। इसकी उत्पत्ति के पीछे नारीवाद, उत्तर संरचनावाद सिद्धान्त, उपनिवेशवाद, रंग के लोगों के कट्टरपंथी आन्दोलन, समलैंगिक, गे, लेस्बियन आन्दोलन, एड्स सक्रियता, कई यौन रूप सांस्कृतिक प्रथाएँ जैसे सैडोमासेज़्मि आदि शामिल हैं। क्वीर सिद्धान्त 1970 के फेमिनिस्ट स्कूल की प्रतिक्रिया में आया।

1990 के दशक की शुरुआत में क्वीर अध्ययन समलैंगिक, गे, लेस्बियन से उभरा। यह लिंग तथा यौन प्रथाओं से संबंधित है। इस सिद्धान्त ने विषमलैंगिकता को नकारा। यह सिद्धांत हमारे समाज में बनी हुई जो सामान्य धारणा है कि विषमलैंगिक इच्छा सामान्य है उसे चुनौती देता है।

क्वीर सिद्धान्त का मानना है कि लिंग स्थिर नहीं बल्कि तरल है। जहाँ समाज ने समलैंगिकता को असमान्य तथा समलैंगिक लोगों को बीमार ठहराया वहाँ क्वीर सिद्धान्त समलैंगिकता के प्रति समाज के नज़रिये को गलत ठहराता है। क्वीर सिद्धान्त समाज के नियम और सिद्धान्त को नहीं मानता है। समाज में विषमलैंगिकता की जो प्रमुखता है उस कारण समलैंगिकता को बुरा माना जाता है, क्वीर सिद्धान्त समलैंगिकता तथा अन्य प्रकार की लैंगिकता को प्रोत्साहन देता है।

एड्रियन रिच के मत में क्वीर सिद्धान्त सेक्स, जेंडर तथा इच्छा के बीच के फर्क को प्रकट करता है "Queer theory focuses on mismatches between sex, gender and desire."[11]

1990 में इटालियन स्त्रीवादी तेरेसा डी लॉरेट्स ने कैलिफ़ोर्निया विश्वविद्यालय में हुए एक सम्मेलन में क्वीर शब्द का पहले प्रयोग किया। अपनी पत्रिका 'Differences: A Journal of Feminist Cultural Studies' में इस नाम से उन्होंने एक निबंध भी लिखा। इस निबंध का शीर्षक था 'क्वीर थ्योरी : लेस्बियन और समलैंगिक कामुकता'। क्वीर अध्ययन समलैंगिक, लेस्बियन और असंतुष्ट कामुकता और सांस्कृतिक उत्पादन के बीच संबंधों पर भी ध्यान केंद्रित करते हैं। मैकल फुकौल्ड 'History of Sexuality' में बताते हैं कोई भी चीज समाज में असमान्य हो उसे अनोखा या अजीब करार दिया जाता है जैसे समलैंगिकता। जैविक लिंग के साथ कोई भी विशेषता जन्मजात नहीं होती समाज व्यक्ति पर विशेषताएँ थोपती है। उनका मानना है कि समाज में विषमलैंगिकता का जो अधिकार है उसके पीछे पूँजीवाद का भी हाथ है।

जूडित बटलर ने अपनी किताब 'Gender Trouble' में समलैंगिकता को सामान्य माना। उनका कहना है कि इंसान की जितनी भी भूमिकाएँ हैं वह हमारी संस्कृति से हासिल करता है और मनुष्य उसे जीवन भर दुहराता है। एक व्यक्ति को लगता है कि यही सामान्य है बाकी असमान्य है। विषमलैंगिकता शब्द सबके द्वारा दुहराता जाता है इसलिए यह सामान्य लगता है और समलैंगिकता असामान्य। गायले रुबिन ने कहा है कि कभी-कभार हम कुछ लैंगिक अभिव्यक्ति को ज्यादा मान्यता देते हैं और अन्य को कम। लेकिन अन्य भी सामान्य ही है। लॉरेन कोर्ट और मिखाइल वारनेर द्वारा लिखित 'सेक्स इन पब्लिक' को क्वीर सिद्धान्त का घोषणापत्र माना जाता है। उन्होंने सेक्स को वैयक्तिक मुद्दा न बनाकर सर्वसामान्य बनाने पर ज़ोर डाला है। उनके विचार में "By queer culture we mean a world making project, 'where a world, like public' differ from community or group because it necessarily includes more people then can be identified, more spaces then can be mapped beyond a few reference points, modes of feeling that can be I earned rather than experiences as a birth right."[12] मिशेल फूको की रचना 'द हिस्ट्री ऑफ सेक्सुआलिटी' (The History of Sexuality) को क्वीर अध्ययन में मील का पत्थर माना जाता है। क्वीर सिद्धान्त को पहले समलैंगिक और लेस्बियन अध्ययन माना गया था, लेकिन बाद में 'क्वीर' शब्द को व्यापक अर्थ में लिया गया क्योंकि इसमें एल.जी.बी.टी.क्यू पहचान भी सम्मेलित हैं। क्वीर सिद्धांतकारों में एट्रियन रिच, माइकल वारनर, एलक्जेंडर दोती, डायनाफस जैसे अनेक चिंतकों ने अपना मत प्रकट किया है। क्वीर सिद्धांत का मानना है कि हर किसी को LGBTQIA + स्पेक्ट्रम का आनंद लेने का अधिकार है। यह व्यक्ति पर निर्भर करता है कि वह इस स्पेक्ट्रम में किसका आनंद ले।

क्वीर सिद्धान्त के क्षेत्र में काम करने वालों में ज्यादा स्त्रियाँ ही हैं। उनमें प्रमुख हैं माइकल वार्नर, मिखाइल वारनेर, एट्रियन रिच, लिंडा निकोल्सन, स्टीवन सैडमेन, शेनफेलन, एलक्जेंडर दोत्ती, डायना फस, जोसेफ ब्रिस्टो, एलन सिनफलिड, एड कोहेन आदि।

1.9. लिंग अभिव्यक्ति (Gender Expression)

लिंग अभिव्यक्ति से तात्पर्य यह है कि कोई व्यक्ति अपनी लिंग पहचान को बाहर कैसे व्यक्त करता है। लिंग अभिव्यक्ति में व्यक्ति अपने व्यवहार, वेशभूषा, आवाज़, केश विधान, सौन्दर्य प्रसाधन, नाम और सर्वनाम का चुनाव तथा अन्य शरीर की विशेषताओं के माध्यम से अपनी लिंग पहचान दूसरों तक पहुँचाता है।

हमारी संस्कृति में व्यक्ति को उनके निर्धारित लिंग के अनुसार व्यवहार करने, वेशभूषा धारण करने तथा लिंग के अनुरूप खुद को अभिव्यक्त करने की अपेक्षा की जाती है। लिंग अभिव्यक्ति पर सामाजिक रूढियाँ अभी भी कठोर है, जो व्यक्ति अपने लिंग अभिव्यक्ति अपने लिंग के अनुरूप व्यक्त नहीं करते उन्हें सामाजिक उत्पीड़न का शिकार होना पड़ता है। लिंग अभिव्यक्ति किसी व्यक्ति की लिंग पहचान से प्रभावित हो सकती है दोनों पर्यायवाची नहीं है। लिंग अभिव्यक्ति व्यक्ति के जैविक लिंग से जुड़ी हुई है ऐसी धारणा लोगों में है, लेकिन ऐसा नहीं है। कई व्यक्तियों में उनके जैविक लिंग के साथ लैंगिक अभिव्यक्ति संरेखित नहीं होती है। जिन व्यक्तियों की लैंगिक अभिव्यक्ति सामाजिक रुढ़ियों तथा अपेक्षाओं से मेल नहीं खाती उन्हें LGBTQA+ के रूप में पहचाना जाता है।

1.10. लिंग पहचान (Gender Identity)

किसी व्यक्ति की लिंग पहचान लिंग के बारे में उनका आंतरिक अनुभव है। कभी-कभी व्यक्ति की लिंग पहचान उनके जैविक लिंग से मेल खाती है ऐसे लोगों को सिसजेंडर कहा जाता

है। लेकिन हमेशा ऐसा नहीं होता। कई बार व्यक्ति को जन्म के समय निर्दिष्ट लिंग से उनका लैंगिक पहचान मेल नहीं खाती। ऐसे व्यक्ति ट्रांसजेंडर हो सकते हैं। किसी व्यक्ति की लिंग पहचान का अनुमान उसकी शारीरिक रचना या दिखावे से नहीं लगाया जा सकता।

1.11. यौन रुझान (Sexual Orientation)

एक व्यक्ति के यौन रुझान से अभिप्राय यह है कि वह व्यक्ति किसके प्रति रोमांटिक, भावनात्मक और यौन रूप से आकर्षण महसूस करता है। यौन रुझानों में समलैंगिक, विषमलैंगिक, उभयलिंगी, अलैंगिक, ऑटोसेक्सुअल, डेमिसेक्सुअल, ग्रेसेक्सुअल आदि शामिल हैं।

जो लोग उनके विपरीत लिंग के प्रति आकर्षित होते हैं उदाहरण के लिए महिलाएँ पुरुष के प्रति आकर्षित होती हैं, पुरुष जो महिलाओं के प्रति आकर्षित होते हैं उन्हें सीधे (straight) या विषमलैंगिक कहते हैं। जो व्यक्ति अपने ही लिंग के प्रति आकर्षित होते हैं उन्हें समलैंगिक कहा जाता है। समलैंगिक महिलाएँ लेस्बियन तथा समलैंगिक पुरुष गे कहलाते हैं। जो लोग पुरुषों तथा महिलाओं दोनों के प्रति आकर्षित होते हैं वे उभयलिंगी कहलाते हैं। जिन लोगों का यौन आकर्षण कई अलग -अलग लिंग पहचानवाले व्यक्ति तक फैला होता है उन्हें पैनसेक्सुअल कहते हैं।

जो व्यक्ति किसी के प्रति यौन आकर्षण महसूस नहीं करते वे खुद को अलैंगिक कहते हैं। जो लोग अपने यौन रुझान के बारे में अनिश्चित हैं वे स्वयं को प्रश्नवाचक या जिज्ञासु कह सकते हैं। जो लोग दूसरों की तुलना में खुद के प्रति अधिक आकर्षित होते हैं उन्हें ऑटोसेक्सुअल कहते हैं। ये साथी के साथ सेक्स करने से ज्यादा हस्तमैथुन को प्राथमिकता देते हैं। डेमिसेक्सुअल में एक व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति के साथ भावनात्मक संबंध स्थापित करने के बाद ही उसके प्रति यौन आकर्षण महसूस करता है। गेसेक्सुअल व्यक्ति आम तौर पर सीमित यौन आकर्षण महसूस करता है।

1.12. स्टोनवेल विद्रोह

संयुक्त राज्य अमेरिका तथा अन्य राज्यों में पहले समलैंगिक लोगों के साथ भेदभाव किया जाता था, उनपर अत्याचार होते रहते थे। उनकी कामुकता के कारण वे समाज में मज़ाक का पात्र बन गये। घर, परिवार तथा समाज में उनकी भावनाओं का कद्र नहीं किया गया। हमेशा यह वर्ग जिसमें ट्रांसजेंडर, गे, लेस्बियन, बाइसेक्सुअल आदि अन्य वर्ग शामिल हैं वे अपने मानवाधिकार के लिए तरसते रहें। आज जो सम्मान इन्हें प्राप्त है उसका श्रेय स्टोनवेल दंगा को जाता है। पहले अमेरिकी संविधान ने समलैंगिकता तथा समलैंगिक संबंधों पर प्रतिबंध लगा दिया था। पुलिस हमेशा क्वीर लोगों को तंग करते और हमेशा क्वीर बार पर छापा मारती थी। यह वर्ग पुलीस के अत्याचार से परेशान रहता था। समलैंगिकता पर जो प्रतिबंध लगाया गया जिसके कारण उन्हें पुलीस की पिटाई तथा उत्पीड़न का सामना करना पड़ा। संयुक्त अमेरिका न्युयोर्क के ग्रीनवीच विलेज में स्टोनवॉल क्वीर बार में पुलिस अक्सर छापा मारती तथा उन्हें परेशान करती थी। 28 जून 1969 को पुलिस के अत्याचार से आक्रोशित समलैंगिक लोगों ने पुलिस का विरोध किया और पुलिस से संघर्ष किया। यह वर्ग अपने यौन रूझान के बारे में खुले तौर पर और गिरफ्तारी के डर के बिना जीने की अधिकार की माँग करने लगा। यह दंगा स्टोनवेल दंगा कहलाया गया।

विद्रोह के एक साल बाद, 28 जून 1970 को वर्षगांठ मनाने के लिए, पहला, समलैंगिक गौरव मार्च शिकागो, लॉसएंजिल्स, न्यूयार्क और सैन फ्रांसिस्को में हुआ। इस घटना के बाद अमेरिका तथा दुनिया के अन्य भागों में समलैंगिक अधिकार संगठनों की स्थापना हुई। स्टोनवेल दंगे के सम्मान में हर साल जून में दुनिया भर में एल जी बी टी प्राइड परेड तथा प्राइड मंत होते आए हैं, यह जागृति पैदा करने भेदभाव रोकने आदि के लिए है।

1.13. चार वर्गों में विभक्त ट्रांसजेंडर

ट्रांसजेंडर समूह को चार वर्गों में विभाजित किया जाता है, वे हैं - बुचरा, नीलिमा, मनसा और हंसा। बुचरा जन्मजात ट्रांसजेंडर हैं। नीलिमा ये ट्रांसजेंडर तन के स्थान मानसिक तौर पर स्वयं को विपरीत लिंग अथवा अक्सर स्त्रीलिंग के अधिक निकट महसूस करते हैं। हंसा इस वर्ग के ट्रांसजेंडर शारीरिक कमी के कारण या नपुंसकता के कारण ट्रांसजेंडर बने हैं। नकली ट्रांसजेंडर को अबुआ कहते हैं। जो धन के लिए ट्रांसजेंडर होने का ढोंग रचते हैं। जबरन बनाये गये ट्रांसजेंडर को छिबरा कहते हैं। लिंगोच्छेदन कर इन्हें ट्रांसजेंडर बनाया जाता है।

1.14. चिकित्सा द्वारा लिंग परिवर्तन

जो ट्रांसजेंडर चिकित्सा की सहायता से लिंग परिवर्तन करते हैं उन्हें ट्रांससेक्सुअल कहते हैं। पारलैंगिक पुरुष तथा पारलैंगिक स्त्री हमेशा अपने मनचाहे शरीर पाने को तरसते हैं। इसके लिए वे सर्जरी कराते हैं। ट्रांसवुमन बनने के लिए हॉर्मोन रिप्लेसमेंट थरेपी की जाती है, जिसके द्वारा दाढ़ी और मूँछों के बाल खत्म कर दिये जाते हैं। ब्रेस्ट ऑग्मेंटेशन के ज़रिए स्तनों को विकसित किया जाता है। अब तो गर्भाशय को भी प्रत्यारोपित करते दिखाई पड़ता है। फेशियल फेमिनिज़्म सर्जरी द्वारा स्त्री के जैसा चेहरा प्राप्त कराया जाता है। इसी तरह पारलैंगिक पुरुष भी चिकित्सा के जरिए मनचाहा शरीर प्राप्त कर सकता है। पुरुष हॉर्मोन के ज़रिए मासिक धर्म रोक दिया जाता है। बाइलैटरल मैस्टेक्टोमी से स्तनों को हटा दिया जाता है और हिस्टेरेक्टोमी के जरिए पुरुष जननांगों को विकसित किया जाता है। चेस्ट कन्टूरिंग से पुरषों जैसा वक्ष की सृष्टि की जाती है।

यह शल्य चिकित्सा बहुत ही महंगी है। अशिक्षित बेरोज़गार ट्रांसजेंडर लोगों के लिए यह चिकित्सा भारी पड़ती है। मन के अनुसार शरीर प्राप्त करने की चाह होते हुए भी पैसों की कमी के कारण ये लोग ऐसी चिकित्सा करवा नहीं पाते। आज भारत में सरकार की ओर से मुफ्त

में शल्य चिकित्सा प्रदान कराई जा रही है, यह इनके लिए अच्छी बात है। अनेक ट्रांसजेंडर तो इस चिकित्सा हेतु गैर कानूनी काम व सेक्स वर्क करने के लिए मजबूर होते हैं। हमारी सरकार को इन्हें शल्य चिकित्सा उपलब्ध कराने के लिए उचित कदम उठाना है, आर्थिक रूप से इनकी सहायता करनी है।

1.15. किन्नर - अर्थ एवं परिभाषा

किन्नर हिमालय के क्षेत्रों में बसनेवाली एक मनुष्य जाति का नाम है। लेकिन वर्तमान समय में ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों के लिए किन्नर शब्द का प्रयोग किया जाता है। पहली बार मध्यप्रदेश के विधायक शबनम बानो, जो ट्रांसजेंडर है उनके नाम के साथ किन्नर शब्द जोड़ा गया। ट्रांसजेंड़रों के लिए समाचार पत्रों में उस समय किन्नर शब्द का प्रयोग किया गया तथा फिल्म निर्देशक मधुर भंडारकर की 'ट्रैफिक सिग्नल' फिल्म में भी ट्रांसजेंडर को किन्नर नाम से संबोधित किया गया। जिसपर हिमाचल सरकार ने इस फिल्म को बैन कर दिया। ट्रांसजेंडरों के साथ किन्नर शब्द जोड़ने पर हिमाचल प्रदेश में बड़े पैमाने में विरोध हुआ। लेकिन आज ट्रांसजेंडरों के लिए किन्नर शब्द का प्रयोग सामान्य हो गया है।

पौराणिक ग्रंथों, वेदों, पुराणों और साहित्य में किन्नर हिमालय क्षेत्र में बसनेवाली महत्वपूर्ण आदिम जाति है। किन्नर से स्पष्ट होता है कि उनकी योनि और आकृति पूर्णतः मनुष्य की नहीं है। किन्नरों की उत्पत्ति के बारे में माना जाता है कि किन्नर ब्रह्म की छाया अथवा उनके पैर के अँगूठे में उत्पन्न हुए हैं। दूसरा मत यह है कि अरिष्टा और कश्यप उनके आदिजनक थे। इनका प्रमुख निवास स्थान कैलाश शिखर पर था, ये शंकर की सेवा करते थे। ऐसा माना जाता है कि ये यक्षों और गंधर्वों की तरह नृत्य और गायन में निपुण थे।

महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने 'किन्नर देश में' नामक अपने यात्रा विवरण में किन्नर को देवयोनि कहा है। उनका 'किन्नर देश में' तथा 'हिमाचल' पुस्तकों में किन्नरदेश और वहाँ

की किन्नर जाति के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व के बारे में विवरण है। डॉ.बंशीराम शर्मा का शोध ग्रंथ 'किन्नर लोक साहित्य' वर्तमान किन्नौर में रहने वाले निवासी किन्नर जाति से संबंधित है। डॉ. कन्हैयालाल मणिक लाल मुन्शी ने कहा है कि किन्नर हिमाचल प्रदेश के क्षेत्र में रहते हैं। वहाँ की महिलाएँ, जो बहुत सुन्दर होती हैं उन्हें किन्नरियाँ कहा जाता है। मत्स्य पुराण के अनुसार किन्नर हिमवान पर्वत के निवासी हैं। हरिवंश पुराण में बताया गया है कि किन्नरियाँ फूलों तथा पत्तों से श्रृंगार करती थीं और वे नृत्य तथा गायन में दक्ष थीं। महाभारत के दिग्विजय पर्व में अर्जुन का किन्नरों के देश में जाने का वर्णन मिलता है। लेखक टेसी छेरिंग नेगी ने अपने दो पुस्तक, 'किन्नरी सभ्यता और साहित्य', 'किन्नर देश का इतिहास' में किन्नर देश की सभ्यता तथा इतिहास को उजागर किया है। एस. आर. हरनोट की 'यात्रा - किन्नौर, स्पति लाहुल और मणिमहेश पर सांस्कृतिक और ऐतिहासिक यात्राएँ, तथा 'हिमाचल के मंदिर और उनसे जुड़ी लोक कथाएँ' में उन्होंने किन्नौर और किन्नर इतिहास की झाँकियाँ प्रस्तुत की हैं। ऐसे ही अनेक साहित्यकारों, विद्वानों ने अपने पुस्तकों, यात्रावृत्तान्तों, शोध ग्रंथों, लेखों द्वारा हिमाचल प्रदेश के किन्नर देश और किन्नौर में रहनेवाली किन्नर जनजाति का उल्लेख किया है।

1.16. ट्रांसजेंडर विमर्श : ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

प्राचीनकाल से लेकर ट्रांसजेंडर समुदाय का अस्तित्व हमारे समाज में रहा है। इतिहास पर दृष्टि डाले तो पता चलता है प्राचीन काल में इनका समाज में सम्मानजनक स्थान रहा था। भारत में अंग्रेज़ों के आगमन के पश्चात इन्हें हाशिएकृत बनाया गया। रामायण, महाभारत, मनुस्मृति, पाणिणी कृत अष्टाध्यायी, कामसूत्र, वायुपुराण, मध्यकाल आदि पौराणिक प्रसंगों में इनका उल्लेख हमें देखने को मिलता है।

1.16.1. रामायण

ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों के बारे में पुराणों में कई कथाएँ देखने को मिलती हैं। उनमें भगवान राम के वनगमन से संबंधित कथा बडा ही प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि राम सीता और लक्ष्मण पिता की आज्ञा के अनुसार जब चित्रकूट गए तब उन्हें मनाकर वापस अयोध्या लाने के लिए भरत अयोध्यावासियों के साथ चित्रकूट पहुँच गये। सभी ने उनसे अयोध्या वापस चलने की प्रार्थना की। लेकिन प्रभु राम ने उनकी प्रार्थना अस्वीकार करते हुए सभी नर नारियों को वापस जाने को कहा। परन्तु उन्होंने ट्रांसजेंडर के लिए कुछ नहीं कहा कि उन्हें जाना है या वहाँ रुकना है। कहा जाता है कि उनके लिए भगवान राम द्वारा कोई निर्देश न दिये जाने के कारण उन लोगों ने 14 वरषों तक वहीं रुककर प्रभु राम के वापस आने की प्रतीक्षा की। वनवास पूर्ण होने पर जब भगवान राम अयोध्या आ रहे थे तब चित्रकूट में उन्होंने इन्हें पाया। उनके वहाँ रुकने का कारण पूछने पर ट्रांसजेंड़रों ने बताया कि वे भरत के साथ उन्हें मनाने के लिए आये थे तब आपने कहा-

"जथा जोगु करि विनय प्रनामा, बिदा किए सब सानुज रामा।
नारि पुरुष लघु मध्य बड़ेरे, सब सन्मनि कृपानिधि फेरे॥"[13]

यह सुन कर प्रभु राम ट्रांसजेंडर लोगों के निश्छल तथा निःस्वार्थ भक्ति से अत्यधिक प्रभावित हुए तथा उन्होंने प्रसन्न होकर उन्हें वरदान दिया के वे कलियुग में राज करेंगे और उन्हें यह भी वरदान दिया कि उनके द्वारा दिया गया आशिर्वाद फलीभूत होगा कभी किसी का अनिष्ट नहीं होगा। इसी कारण शुभ मौकों पर सभी लोग इनके आशिर्वाद के लिए इनका स्वागत करते दिखाई पड़ते हैं।

रामचरित मानस में एक ओर जगह इनका उल्लेख है। भगवान राम भक्ति के प्रसंग में कहते हैं –

"पुरुष नपुंसक नारि वा, जीव चराचर को।
सर्व भाव भज कपट तजि, मोहि परम प्रिय सोई॥"[14]

अर्थात कोई भी जीव-पुरुष, नपुंसक या नारि यदि मुझे सभी प्रकार के कपट को त्याग करके भजता है, वह मुझे परम प्रिय है। रामायण तथा रामचरितमानस के मंगलाचरण तथा मंगलगीतों में ट्रांसजेंडर समुदाय का वर्णन मिलता है।

"जड़ चेतन जग जीव, जत सकाल राममय जानि।
बंदउं सब के पद कमल, सदा जोरि जुग पानि॥
देव दनुज नर नाग खग, प्रेत पिंतर,गंधर्व।
बंदउ किंनर रजनिचर, कृपा करहु अब सर्व॥"[15]

यहाँ अन्य सभी के साथ ट्रांसजेंडर की भी वंदना किया जाता है।

रामचरितमानस में श्रीराम के धनुष भंग तथा उसके बाद जयमाला के समय और लंका में विजय प्राप्त करने के बाद अयोध्या में राजतिलक के समय जो मंगल गीत गाया गया उसमें इनका वर्णन मिलता है।

"ब्रह्मदिक सुर सिद्ध मुनीसा। प्रभुहि प्रसंसहि देहि असीसा।
बरिसहि सुमन रंग बहुमाला। गावहि किन्नर गीत रसाला॥"[16]
"पुर अरू व्योम बजने बाजे। खल भए मिलन साधु सब राजे॥
सुर किन्नर नर नाग मुनीसा। जय जय जय कहि देहिं असीसा॥"[17]

अयोध्या में राजतिलक के समय श्रीराम की के जब सम्मान का आयोजन होता है उसमें गंधर्व किन्नर अप्सराओं द्वारा नाच गाना होता है जिसका वर्णन इस प्रकार है-

"विप्रन दान विविध विधि दीन्हे।

जाचक सकल अजाचक कीन्हें॥

सिंघासन पर त्रिभुनसांई।

देखि सुरन्ह दुंदुभी बजाई॥

नभ दुंदुभी बजहि विपुल गंधर्व किन्नर गावहीं।

नाचहिं अपछरा बृंद परमानन्द सुर मुनि गावहीं॥"[18]

तुलसीदान ने अपने रामचरितमानस में उन्हें सम्मानजनक स्थान दिया है।

1.16.2. शिखण्डी कथा

महाभारत में शिखण्डी का उल्लेख मिलता है, जो ट्रांसजेंडर माना गया है। वास्तव में शिखण्डी अपने पूर्वजन्म में काशी की राजकुमारी अंबा थी। जब अंबा और उसकी बहनों का स्वयंवर चल रहा था तब भीष्म ने उसका और उसकी बहनों का अपहरण कर लिया और हस्तिनापुर ले आए। भीष्म हस्तिनापुर के राजा चित्रांगद से अंबा का शादी कराना चाहते थे, लेकिन अंबा पहले से शाल्व नरेश से प्रेम करती थी। अंबा ने चित्रांगद से विवाह करने से मना कर दिया। भीष्म ने सम्मानपूर्वक अंबा को शाल्व नरेश के पास भेजा, लेकिन अपहृत होने की वजह से शाल्व नरेश ने अंबा को अपनाने से मना कर दिया। इन घटनाओं के बारे में जब नाना राजर्षि होत्रवाहन का पता चलता है, वे अंबा को परशुरामजी से मिलने का निर्देश देते हैं। परशुरामजी ने भीष्म से अंबा से शादी करने को कहा लेकिन भीष्म ने इन्कार कर दिया क्योंकि उन्होंने ब्रह्मचर्य का पालन करने की प्रतिज्ञा की थी। परशुराम को इसपर बुरा लगा उन्होंने भीष्म से युद्ध किया लेकिन वे भीष्म द्वारा पराजित हो जाते हैं। अंबा भीष्म के नाश के लिए यमुना किनारे तप करती है तथा वहाँ अपना शरीर त्याग देती है।

अगले जन्म में अंबा वत्सदेश के राजा के यहाँ जन्म लेती है। अंबा अपने पूर्वजन्म के बारे में जानती थी, इसलिए वह भीष्म से बदला लेने भगवान शिव की तपस्या करती है। भगवान शिव से उसे वरदान मिलता है कि वह अगले जन्म में पुनः एक स्त्री के रूप में जन्म लेगी लेकिन युवा होने पर पुरुष बन जायेगी और भीष्म की मृत्यु का कारण बनेगी। वरदान मिलने के बाद वह चिता बनाकर अग्नि में प्रवेश कर जाती है।

शिव के वरदान के अनुसार अगले जन्म में उसका जन्म राजा द्रुपद के यहाँ शिखण्डी के रूप में हुआ। युवा बनने पर एक यक्ष ने उसकी सहायता करने के लिए अपना पुरुषत्व उसे दे किया और उसका स्त्रीत्व स्वयं धारण कर लिया। कार्य पूर्ण होने पर पुरुषत्व उस यक्ष को लौटाने का वचन शिखण्डी ने दिया। महाभारत के युद्ध के समय शिखण्डी अर्जुन के साथ पाण्डवों की ओर से लड़ता है। वह अर्जुन के साथ रथ पर सवार होकर भीष्म पितामह के सामने आता है। भीष्म पितामह ने स्त्रियों पर शस्त्र नहीं उठाने की प्रतिज्ञा की थी।

पाण्डवों द्वारा भीष्म पितामह को पराजित करने का उपाय उनसे ही पूछने पर वे स्वयं को पराजित करने के संबंध में बताते हैं-

> “शिखण्डी समरामर्षी सूरश्च स्त्रमितिंजय।
> यथा भवत्स्त्री पूर्व पश्चात पुसंत्व समागतः ॥
> जानन्ति च भ्रवन्तोऽपि सर्वमेतदय थातथम्।
> अर्जुनःसमरे शुरःपुरस्कृत्य शिखण्डिनम् ॥”[19]

अर्थात् युद्ध में शूरवीर शिखण्डी जो पहले स्त्री था बाद में पुरुष बन गया, उस शिखण्डी को आगे करके अर्जुन द्वारा मुझ पर प्रहार करने पर मैं प्रहार नहीं करूँगा। क्योंकि मै उसे स्त्री के रूप में देखता हुँ। उनके कहे अनुसार अर्जुन ने शिखण्डी को ढाल बनाकर भीष्म से युद्ध किया

शिखण्डी को सामने देखकर भीष्म पितामह, मैं नपुंसक से युद्ध नहीं कर सकता कहकर शस्त्र नीचे डाल देते हैं-

> "शिखांडेनं तमासाध भरतानां पितामहः ।
> अवर्यतज्ज संग्राम स्त्रीत्वम तस्यात्रुसंस्मरन ॥"[20]

1.16.3. महाभारत

महाभारत की एक कथा के अनुसार युधिष्ठिर ने पाँचों पाण्डव के बीच एक नियम बनाया था कि द्रौपदी एक साल तक केवल एक पांडव की पत्नी होगी इस एक साल तक कोई दूसरा पांडव उसके कक्ष में प्रवेश नहीं कर सकता, यदि कोई प्रवेश करता है तो उसे एक साल का वनवास भोगना पड़ेगा । जिस वर्ष द्रौपदी युधिष्ठिर की पत्नी बनी थी, उस समय अर्जुन किसी दुष्ट से ब्राह्मण के पशुओं की रक्षा के लिए द्रौपदी के कक्ष से अपना धनुष लेते हैं । शर्त का उल्लंघन करने के कारण अर्जुन अपनी मर्जी से ही वनवास चले जाते हैं ।

वनवास के दौरान उनकी मुलाकात विधवा नाग राजकुमारी उलूपी से होता है । दोनों एक दूसरे से मोहित होते हैं और विवाह करते हैं । उलूपी से उनको एक पुत्र होता है जिसका नाम अरावन रखा जाता है । वनवास का समय समाप्त होने पर अर्जुन वहाँ उन दोनों को छोड़कर चले जाते हैं । अरावन का पालन पोषण नागकुल में हुआ । युवा होने पर वह नागलोक छोड़कर अपने पिता के पास आता है, उस समय कुरुक्षेत्र में महाभारत युद्ध चल रहा था, अर्जुन के साथ वह युद्ध में भाग लेता है ।

महाभारत युद्ध में एक समय ऐसा आया जब पांडवों को जीतने के लिए माँ काली के चरणों में नरबलि देने एक राजकुमार की ज़रूरत पड़ती है । कोई भी इसके लिए तैयार नहीं होता । अंत में अरावन राजी होता है । लेकिन नरबली से पहले उसने अपनी एक शर्त रखी कि वह मरने

से पहले शादी करना चाहता है । अरावन से शादी करने कोई तैयार नहीं होता क्योंकि शादी के बाद उसका मरना सुनिश्चित था । इस कारण भगवान श्रीकृष्ण उनकी इच्छा पूरी करने के लिए मोहिनी रूप धारण कर राजकुमार अरावन से विवाह करते हैं । यही कारण है कि आज ट्रांसजेंडर अरावन को अपना एक दिन का पति मानकर उनसे विवाह करती हैं, क्योंकि श्रीकृष्ण उस दिन पुरुष से स्त्री बने थे, ट्रांसजेंडर भी अपने आप को एक दिन की मोहिनी मान अरावन या इरावन को पूजती हैं ।

श्रीकृष्ण के कहने के अनुसार अरावन अपने शरीर को 32 हिस्सों में काटकर काली को अर्पित करता है, इस बलि से संतुष्ट होकर काली अवतरित होती है और उन्हें विजयी होने का आशिर्वाद देती है साथ ही अरावन सशरीर वापस आते है तथा अरावन युद्ध में कई योद्धाओं को परास्त करता है । अंत मे युद्ध के 18 वें दिन अलम्बुष नामक राक्षस द्वारा अरावन का वध होता है । अरावन को इरावन भी कहते हैं । भारत का ट्रांसजेंडर समुदाय इस कथा के अनुसार श्रीकृष्ण द्वारा बने मोहनी स्वयं है मानकर अरावन को अपना पति मानती हैं तथा अरावन के मरने पर विधवा बनकर उसके लिए रोती हैं । तमिलनाडु के विल्लुपुरम जिले के कूवागम गाँव में अरावन देवता का मांदिर है ।

1.16.4. इल कथा

पुराणों में ट्रांसजेंडर कथाओं में एक प्रमुख कथा है राजा इल की कथा । वैवस्वत मनु के दस बेटों में एक था राजा इल । राज इल एक बार अपनी सेनाओं के साथ शिकार करने अंबिका वन पहुँचे, वहाँ वे पुरुष से स्त्री बन गए । अंबिका वन के बारे में कहा जाता है कि यहाँ भगवान शिव, देवी पार्वती के साथ वन विहार करते थे । एक बार भगवान शिव और पार्वती वन विहार कर रहे थे, दोनों प्रेमालाप में लीन थे । उस वक्त ऋषियों का एक समूह वहाँ पहुँच गया, जिन्हें देख पार्वती शरमा गई थी । जिससे भगवान शिव रुष्ट हुए तथा उन्होंने शाप दिया कि आज से जो पुरुष

इस वन में प्रवेश करेगा, वह स्त्री हो जाएगा तब से वह अम्बिका वन शिव - पार्वती का सुरक्षित प्रणय स्थल बन गया। कोई भी पुरुष वहाँ जाते नहीं थे। राजा इल ने जब शिकार करते हुए अम्बिका वन में प्रवेश किया तब वे भगवान शिव के शाप का शिकार बन गए। उनके साथ-साथ वहाँ आये सेना भी स्त्री बन गए घोडा घोड़ी बन गया।

अपनी इस हालत पर राजा को बहुत दुःख हुआ। उन्होंने अपना नाम इल से इला रख दिया और वे जंगल में रहने लगे। वन विहार करती इला चंद्रमा का बेटा बुध से मिली। दोनों एक दूसरे पर मोहित हुए तथा दोनों ने विवाह कर लिया। राजा बुध और इला आश्रम में रहने लगे तथा सखियाँ एक पर्वत पर रहने चली गई। इन दोनों को एक बेटा पैदा हुआ जिसका नाम पुरूरवा था। एक दिन दुखी इला ने अपने बेटे पुरूरवा से अपनी पुरुष से स्त्री बनने की कहानी सुनाई। राज बुध को भी यह कहानी पता था उन्होंने अपने बेटे से कहा कि भगवान शिव और देवी पार्वती की कृपा होने पर मुक्ति संभव है, और बुध ने बेटे से गौतमी गंगा नदी के तट पर जाकर शिव और पार्वती की आराधना करने को कहा। पिता के कहे अनुसार पुरूरवा गौतमी गंगा नदी के तट पर भगवान शिव और पार्वती की स्तुति करता है। उससे प्रसन्न होकर भगवान शिव और पार्वती प्रकट होते हैं तथा उसे उससे वर माँगने को कहते हैं। पुरूरवा उनसे अपनी माँ को इला से इल बनाने का वरदान माँगता है। भगवान शिव पुरूरवा को वरदान देते हैं कि राजा इल गौतमी गंगा में स्नान करने के बाद पुनः अपने वास्तविक रूप में आ पाएगा।

1.16.5. सिद्ध-सिद्धान्त पद्धति

नाथ संप्रदाय के प्रवर्तक गोरखनाथ द्वारा रचित सिद्ध-सिद्धान्त पद्धति ग्रंथ में भी ट्रांसजेंडर वर्ग का जिक्र है। सिद्ध-सिद्धान्त पद्धति में छः अध्याय या उपदेश हैं। इनमें पिण्ड की उत्पत्ति अध्याय में ट्रांसजेंडर के जन्म के विषय पर विचार प्रस्तुत किया गया है।

"शुक्राधिकेषु पुरूष, रक्ताधिका कन्यका, समशुक्र रक्ताभ्यां नपुंसकः।"[21]

इसका अर्थ है कि स्त्री-पुरुष के संभोग के समय यदि स्त्री के गर्भ में पुरुष का वीर्य अधिक संचित हो तो पुरुष शरीर उत्पन्न होगा, यदि स्त्री का रज अधिक संचित हो तो कन्या उत्पन्न होगी और अगर स्त्री का रज और पुरुष का वीर्य समान मात्रा में हो तो नपुंसक पैदा होगा।

1.16.6. मनुस्मृति

मनुस्मृति भारतीय आचार संहिता का विश्वकोश है। इसमें बारह अध्याय तथा दो हज़ार पाँच सौ श्लोक हैं। मनुस्मृति का स्थान हिन्दु समाज में वेदत्रयी के उपरान्त माना जाता है।

मनुस्मृति में मनुष्य शरीर के तीन लिंगों के बारे में बताया गया है।

"पुसान्पुसोऽधि के शुके स्त्री भवत्यधिके स्त्रियाः।
सले पुसान्पुंस्त्रियौ व क्षीऐऽल्पे च विपर्ययः॥"[22]

अर्थात् पुरुष का वीर्य अधिक होने पर पुत्र और स्त्री के अधिक रज होने पर कन्या होती है और दोनों के समान रूप से होने पर नपुंसक संतान व जुड़वा पैदा होते हैं।

ट्रांसजेंड़रों से संबंधित और एक विवरण मनुस्मृति में है -

"देत्यादानव्यक्षाणाँ गान्धर्वोरगरक्षसाम्
सुपर्ण कित्तराणां च स्मृता बहिर्षदौत्रिजाः॥"[23]

अर्थात् अत्रि के पुत्र बहिर्षद दैत्य दानव, यक्ष, गंदर्भ, नाग, राक्षस, सुपर्ण और किन्नरों के पितर हैं।

1.16.7. वायुपुराण

वेदव्यास ने वायुपुराण की रचना की। शिव उपासना की चर्चा ज़्यादा होने से यथा इसे शिवपुराण का दूसरा अंग माना जाता है। वायुपुराण में ट्रांसजेंड़रों के बारे में परामर्श किया गया है। इसमें कहा गया है कि ये हरि अर्थात् परमेश्वर के गर्भ से उत्पन्न हुए हैं-

हरेस्तु हरयः पुत्राः गोलांगूलतरक्षवः।

"वानराःकिन्नराश्चैव व्याघ्राः किपुरूषास्तथा।

इत्येवमादयोऽन्येपि विरामत्या निबोधत।।"[24]

इस श्लोक का अर्थ है कि हरि के गर्भ से वानर आदि पशुओं के साथ-साथ किन्नरों की भी उत्पत्ती हुई। वायुपुराण के 37 श्लोक में इन्हें महात्मा शब्द से संबोधित करके इन्हें नृत्य तथा गीत में प्रवीन माना गया है।

"नृत्यगीतप्रल भानामेतेषां द्विजशत्तमाः।

लोके गणशतान्येव किन्नराणां महात्मानम।"[25]

1.16.8. अष्टाध्यायी

पाणिनी द्वारा रचित व्याकरण ग्रंथ है अष्टाध्यायी। यह संस्कृत भाषा में लिखा गया है। अष्टाध्यायी का रचनाकाल 700 ई.वी.पूर्व माना जाता है। इसमें आठ अध्याय है तथा प्रत्येक अध्याय में चार पद हैं, प्रत्येक पद में 38 से 220 तक सूत्र हैं। अष्टाध्यायी के खिल भाग में पाणिनी ने पुरुष, स्त्री तथा नपुंसक भेद का वर्णन किया है -

"स्तनकेशवती स्त्री स्याल्लोमशःपुरुषःस्मृतः।

उभयोरन्तरं यच्च तदभावे नपुंसकम।

लिंगात्स्त्री पुसंयोज्ञाने भुकुंसेटाप् प्रसज्यते।

नत्वं खरकुटीःपश्च खट्वावृक्षौनसिद्यतः।

नापुंसकं भवेत् तस्मिन तदभावे नपुंसकम्।।"[26]

अर्थात् जिसके शरीर पर स्तन तथा केश उत्पन्न हो वह स्त्री है तथा जिसके शरीर पर रोए उभरते हो वह पुरुष है, और जिसमें स्त्री व पुरुष दोनों का गुण न हो वह नपुंसक है।

1.16.9. कामसूत्र

कामसूत्र के रचयिता वात्स्यायन है। इसका रचनाकाल पाँचवी सदी माना जाता है तथा इसकी भाषा संस्कृत है। वात्स्यायन कृत कामसूत्र में ट्रांसजेंडर समाज का वर्णन देखने को मिलता है। इस ग्रंथ में इन्हें तृतीया प्रकृति नाम से संबोधित किया गया है। न तो ये पूर्ण पुरुष है न ही पूर्ण स्त्री। स्त्री पुरुष से भिन्न तृतीया प्रकृति है। केश संवारना, घरेलू नौकर, मालिश करना, फूल विक्रेता, राजपरिवारों में रानियों की सुरक्षा करना इनका काम था।

> "भिन्नत्वात्तृतीयाप्रकृतिःपञ्चमीत्येके॥
> भित्रेति। तृतीयाप्रकृतिः नपुंसक; स्त्रीत्क्पुस्त्वाभावाद्रिघतेतत्र
> चौपारिष्टिककर्मणा सुखलाभात, तेनरूपप्यापारभेदात्पञ्चमीत्येके
> न्यथासुखकार्यत्वाद्देश्याविशेष एव॥"[27]

1.16.10. मध्यकालीन युग में ट्रांसजेंडरों की भूमिका

मध्यकाल में ट्रांसजेंडर सामाजिक -धार्मिक कार्यों में अपनी भूमिका अदा करते थे। मारवाड़ राज्य में विवाह के पश्चात राजकुमारियों को ससुराल सुरक्षित पहुँचाने का कार्य उनकी जिम्मेदारी थी। जनानी ड्योढ़ी की महिलाएं बाहर जाते वक्त उन्हें ये सुरक्षा प्रदान करते थें। राजपरिवार में होनेवाले शवसंस्कार के कर्मों में इनकी उपस्थिति रहती थी। ट्रांसजेंडर ज्यादातर रानियों और प्रशासनिक अधिकारियों के मध्य काम करते थे। त्योहार तथा मांगलिक कार्यों के संपन्न होते वक्त वहाँ ये रहते थें। मारवाड़ राज्य में पहले सती प्रथा कायम थी, तब सती से संबंधित व्यवस्था इनके द्वारा की जाती थी। राजा की मृत्यु होने पर कभी-कभार ट्रांसजेंडर सती भी हो जाते थे। जयपुर के राजा जगतसिंह की मृत्यु होने पर दो ट्रांसजेंडरों ने सत किया था।

राजपरिवार में जब संतान का जन्म होता तब उसकी खबर महाराज को ट्रांसजेंडर देते थे। किसी की मृत्यु की खबर भी ट्रांसजेंडर द्वारा दी जाती थी, अगर किसी राजा की मृत्यु होती तब

वह मृत्यु की सूचना जनानी ड्योढ़ी में देता। राजपरिवार में शादी के अवसर में विवाह के समय दिये जाने वाले आभूषणों का खबर ट्रांसजेंडर रखता था। राजा की मृत्यु होने पर हरम के जेवर आदि ट्रांसजेंडर द्वारा खजाने में जमा किये जाते थे। महलों में उत्सवों के समय इनकी भूमिका महत्वपूर्ण रहती थी। सबकुछ का बंदोबस्त ये करते थे। मेहमानों की खतिरदारी करने की जिम्मेदारी इन्हीं पर था। जनानी ड्योढ़ी का पूर्ण उत्तरदायित्व इनपर निर्भर था। जनानी ड्योढ़ी के अलावा प्रशासन में भी ये अनेक उतरदायित्व का निर्वाह करते थे। मध्यकालीन दरबारों में इनका वर्चस्व दृढ़ था।

1.16.11. मध्यकाल में कला तथा साहित्य में ट्रांसजेंडरों का योगदान

मध्यकाल में कला तथा साहित्य के क्षेत्र में ट्रांसजेंडर समुदाय के लोग निपुण रहें थें। मध्यकालीन भारत में कई इमारतों, खानकाह, मस्जिद, जलाशयों तथा उद्यानों के निर्माण में इनका योगदान रहा है। अकबर के शासनकाल में एतमादखां नामक ट्रांसजेंडर ने आगरा से 6 कोस दूर अपने नाम पर एतमादपुरा का निर्माण किया था। जहांगीर के समय हिलाल नाम का ट्रांसजेंडर था, वह प्रभावशाली निर्माता था। उसने भी अपने नाम पर हिलालबाद नामक गाँव बसाया। ये उच्चकोटी के निर्माता रहे थे। दिल्ली के मेहरोली क्षेत्र में'हिजड़ों की खानकाह' का निर्माण हुआ था। लोदी वंश के शासनकाल में यहाँ ट्रांसजेंडरों को दफनाया गया था। इस खानकाह का मुख्य प्रवेश संकरा था, वहाँ सफेद-रंगीन मकबरे थे जो ट्रांसजेंडरों के थे। मुगल शासक जहांगीर के समय सूफी संत ख्वाजा काफूर के मकबरे का निर्माण ट्रांसजेंडर एतबार खां ने किया। एतबार खां जहांगीर के हरम का ट्रांसजेंडर था। जहांगीर ने उसे 'ममुताज खान' की उपाधि दी थी। एतबार खां का मकबरा जिसका नाम 'राऊजा' है जो उसके द्वारा निर्मित मस्जिद के पास ही है।

जौनपुर के इतिहास में ट्रांसजेंडर मलिक सरवर का नाम प्रसिद्ध है। उसने बड़ी मंजिल का निर्माण, होज नाम के जलस्रोत के पास करवाया था,जिसे सिकन्दर लोदी ने बाद में तहस-नहस कर दिया। मुगल बादशाह मुहम्मदशाह रंगीला के यहाँ के ट्रांसजेंडर नाज़िर ने 'बाग-ए-नाज़िर' (नाज़िर का बगीचा) का निर्माण करवाया था। दिल्ली में स्थित मध्यकालीन भारत का सुन्दर स्मारक 'सुनहरी मस्जिद' का निर्माण शासक अहमदशाह की पत्नी कुदसिया बेगम के यहाँ के प्रमुख ट्रांसजेंडर जावेद खां की देखरेख में हुआ था। चांद बाबड़ी जो जोधपुर शहर में स्थित है उसका निर्माण ट्रांसजेंडर चहुवाणबुहाण के नेतृत्व में हुआ था। महाराजा मानसिंह के शासनकाल में उदयमंदिर में श्रीनाथ जी के मंदिर का निर्माण ट्रांसजेंडर इमरतराम ने करवाया था। महाराजा तखतसिंह के शासन काल में गुलाबसागर के बगीचे के आगे स्थित राजमहल का निर्माण ट्रांसजेंडर ने करवाया था।

मुगलकाल में ट्रांसजेंडरों ने साहित्यिक क्षेत्र में भी अपनी निपुणता प्रकट की है। औरंगजेब के शासनकाल में बख्तावर खां ने 'विरात उल आलम' की रचना की। वे एक उच्चकोटि के विद्वान थे। उन्होंने'मिराज ए जहां नुमा' इतिहास ग्रंथ लिखा तथा 'तारीख ए अलफी' एवं अकबर उल्ल आखियार का संक्षिप्तकरण भी किया। बीकानेर का ट्रांसजेंडर आनंदराम ने श्रीधर टीका के आधार पर गीता का गद्य और पद्य दोनों में अनुवाद किया। ट्रांसजेंडर आनंदराम द्वारा रचित 'गीतामहातम्य' की प्रति अनूप संस्कृत पुस्तकालय, बीकानेर में प्राप्त है। ट्रांसजेंडर मायाराम की कृति 'देवी जी रा छन्द' यहाँ उपलब्ध है। जोधपुर के ट्रांसजेंडर हरकरण ने 'कृष्ण-पद' की रचना की जिसमें उसने अपने गुरु लालबाबा की अर्चना की है। मुगलों के समय देखें तो हमें मिलता है कि ट्रांसजेंडर समुदाय के लोग कला तथा साहित्य के क्षेत्र में निपुण थें।

1.16.12. हरम तथा ट्रांसजेंडर

मध्यकाल में ट्रांसजेंडरों को हरम की देखरेख का काम सौंपा जाता था। एक पुरुष की अनेक स्त्रियों के रहने की जगह को हरम कहते हैं। दक्षिण एशिया में इसे पर्दा प्रथा कहा जाता है। हरम अरबी शब्द है जिसका अर्थ वर्जितक्षेत्र या पवित्र, पावन है। मुगल हरम में आंतरिक सुरक्षा स्त्रियाँ करती थी तथा बाह्य सुरक्षा ख्वाजासरों यानि ट्रांसजेंडर करते थे। बाबर के शासन काल में हरम की देखरेख एतबारखां करते थे, जो ख्वाजा अम्बर के नाम से भी जाने जाते थे। ये हुमायूं के भी विश्वासपात्र थे। एतमादखां अकबर के हरम का संरक्षक था। ख्वाजासरा हिलालखां जहांगीर के शासनकाल में हरम का संरक्षक था। शाहजहां के हरम के फिरोजखा नख्वाजासरा हरम निगरानी करता था। ये मुगल हरम के संरक्षण के साथ-साथ युद्ध में भी भाग लेते थे। इन्हें उनकी कार्यकुशलता के लिए मनसब प्रदान की जाती थीं।

मुगल शासक अकबर के समय हरम एक नगर की भाँति था। हरम के अंतर्गत लगभग पाँच हजार स्त्रियां रहती थी। प्रत्येक के लिए अलग-अलग कक्ष था। वहाँ रहनेवाली स्त्रियां कई अनुभागों में बँटी हुई थी। प्रत्येक अनुभाग के लिए एक स्त्री अध्यक्ष होती थी। राजस्थान में 'रनिवास', 'अन्तःपुर', 'जनानामहल','रावला' या जनानी ड्योढ़ी का विशेष महत्व था। शासकों के अन्तःपुर में कई रानियां, सेविकाएँ रहती थी। इनकी सुव्यवस्था के लिए प्रथक विभाग जनानी ड्योढ़ी बनाया गया। जनानि ड्योढ़ी स्वायंत संस्था के समान संचलित था। यह अनेकों की आजीविका का मार्ग भी था। इसके प्रशासन एवं कार्यों के संचालन के लिए पदाधिकारियों को नियमित किया जाता था। राजस्थान में जनानी ड्योढ़ी का निर्माण प्राचीन तथा मध्यकालीन परंपराओं के अनुसार किया गया था। पन्ना मियां जयसिंह की जनानी ड्योढ़ी का मुख्य ट्रांसजेंडर था। संवत 1668 में प्रथम मारवाड़ राज्य में जनानी ड्योढ़ी में ट्रांसजेंडर की नियुक्ति हुई। ट्रांसजेंडर ड्योढ़ी में कहीं भी आन जा सकता था। ड्योढ़ी की समाचार को बाहर तथा बाहर की

खबरों को अंदर पहुँचाना उसी का काम था। रानियों का काम वे ही करते थे। कीमती वस्त्र, आभूषण लाने का कार्य उनपर निहित था।

1.16.13. अंग्रेज़ों के समय ट्रांसजेंडर

200 वर्षों तक भारत में शासन करने वाले अंग्रेजों के समय में ट्रांसजेंडर समाज की हालत बहुत बुरी थी। 1852 अगस्त को उत्तर प्रदेश के मैनपुरी जिले में भूरा नामक एक ट्रांसजेंडर की हत्या कर दी गई। इस मामले की सुनवाई के दौरान ट्रांसजेंडरों को समलैंगिक, भिखारी तथा अप्राकृतिक वेश्याएँ कहा गया। एक न्यायाधीश द्वारा इस समाज के लोगों को औपनिवेशिक शासन के लिए कलंक बताया गया तो दूसरे न्यायाधीश ने इनके अस्तित्व को ब्रिटिश सरकार के लिए निराशाजनक माना। सन् 1871 में तत्कालीन अंग्रेज सरकार ने क्रिमिनल ट्राइबस एक्ट या जरायम पेशा अपराध अधिनियम लागू किया, जिसमें इनपर कई प्रतिबंध लगाए गए। ब्रिटिश शासन के दौरान ट्रांसजेंड़रों को अपना नाम जबरन दर्ज करना पड़ता था, इन्हें नाचने गाने की भी अनुमति नहीं दी गई। ये महिलाओं के कपड़े भी नहीं पहन सकते थे। महिलाओं के कपड़े पहने ये अगर दिख जाते तो पुलिस उनके कपड़े उतरवा देती थी या उनके बाल काट देती थी।

सन् 1897 में 1871 को बनी अधिनियम में संशोधन किया गया तथा इन लोगों को अपराधियों की कोटि में रखते हुए इनकी गतिविधियों पर नज़र डालने के लिए एक रजिस्टर बनाया गया। धारा 377 के तहत इनके कृत्यों को गैर जमानती अपराध घोषित किया गया तथा इस धारा का उपयोग कर पुलिस उनपर कई केस दर्ज करते और उन्हें प्रताड़ित किया करते थे। ब्रिटिश सरकार ट्रांसजेंडरों के अस्तित्व को मिटाना चाहते थे क्योंकि उनका मानना था कि ट्रांसजेंडर समाज ब्रिटिश सत्ता के प्रतिष्ठानों को खतरे में डाल सकता है। भारत को आज़ादी मिलने के बाद इन्हें जरायमपेशा जातियों की सूची से हटा दिया गया। इनके अस्तित्व को मिटाने पर तुले अंग्रेज अपने इरादे में नकामियाब रहें।

1.17. विश्व में ट्रांसजेंडर

ट्रांसजेंडर समाज की उपस्थिति विश्व के हर कोने में दर्ज है। मध्यकालीन इस्लामिक जगत, ओटोमन साम्राज्य में तथा गैर-इस्लामिक क्षेत्र बाइजेन्टाइन, रोम, चीनी जैसे साम्राज्यों में इनका अस्तित्व प्राप्त होता है। असीरियाई साम्राज्य में इनका उल्लेख प्राप्त होता है। चार्चेमिश के हित्ती राज्य में ट्रांसजेंडर शासकों के संरक्षक के रूप में कार्यरत थे। रोमन तथा यूनानी साम्राज्यों में इनका अस्तित्व हमें देखने को मिलता है। रोमन साम्राज्य में 'गल्ली' पुजारियों का उल्लेख प्राप्त हैं, ये ट्रांसजेंडर होते थे। 'आइकेईयुनक' मुख्य ट्रांसजेंडर था जो राजमहल के अन्य ट्रांसजेंडरों का नियंत्रण करता था। नारसेस नाम का ट्रांसजेंडर सेनापति था।सिसली में 'महादिया के फिलिफ' तथा 'अहमद-ए-सिकेली' रहे थे जो प्रशासनिक प्रधान एवं प्रधानमंत्री थे। चीन में ट्रांसजेंडरों का उपयोग प्रमुख रूप से हरम की देखरेख के लिए तथा पदाधिकारियों के रूप में की जाती थी।

कई जगहों जैसे अरब, अफगान, तुर्क में ट्रांसजेंडर को गिलमा यानि slave boys की तरह रखा जाता था। कई विदेशी आक्रान्ताओं ने पराजित लोगों को अपमानित करने हेतु भारी संख्या में बच्चों को ट्रांसजेंडर बनाया। आइन-ए-अकबरी से जानकारी होती है कि अकबर ने 1659 ई में 22 हजार राजपूत बच्चों को ट्रांसजेंडर बनाया। चीनी इतीहस में 'बधिया' करना पारंपरिक दंड था। क्विन साम्राज्य में कुकृत्य करने वालों को बधिया करके दंड़ दिया जाता था। वांग-जियान नामक ट्रांसजेंडर की अपनी आत्मकथा में लियाओ वंश के शासक चेंग-लियान के ज़रिए चीनी युवाओं को बधिया बनाने के बारे में लिखा है। कोरिया में दास-ट्रांसजेंडरों को 'नेसी' कहा जाता था तथा प्रमुख ट्रांसजेंडर को 'सेंगसियोन' कहते थे। वियतनाम एक व्यक्ति को पूर्ण लिंग विच्छेद करके ट्रांसजेंडर बनाया जाता था। इन्हें महलों में दास तथा रक्षकों के रूप में नियुक्त किया जाता था। भारत में ट्रांसजेंडर को हरम की देखरेख के लिए नियुक्त किया जाता था। सल्तनत काल से मुगलकाल तक इन्हें हरमों की सुरक्षा का दायित्व सौंपा जाने लगा। इनकी

नियुक्ति मुगल हरम तथा राजपूत जनाना में होती थी। हरम के रक्षकों तथा प्रशासकों के रूप में इनकी नियुक्ति होती थी। ये शासकों के विश्वास पात्र होते थे।

1.18. संगठन

हमारे समाज में ट्रांसजेंडर समुदाय के लोग बहुत सारी समस्याओं से शारीरिक और मानसिक तौर पर जूझ रहे हैं। इन लोगों को समाज में मान्यता दिलाने तथा उन्हें उनकी परेशानियों से राहत दिलाने हेतु कई संगठन आज भारत में बन रहे हैं। इन संगठनों ने ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों के स्वास्थ्य तथा उनके अधिकारों के लिए कई परियोजनाएँ लागू की हैं।

1994 में अशोक रो द्वारा स्थापित 'हमसफर ट्रस्ट' एल जी बीटी समुदाय के हक के लिए काम कर रहा है तथा 1999 में लतागुरु के संरक्षण में एन. जी. ओ 'दाई वेलफेयर सोसाइटी' की स्थापना की गई। इस एन.जी.ओ की अध्यक्ष 2002 में लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी बनी। मुंबई में स्थित यह एन.जी.ओ ट्रांसजेंडर समुदाय को एच आई वी के प्रति जागरूक करता है तथा उसके साथ ही लैंगिक समानता दिलाना इसका उद्देश्य है। सन् 2008 को कल्कि सुब्रमण्यम ने तमिलनाडु में 'सहोदरी फाउंडेशन' की स्थापना की जो ट्रांसजेंडर समाज की उन्नति के लिए काम कर रही है।

लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी ने 2007 में 'अस्तित्व संस्था' की स्थापना की, यह ट्रांसजेंड़रों के मानवाधिकार तथा एड्स जैसे बीमारी के प्रति इन्हें सचेत करता है। इसके अतिरिक्त 'नाज़ फाउंडेशन', 'आरोहण', 'उड़ान ट्रस्ट', 'सहोदरी फाउंडेशन, टुवीट', 'अखिल भारतीय किन्नर सदा बहार विकास समिति' आदि अनेक संस्थाएँ ट्रांसजेंडर समाज के लिए काम कर रही हैं। इन संस्थाओं के जरिए उन्हें उनकी अधिकारों का परिचय मिल रहा है तथा वे सचेत हो रहे हैं।

1.19. अपना वजूद बनानेवाले प्रमुख ट्रांसजेंडर

हमारे समाज में ट्रांसजेंडर समाज की स्थिति हशिएकृत रही है। सभी उनके वजूद को घृणा की दृष्टि से देखते हैं। मनुष्य के रूप में जन्म लेने पर भी इन्हें पशुओं से भी बदत्तर माना गया। अपने परिवार से लेकर समाज के हर क्षेत्र में इन्हें अनेक मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। ट्रांसजेंडर समुदाय में भी कलात्मक प्रतिभा तथा शैक्षिक गुण हैं। कुछ ट्रांसजेंडर मुसीबतों का सामना कर अपने वजूद को बनाने में सफल हुए हैं, उनमें प्रमुख हैं गौरी सावंत जो ट्रांसजेंडर समाज सेविका के रूप में विख्यात है। सन् 2000 में गौरी सावंत ने 'सखी चार चौधी', नाम से संस्था बनाई, यह संस्था ट्रांसजेंड़रों के हित के लिए काम कर रही है।

भारतीय ट्रांसजेंडर समाज में लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी का नाम प्रमुख है। यह नर्तकी है इनकी आत्मकथा 'मैं लक्ष्मी मैं हिजड़ा' प्रकाशित है। समाजिक संस्थाओं के माध्यम से ये ट्रांसजेंडर समाज की उन्नति के लिए कार्यरत हैं। पद्मिनी प्रकाश भारत के पहले टीवी एंकर है। इन्होंने कई कार्यक्रम होस्ट किए हैं। ए.रेवती लेखिका के रूप में मशहूर है। ये 'द तरूथ अबाउट मी' की लेखिका है। इसमें ट्रांसजेंड़रों को विषय बनाया गया है। आर्यन पाशा बौडी बिल्डिंग के क्षेत्र में कार्यरत है। मधु बाई ये छत्तीसगढ़ के मेयर बननेवाली प्रथम ट्रांसजेंडर है। जोइता मंडाल ये देश की पहली ट्रांसजेंडर न्यायाधीश है। भारती ने ईसाई धर्म अपनाया तथा पहली ट्रांसजेंडर पादरी बनी। मानोबी बंदोपाध्याय भारत की पहली ट्रांसजेंडर प्रिंसिपल है। इन्होंने बेस्ट सेलर नोवल भी लिखा है।

कल्कि सुब्रमणियम पत्रकार एवं सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में काम कर रही है, उन्होंने दो मास्टर्स डिग्री हासिल किये हैं तथा ट्रांसजेंडर समाज के लिए 'सहाद्रि फाउंडेशन' की स्थापना की है। तमिलनाडु की सत्यश्री शर्मिला भारत की पहली ट्रांसजेंडर वकील है। पृथिका याशिनी भारत की पहली महिला ट्रांसजेंडर सब इंस्पेक्टर के रूप में नियुक्त हुई। निताशा विश्वास भारत की

पहली ट्रांसजेंडर ब्यूटी क्वीन बनी। शबनम बानो पहली भारतीय ट्रांसजेंडर है जिनका चुनाव सार्वजनिक कार्यालय (विधायक) के लिए हुआ था।

इस प्रकार कई प्रमुख ट्रांसजेंडर हैं जिन्होंने अपने कठिन परिश्रम से समाज के उच्च पद् हासिल किए। इन मुकामों को हासिल करने के लिए उन्हें कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है। दृढ़ मनोबल के जरिए ही उन्होंने अपने रास्ते की सभी परेशानियों का सामना करके अपने मुकाम को हासिल किया।

1.20. राजनीति में ट्रांसजेंडर

हमारे समाज में हाशिएकृत माने जानेवाले ट्रांसजेंडर समाज के लोगों ने राजनीति में भी अपनी अस्मिता को दर्ज कराना शुरू कर दिया है। बदलते दौर में उपेक्षित इस समाज के लोगों में राजनीतिक चेतना बढ़ रही है। 1994 को मुख्य चुनाव आयुक्त टी एन शेषन के नेतृत्व में ट्रांसजेंडर लोगों को मतदान का अधिकार प्राप्त हुआ। यहीं से उनके लिए राजनीति का रास्ता खुल जाता है। 1995 से हिरयाणा की शोभा नेहरू, वहाँ के नगर निगम के चुनाव में पार्षद चुनी गई। 1998 में मध्य प्रदेश के शहडोल जिला के सोहागपुर से शबनम मौसी विधान सभा का सदस्य बनी। 2014 में चार ट्रांसजेंडर लोक सभा चुनाव में उम्मीदवार के रूप में खड़े हुए। इन चारों निर्दलीय उम्मीदार की जीत तो नहीं हुई लेकिन इन्होंने राजनीति में ट्रांसजेंडर समाज की भागीदारी की नींव रखी। सुप्रीम कोर्ट द्वारा 6 सितंबर 2018 को समलैंगिकता को अपराध बतानेवाली भारतीय कानून की धारा 377 को गैर कानूनी घोषित कर देने के पश्चात 2019 के लोकसभा चुनाव में देश के कई प्रान्तों से ट्रांसजेंडर लोग चुनाव में उम्मीदवार के रूप में खड़ा होना शुरु कर दिया। इनमें केरल की अनन्या प्रमुख है। ये केरल की विधान सभा चुनाव में लड़नेवाली पहली ट्रांसजेंडर है। 2019 में उड़ीसा के बहुजन समाज पार्टी की ओर से काजल नायक विधान सभा चुनाव में उम्मीदवार बनी, लेकिन इन्हें जीत हासिल नहीं हुई। 2019 के

लोकसभा चुनाव में दक्षिण चेन्नई से एम राधा निर्दलीय उम्मीदवार बनी, ये भी राजनीति में अपना नाम दर्ज ही कर पाई लेकिन जीत नहीं पाई। मुंबई की स्नेहाकाले, केरल की एर्णाकुलम लोकसभा सीट से निर्दलीय उम्मीदवार बनी अश्विती राजप्पन, 2019 के लोकसभा चुनाव में प्रयागराज लोकसभा सीट से आम आदमी पार्टी की उम्मीदवार भवानी माँ वालमीकी इन सभी लोगों ने राजनीति में ट्रांसजेंडर समाज का प्रधिनिधित्व जरूर किया लेकिन जीत हासिल न कर पाई। इन लोगों ने राजनीतिक अधिकारों को लेकर अपने समाज में जागरूकता पैदा की। इन्होंने दिखा दिया कि वे भी चुनाव लड़ सकते हैं। कुछ ट्रांसजेंडर को तो राजनीति में सिर्फ उपयोग के लिए खड़ा कर दिया जाता है, वे कठपुतली बन जाते हैं। वोट मिलने के लिए कई पार्टियाँ इनका इस्तेमाल करते हैं। इसके बदले कुछ ट्रांसजेंडर राजनीति में अपने समाज को स्थापित करने तथा सम्मान दिलाने के लिए लड़ते पाए जाते हैं। हर क्षेत्र में कदम बढ़ाते दिखाई पड़ रहे इस समाज के लिए राजनीति का द्वार भी ज़रूर खुलेगा।

1.21. ट्रांसजेंडर : तीसरे लिंग के रूप में मान्यता

भारतीय समाज स्त्री तथा पुरुष दो लिंगों को मान्यता देता है, इसलिए ट्रांसजेंडर समाज में उत्पीड़न का शिकार होते हैं। भारतीय संविधान ने ट्रांसजेंडर वर्ग के अधिकारों की रक्षा के लिए तथा उनकी समस्याओं का हल करने के लिए उन्हें अधिकार प्रदान किए हैं। भारतीय सर्वोच्च न्यायालय ने ट्रांसजेंडर वर्ग को 'तीसरे लिंग' के रूप में मान्यता दिया है। इसके पीछे ट्रांसजेंडर वर्ग पर होनेवाले भेदभाव को मिटाना तथा उनके अधिकारों की रक्षा करना उद्देश्य था। अदालत ने केन्द्र से ट्रांसजेंडर को सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़ा वर्ग मानने तथा तीसरे लिंग श्रेणी के आधार पर उन्हें शैक्षणिक संस्थानों में प्रवेश पाने तथा रोजगार दी जाने की सिफारिश की। राष्ट्रीय कानूनी सेवा प्राधिकरण बनाम भारत संघ के ऐतिहासिक फैसले में इस तीसरे लिंग के लोगों को कानूनी मान्यता दी गई। माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने कहा जिस तरह स्त्री और पुरुष

को मौलिक अधिकार प्राप्त है उसी प्रकार इन्हें भी मौलिक अधिकार उपलब्ध कराया जाए। अदालत ने अनुच्छेद 14,15,16 और 21 के तहत ट्रांसजेंडर को समान अधिकार एवं सुरक्षा प्रदान की। भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने राष्ट्रीय कानूनी सेवा प्राधिकरण बनाम भारत संघ और अन्य में न्यायमूर्ति के. एस. राधाकृष्णन और ए. के. सीकरी के खंडपीठ रिट याचिका (सिविल संख्या 400 ऑफ 2000) ने पुरुष और महिला के साथ तीसरे लिंग को मान्यता दी। संविधान 14 से 21 के तहत कानून के समक्ष सभी को समानता का अधिकार तथा समान सुरक्षा का प्रावधान है।

1.21.1. ट्रांसजेंडर अधिकार विधेयक 2014, 2019,2020

ट्रांसजेंडर अधिकार विधेयक 2014, दिसंबर 2014 को राज्यसभा में पेश किया गया। 24 अप्रैल 2015 को सभी दलों के समर्थन और सर्वसम्मति से इसे पारित किया गया। इस निजी विधेयक को तमिलनाडु के सांसद तिरूचि शिवा ने पेश किया था। राज्य सभा में इसके पारित होने के बाद 24 अप्रैल को ट्रांसजेंडर दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। ट्रांसजेंडर अधिकार विधेयक ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को मौलिक अधिकार जैसे समानता का अधिकार, स्वतंत्र भाषण, गैर भेदभाव, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, अखंडता एवं हिंसा या शोषण से सुरक्षा का अधिकार प्रदान करता है। इस विधेयक के अंतर्गत शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य एवं सामाजिक सुरक्षा भी शामिल है। यह विधेयक छात्रों के लिए समावेशी शिक्षा प्रदान करने तथा उन्हें वयस्क शिक्षा प्रदान करने की प्रमुखता देता है।

ट्रांसजेंडर व्यक्ति (अधिकारों का संरक्षण) अधिनियम 2019 भारत में ट्रांसजेंडर समुदाय के अधिकारों की रक्षा और उनके सामाजिक, आर्थिक, सशक्तीकरण के लिए महत्वपूर्ण रहा है। यह अधिनियम उन्हें उनकी पहचान, सम्मान तथा समानता प्रदान करने हेतु बनाया गया है। इस अधिनियम के अनुसार ट्रांसजेंडर व्यक्ति वह है जिसका लिंग जन्म के समय निर्धारित लिंग से

मेल नहीं खाता। इसमें ट्रांसमेन, ट्रांस वुमन, इंटसेक्स, जेंडर क्वीर शामिल हैं। इसमें सामाजिक – सांस्कृतिक पहचान वाले व्यक्ति जैसे किन्नर, हिजड़ा आदि भी शामिल हैं। इस विधेयक में ट्रांसजेंडर व्यक्ति मान्यता हासिल व्यक्ति को स्वयं कथित लिंग पहचान करने का अधिकार होगा। एक ट्रांसजेंडर व्यक्ति को पहचान पत्र प्राप्त होगा, जो उसे अधिकार प्रदान करेगा और उसके ट्रांसजेंडर होने का सबूत होगा।

यह अधिनियम ट्रांसजेंडर व्यक्तियों से किए जाने वाले भेद भाव पर प्रतिबंध लगाता है, जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, रोजगार, निवास, सार्वजनिक या निजी पदों पर नियुक्ति आदि प्रमुख हैं। यह अधिनियम सरकारी या निजी संस्था रोजगार से जुड़े मामलों में ट्रांसजेंडर व्यक्तियों से होनेवाले भेद भाव पर रोक लगाती है। इसके अतिरिक्त ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को समावेशी शिक्षा, खेल एवं मनोरंजन की सुविधाएँ प्रदान करती हैं। इस प्रावधान के तहत सरकार ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करती है। ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के सामाजिक, आर्थिक सशक्तीकरण इसका लक्ष्य था। यह अधिनियम ट्रांसजेंडर समुदाय को अधिकार, सम्मान तथा समान अवसर प्रदान करता है।

ट्रांसजेंडर व्यक्ति अधिनियम 2020 ट्रांसजेंडर अधिनियम 2019 के तहत बनाए गए हैं। इसका उद्देश्य ट्रांसजेंडर समुदाय के अधिकारों को सुरक्षित करना तथा सामाजिक, आर्थिक, कानूनी परिरक्षा दिलाना था। यह अधिनियम ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को उनकी लैंगिक पहचान के आधार पर पहचान पत्र प्राप्त करने की प्रक्रिया को सरल बनाता है। इसके अंतर्गत जिला मजिस्ट्रेट एक वर्ष से अपने क्षेत्र में रह रहे ट्रांसजेंडर व्यक्ति को पहचान पत्र जारी करते हैं। यह अधिनियम ट्रांसजेंडर व्यक्ति के अधिकारों तथा कल्याणकारी योजनाओं की समीक्षा करने पर बल देने के साथ ही ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के प्रति भेदभाव रोकने के लिए कदम उठाने की सिफारिश भी करता है। सरकार द्वारा जारी किए गए इन अधिनियमों से ट्रांसजेंडर लोगों को समाज में सम्मान तथा

अधिकार प्राप्त हुए हैं। ये अधिनियम ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों की अधिकारों की रक्षा करने के साथ-साथ उन्हें मुख्यधारा से जोड़ने में सहायक सिद्ध होते हैं।

1.22. निष्कर्ष

मानव सभ्यता के प्रारंभ से ही ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों का अस्तित्व रहा है। प्राचीन साहित्य तथा ग्रंथों में जैसे वैदिक साहित्य, रामायण, महाभारत, अर्थशास्त्र, कामसूत्र एवं जैन तथा बौध ग्रंथों में ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों का उल्लेख मिलता है, जिनसे पता चलता है कि प्राचीनकाल में उन्हें मान्यता प्राप्त थी। मध्यकाल में भी ट्रांसजेंडरों को समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त था। अंग्रेज़ों के आगमन के बाद इनकी स्थिति दयनीय बन गई। यह समुदाय हाशिएकृत बन गया। आजादी मिलने के कई वर्ष बीत जाने के बाद भी आज यह समुदाय अपने अस्तित्व को स्थापित करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

ट्रांसजेंडर शब्द का प्रयोग एक छाता के रूप में होता है, जिसके अंतर्गत कई लैंगिक पहचान के लोग शामिल हैं। नारीवाद की दूसरी लहर के रूप में लिंग सिद्धान्त का आविर्भाव होता है। लिंग सिद्धांत के अनुसार पुरुष और महिला की पहचान उनके यौन अंगों के आधार पर न होकर वे अंदर से जो महसूस करते हैं, उसके आधार पर निर्धारित किया जाना चाहिए। लिंग सिद्धांत के अनुसार एक व्यक्ति का यौन अंग पुरुष का है, लेकिन उसे लगता है कि वह स्त्री है तो उसे स्त्री के रूप में जीने का अधिकार है। विभिन्न यौन पहचान तथा लिंग पहचान के लोगों को सर्वमान्य रूप से क्वीर कहा जाता है। क्वीर सिद्धान्त के अनुसार लिंग स्थिर नहीं बल्कि तरल है। .समाज द्वारा बहिष्कृत ट्रांसजेंडर समुदाय की स्थिति अगर कुछ ऊपर उठी है तो इसके पीछे स्टोनवेल विद्रोह का हाथ है। संयुक्त अमेरिका न्यूयोर्क के ग्रीनवीच विलेज में हुए स्टोनवेल विद्रोह के पश्चात अमेरिका तथा दुनिया के अन्य भागों में समलैंगिक अधिकार संगठनों की

स्थापना हुई तथा हर साल जून में दुनिया भर एल जी बी टी प्राइड परेड़ तथा प्राइड मंत मनाया जाने लगा, जो लोगों में जागृति पैदा करने के लिए सहायक होता है।

आज भारत में ट्रांसजेंडर विमर्श का दौर चल रहा है। हाशिएकृत यह समाज अपने अस्तित्व को स्थापित करने के लिए संघर्षरत है। भारत में लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी, मानोबी बंदोपाध्याय, पद्मिनी प्रकाश, रेवती जैसे कई ट्रांसजेंडर व्यक्तियों ने समाज की मुख्यधारा से जुड़कर यह साबित कर दिया है कि वे भी किसी से कम नहीं हैं। उनमें भी सामान्य व्यक्तियों की तरह प्रतिभा तथा गुण हैं। भारतीय सरकार तथा राज्य सरकार द्वारा उनकी उन्नति के लिए कई प्रावधान मुहैया कराये गए हैं। 2014 दिसंबर को ट्रांसजेंडर अधिकार विधेयक राज्य सभा में पेश किया गया। 24 अप्रैल 2014 को सभी दलों के समर्थन तथा सर्वसम्मति से इसे परित किया गया। ट्रांसजेंडर विधेयक 2014, 2019, 2020 के तहत इनके लिए कई प्रावधान उपलब्ध कराए गए हैं, जिसका उद्देश्य इन्हें मुख्यधारा से जोड़ना तथा इनकी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षिक स्थिति में सुधार लाना है।

संदर्भ - सूची

1. निरूप्रह त्रैमासिक पत्रिका, सितम्बर फरवरी 2016, पृ.सं. 13
2. डॉ. विजेन्द्र प्रताप सिंह, रविकुमार गोंड (सं), भारतीय साहित्य एवं समाज में तृतीय लिंगी विमर्श,पृ.सं.100.
3. जनकृति पत्रिका, थर्ड जेन्डर विशेषांक - अंक 1, 8 आगस्त 2016, पृ.सं. 52
4. डॉ. एम. फ़ीरोज़खान, हम भी इंसान हैं , पृष्ठ सं. 1
5. लीलाधर शर्मा, ‘पर्वतीय’, भारतीय संस्कृति कोश,पृ.सं. 209-210.
6. रामचन्द्र वर्मा, संक्षिप्त हिंदी शब्द सागर, पृ.सं.200.
7. रामचन्द्र वर्मा, मानक हिंदी कोश, पृ.सं.548.
8. Longman Dictionary, Person Education Limited, पृ.सं. 1877
9. T. Ramalingam Pillai, English & Malayalam Dictionary, पृ.सं. 308
10. Shorter Oxford English Dictionary, पृ.सं. 3323
11. के. वनजा, क्वीर विमर्श, लेस्बियन, गे,बाई-सेक्सुअल, ट्रांसजेंडर, पृ.सं.31.
12. वही, पृ.सं.32.
13. डॉ.विनय कुमार पाठक, किन्नर-विमर्श दशा और दिशा, पृ.सं.25.
14. वही, पृ.सं.25.
15. वही, पृ.सं.26
16. वही, पृ.सं.27.
17. वही, पृ.सं.27.
18. वही, पृ.सं.28.

19. ऋषिकुमार (अनु), महाभारत भीष्मपर्व 69 का वर्ग श्लोक 81

20. वही, श्लोक 29, पृ.सं. 453

21. स्वामी द्वारकादास शास्त्री (अनु), स्वामी गोरक्षनाथ द्वारा विरचित सिद्धसिद्धांत पद्धति, पृष्ठ.सं. 144.

22. पंडित गिरिजाप्रसाद द्विवेदी (अनु), मनुस्मृति, तीसरा अध्याय, पृ.सं.74.

23. वही, तीसरा अध्याय, पृ.सं.98.

24. रामप्रताप त्रिपाठी शास्त्री (अनु), वायुपुराण, उनहत्तरवां अध्याय, पृ.सं.625.

25. वही, पृ.सं. 607

26. https://archive.org/details/in.ernet.dli.2015.22683/page/n4/mode/1up

27. गोस्वामी दामोदर शास्त्री , कामसूत्रम्, पाँचवाँ अध्याय, पृ.सं.58-59.

दूसरा अध्याय

हिन्दी साहित्य और ट्रांसजेंडर विमर्श

मानव सभ्यता के आरम्भ से ही हमारे समाज में ट्रांसजेंडरों का अस्तित्व रहा है। समाज का अभिन्न हिस्सा होते हुए भी इन्हें हमेशा नकारात्मक दृष्टिकोण से देखा गया। सभ्य समाज के स्त्री तथा पुरुष वर्ग के लिए ट्रांसजेंडर समुदाय सिर्फ उपहास के पात्र बन गए हैं। बेघर, अशिक्षित, बेरोजगार ट्रांसजेंडर समाज में अपनी उपस्थिति दर्ज कराने में असमर्थ रहा है। जन्म से मृत्यु तक ट्रांसजेंडर समुदाय का व्यक्ति घुट-घुट कर जीने को विवश है। अनादिकाल से समाज की मुख्यधारा के द्वारा उपेक्षित एवं तिरस्कृत ट्रांसजेंडर समुदाय के लोग आज समाज में अपने अस्तित्व को बनाने के लिए संघर्ष करते दिखाई पड़ रहे हैं। 21 वीं सदी के इस दौर में ट्रांसजेंडर शिक्षित हो रहे हैं, वे अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

कहा जाता है कि साहित्य समाज का दर्पण है। समाज में जो भी घटता है वह साहित्य में दर्ज किया जाता है। ट्रांसजेंडर समाज के लोगों का दर्दभरा जीवन, उनकी पीड़ा तथा संघर्ष को आज साहित्य में विषय बनाया गया है। स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, अल्पसंख्यक विमर्श जैसे अनेक विमर्शों पर साहित्यिक दृष्टिकोण से चर्चा जोरों-शोरों से हो रही हैं। 21 वीं सदी में ट्रांसजेंडर विमर्श पर भी साहित्यकारों ने लिखना प्रारम्भ कर दिया है। प्राचीनकाल में वैदिक साहित्य, रामायण, महाभारत, जैन एवं बौध ग्रंथ तथा अन्य ग्रंथों में ट्रांसजेंडर समुदाय का उल्लेख हमें देखने को मिलता है। विश्व भर के साहित्यकारों ने ट्रांसजेंडर समुदाय को अपना विषय बनाया हैं। हिन्दी साहित्यकारों ने साहित्य के विभिन्न विधाओं द्वारा समुदाय के उपेक्षित इस वर्ग की पीड़ा उनके दर्द को चित्रित करने का प्रयास किया है और इन्होंने खुद भी लिखना शुरू कर दिया है। समाज ने जिन्हें हमेशा हँसी मज़ाक का पात्र बनाया, जिसे हमेशा हाशिए पर रखा वह ट्रांसजेंडर वर्ग आज साहित्य के केन्द्र में हैं। हिन्दी साहित्य जगत् ने उपन्यास, कहानी, नाटक, कविता, आत्मकथा जैसे अनेक विधाओं में इनकी उपस्थिति दर्ज कराई हैं। साहित्य के माध्यम से ट्रांसजेंडर समाज के प्रति लोगों में जागरूकता पैदा हुई है। साहित्यकार अपनी लेखनी

द्वारा इस वर्ग की पीड़ा, समस्याओं से सभी को रूबरू करा रहे हैं। आज सभी इनके विषय में ज्यादा जानना और पढ़ना चाहते हैं। पहले जहाँ हम इनका नाम लेने से हिचकिचाते थे, वहाँ आज सभी इनके विषय पर चर्चा करते दिखाई पड़ रहे हैं। भारत सरकार ने इन्हें तृतिया लिंग का दर्जा देकर इन्हें कई अधिकार भी प्रदान किए हैं। अभी हिन्दी साहित्य के बहुत कम साहित्यकारों ने ट्रांसजेंडर विषय पर रचना की है, लेकिन जो भी रचनाएँ प्राप्त है वे उत्कृष्ट हैं।

2.1. कहानी

समाज की मुख्यधारा से तिरस्कृत एवं अभिशप्त जीवन जीने को मजबूर ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों के जीवन, संघर्ष, समस्या व पीड़ा को हिन्दी के साहित्यकारों ने कहानी के माध्यम से प्रस्तुत करने की कोशिश की है। सन् 1938 में ट्रांसजेंडर विमर्श पर केंद्रित, बलभद्र प्रसाद दीक्षित द्वारा लिखित कहानी ‘चमेलीजानचकलस’ हास्य-व्यंग्य प्रधान पत्रिका में प्रकाशित हुई। पाण्डेयबेचन शर्मा उग्र की कुछ कहानियों में हम ट्रांसजेंडर पात्र देख सकते हैं, लेकिन उन कहानियों में इनका चित्रण मुख्य पात्र के रूप में नहीं हुआ है। डॉ.एम. फ़ीरोज़खान ने ‘थर्ड जेंडर हिन्दी कहानियाँ’ नाम से विभिन्न कथाकारों द्वारा इनपर लिखी गई कहानियों को संकलित किया है। आज ट्रांसजेंडर समुदाय पर केंद्रित कई मौलिक कहानी संग्रह तथा अनुदित कहानी संग्रह प्राप्त हैं। मौलिक कहानी संग्रहों में प्रमुख हैं - हम भी इंसान हैं (सं. एम.फीरोज़खान), कथा और किन्नर (सं.विजेन्द्र प्रताप सिंह, रवि कुमार गोंड), इस जिन्दगी के उस पार (राकेश शंकर भारती), किन्नर समाज की लघुकथाएँ (सं. राजकुमार घोटड़, लता अग्रवाल), अन्य भाषाओं से हिन्दी में अनूदित कहानी संग्रह है - थर्ड जेंडर : अनूदित कहानियाँ (सं.डॉ. एम. फ़ीरोज़खान)।

2.1.1. थर्ड जेंडर : हिन्दी कहानियाँ

सन् 2017 में प्रकाशित 'थर्ड जेंडर : हिन्दी कहानियाँ' के संपादक डॉ. एम. फ़ीरोज़खान हैं। इस कहानी संकलन में कई प्रमुख कहानीकारों के कहानियों को संकलित किया गया है। यह कहानी संग्रह ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों से जुड़ा हुआ है। इन कहानियों में ट्रांसजेंडर समुदाय से जुड़े अनेक मुद्दों को उभारा गया है। ट्रांसजेंडर समुदाय के जीवन संघर्ष, पीड़ा, संवेदना आदि को इस कहानी संकलन में वर्णित किया गया है। इस कहानी संग्रह में 18 कहानियाँ संकलित हैं जो निम्नलिखित हैं - शिवप्रसाद सिंह कृत 'बिन्दा महाराज',राही मासूम रज़ा कृत 'ख़लीक़ अहमद बूआ', सलाम बिन रज़ाक कृत 'बीच के लोग', एस हरनोट कृत 'किन्नर', कुसुम अंसल कृत 'ई मुर्दन का गाँव', किरण सिंह कृत 'संझा', कादंबरी मेहरा कृत 'हिजड़ा', पद्म शर्मा कृत 'इज्जत के रहबर', अंजना वर्मा कृत 'कौन तार से बीनी चदरिया' महेन्द्र भीष्म कृत 'त्रासदी' ललित शर्मा कृत 'रतियावन की चेली', लवलेश दत्त कृत 'नेग', गरिमा संजय कृत 'पन्नाबा', श्रीकृष्ण सेनी कृत 'हिजड़ा', विजेन्द्र प्रताप सिंह कृत 'संकल्प' चांद दीपिका कृत 'खुश रहो क्लीनिक', पूनम पाठक कृत 'किन्नर', पारस दासोत कृत 'गलती जो माफ नहीं' आदि।

शिवप्रसाद सिंह द्वारा लिखित 'बिन्दा महाराज' बहुत ही मार्मिक एवं ट्रांसजेंडर लोगों के जीवन के यथार्थ को सामने प्रस्तुत करनेवाली कहानी हैं। ट्रांसजेंडर को जन्म से लेकर मृत्यु तक अकेलेपन की त्रासदी से गुजरना पड़ता है। वह चाहे जितना भी किसी से प्यार करे लेकिन बदले में उसे दुत्कार और घृणा ही प्राप्त होता है। बिन्दा महाराज कहानी में ट्रांसजेंडर बिन्दा महाराज के जन्म होते ही उसके माँ-बाप चल बसते हैं। उसके चचेरे भाई ने उसके अपूर्ण लिंगी होने के कारण उसे घर से बाहर निकाल दिया था। बिन्दाराज अपने चेचेरे भाई के बेटे से बहुत प्यार करता था। घर से निकाले जाने पर वह सोचता है "था ही कौन उसका अपना, जो पैरों में रेशमी बेडियाँ डाल

कर रोक रखता। माँ-बाप एक प्राण-हीन शरीर उपजा कर चले गए। मर्द होता तो बीवी-बच्चे होते, पुरुषत्व का शासन होता, स्त्री भी होता तो किसी पुरुष का सहारा मिलता, बच्चों की किलकारियों से आत्मा के कण-कण तृप्त हो जाते।"[1] घर से निकाले जाने पर वह दूसरे गाँव पहुँचता है, वहाँ वह नाच गाकर जीवन यापन करता है। उस गाँव के दीपू मिसर के ढाई साल के बालक को वह बहुत ही प्यार करता था। दोनों के बीच बहुत लगाव था, बच्चा उसे बूआ कहकर पुकारता था। बीमारी की वजह से जब उस बच्चे की मृत्यु होती है, तब उसका दोष भी बिन्दा महाराज पर लगाया जाता है। ऐसा माना जाता है कि उसके अपशकुन होने के कारण बच्चे की मृत्यु हुई। सभी डायन का लाछन उसपर लगाते हैं। दीपू मिसिर के बच्चे की मौत के बाद बिन्दा महाराज टूट गया उसे लगने लगा कि वह डायन है। वह सभी बच्चों से दूर रहने लगा।

हर इंसान की तरह ट्रांसजेंडर लोगों में भी दिल होता है। वे भी प्रेम करते हैं। वे प्यार के लिए सब कुछ करने को तैयार होते हैं, लेकिन कोई प्यार में धोखा दे ये वे सहन नहीं कर पाते वे घातक तक बन जाते हैं। 'ख़लीक़ अहमद बूआ' कहानी सलाम बिन रज़ाक द्वारा लिखी गई है, कहानी में ख़लीक़ अहमद बूआ अपने ऊपर हुए धोखे को बरदाश्त नहीं कर सकी और उन्होंने अपने धोखेबाज प्रेमी को मौत के घाट उतार दिया तथा वे स्वयं फाँसी पर चढ़ गई। कहानी का प्रमुख मुद्दा प्रेम है।

ख़लीक़ अहमद बूआ अपने प्रेमी रुस्तमखाँ को कहीं से भगा लायी थी। वह उसे पति बनाती है। उससे बूआ बहुत प्यार करती है, उसके लिए करवाचौत रखती है। ख़लीक़ अहमद बूआ हाजी बदरूलहक साहब के यहाँ खाना पकानेवाली नौकर बन गई तथा वहीं कोठरी पर वह रुस्तमखाँ के साथ रहने लगी। अगर कोई ख़लीक़ अहमद बूआ से मज़ाक में कहता कि, रुस्तम खाँ किसी पर अटक गये तो क्या होगा, तब ख़लीक़ अहमद बुआ कहती "मुर्दरु की जान ले लूँगी

और अपनी जान दे दूँगी ।"[2] ख़लीक़ अहमद बूआ चाहती है कि जिस प्रकार वह रुस्तमखाँ से एकनिष्ठ प्यार करती है वैसा ही वह उससे करे। रुस्तमखाँ का जब पुखराज बाई के कोठे पर आना जाना शुरु हुआ तब ख़लीक़ अहमद बूआ सह नहीं सकी और उसने अपने प्रेमी को मौत के घाट उतार दिया और खुद फाँसी पर चढ़ गई। प्यार होता ही ऐसा है चाहे वो स्त्री का हो, पुरुष का हो या ट्रांसजेंडर का। प्यार में बेबफाई कोई भी बर्दाश्त नहीं कर सकता। कहानी में दिखाया गया है कि "सुहाग, सुहाग होता है चाहे वह किसी ट्रांसजेंडर का ही क्यों न हो ।''[3] ट्रांसजेंडर के एकनिष्ठ प्रेम को यहाँ विषय बनाया गया है।

सलाम बिन रज़ाक की कहानी 'बीच के लोग' व्यंग्यात्मक कहानी है। ट्रांसजेंडर समाज का जुलूस निकलता है लेकिन पुलिसवाले उस जुलूस को रोक नहीं पाते। पत्रकार द्वारा पूछे जाने पर कि वे लेफ्टिस्ट हैं या राइटिस्ट। वे व्यंग्यात्मक उत्तर देते हैं कि "न लेफ्टिस्ट न राइटिस्ट, हम तो बीच के लोग हैं ।"[4] पुरुष पुलिस ट्रांसजेंडर लोगों को गिरफतार करने को तैयार नहीं होते क्योंकि वे मानते है कि ट्रांसजेंडर पुरुष नहीं है न नारी इसलिए लेडीज़ फोर्स को बुलाया जाता है, लेकिन वे भी पीछे हट जाते हैं। इनका कहना था कि वे सिर्फ महिलाओं से निपट सकती हैं। एस.पी. के 'मगर-मगर स्त्रियों और हिजड़ों में क्या अंतर हैं कहने पर महिला पुलिस का प्रत्युत्तर "ऐसा न कहिए सर ! यों देखा जाये तो पुरुषों और हिजड़ों में भी कोई विशेष अंतर नहीं होता। फिर पुरुष सिपाहियों ने उन्हें गिरफ्तार करने से इंकार क्यों कर दिया ?"[5] आदि वाक्य ट्रांसजेंडरों के प्रति समाज का नज़रिया व्यक्त करता है। अंत में जुलूस को रोकने के लिए गोलियाँ चला दी जाती हैं।

एस.आर. हरनोट की कहानी 'किन्नर' हिमाचल प्रदेश के जनजातीय जिला किन्नौर में बसे लोगों, जिन्हें किन्नर या किन्नौरा कहा जाता है उनकी कहानी हैं। इस कहानी में किन्नर जनजाति की अस्मिता को दर्शाया गया है, साथ ही वहाँ रह रहे बेलीराम जो कि किन्नर जिला

परिषद का सदस्य है उसके तथा सुमन के प्रेम को भी विषय बनाया है। ट्रांसजेंडर वर्ग के लिए किन्नर शब्द का प्रयोग होने से किन्नर प्रदेश में रहनेवालों के अस्मिता पर संकट आ गया। बेलीराम अधिकारियों को समझाता है कि "उनके समुदाय पर संकट के बादल हैं। संस्कृति और साहित्य का अपमान है। वेदों और पुराणों में वर्णित किन्नर जाति की खिल्ली है। फिर उस संविधान की भी जिसमें इस समुदाय को इसी आधार पर जनजाति का दर्जा मिला है। मीडिया के लोगों की अज्ञानता से किन्नर देश संकट में है।"[6] बेलीराम से सभी उसके नाम से जुड़े किन्नर को हटाकर अन्य उपनाम जोड़ने को कहते हैं, लेकिन वह इसके लिए तैयार नहीं होता। इस कहानी में किन्नौर प्रदेश के लोगों के संकट को दर्शाया गया है।

डॉ.पद्मा शर्मा कृत 'इज्जत के रहबर' कहानी में ट्रांसजेंडर सोफिया अन्याय के विरुद्ध लड़ती नज़र आती है। श्रीलाल की बेटी प्रतिमा का बलात्कार वहाँ के स्थानीय गुंडे द्वारा होता है। श्रीलाल अपनी इज्जत बचाने के लिए इस पर पर्दा डाले रहता है। सोफिया श्रीलाल से पुलिस में रिपोर्ट करने को कहती है, लेकिन वह नहीं करता। लड़की पर हुए अत्याचार को सोफिया माफ करने को तैयार नहीं होती, वह बलात्कारी छिंगा का लिंग काटकर उसे उसकी करनी का सजा देती है। सोफिया मानती है "हरामियों को ऐसी सजा मिले जो हमने दी है तो कोई बहू-बेटियों की तरफ आँख उठाने की हिम्मत न करे।"[7] यहाँ एक पिता अपनी इज्जत के लिए चुप्पी साधता है वहाँ ट्रांसजेंडर अत्याचारी को सबक सिखाती है।

कुसुम अंसल की कहानी 'ई मुर्दन का गाँव' में बिलू एक ट्रांसजेंडर है। बिलू की सच्चाई को उसके घरवाले समाज से छुपाने की कोशिश करते हैं, लेकिन नाकामयाब बन जाते हैं। ट्रांसजेंडर समुदाय के लोग उसे अपने साथ ले जाने आते हैं लेकिन उनके हाथ पैसा थमाकर उन्हें वापस भेज दिया जाता है। बिलू को मौसी के साथ लंदन दूर भेज दिया जाता है। लंदन जाकर

बिलू एक सफल कपड़े का डिज़ाइनर बनता है और समाज में साधारण जीवन जीता है। इस कहानी में जहाँ बिलू अपने परिवार के सहयोग के कारण साधारण जीवन व्यतीत करता दिखाई पड़ता है वहीं सलीमा, जया, और बद्री जैसे अन्य ट्रांसजेंडर संघर्षमय जीवन जीते हैं।

आज मेडिकल साइन्स इतनी उन्नति पर पहुँच चुकी है जिसके ज़रिए ट्रांसजेंडर आम जीवन अपना सकते हैं। विजेन्द्र प्रताप सिंह ने अपनी कहानी 'संकल्प' द्वारा यही बात हमारे सामने रखने की कोशिश की है। कहानी में मधुर जोकि ट्रांसजेंडर है उसमें स्त्रैणता ज़्यादा है। वह लड़की बनना चाहती है। मधुर के जन्म से ही पिता नाखुश थे। माता की मृत्यु के बाद वह पूरा घर संभालती है, बहन की शादी कराती है। मधुर के साथ, एक पुलिसवाला बलात्कार करता है। जिस पुलिस का दायित्व हमारा रक्षा करना है वही क्रूर बनता है। मधुर के साथ घटित घटना को सुन ट्रांसजेंडर पायल अपना रोष प्रकट करते कहती है "हाय रे देश और उसके लोग। पूरी औरतों को तो अपनी हवस का शिकार बनाने से छोड़ते नहीं अब हिजड़े भी नहीं छोड़े जाते। ईश्वर ने क्या कम जुल्म ढाया हैं हम हिजडों पर जो, किसी नासपीटे ने मेरी सहेली के साथ ऐसा बुरा काम करने से पहले बिलकुल नहीं सोचा।"[8] पुंसवादी मानसिकता पर भी इस कहानी द्वारा प्रकाश डाला गया है।

इस घटना को पुलिस थाने जाकर शिकायत लिखाने को सोचनेवाली मधुर के साथियों से गुरुमाई शांति कहती है " किसके पास जाओगी शिकायत करने के लिए जहाँ रक्षक ही भक्षक है किससे उम्मीद करोगी। हम हिजड़ों को तो वैसे ही सभी हिकारत से देखते हैं। जो अच्छे खासे लोगों की पुलिस नहीं सुनती तो हम हिजड़ों की क्या सुनेगी। और सुन भी लेगी तो मेडिकल करा...ये करा...वो करा के नाम पर कई दिन गुजार देगी। मर जाएगी ये...बेचारी। खून वैसे ही बहुत बह गया। इसका इलाज ज्यादा ज़रूरी है।"[9] जब माधुरी को पता चलता है कि वह ऑपरेशन के द्वारा औरत का शरीर पा सकती है तब वह इसके लिए दृढ़ परिश्रम करके चिकित्सा

के लिए जरूरी पैसा जुटाने के लिए लग जाती है। पैसों के लिए वेश्यावृत्ति करती है तथा शल्य चिकित्सा द्वारा स्त्री बनती है। शल्य चिकित्सा से ट्रांसजेंडर अपना मन चाहा शरीर पा सकते हैं, लेकिन इसके लिए भारी रकम की जरूरत होती है। अशिक्षित तथा बेरोज़गार ट्रांसजेंडर लोगों के लिए इतना पैसा जमा करना आसान नहीं।

चाँद दीपिका द्वारा लिखित कहानी है 'खुश रहो क्लीनिक'। इस कहानी का नायक ऋषि जो ट्रांसजेंडर है वह अपने आत्मबल एवं निष्ठा से शिक्षा हासिल करता है तथा डॉक्टर बनता है। वह अपने जैसे ट्रांसजेंडरों तथा आम लोगों की चिकित्सा करता है। ऋषि के जन्म होने पर उसके माता पिता आत्मसम्मान बचाने के लिए उसे ट्रांसजेंडर समुदाय को सौंप देते हैं। ट्रांसजेंडर डेरे में उसका दम घुटता है, वहाँ उसे अपने समुदाय का दर्द, दुख पता चलता है "न किसी का किसी से संबंध न खून का रिश्ता, सभी ठुकराए हुए, हालात के मारे हुए। चोरी चकारी पकड़ कर लाए हुए लोग जो न स्त्री थे न पुरुष थे। फिर भी स्वेच्छा से स्त्री-पुरुष के चोले पहन विचार रहे थे। जो समाज का अनचाहा भाग होकर भी उसका भाग न थे। उन्हें समाज जन्म देता था पर काटकर देर-सबेर अपने से फेक भी देता था। जहाँ माता-पिता अपने होकर भी अपने न थे बच्चे अवांक्षित लावारिश थे।"[10] ट्रांसजेंडर समाज उसे पढ़ाता है और वह अपने मुकाम को समाज से लड़कर प्राप्त करता है। साधारण इंसान की भाँति इनमें बुद्धि शक्ति है, कुशलता है लेकिन हमारा सभ्य समाज इन्हें उपहास का पात्र मान बैठा है।

किरण सिंह द्वारा लिखित 'संझा' कहानी ट्रांसजेंडर लोगों के दुःख दर्द के साथ-साथ उनके माता पिता द्वारा भुगते जाने वाले पीड़ा को भी हमारे सामने रखता है। रहमान खेड़ा गाँव के वैद के घर आठ साल बाद एक ट्रांसजेंडर बच्चे का जन्म होता है जिसका नाम संझा रखा जाता है। संझा माने न दिन न रात है। संझा के जन्म के बाद उसके परिवार को कई संघर्षों से होकर गुजरना

पड़ता है। अपनी पत्नी के चल बसने पर वैध जी संझा की सच्चाई किसी को न पता चले इस वास्ते दाह संस्कार अकेले ही रात को करते हैं। सभी के नज़र से संझा को बचाकर वैद्यजी उसे पालते हैं। वैद्यजी संझा से कहते हैं "इस धरती के बासिदों ने तुम्हारी जाति के लिए हलाहल नरक की व्यवस्था की है। उस नरक के लोग पहाड़ी पर तुम्हारे जन्म के साल बाद आकर बस गये हैं। वे लोग कपड़े उठाकर नाचते हैं और भीख माँगते हैं। लोग उन्हें गालियाँ देते हैं, थूकते हैं, उनके मुँह पर दरवाज़ा बंद कर लेते हैं, उन्हें घेर कर मारते हैं। वे जिस इलाके में बसे हों वहाँ कोई भी अपराध हो, इन पर ही इलजाम लगता है। वे डरे और जले हुए लोग अपनी बिरादरी बढ़ाना चाहते हैं। तम्हारे बारे में पता चल गया तो वो लोग तुम्हें छीनने आ जाएँगे और चौगाँव के लोग तुम्हें घर से खींचकर उनके साथ भेज देंगे।"[11] वैदजी समाज का ट्रांसजेंडर समुदाय के प्रति जो नकारात्मक दृष्टिकोण है उससे वाकिफ थे, इसीलिए वे अपनी बेटी की असलियत सभी से छुपाना चाहते थे।

संझा का विवाह चौगाँव के विलासी ललिता महराज के पुत्र कनाई से होता है। विवाह की रात कनाई की नपुंसकता के बारे में संझा को पता चलता है। कनाई अपनी सच्चाई संझा को बताता है। संझा अपनी सच्चाई को छिपाकर कनाई के साथ जीवन बिताती है। संझा अपने पिता से प्राप्त वैदकी की शिक्षा द्वारा गाँव में सभी का इलाज करती है। वह गाँव की ज़रूरत बन जाती है। इसी बीच बसुकि नामक गर्भवती कनाई पर बलात्कार का आरोप लगाती है। इसपर विवश होकर अपने को निर्दोष साबित करने के लिए कनाई को अपनी सच्चाई सबके सामने कहना पड़ता है। दूसरी ओर संझा पर बलात्कार करने की कोशिश कुछ लोग करते हैं तब उसके ट्रांसजेंडर होने का रहस्य खुल जाता है। सभी संझा का मज़ाक उड़ाते हैं सभी उसे नंगा करने की कोशिश करते हैं। तब वह क्रोधित होती है और चेतावनी देती है कि, जिन गाँव वालों के अवैध संबंध को छिपाने के लिए उसने दवा दारू किया है उनके बारे में वह सबकुछ सबके सामने कह देगी।

कई ट्रांसजेंडर जन्मजात होते हैं, तो कई लोग बेबसी से ट्रांसजेंडर बनते हैं। कादंबरी मेहरा कृत 'हिजड़ा' विवशतावश ट्रांसजेंडर बननेवाली रागिनी की कहानी है। चेचक की बीमारी से उसकी माँ एवं भाई की मृत्यु हो गई थी। चेचक के रोग से रागिनी का रूप कुरूप हो गया। माता के गुजर जाने पर उसके पिता ने दूसरी शादी कर ली और रागिनी को उसकी बड़ी बहन जो गर्भवती थी उसके पास भेज दिया गया। वहाँ बहन का पति उसका शारीरिक शोषण करता है। बहन से इस संबंध में वह बोल नहीं पाती अगर बोलती तो उसका घर बिखर जाता "जीजाजी की काली करतूत उसे बता दूँ तो बेचारी जहर खाकर मर जाएगी। मेरा क्या है ....मुझसे कोई शादी तो करेगा नहीं। ऐसे ही ठीक है। बस पढ़ाई खत्म कर लूँ फिर कहीं दूर भाग जाऊँगी।"[12] बहन का घर बचाने के लिए वह बेबस हो जाती है।

पुरुष वर्ग के शोषण से बचने के लिए वह 'ट्रांसजेंडर' का वेश धारण करती है। रागिनी जब ट्रांसजेंडर बनकर एक शादी में बधाई के लिए पहुँचती है, तब वहाँ दूल्हे की मौसी जोकि उसकी बचपन की सहपाठी है पद्मा से उसकी मुलाकात होती है। पद्मा के माध्यम से कहानी में रागिनी का अतीत उजागर होता है। इस कहानी में एक ओर ट्रांसजेंडर समाज की दुःख भरी दास्ता है तो दूसरी ओर पुरुषवर्ग द्वारा लाचार स्त्रियों पर हो रहे शोषण का चित्रण भी है।

'कौन तार से बीनी चदरिया' अंजना वर्मा कृत कहानी ट्रांसजेंडर शरीर में जन्म लेनेवाली सुन्दरी की जीवन व्यथा को उजागर करती है। सुन्दरी का जन्म संपन्न परिवार में होता है, लेकिन ट्रांसजेंडर होने के कारण उसका परिवार उसे त्याग देता है। बड़े हो जाने पर भी सुन्दरी के मन में उसके घरवालों के प्रति प्यार बना रहता है। उसके घर ब्याह होता है तब वह अपनों से मिलने जाती है, लेकिन माँ समाज के भय के कारण उसे पहचानकर भी उसे गले नहीं लगा पाती। लेखिका यहाँ दिखाती है कि समाज के भय के कारण उसकी माँ उसके साथ अंजानों सा व्यवहार

करती है “सुंदरी की माँ का दिल तड़प रहा था कि वह सुंदरी को कलेजे से लगा ले। बुलाकर भीतर बैठाये परंतु मजबूर थी। अतः खड़ी - खड़ी सारे दृश्य को निहार रही थी चुपचाप। कुछ न कह सकती थी। नौकर, दाई, नाते - रिश्तेदार सब जैसे छिपे हुए कैमरे थे। कहाँ क्या क्लिक हो जाये।”[13] सुन्दरी की माँ और बहन शिवालय में आकर उससे मिलती हैं, वहाँ उसे माँ और बहन गले लगा लेती हैं, एक दूसरे के प्रति आपसी प्रेम उमड़ पड़ता है। सुन्दरी द्वारा कहना “क्या करना कुसुम बेसी हिलि-मिलि के ? ओ सबके दुनिया अलग है, अउर हमर सबके दुनिया अलग। हाथ-पैर, मुह, कान मानुस के समान होकर भी हम मानुस में नहीं गिनाते हैं। ऐसे अच्छा होता कि हम कौन जानवर जति में जन्म लेते चाहे मरद होते चाहे मउगी। अभी हम क्या हैं ?”[14] समाज का उनके प्रति नकारात्मक सोच व्यक्त करता है।

लड़कियों के जन्म होते ही घर में शोक फैल जाता है। सभी लोग लड़का चाहते हैं। ऐसा माना जाता है कि वे घर को संभालेंगे, बुढ़ापे में माता, पिता का सहारा बनेगें। वंश को आगे बढ़ानेवाला लड़का माना जाता है। आधुनिक कहे जानेवाले बहुत से लोगों की विचारधारा आज भी ऐसी ही है। लड़की का घर में पैदा होना अपमान माना जाता है। डॉ.लवलेशदत्ता द्वारा लिखित कहानी ‘नेग’ की विषयवस्तु कुछ ऐसी ही है। सुमन जब लड़की को जन्म देती है तब उसका पति सुधीर और उसकी सास रमादेवी बहुत दुःखी होते हैं। उनके घर में तीसरी बेटी का जन्म होने पर मातम छा जाता है। वे किसी से नहीं कहते कि घर में पोती का जन्म हुआ है।

जब ट्रांसजेंडर लोग बच्ची के जन्म पर बधाई देने सुमन के घर पहुँचते हैं, तब सुमन का पति और सास लड़की पैदा होने का गुस्सा उन लोगों पर उतारते हैं। उनका अपमान करते हैं। इसपर सुमन उन ट्रांसजेंडर लोगों से कहती है “इसके पैदा होने की खुशी इस घर में नहीं है...मातम बना रहे हैं घरवाले...इसने यह अपराध किया है कि यह लड़की बनकर पैदा हुई है।”[15] ट्रांसजेंडर

बच्ची को उठाकर सीने से लगा लेते हैं तथा नेग के तौर पर पाँच सौ रुपए देते हैं। ट्रांसजेंडर द्वारा रमादेवी से कहना कि “अरे चाची ऐसे मातमी चेहरा मत बनाओ खुशियाँ मनाओं कि तुम्हारे घर को जोड़नेवाली बेटी आई है जिसके लिए तुम्हें सब कुछ जोड़ना है। अगर बेटा आता तो बाँटना पड़ता। अरे चाची लड़का तो लड़कर अपना हक माँगत है लेकिन लड़की अपना हक छोड़कर चली जाती है, जैसे तुम चली आई अपने मायके में सब छोड़कर। समझ रही हो न चाची ?”[16] यह व्यक्त करता है कि सभ्य और आधुनिक कहे जानेवाले लोगों की सोच से इन ट्रांसजेंडर लोगों की सोच उच्च है तथा व्यवहार कुशलता भी इनमें अधिक हैं। मानवीय संवेदना इनमें है, बच्ची को नेग देकर उन्होंने समाज का लड़की के प्रति जो दकियानूसी सोच है उसे तोड़ मरोड़कर रख दिया है।

महेन्द्र भीष्म की कहानी ‘त्रासदी’ में दिखाया गया है कि स्त्री एवं ट्रांसजेंडर वर्ग को हमेशा पुरुष के क्रोध का शिकार होना पड़ता है। बंशी अपनी पत्नी रति एवं दो जुड़वा पुत्रियों तथा एक पुत्र के साथ संतुष्ट जीवन व्यतीत कर रहा था। इसीबीच एक दुर्घटना में वंशी की मृत्यु हो जाती है। पति की नौकरी रति को मिलती है। रति बहुत सुन्दर थी, एक दिन दो युवक उसके साथ बलात्कार करने की कोशिश करते हैं, तब सुन्दरी जो ट्रांसजेंडर है उसे उन दुष्टों से बचाती है। लेकिन उन लोगों के चाकू के वार से सुन्दरी का चेहरा खराब हो जाता है, सुन्दरी कुरूप हो जाती है। कुरूप हो जाने की वजह से अब वह नाच गाकर पैसा कमाने की लायक नहीं रहती। रति उसकी इज्जत बचानेवाली सुन्दरी को सहारा देती है, इसपर उसका पुत्र उसपर नाराज़ होता है। उसे रति का सुन्दरी से रिश्ता रखना अच्छा नहीं लगता। वह अपनी माँ को चरित्रहीन मानने लगता है, जबकि वह खुद चरित्रहीन था। एक दिन रति का पुत्र गुस्से में आकर सुन्दरी को मौत के घाट उतार देता है।

'हिजड़ा' कहानी श्रीकृष्ण सेनी की है। इस कहानी में ट्रांसजेंडर रजिया इंसानियत का मिसाल है। वह निम्मों से बहुत प्यार करती है। निम्मों के मरने के बाद वह उसके बेटे सुनील को पालती है उस बच्चे को पढ़ाती है। लेकिन सुनील इस सच्चाई से अवगत नहीं है। सुनील का प्रशासनिक सेवा में चयन होता है। ट्रांसजेंडरों के जबरदस्ती पैसा ऐंठते तथा दूसरों के साथ बुरा व्यवहार करते देख उसके मन में ट्रांसजेंडरों के प्रति नफरत पैदा होता है। अन्य पात्र हैड मास्टर साहेब सुनील को रजिया के बारे में बताता है सारी सच्चाई जानकर सुनील रजिया से लिपट जाता है। ललित शर्मा की कहानी है 'रतियावन की चेली' यह आत्मकथात्मक शैली में लिखी गई है। गरिमा दुबे की कहानी पन्नाबा संस्मरणात्मक कहानी है। पन्नाबा कहानी समाज का ट्रांसजेंडरों के प्रति नफरत को व्यक्त करती है साथ ही साथ इन्हें सम्मान तथा अधिकार देने की बात भी करती है। पूनम पाठक की 'किन्नर' तथा पारसदासोत द्वारा लिखित 'गलती जो माफ नहीं' लघु कहानियाँ हैं। कहानियों का कथानक ट्रांसजेंडर जीवन ही है। इनमें व्यंग्य के माध्यम से ट्रांसजेंडरों के प्रति सभ्य समाज के रवैये पर प्रहार किया गया है।

2.1.2. हम भी इंसान हैं

'हम भी इंसान हैं' कहानी संग्रह के संपादक डॉ.एम. फ़ीरोज़ खान हैं। इस कहानी संग्रह में विभिन्न कहानीकारों द्वारा लिखित अनेक कहानियाँ संकलित हैं। कहानीकारों ने अपनी कहानियों में ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों की दर्द, संवेदना, समाज तथा परिवार में उनके द्वारा भुगते जाने वाले शोषण आदि को सूक्ष्मता के साथ वर्णन किया है। कहानियों में पात्रों के माध्यम से कहानिकारों ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि ट्रांसजेंडर हमारे ही तरह इंसान हैं, उनमें भी हम इंसान की भाँति दिल है संवेदना है। वे चाहते हैं कि उन्हें एक इंसान होने का दर्जा समाज में मिले।

कमल कुमार द्वारा 'कुकुजनेस्ट' निबंध शैली में लिखी गई कहानी है । कुछ लोग जन्मजात ट्रांसजेंडर होते हैं तो कुछ बलपूर्वक ट्रांसजेंडर बनाये जाते हैं। इस कहानी में बधिया प्रक्रिया द्वारा ट्रांसजेंडर बनाने का चित्रण हमें मिलता है । इस कहानी में ट्रांसजेंडर लोगों के दर्दनाक जीवन का वर्णन है साथ ही साथ उनके बीच पनप रही आपराधिक प्रवृत्तियों का भी चित्रण यहाँ देखने को मिलता है। समाज के लोग इन्हें घृणा की दृष्टि से देखते हैं। मनुष्य होते हुए भी यह वर्ग सभी अधिकारों से वंचित हैं। आज ये अपने अधिकारों के लिए लड़ते दिखाई पड़ रहे हैं। इसका उदाहरण है बस में बैठे ट्रांसजेंडर का कहना कि "क्यों नहीं बैठ सकते? सरकार हमें राशनकार्ड देती है क्या? पर हम अन्न तो खाते हैं न! वोट देने देती है क्या? पर हम इसी देश में रहते हैं न! इसी देश के नागरिक हुए न? सरकार पहले हमें दूसरों की तरह जाने-समझे तो हम भी दूसरों की तरह टिकट लेंगे।" [17] कहानी में लिंग काटकर ट्रांसजेंडर बनाने की प्रक्रिया का दर्दनाक विवरण है साथ ही साथ यह भी व्यक्त किया गया है कि कई बुचरा देवी की पूजा के लिए भी लिंग काटते हैं।

सूरज बड़जात्या द्वारा लिखित 'कबीरन' कहानी ट्रांसजेंडर कबीरन की कहानी है । ट्रांसजेंडर कबीरन के घर में जन्म लेते ही उसके माता-पिता समाज में अपना सम्मान बनाये रखने के लिए उसे त्याग देते हैं। असिस्टेंट प्रोफेसर सुमेध को जब पता चलता है कि ट्रेन में गाना गाकर सभी का मनोरंजन करनेवाली कबीरन उसकी सगी बहन है तो बहन के प्रति उसका प्यार जागृत होता है। वह अपनी बहन को घर वापिस ले आना चाहता है। लेकिन कबीरन घर लौटना नहीं चाहती वह सुमेध से पूछती है "मेरा क्या कसूर था जो बापू ने मुझे घर से निकाल दिया? आज मैं दर-दर की ठोकरें खा रही हूँ तो क्यूँ? परिवार को दोषी मानूँ? समाज का? किसे? पता है बाबुजी, हम हिजड़ों में भी स्त्री और पुरुष हिजड़े होते हैं।"[18] जब वह अनाथालय में थी तब उसके साथ बलात्कार हुआ कबीरन समाज तथा कानून के प्रति रोष प्रकट करते हुए कहती है "कहीं किसी

कानून में लिखा है कि हिजड़े के साथ बलात्कार की क्या सजा है? तुम्हारा समाज न तो हमें स्त्री मानता है और न ही पुरुष ।"[19] एक ओर सुमेध अपनी बहन कबीरन को घर वापस ले आना चाहता है यहाँ सुमेध का ट्रांसजेंडर वर्ग के प्रति मानवीयता देख सकते है तो दूसरी ओर कबीरन घर वापस लौटना नहीं चाहती उसका मानना है कि "पर मैं पूरे विश्वास से कह सकती हूँ कि तुम्हारी दुनिया से अच्छी होती हैं हमारी दुनिया। किसी को धोका नहीं देते, दुत्कारते नहीं है ।"[20] उसे दरदर ठोकर खाने के लिए घर से बेदखल करने वाले अपनों के बीच वह लौटना नहीं चाहती।

चन्दन नेगी द्वारा लिखित कहानी 'खौदा चाचा' में जवाहर लाल नेहरू के प्राण बचानेवाले ट्रांसजेंडर खौदा का साहसी व्यक्तित्व को दर्शाया गया है। जलसे में जब पठानों ने जवाहरलाल नेहरू पर हमला मोल दिया तब खौदा चाचा ने अपनी जान को दाँव पर लगाकर उनकी रक्षा की। इस वीरता के लिए उन्हे सम्मान के रूप में पेंशन दिया गया। इस कहानी में कहानीकार ने ट्रांसजेंडर के बहादूर तथा समाजसेवी रूप को हमारे सामने रखा है।

तौकीर चुगताई की कहानी 'किन्नर' किन्नर वेश में रहकर लोगों से दुर्व्यवहार करनेवाले सामान्य पुरुष के करतूतों को हमारे सामने पेश करती है। नीलू एक मर्द है वह किन्नर वेश में रहकर दो लड़कियों का शारीरिक शोषण करता है। इस कहानी में तेरह साल की लड़की अपनी माँ से अपनी योनि संबंधी शंका तथा प्रश्न पूछती है तब वह किशोरी समझकर उसके सवाल को टाल देती है और कहती है समय आने पर सब कुछ समझ जाओगी। वह लड़की नीलू द्वारा शारीरिक शोषण का शिकार बनती है। यह कहानी ट्रांसजेंडर के आड़ में शोषण में लिप्त साधारण लोगों की क्रूरता को जहाँ दर्शाता है वहीं दूसरी ओर माता-पिता को अपने किशोर बच्चों को यौन संबंधी जानकारियाँ प्रदान करने की सलाह भी देता है।

सोफिया सिद्दीकी की कहानी 'अपना दर्द' में ट्रांसजेंडर राजू अपने स्त्रेण स्वभाव के कारण घर से बहिष्कृत होकर ट्रांसजेंडर समाज में पनाह पाता है। वहाँ वह अन्य ट्रांसजेंडरों की तरह नाच गाकर या भीख माँगकर जीना नहीं चाहता। वह रूप सज्जा का काम सीखता है तथा अपना गुजारा चलाता है। वह अपनी अस्मिता बनाता है। ट्रांसजेंडर बच्चों को चिकित्सा द्वारा सामान्य जीवन प्रदान किया जा सकता है इस सच्चाई को वाकिफ कराती है मीना पाठक कृत 'भूमिजा' कहानी। भूमिजा ट्रांसजेंडर है, उसके जन्म लेते ही उसके माता-पिता उसे जमीन में जिन्दा गाड़ देते हैं। फुलमतिया नामक स्त्री उसे बचाकर गाँव के ज़मींदार को सौंपती है। वे उसका पालन पोषण करते हैं तथा उसके शारीरिक विकृति का इलाज कराकर उसे साधारण जीवन प्रदान करते हैं। चिकित्सा की सहायता से बहुत ट्रांसजेंडर सामान्य जीवन पा सकते है लेकिन कई माता पिता इससे अंजान होते हैं या आर्थिक तंगी के कारण कर नहीं पाते।

विनोद कुमार दवे की कहानी 'पद्मश्री थर्डजेन्डर' में ट्रांसजेंडर महीधर अपने मनोबल, कठिन परिश्रम तथा अपनी माँ के द्वारा दी गई हौसले के कारण एक सफल पर्वतारोही बनता है तथा पद्मश्री से सम्मानित होता है। अगर परिवार का साथ रहे और ट्रांसजेंडरों में हौसला बुलंद हो तो वह अपने मनचाहे हर मुकाम पर पहुँच सकते है इसका उदाहरण है महीधर। डॉ.ललित सिंह राजपुरोहित की कहानी 'ट्रांसजेंडर' में ट्रांसजेंडर कुमुद का शरीर उसके मन के विपरीत है। पिता को जब उसकी सच्चाई का पता चलता है तो वे बीमार पड़ जाते हैं। कुमुद अपने मन के अनुसार शरीर को पुरुष रूप में तब्दील करना चाहती है। कहानी में बताया गया है कि ट्रांसजेंडर होने को बीमारी समझकर उसका उपचार नहीं किया जाए।

ट्रांसजेंडरों के प्रति परिवार तथा समाज का दृष्टिकोण हमेशा नकारात्मक रहा है इसी सच का पर्दाफाश लीना हाशिर ने अपनी कहानी 'मृत्यु के बाद माँ के नाम एक किन्नर का खत' में

किया है। इस कहानी में ट्रांसजेंडर अमजद अपनी माँ को पत्र लिखकर अपने दर्द को बाँटता है। अमजद को उसके पिता ट्रांसजेंडर समाज को सौंप देते हैं वहाँ उसका नाम अलीशाह रखा जाता है। माँ अपने बच्चे को चाहते हुए भी, पिता के फैसले के खिलाफ कुछ नहीं कहती। मरते वक्त भी अमजद अपनी माँ को याद करता दिखाई पड़ता है । अपनों के प्यार के लिए तरस रहे ट्रांसजेंडर बच्चों की कहानी है यह । तपन बंद्योपाध्याय की कहानी 'वृहनल्ला' ट्रांसजेंडर अर्चना की मार्मिक व्यथा को उजागर करती है । कहानी में मऊ और सुवर्णा नामक दो स्त्रियों के माध्यम से यह बताया गया है कि ट्रांसजेंडर शादी के बाद भी अपूर्ण ही रहते हैं क्योंकि वे कभी संतान पैदा नहीं कर सकते । अर्चना को बार-बार एहसास दिलाया जाता है कि वह स्त्री नहीं है, वह एक ट्रांसजेंडर है ।

परमजीत धींगरा कृत 'खामोश महाभारत' पौराणिक महाभारत के प्रसंग के द्वारा ट्रांसजेंडर लोगों की कुंठित जीवन तथा उनकी मानसिक पीड़ा को प्रस्तुत करती है। महाभारत कथा के अनुसार अर्जुन पुत्र अरावन द्वारा दी गयी बलि के कारण पांडव युद्ध में विजयी हुए। अरावन अपनी बलि देने से पहले एक शर्त रखते है कि उन्हें मृत्यु से पहले शादी करनी है । श्रीकृष्ण मोहिनी को रूप धारण कर अरावन से शादी रचाते है तथा अरावन की मृत्यु के बाद विधवा बनकर विलाप करते हैं। कुवागम में अरावन का मंदिर है। ट्रांसजेंडर लोग कुवागम में जाकर अरावन मूर्ति से विवाह करते हैं तथा दूसरे दिन जब अरावन की मूर्ति को तोड़ा जाता है तब वे विधवा बनकर अपने सुहाग के लिए रोते हैं। इस कहानी में निरंजना जोकि ट्रांसजेंडर है वह भी अरावन से विवाह करना चाहती है तथा इस जीवन से मुक्त होना चाहती है।

डॉ.मेराज अहमद कृत 'मैमूना, मोमिना और मैनू' कहानी पारिवारिक जीवन जीनेवाले एक ही परिवार में जन्में तीन ट्रांसजेंडरों की कहानी हैं। बड़ी बहन की मृत्यु के बाद उसके नवजात

शिशु की देखभाल ये तीनों करते हैं। उस बच्चे की परवरिश में कोई कमी नहीं छोड़ते, सबसे अच्छे स्कूल में उसको दाखिला दिलाते हैं। उन तीनों के जीने की वजह वह बच्चा ही होता है। बच्चे अशरफ की दो माँ मैमूना और मोमिना थी, तो उसकी हर ख्वाहिश मैनू मामा पूरी करता। मैमूना कहती है "बहिन हमने उसे कभी कोई कमी महसूस होने नहीं दी। उसने एक कहा हमने दो दिया। उसने अगर दिन को रात बताया तो हम लोगों ने रात में बदलने की कोशिश की। तीनों उसी की नींद सोये और उसी की नींद जागे।"[21] लेकिन पढ़ लिखकर बड़े होने के बाद अपना घर बसाने के इरादे में वह उनसे दूर हो जाता है क्योंकि उसका मानना है कि मैमूना, मोमिना और मैनू के साथ रहने पर उसकी शादी नहीं हो सकेगी कोई भी उसे लड़की नहीं देगा। अपने पालन पोषण करने वालों को छोड़ अशरफ अपने पिता को ढूँढने लगता है, वह पिता जिसने उसकी खबर तक न ली थी।

जवाहर लाल कौल की 'ज्योति सूना नयन' दृष्टिहीन लड़के विकास तथा ट्रांसजेंडर ज्योति की परस्पर प्रेम, सहानुभूति से जुड़ी कहानी है। विकास शारीरिक अपूर्णता तथा ज्योति लैंगिक अपूर्णता से पीड़ित हैं। ये दोनों आपस में मिलते है तथा परस्पर सहयोग से सुखी जीवन व्यतित करते हैं। कैस जौनपुरी ने अपनी कहानी 'एक किन्नर की लवस्टोरी' में ट्रांसजेंडर रानू का राजू के प्रति निश्चल प्रेम को वर्णित किया है। ट्रांसजेंडर रानू राजू के प्रेम के जाल में फँसकर अपना धन दौलत शरीर सब कुछ उसपर निछावर कर देती है। लेकिन अंत में स्वार्थी राजू रानू की हत्या करके उसके पैसे लूट वहाँ से भाग जाता है। राजू निजी स्वार्थ को साधने के लिए जब रानू का इस्तेमाल करता है वही ट्रांसजेंडर रानू सच्चे दिल से राजू पर अपना प्यार जताती दिखाई पड़ती है।

'समर से सुरमई' बबिता भंडारी द्वारा लिखित कहानी है। यह कहानी समर से सुरमई बनी ट्रांसजेंडर की कहानी है। समर के जन्म लेते ही परिवार वाले उसे समाज के डर से घर से दूर करने

को आतुर होते हैं। लेकिन माँ उसे अपने साथ रखना चाहती है। पिता उससे घृणा करते हैं। स्कूल से उसे निकाल दिया जाता है। दोस्त सभी उसके साथ बुरा व्यवहार करते हैं। समर भगवान से पूछता है "मुझे क्या बनाकर दुनिया में भेजा तूने? क्या जानवर का जन्म भी नसीब न था मुझे? क्या नरक की आग भी बदी न थी मुझे? ...ईश्वर से द्वंद्व का उसका यह पहला क्षण था।"[22] घर में पिता और समाज से वह पीड़ित होता रहा। अंत में वह घर छोड़कर जाने में विवश हो जाता है। समर से सुरमई बन इस दुष्ट समाज से उसको मुक्ति मिलती है। जहाँ पिता को बच्चे को सहारा देना चाहिए था वहाँ पिता समाज में अपने मान सम्मान बनाए रखने के लिए उसे घर से दूर जाने को विवश करते हैं।

इसी प्रकार का एक कहानी है लवकुमार 'लव' की कहानी 'अंधेरे की पर्तें'। यहाँ निशा एक ट्रांसजेंडर बच्चे को जन्म देती है इस कारण उसका पति उसे छोड़कर चला जाता है। निशा किसी भी हालत में अपने बच्चे को अपने साथ रखना चाहती है। वह अपनी संतान को लेकर शहर चली जाती है, लेकिन हर कहीं उसे दुविधाओं का सामना करना पड़ता है। उसका बेटा परेश जो ट्रांसजेंडर है बडे होने पर उसमें शारीरिक बदलाव आने लगा। उसे स्कूल से बाहर निकाल दिया गया। अंत में ट्रांसजेंडर समाज उसे उठाकर अपने साथ ले जाते हैं। निशा चाहकर भी अपने बच्चे को समाज में सम्मान जनक जीवन दे नहीं पाती, समाज उसे देने नहीं देती। वह समाज से युद्ध करके हार जाती है।

डॉ.रश्मि दीक्षित द्वारा लिखित 'नियति' कहानी में ट्रांसजेंडर बच्चे को माता-पिता अपने साथ रखना चाहते हैं लेकिन ट्रांसजेंडर समुदाय के लोग उसे उनके पास रखने नहीं देते। वे उसे उठाकर अपने साथ ले जाते हैं। ट्रांसजेंडर बच्चे रितेश को अपने साथ ले जाते वक्त ट्रांसजेंडर काली माँ बच्चे की माँ से कहती है "अब तेरा बेटा हमारा है, इसे भूल जाना। हमारा कोई

रिश्तेदार नहीं, कोई सगा-संबंधी नहीं। हम भगवान के बच्चे हैं, और उन्हीं के सहारे रहते हैं।"[23] रिश्ते की नियति थी कि वह रितेश से रितु बन गई और ट्रांसजेंडर समाज में अपना जीवन उसे बिताना पड़ा।

2.1.3. इस जिन्दगी के उस पार

'इस जिन्दगी के उस पार' ट्रांसजेंडर समाज के लोगों पर आधारित राकेश शंकर भारती की कहानी संग्रह है। इस कहानी संग्रह में ट्रांसजेंडर लोगों की विभिन्न समस्याओं, उनकी मानसिक व्यथाओं, विवशता आदि का सटीक वर्णन प्रस्तुत किया गया है। इस कहानी संग्रह में कुल ग्यारह कहानियाँ संकलित हैं, जो निम्नलिखित हैं – 'मेरे बलम चले गये', 'मेरी बेटी', 'दयाबाई', 'रक्तदान', 'रामवृक्ष दादा की याद में', 'सौतन', 'फ्रैंड़रिक्वेस्ट', 'ट्रांसजेंडर', 'बधिया', 'तीन रंडिया' और 'इस जिन्दगी के उस पार'।

'मेरे बलम चले गये' ट्रांसजेंडर सुशीला तथा उसके बचपन के मित्र प्रदीप की प्रेम कहानी है। समाज में सुशीला को ट्रांसजेंडर होने के कारण ताने सुनने पड़ते हैं। सभी के नकारात्मक रवैये के कारण वह घर-बार छोड़ दिल्ली के नाईट क्लब में नाच गाना आरंभ करती है। वहीं उसका बचपन का साथी प्रदीप उसके बारे में सबकुछ जानकर भी उससे प्रेम करता है, तथा उसको जीवन साथी बनाना चाहता है। लेकिन उसके घरवालें यह रिश्ता मंजूर नहीं करते तथा उसकी शादी दूसरी लड़की से करवा देते हैं। प्रदीप अपनी पत्नी लता से वैवाहिक संबंध नहीं बना पाता तो दूसरी ओर सुशीला प्रदीप के शादी से निराश अपना शिष्ट जीवन गुरु के पास रहकर व्यतीत करती है। इस कहानी में प्रदीप और सुशीला की निश्चल प्रेम भावना हम देख पाते हैं।

'मेरी बेटी' मोहिनी और देवव्रत की ट्रांसजेंडर बच्ची मुन्नी की कहानी है। उसके माता पिता समाज के भय से उसे नकली ट्रांसजेंडर गुरु के हाथ सौंप देते हैं। उस बच्ची से भीख मँगवाया जाता है। निःसंतान डॉक्टर अरोड़ा दंपति मुन्नी को पालते हैं, उसे पढ़ा लिखाकर वे

डॉक्टर बनाते हैं। अब मुन्नी डॉ. राधिका बन जाती है। बड़े होकर अपनी लिंग सर्जरी करवाकर राधिका सामान्य जीवन जीती है। अस्पताल में सालों पहले उससे बिछड़ी उसकी माँ की चिकित्सा वह करती है। अस्पताल में माँ बेटी एक दूसरे को पहचान लेते हैं, दोनों का आपसी प्यार उमड़ पड़ता है। यह कहानी ट्रांसजेंडर लोगों के दर्द को बया करती है तो दूसरी ओर लिंग चिकित्सा की सोच प्रदान कर सकारात्मक विचार पेश करती है।

इस कहानी संग्रह की तीसरी कहानी है 'दयाबाई'। इस कहानी में मेरठ के ब्राह्मण परिवार में ट्रांसजेंडर रूप में जन्म लेनेवाली दया की जीवन गाथा है। घर की मान मर्यादा की रक्षा के लिए दया को ट्रांसजेंडर समाज को सौंप दिया जाता है। ट्रांसजेंडर लक्ष्मी उसका देखरेख करती है। दया के जीवन में सुरेन्द्र नामक पुरुष आता है लेकिन वह भी उसका साथ छोड़ देता है। लक्ष्मी दयाबाई को उसके माता-पिता से मिलवाती है। दयाबाई की भतीजी की शादी में वह उसके भाई को पैसा देकर खूब सहायता करती है। शादी के अवसर पर लोगों द्वारा उसके बारे में उसके भाई से पूछने पर वह कहता है "गाज़ियाबाद का हिजड़ा है आप लोगों के स्वागत में सट्टे पर नाचने के लिए यहाँ बुलाया गया है।"[24] यह सुन उसका दिल टूट जाता है और वह वहाँ से चली आती है।

इस कहानी संग्रह की अगली कहानी है 'रक्तदान'। इसमें ट्रांसजेंडर बिमल अपने परिवार तथा समाज में घृणा का पात्र बनता है। बचपन में वह बलात्कार का शिकार होता है। वह घर छोड़कर ट्रांसजेंडर मंडली में पनाह लेता है। वह बिमल से बिमला बन जाती है तथा एन.जी.ओ. में काम करती है और रक्तदान करने लगती है। अपने भतीजे के लिए वह रक्तदान करती है और उसे बचाती है, लेकिन इस सबके बावजूद भी घरवाले उससे दूरी बनाकर रखते हैं उससे घृणा करते हैं। इस कहानी में परिवार का ट्रांसजेंडरों के प्रति अमानवीयता और तिरस्कार दिखाया गया है।

'रामवृक्ष दादा की याद में' समलैंगिकता पर आधारित कहानी है। इस कहानी का मुख्य पात्र मुरली अपने दादाजी के छोटे भाई रामवृक्ष दादा के हवस का शिकार होता है उसके बाद वह भी उनके प्रति आकृष्ट हो जाता है। उसके बाद जब वह गाँव से, दिल्ली आई आई टी में पढ़ने आता है, तब वहाँ उसके दोस्त अमरेंद्र के प्रति वह आकृष्ट होता है तथा उसके साथ शारीरिक संबंध बनाता है। शादी के बाद दो बच्चों के बाप बन जाने के बाद भी वह अपने दांपत्य जीवन में खुश नहीं रह पाता और वह जसवीर नामक आदमी से संबंध बनाता है।

समलैंगिकता पर आधारित एक ओर कहानी है 'सौतन'। यह कहानी जे एन यू में पढ़ रहे जैकी की कहानी है। जैकी अपने मकान मालिक सैलेश के साथ शारीरिक संबंध बनाता है। सैलेश शादीशुदा है अंत में वह अपनी पत्नी को छोड़कर जैकी के पास आ जाता है। 'फ्रेंडरिक्वेस्ट' कहानी जसप्रीत तथा टैक्सी ड्राइवर हरविंदर पति-पत्नी की कहानी है। शादी के कई वर्ष बीत जाने पर इनके यहाँ बच्चा पैदा नही होता। मेडिकल चेकअप कराने के बाद पता चलता है कि जसप्रीत ट्रांसजेंडर है। यह सच्चाई जानकर हरविंदर उसे छोड़कर चला जाता है। वह दूसरी शादी करता है और उसके दो बच्चे भी होते हैं। निराश जसप्रीत शिक्षिका की नौकरी करती है। अपने मन को बहलाने के लिए फेसबुक में चैटिंग करती है। फेसबुक के फेक आई डी के कारण जसप्रीत और हरविंदर फिर से मिलते हैं तब हरविंदर जसप्रीत को बताता है कि उसकी पत्नी उसे और उसके बच्चों को छोड़कर प्रेमी के साथ भाग गई। अंत में हरविंदर अपने दो बच्चों के साथ जसप्रीत के साथ खुशी से रहने लगता है। कहानी का अंत सुखात्मक होता है।

'ट्रांसजेंडर' कहानी में डॉ. देवराज द्वारा लड़कों को जबरन ट्रांसजेंडर बनाया जाता है तथा उनसे यौन कर्म करवाया जाता है। कहानी में देवराज ने सुरेंदर का लिंग काटकर उसे शालिनी बना दिया था और इसी प्रकार जयदेव को चाँदनी। डॉक्टर के बुरे कर्मों का फल उनके बेटे

राधेश्याम को भुगतना पड़ता है। उनका बेटा समलैंगिक है जो लिंग कटवाकर राधारानी बन जाती है। इस संग्रह की 'बधिया' कहानी में जनार्दन अपनी दोस्त तथा पड़ोसी सुष्मिता से प्रेम करता है। धन की लालच के कारण वह पैसा कमाने के लिए ट्रांसजेंडर समाज से जुड़ता है। वहाँ उसका लिंग काटकर उसे बधिया बना दिया जाता है। वह जनार्दन से जानकी बनती है। एक दिन उसकी मुलाकात उसके प्रेयसी सुष्मिता से होती है, जो अब विधवा है। सुष्मिता को जब जनार्दन का सच पता चलता है तब वह दुखी होती है। इस कहानी में सामान्य लोगों को बलपूर्वक ट्रांसजेंडर बनाने की कथा कही गई हैं।

'तीन रंडियाँ' अर्जुन से द्रोपदी बनी ट्रांसजेंडर तथा संध्या और पारुल नामक दो वेश्याओं की कहानी हैं। अर्जुन के घर जब उसकी शादी की बात चलती है, तब वह घर छोड़कर ट्रांसजेंडर समाज में शामिल हो जाता है। पैसा कमाने के लिए वह अपने गुरु शोभा बाई को छोड़कर निकल पड़ती है। उसकी मुलाकात पारुल और संध्या से होती है जो वेश्या थीं। वह जिस्मानी धंधे से जुड़ती है। देवधर से पारुल गर्भवती होती है तथा एक लड़की को जन्म देती है। पारुल भी उस बच्ची को छोड़कर भाग जाती है तब द्रोपदी उस बच्ची को पालती है। एक ट्रांसजेंडर के मनुष्यता तथा स्नेह को इस कहानी में हम देख पाते हैं।

'इस जिन्दगी के उस पार' नाचने और ढ़ोलक बजाने वाले महेन्द्रनाथ तथा विष्णु की कहानी है। आर्थिक तंगी के कारण वे देह व्यापार करने लगते हैं और बाद में ट्रांसजेंडर मंडली में शामिल हो जाते हैं। वहाँ वे ढ़ोलक बजाने और नाचने के लिए रखे जाते हैं। समुदाय की गुरु रूपमती विष्णु के साथ संबंध बनाती है और दूसरी और महेंद्रनाथ के साथ ट्रांसजेंडर सुभद्रा अपना संबंध बनाती है। महेन्द्रनाथ सुभद्रा को छोड़कर अपने बच्चे और पत्नी के पास चला जाता है और विष्णु दूसरी शादी करके बच्चे के साथ खुशी के साथ जीवन यापन करता है। विष्णु

को उसके परिवार के साथ देखकर रूपमती खुश होती है उसे लगता है कि वह बच्चा उसका अपना है।

2.1.4. कथा और किन्नर

'कथा और किन्नर' डॉ. विजेन्द्र प्रताप सिंह तथा डॉ.रविकुमार गोंड द्वारा संपादित कहानी संग्रह है । इस कहानी संग्रह में कुल 25 कहानियाँ संग्रहित हैं । इन कहानियों में विभिन्न कहानीकारों ने ट्रांसजेंडरों के विस्थापन का दर्द, अपनों तथा समाज के लोगों द्वारा किये गये शारीरिक, मानसिक शोषण, समाज का उनके प्रति नकारात्मक रवैया उनकी व्यथा को चित्रित करने की कोशिश की हैं।

कहानी संग्रह की पहली कहानी है 'हिजड़ा' जो डॉक्टर नंदलाल भारती द्वारा लिखित है। कहानी में गोपालबाबू के नई हवेली बनाने पर ट्रांसजेंडर वहाँ नेक माँगने पहुँच जाते हैं । उनके द्वारा माँगे दस हजार रुपया देने को गोपालबाबू तैयार नहीं होते। वे ट्रांसजेंडर लोगों को घृणा की दृष्टि से देखते हैं । गोपाल बाबू के मित्र निषेधबाबू तथा विक्रम ट्रांसजेंडर लोगों प्रति सहानुभूति रखनेवाले हैं। वे ट्रांसजेंडर को इंसान मानते हैं। उनका मानना है कि ट्रांसजेंडर हिंसक नहीं होते, उनका दिल भी इंसान जैसे धड़कता है, उनको भी हमारे ही जैसे सुख दुख दर्द का एहसास होता है। अगर वे हिंसक जैसा व्यवहार कर रहे हैं तो इसका जिम्मेदार हम हैं । कई बार अपने को सभ्य कहनेवाले लोग ट्रांसजेंडर व्यक्तियों से बुरी तरह व्यवहार करते हैं। उनके व्यवहार से तंग आकर ट्रांसजेंडर लोगों को कभी-कभार उनसे बुरी तरह पेश आना पड़ता है । ट्रांसजेंडर लोग बुरे तथा हिंसक है यह धारणा गलत है।

डॉ.महेन्द्र प्रताप सिंह की कहानी है 'अथ किन्नर कथा'। कहानी का प्रमुख पात्र रामदास कृषक है। रामेश्वर धाम की यात्रा के बाद वे पांडिचेरी महर्षि अरविंद के आश्रम पहुंचते हैं। वहाँ

उनकी मुलाकात आदिवासी समाज के महावीर से होती है। वे ट्रांसजेंडरों के प्रति सकारात्मक विचार रखनेवाले व्यक्ति हैं। रामदास अपने ग्रामीन साथियों को लेकर महावीर जी के साथ कुवागम जाते हैं तथा वहां 18 दिन के समारोह में भाग लेते हैं। वहाँ के पुरोहित से उन्हें अरावन कथा तथा एक ट्रांसजेंडर मीरा द्वारा ट्रांसजेंडर समुदाय की व्यथा सुनने का मौका मिलता है। वहाँ से लौटते वक्त ट्रांसजेंडरों के प्रति उनके मन में सकारात्मक दृष्टि पैदा होती है तथा कई ट्रांसजेंडर उनके मित्र बनते हैं। कई लोग परंपरागत सोच के कारण ट्रांसजेंडर लोगों से दूरी बनाते हैं, उनसे घृणा करते हैं। यदि गहराई से उन्हें जाने तो हमारा उनके प्रति जो निषेधात्मक नज़रिया है उसमें जरूर बदलाव आयेगा।

डॉक्टर अरविंद कुमार की कहानी है 'एक जैसे'। कहानी में नायक 'मैं' ट्रेन में उज्जैन से लखनउ जा रहा था। पैसा माँगते हुए ट्रांसजेंडर दल वहाँ पहुँचते हैं। नायक पहली बार उनसे मिल रहा था। इससे पहले उसके गाँव के राकेश ने अपना अनुभव उससे बाँटा था कि एक बार उससे ट्रांसजेंडरों ने सौ रूपये माँगे लेकिन उसके पास घर तक पहुँचने का ही पैसा था। लेकिन वे मानने को तैयार नहीं हुए और वे उसकी बेज्जती करने लगे। उसमें एक बोला "अरे चाँदनी! इसको भी अपनी तरह से हिजड़ा बना दो अपनी मंडली में शामिल कर लें। यह भी ताली बजाकर हमारी तरह से माँगे।"[25] अंत में ग्रूप लीडर को उसकी दयनीयता का आभास हुआ और वे उन लोगों को लेकर चले गये। नायक 'मैं' ट्रांसजेंडरों को दस रुपया देते हुए उनसे कोई काम धंधा करने को कहता है इस पर वे कहते हैं "बाबू साहब हम लोगों का कौन नौकरी देगा। हमें बुरी निगाह से देखा जाता हैं जैसे हम इंसान ही नहीं हैं। हम कोई भोग की वस्तु हैं।"[26] ट्रांसजेंडर आर्थिक विषमता का अनुभव करते हैं। शिक्षा की कमी के कारण इन्हें अच्छी नौकरी नहीं मिलती हैं। वहीं दूसरी और समाज का इनके प्रति नकारात्मक सोच, तथा हेय दृष्टिकोण के कारण कोई भी इनको इनके काबिलियत के अनुसार काम नही देता इसीकारण ये अपने पारंपरिक पेशे को करने

के लिए मजबूर हो जाते हैं। स्टेशन पर उतरने पर नायक को कई ट्रांसजेंडर सेक्स वर्कर के रूप में दिखाई पड़े जो लोगों की तलाश में फिर रहे थे।

डॉ.विजेन्द्र प्रताप सिंह की कहानी है 'प्रतिशोध'। इस कहानी में ईश्वरी प्रसाद की तीसरी बेटी रेखा की शादी में ट्रांसजेंडर टोली की प्रमुख राखी ने दस हजार एक रुपया नेग माँगा, पैसा न देने पर लड़की के पिता तथा ट्रांसजेंडरों में मुट भेड़ हुआ। ट्रांसजेंडर कपड़ा उतारने लगे दूल्हा क्रोध से ट्रांसजेंडर लोगों को पीटने लगा। राखी घायल दुई उसका खुन बहने लगा था। राखी दूल्हे को याद दिलाती है कि जब दूल्हा एक दिन रास्ते में खून से लथपथ पड़ा था तब राखी ने उसका जान बचाया था। तथा वह ट्रांसजेंडरों की विवशता को उसे वाकिफ कराती है। जाते वक्त वे उन लोगों को दुआ देकर जाती हैं।

इशा शर्मा द्वारा लिखित कहानी है 'वो...एक किन्नर'। कहानी की नायिका एक विवाह समारोह में ट्रांसजेंडर कुमारी से मिलती है। वह अपने को बदनसीब समझती है। कुमारी नायिका से कहती है "कोई भी ऐसा जीवन नहीं जीना चाहता दीदी। इसलिए हम से न जाने कितने किन्नरों ने इस दुनिया के समक्ष एक हास्य का पात्र बनने से अच्छा आत्महत्या करना समझा।"[27] जन्म से लेकर मृत्यु तक ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को अनेक समस्याओं से होकर गुजरना पड़ता है। मानसिक तनाव तथा शारीरिक समस्याओं का सामना उन्हें करना पड़ता है। कई बार ट्रांसजेंडर व्यक्ति अपने इस हताशपूर्ण जीवन से मुक्ति पाने के लिए आत्महत्या कर लेते हैं। अगर अपनों तथा समाज का साथ हो तो कभी भी उन्हें आत्महत्या करने की नौबत नहीं आयेगी। नायिका उसे आश्वासन देती है और आगे जीने की शक्ति प्रदान करती है "कुमारी, तुम श्रापित नहीं हो देखो, ईश्वर ने समस्त जग में मात्र तुम्हें ही यह शक्ति प्रदान की है जिसके द्वारा तुम अपनी दुआ देकर किसी का भी भाग्य चमका सकती हो। इसलिए तुम्हें स्वयं पर गर्व होना चाहिए न कि खुद को

श्रापित समझना चाहिए।"[28] ट्रांसजेंडर व्यक्ति को खुद के अंदर की शक्ति को पहचानकर आगे बढ़ना होगा, तभी वे इस समाज का डटकर मुकाबला कर सकेंगे।

अलका प्रमोद की कहानी है, 'इतनी देर में'। प्रस्तुत कहानी में प्रशस्ति चन्द्रा नामक युवती ट्रांसजेंडर अंशू से न्यूयोर्क में एक अंतराष्ट्रीय अधिवेशन में मिलती है। अंशू वहाँ पेपर प्रेसन्टेशन के लिए आया हुआ था। वह भारतीय है लेकिन अमेरिका में बचपन से पला बड़ा होने के कारण वहाँ का नागरिक है। अंशू को देखकर प्रशस्ति चंद्रा को अपने ट्रांसजेंडर भाई की याद आ जाती है। जिसके जन्म लेते ही उसे परिवार से अलग कर दिया गया और माँ को बता दिया गया था कि बच्चा जन्म लेते ही मर गया। बाद में माँ को सच्चाई का पता चलता है और वह प्रशस्ति से अपने छोटे भाई को न्याय दिलाने का वादा माँगती हुई मर जाती है। समाज के डर तथा ट्रांसजेंडर के प्रति हीन भावना के कारण प्रशस्ति माँ की कही बात नज़र अंदाज कर देती है। किन्तु अंशू से मिलकर वह उससे प्रभावित होती है और अपने भाई को ढूँढती है। वह उससे मिलकर उसे अच्छा जीवन दिलाना चाहती है लेकिन ट्रांसजेंडर भाई अब अपने ट्रांसजेंडर परिवार में ही खुश है, वह वापस बहन के पास आना नहीं चाहता। उसका कहना है कि जब उसे अपनों का सहारा चाहिए था तब किसी ने मुंड़कर नहीं देखा, अब उसे किसी की ज़रूरत नहीं है, वह अपनी दुनियाँ में खुश है।

अखिलेश निगम 'अखिल' की कहानी है 'आखिर कब तक?'। कहानी में लाला रामेश्वर प्रसाद अपने कॉलेज का वार्षिक समारोह मनाते हैं। वहाँ दिव्यांग तथा निर्धन बच्चों को शिक्षा दी जाती थी। वे अविवाहित थे। वे ट्रांसजेंडरों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ना चाहते थे। लाला रामेश्वर प्रसाद समाज सेवी थे। उनके कई कपड़े के मिल थे और वे अनाथालय भी चलाते थे। सभी उनकी मुक्तकंठ प्रशंसा करते है, पत्रकार उनका इंटरव्यू लेते हैं। इंटरव्यू में वे सच्चाई व्यक्त

करते हैं कि वे एक ट्रांसजेंडर हैं। ट्रांसजेंडर है जानने पर पत्रकार उन्हें मज़ाक का पात्र बना देते हैं। समाज के लोगों का ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के प्रति व्यंग्यात्मक रवैये के कारण कई बार ये अपनी पहचान समाज में जाहिर नहीं करतें। अपनी पहचान छुपाकर समाज में दमघुटकर जीने को वे विवश हो जाते हैं।

कविता विकास द्वारा लिखित कहानी है 'पहचान'। पहचान कहानी में ट्रांसजेंडर रुबीना ताली पीटकर और भीख माँगकर जीना नहीं चाहती। वह पढ़ी लिखी है। इसलिए वह ट्रांसजेंडरों के डेरे से भागकर नई जिन्दगी आरम्भ करती है। रुबीना एक ट्रांसजेंडर डॉक्टर के यहाँ काम करने लगी। बाद में उसे पता चलता है कि वह डॉक्टर बुरा आदमी है, वह अपनी प्रजाति बढ़ाने के लिए मासूमों का ऑपरेशन कर जानबूझकर उन्हें ट्रांसजेंडर बनाता है। वह वहाँ आयी मासूम बच्ची जेबा को लेकर भाग निकलती है। तहरी नामक जगह में वह जेबा के साथ रहने लगी। दूसरों के घर खाना बनाने का कामकर तथा छोटे बच्चों को पढ़ाकर वह गुजारा करती है। इसी बीच वहाँ के ठाकुर के बेटे कुंवर से जेबा को प्यार होता है। ठाकुर को यह रिश्ता पसंद नहीं था। वह कुंवर को विदेश भेज देता है, लेकिन कुंवर तथा जेबा का रिश्ता टूटता नहीं। भारत वापस आने पर कुंवर जेबा को लेकर भाग जाता है। इसपर क्रोधित ठाकुर रुबीना को कैद कर लेता है और उसका नग्न चित्र संचार माध्यमों में डालकर उसपर अत्याचार करता है, लेकिन रुबीना कुंवर तथा जेबा का पता ठाकुर को नहीं बताती। अंत में नींद की गोली खाकर रुबीना मर जाती है। रुबीना का प्यार, समर्पण एवं अपनों के प्रति प्यार की भावना इस कहानी में चित्रित है।

रविकुमार गोंड की कहानी है 'प्रतिमान'। ट्रांसजेंडर लक्ष्मी और पायल को शिव मंदिर से एक ट्रांसजेंडर बच्ची उपेक्षित मिलती हैं। वे उसका पालन पोषण करते हैं। जब वे स्कूल में ट्रांसजेंडर बच्ची शिवालिका को भर्ती कराने जाते हैं तो वहाँ का हेडमास्टर ट्रांसजेंडर होने के

कारण शिवालिका को एड्मिशन नहीं देते तथा उन्हें अपमानित करके भेज देते हैं । शिवालिका को विष्णुपुर गाँव के प्राथमिक विद्यालय में एड्मिशन मिलता है । वहाँ के हेडमास्टर प्रभुदीन दयालु थे । वे शिवालिका का साथ देते हैं । शिवालिका पढ़ने में होशियार थी तथा तीरंदाजी खेल में माहिर भी थी । तीरंदाजी में शिवालिका पचास जिलों के विद्यालयों को हराकर प्रथम स्थान प्राप्त करती है । खेल मंत्री उसके पढ़ाई का खर्चा सरकार की तरफ से घोषित करते हैं । अंत में वह भारत के लिए विश्व ओलंपिक में गोल्ड मैडल जीतती है । जो शिवालिका का विरोध करते थे वे सभी उसे चाहने लगे थे । भारत के राष्ट्रपति द्वरा वह पद्मश्री से सम्मानित होती है । ट्रांसजेंडरों में हर इंसान की भांति सारे गुण निहित हैं उन गुणों को परिपोषित करने तथा उन्हें प्रोत्साहन देने की आवश्यकता हैं ।

नीना अन्दोत्रा पठानिया की कहानी है 'मिस्टी'। कहानी में सुधा और नरिंदर को शादी के दस साल बाद बच्चा पैदा होता है । बच्चा पैदा होने की खुशी गम में बदल जाता है, जब उन्हें पता चलता है कि बच्चा ट्रांसजेंडर है । सभी ट्रांसजेंडर बच्चे से छुटकारा पाना चाहते हैं । लेकिन सुधा अपनी ट्रांसजेंडर बच्ची मिस्टी को पालना चाहती है । उसका पति भी उसका साथ नहीं देता । वह पति को छोड़कर बच्ची के साथ मायके आती है लेकिन वहाँ भी कोई ट्रांसजेंडर बच्ची को रखना नहीं चाहता । वह बच्ची मिस्टी को लेकर शहर जाती है, किराये के मकान में रहकर सिलाई का काम करके अपनी बेटी मिस्टी को पढ़ाती है । सुधा को बिज़नेस में तरक्की मिलती है । मिस्टी डॉक्टर बनती है । डॉक्टर दीपक मिस्टी को सच्चे दिल से प्यार करता है । मिस्टी के अस्पताल मे उसके पिता दूसरी पत्नी से जन्मे बेटे के साथ पहुँचते हैं, जिसकी दोनों किड़नी खराब हो गई थी । पिताजी की दूसरी पत्नी मर गई थी । पिताजी अपनी ट्रांसजेंडर बच्ची पर किए अत्याचार पर पश्चाताप जताते हैं । मिस्टी अपनी किड़नी अपने भाई को देकर अपने पूरे परिवार का साथ पाती है ।

ट्रांसजेंडर व्यक्ति अपनों से बेहद प्यार करते हैं। अपनों द्वारा प्रताड़ित होने पर भी अपनों से उनका लगाव कम नहीं होता जिसका एक उदाहरण है मिस्टी।

संगीत सिंह 'भावना' की कहानी है 'दर्द'। कहानी में ट्रांसजेंडर वैदेही को ट्रांसजेंडर होने के कारण घर से निकाल दिया जाता है। माँ जो उसे खूब प्यार करती है वह भी उसे वहाँ रोक नहीं पाती। निशांत नामक युवक उससे प्यार करता है। हमारे समाज में ज्यादातर लोग ट्रांसजेंडरों को हेय की दृष्टि से देखते हैं। लेकिन एकतरफा ऐसे भी लोग हैं जो उन्हें मनुष्य मानते हैं और उनसे सच्ची भावना से प्यार करते हैं। वह घरवालों से वैदही की सच्चाई छुपाकर शादी करता है। लेकिन जब निशांत के घरवालों को वैदही की सच्चाई का पता चलता है तब वे वैदही को अपमानित करते हैं। इसीबीच निशांत के बड़े भाई का बेटा बीमार पड़ता है तब वैदही अपना खून देकर उसकी रक्षा करती है। जो उसे अपमानित करते हैं उन्हीं की सहायता वह करती है।

सुरेश कुमार द्वारा लिखित कहानी है 'अंधेरे की परते'। कहानी में निशा और रवि के यहाँ ट्रांसजेंडर बच्चा पैदा होता है। बच्चे के पैदा होने पर सभी दुःखी होते हैं। रवि निराश होकर घर परिवार छोड़कर चला जाता है। निशा को डर लगता है कि कहीं ट्रांसजेंडर लोग आकर उसके ट्रांसजेंडर बच्चे परेश को अपने साथ न ले जाए। इसी भय से वह रात को अंधेरे में घर छोड़कर अंजान शहर चली जाती है। वहाँ सिलाई का काम करके वह परेश को पालती है। परेश की सच्चाई को वह समाज से छुपाकर रखती है लेकिन स्कूल में उसका राज़ खुल जाता है। उन्हें उस शहर को भी छोड़कर जाना पड़ता हैं। अंत में आखिरकार निशा अपने पति के नाम पर गाँव में जो मकान है वहाँ जाकर रहने का इरादा बनाती है, क्योंकि वह जानती है कि वे जहाँ भी रहेंगे एक न एक दिन सबको परेश की सच्चाई का पता चल जायेगा। ट्रांसजेंडर लोग आकर परेश को अपने साथ ले जाते हैं। एक ट्रांसजेंडर बच्चे की माता की दारुण व्यथा इस कहानी में चित्रित हैं। अपने

ट्रांसजेंडर बच्चे को माता अपने पास रखने के लिए पूरी कोशिश करती हैं, लेकिन उसका प्रयास विफल हो जाता है। निशा परेश की खोज में भागते-भागते ठोकर खाकर अपना जान गवा बैठती है।

अजय कुमार चौधरी द्वारा लिखित कहानी है 'वो किन्नर'। कहानी में जतिन जो स्कूल में अध्यापक है उसकी मुलाकात ट्रांसजेंडर रानी से होता है। रानी जतिन को बताती है कि उसका बचपन का नाम प्रकाश था। बड़ा होने पर उसमें शारीरिक बदलाव आने लगा। पिताजी उससे नफरत करने लगे थे। उसे बहुत पीटते थे। माँ ही सहारा थी। समाज से तंग आकर पिताजी ने उसे उनके दूर के रिश्ते के भाई के यहाँ भेज दिया। जहाँ उस आदमी ने रानी उर्फ प्रकाश का शारिरिक शोषण किया। रानी अपने घर वापस चली आई। अपने घर में रहकर किसी तरह से उसने उच्च माध्यमिक तक पढ़ा। कॉलेज की पढ़ाई के लिए उसे बनारस भेजा गया। कॉलेज के लड़कों द्वारा उसे शोषण तथा अपमान सहना पड़ा। कॉलेज के प्रिंसिपल ने उसे ही दोषी ठहराया। वह वापस अपने घर चली आई। लेकिन पिताजी ने घर में घुसने नहीं दिया। तब से वह उसके मौसी के घर रह रही है। काम के सिलसिले में इंटरव्यू में गई तब उसे वहाँ अपमानित किया गया। इसके खिलाफ पुलिस में रिपोर्ट करवाने गई तो वहाँ भी उसे ही दोषी ठहराकर अपमानित किया गया। ट्रांसजेंडर परिवार, समाज हर कहीं प्रताड़ित है।

कुंदन द्वारा लिखित कहानी है 'दुआ की कीमत'। कहानी में आशिष अपने बेटे के लिए सूरज पूजा का कार्यक्रम रखता है। वहाँ आये ट्रांसजेंडरों ने उससे 5100 रूपये की माँग की जब वह उतनी रकम देने को इंकार करता है तब वे बद्दुआ देने की धमकी देते हैं इसपर डरकर आशिष 2100 रूपए मुश्किल से जुगाड़कर उन्हें देता है। उस रात उसके बच्चे को बुखार होता है और उसकी तबियत बिगड़ जाती है। अस्पताल ले जाने पर 2000 रुपए जमा करने को कहा जाता है लेकिन आशिष के पास इतना पैसा न होने के कारण उसे वापिस भेज दिया जाता है। तबियत

बिगड़ जाने पर उसके बेटे की मौत हो जाती है। वह सोचता है अगर ट्रांसजेंडरों का बद्दुआ लेकर 2100 रुपए उन्हें न दिया होता तो काश उसका बच्चा बच गया होता। ट्रांसजेंडरों की बद्दुआ से तो वह बच गया, लेकिन अपना बच्चा उसे गवाना पड़ा। यहाँ कहानीकार ने अंधविश्वास पर करारा प्रहार किया है।

माहिर शर्मा जहन की कहानी 'किन्नर माँ' में बिल्लो ट्रांसजेंडर अपनी किड़नी बेचकर रूमी का सेक्स चेंज़ ऑपरेशन कराकर उसे मुख्यधारा से जोड़ती है। इसी प्रकार इस कहानी संग्रह के अन्य कहानियाँ हैं - अनुराधा सैनी द्वारा लिखित 'पीड़ा अन्तर्मन की', डॉ.निरुपमा वर्मा की कहानी 'बरगद की छांव', वंदना सहाय की 'किन्नर' कहानी, डॉ.चंद्रेश कुमार छतलानी की कहानी 'भय किससे', तथा 'अपमानित', 'हिजड़ा चरित्र', पारस दासोत की कहानी 'घर', गरिमा संजय दुबे द्वारा लिखित 'पन्ना बा', श्रीकृष्ण सेनी की कहानी 'हिजड़ा', किरण सिंह द्वारा लिखित कहानी 'संझा' आदि। इन कहानियों में ट्रांसजेंडर का अपनों से बिछड़ने का गम, अपमान के दंश को झेलने की विवशता, निसाहयता, प्यार पाने की तड़प शारीरिक तथा मानसिक शोषण सहने की लाचारगी, वजूद बनाने की छटपटाहट आदि का वर्णन हम देख सकते हैं।

2.1.5. थर्ड जेण्डर : अनूदित कहानियाँ

'थर्ड जेण्डर : अनूदित कहनियाँ', डॉ. एम. फ़ीरोज़ खान द्वारा संपादित कहानी संग्रह है। इसमें उन्नीस कहानियाँ संकलित हैं। इस कहानी संग्रह में विभिन्न भारतीय भाषाओं के कहानीकारों द्वारा लिखी गई ट्रांसजेंडर समाज से जुड़ी कहानियों को हिन्दी भाषा में कहानीकारों द्वारा अनूदित किया गया है।

थर्ड जेण्डर: अनूदित कहानियाँ, कहानी संग्रह की प्रथम कहानी करतार सिंह कृत 'हमजिनस' है। जिसका अनुवाद देवेन्द्रकुमार ने किया है। कहानी में ट्रांसजेंडर कस्तूरी का जन्म

एक प्रतिष्ठित परिवार में होता है। कुंदन जोहरी अपने ट्रांसजेंडर बच्चे, कस्तूरी को समाज से छुपाकर पालता है। ट्रांसजेंडर लोग कस्तूरी को न ले जाए इसके लिए वह उन्हें आर्थिक रूप से सहायता करता है। कस्तूरी की सच्चाई जाने वगैर एक लड़की उससे प्यार करती है। शारीरिक तौर पर वह लड़की जब कस्तूरी से संबंध बनाने की कोशिश करती है तब वह समझ जाती है कस्तूरी न मर्द और न औरत है। कस्तूरी के भाई के विवाह अवसर पर ट्रांसजेंडर बधाई लेने जब आते हैं तब कस्तूरी पैरों में घुंघरु बाँधकर नाचने लगी तथा अंत में वह उनके साथ चली गई।

कहानी संग्रह की दूसरी कहानी नवतेज पुआधी की 'ऊँचा ब्रिज लाहौर का' है। जिसका अनुवाद डॉक्टर संदीप सिंह ने किया है। इस कहानी में ट्रांसजेंडर लोगों की इंसानियत को चित्रित किया गया है। ज्योना और उसके भाई अपनी जमीन का मुकदमा हार गये थे। तब ट्रांसजेंडर शब्बो उनकी मदद करती है। वह ज्योना सिंह के गायन से प्रभावित है। वह उन्हें लाहौर की बड़ी अदालत लेकर जाती है। हर प्रकार से उनकी सहायता करती है। जब ज्योना शब्बो को पैसा वापस देने जाती है, तब तक वह मर चुकी होती है। कहानी संग्रह की तीसरी कहानी है मोहन भंडारी की 'मटकन लाल खोजा' जिसका अनुवादक अमरीक सिंह दीप है। बहुत मन्नतों के बाद मटकन के माता -पिता को मटकन की प्राप्ति होती है। लेकिन मटकन ट्रांसजेंडर था। माता पिता अपने लाड़ले बेटे की शादी उसकी इच्छा के विपीरत करवा देते हैं। मटकन शादी के बाद अपनी पत्नी से दैहिक संबंध नहीं बना पाता। अंत में मटकन अपने समुदाय के लोगों के साथ जाकर रहने लगता है।

'भेद भरी बात' मनिंदर द्वारा लिखित है, तथा इसका अनुवाद डॉ. जसविंदर कौर बिंद्रा ने किया है। कहानी में पंजाब की पृष्ठभूमि है। वहाँ के दरबारों तथा दरगाहों का वर्णन इस कहानी में देख सकते हैं। कहानी में पीर साहब का बेटा ट्रांसजेंडरों के पास आता जाता है। जब उसे

शारीरिक जरूरत को पूरा करने के लिए एक स्त्री के पास भेजा जाता है तब वह उस के चरणों में पड़े सोया हुआ दिखाई पड़ता है। पीर अपना बेटा ट्रांसजेंडर है यह जानकर निराश हो जाता है। 'पेड़ से टूटा पत्ता', बलजीत सिंह रैना द्वारा लिखी गई है। स्त्री रूप में जन्मी एक ट्रांसजेंडर इस कहानी की प्रमुख पात्र है। तेरह साल के बहुत मन्नतों के बाद उसका जन्म हुआ था। जन्म लेते ही माता की मृत्यु हो गई। वह लड़कियों की तरह पली बड़ी थी जब उसके प्रेमी को उसका ट्रांसजेंडर होने का पता चलता है तब वह प्रेमी उसे छोड़कर चला जाता है। ट्रांसजेंडर समुदाय में शामिल होकर एक दिन वह बधाई में अपने प्रेमी के घर ही पहुँच जाती है, जहाँ उसका बच्चा जन्मा था। वह बच्चे को दुआएँ देती है। वह पुराने ख्यालों में खो जाती है। मीना वर्मा कृत कहानी है 'सती' जिसका अनुवाद डॉ. जसविंदर कौर बिद्रा ने किया है। इस कहानी में ट्रांसजेंडर कृष्णा का अपने प्रेमी के प्रति प्यार को दिखाया गया है। कृष्णा अपने प्रेमी नामदेव से बहुत प्यार करती है। जब नामदेव का स्वास्थ्य बिगड़ जाता है तब एक पत्नी की भाँति कृष्णा उसकी सेवा करती है। नामदवे के वियोग से दुखित कृष्णा की भी मृत्यु हो जाती है। कृष्णा का नामदेव के प्रति प्रेम के उदात्त भाव इस कहानी में हम देख पाते हैं। निर्मल जसवाल राणा की कहानी है 'रेतीला'। इस कहानी को डॉ. जसविंदर कौर बिंद्रा ने अनूदित किया है। इस कहानी में दो पुरुष पत्नी के होते हुए भी ट्रांसजेंडर सीमा के पास योनिक सुकून पाने की इच्छा से आते हैं। कहानी में ट्रांसजेंडरों की पीड़ा तथा पुरुष वर्ग का ट्रांसजेंडरों के प्रति जो मानसिकता है उसका चित्रण मिलता है।

डॉ.हरजीत कौर कृत कहानी है 'मलका' जिसका अनुवादक डॉ.कामिनी साहिर है। यह कहानी परिवारवालों का ट्रांसजेंडरों के प्रति व्यवहार को व्यक्त करता है। सावित्री एक ट्रांसजेंडर है। उसके घरवाले उसे बोझ समझते है तथा अंत में विवश होकर वह अपने समुदाय के लोगों के पास में आकर रहने लगती है। वह अंजू जो शिक्षिका है उसे बताती है कि घर छोड़ने के बाद वह

सावित्री से मलका बन गई है। डॉ.तरसपाल कौर की कहानी है 'महानाच' जिसका अनुवाद सुभाष नीरव ने किया है। कहानी आदर्शवाद से संबंधित है। कहानी का मुख्य पात्र ट्रांसजेंडर हंसना है वह अन्य ट्रांसजेंडरों की तरह बधाई मांगकर, नाचगाकर जीना नहीं चाहता वह कढ़ाई का काम करके जीता है। जब उसके सामने एक लड़की की बेइज्जदी होती है तब वह उसकी रक्षा करके इंसानियत का मिसाल बन जाता है। एस बलवंत की कहानी है 'मृगतृष्णा' । इस कहानी का अनुवादक हैं सुभाष नीरव। इस कहानी का नायक ट्रांसजेंडर बसु है जो एक दफतर में काम करता है और दफ्तर में किसी को मालूम नहीं कि वह ट्रांसजेंडर है। अपने घनिष्ठ दोस्त रमाकांत और उनकी पत्नी को वह बाहर रेस्तराँ में दावत देता है। रमाकांत की पत्नी के प्रति वह आकृष्ट होता है। जब रमाकांत की पत्नी दोबारा माँ बनने जा रही थी, तब रमाकान्त के अंदर शंका उत्पन्न होती है कि बच्चे का बाप कौन है। बसु की सच्चाई रमाकांत तब जानता है जब उसकी मौत हो चुकी होती है। 'ओए सोने के कंगना गरमीत कडिआवली' द्वारा लिखित कहानी है जिसको डॉ. भूपेंद्र कौर ने अनूदित किया है। इस कहानी में ट्रांसजेंडर बबली का अपने प्रेमी को प्यार करने तथा प्यार पाने की तड़प हम देख सकते हैं। अनेमन सिंह की कहानी है 'नूरी'। जिसका अनुवाद डॉ. कुलविंद्र कौर ने किया है। इस कहानी में ट्रांसजेंडर समाज में व्याप्त रहस्यों का उद्घाटन किया गया है। कहानी में राजी का बलपूर्वक लिंग काटकर ट्रांसजेंडर बनाया जाता है और इस कहानी में ट्रांसजेंडरों के शवसंस्कार का भी चित्रण है। कहानी की प्रमुख पात्र नूरी में प्रेम, करुणा, ममता भरे पड़े हैं। वह अनाथ बच्चों को सहारा देती है और उन्हें गृहस्थ जीवन प्रदान करती है। श्रेष्ठ व्यक्तित्व की झांकिया नूरी में देखने को मिलती हैं।

'कान में डाला बुन्दा' रशीद अब्बास की कहानी है। जिसका अनुवाद संगम वर्मा जी ने की है। कहानी में ट्रांसजेंडर बुन्दु के त्याग और बलिदान की उत्कृष्ट भावना का चित्रण किया गया है। वह अपने मित्र डैंडी और उसकी पत्नी की मृत्यु के बाद उनके बच्चों का दायित्व अपने ऊपर

ले लेती है। उसका मानना है कि ईश्वर ने शायद इसी दायित्व निर्वाह के लिए उसे ट्रांसजेंडर बनाया। 'जीने लायक' कहानी गुरसेवक प्रीत की है जिसको डॉ. हरकीरत हीर ने अनूदित किया है। कहानी में इंदर नाम का व्यक्ति निर्धन है, लेकिन वह परिश्रमी तथा ईमानदार है। हर मुश्किलों का सामना वह डटकर करता है, लेकिन जब उसके घर में ट्रांसजेंडर बेटे का जन्म होता है तब वह टूट जाता है। समाज का डर उसे सताता है। वह अपने बच्चे की असलियत सभी से छुपाकर रखता है। मानसिक तनाव में उसका ट्रांसजेंडर बेटा नहर में छलाँग लगाकर आत्महत्या करता है। तब भी इंदर को अपने बेटे की मौत से ज्यादा चिंता इस बात पर लगी रहती है कि लोगों को कहीं पता न लग जाए कि उसका बेटा ट्रांसजेंडर था। जसवीर राणा कृत कहानी है 'घुंघरू कथा' इस कहानी का अनुवाद डॉ.जसविंदर कौर बिंद्र ने किया है। इस कहानी में ट्रांसजेंडरों की क्रूरता का जहाँ एक ओर वर्णन मिलता है वहीं उनकी मानवीय संवेदनशीलता को भी चित्रित किया गया है।

'हिजड़ों ...कुण...औ, कै वै' दिनेश चन्द पुरोहित की कहानी है। कहानी में ट्रांसजेंडरों के मानवीय गुणों को दर्शाया गया है। एक लड़की का बलात्कार करनेवाले का पुरुषांग काटकर उसे ट्रांसजेंडरों ने नपुंसक बना दिया और जब एक पगली किसी के द्वारा गर्भवती हो जाती है तथा जब वह बच्चे के जन्म लेते ही मर जाती है तब उस बच्चे का दायित्व कोई लेने को तैयार नहीं होता उस वक्त ट्रांसजेंडर लोगों आकर उस बच्चे को अपनाते हैं। 'वे लोग' कहानी हिमांशी शेतल की है जिसके अनुवादक मालिनी गौतम है। एक ट्रांसजेंडर शादी करने के बाद अपने पत्नी को दैहिक सुख प्रदान करने में विफल होता है और वह पत्नी द्वारा दिए उलाहना सुनने को विवश होता है। आयशा खातून की कहानी, फिर मत आना, कहानी का अनुवाद डॉ. रश्मि पांडा मुखर्जी ने किया है। 'उसका बाप' कहानी रामसरूप अणखी की है जिसको कंचन गोयल ने अनूदित किया है। कहानी में ट्रांसजेंडर दींदार सिंह की शादी उसके माता पिता करवा देते हैं। उसकी पत्नी प्रसन्न कौर को सच्चाई का पता चल जाता है। दींदार सिंह के माता पिता वंश को आगे बढ़ाने तथा

समाज के नज़र से बचने के लिए प्रसन्न कौर को दूसरे व्यक्ति से शारीरिक संबंध बनाने के लिए विवश करते हैं। आयशा खातून की कहानी है 'फिर मत आना' जिसका अनुवाद डॉ.रेश्मी पांडा मुखर्जी ने किया है। कहानी में ट्रांसजेंडर रिकी को उसके घरवाले घर से प्रताड़ित करते हैं वह घर छोड़कर ट्रांसजेंडर मंडली मे शामिल होती है। रिकी से वह सारिका बन जाती है। एक बार बधाई देने वह अपने ही घर पहुँच जाती है। वहाँ उसकी माँ उसे पहचान नहीं पाती और उसे हार देती है। रिकी जब हार लौटाने आती है तब माँ उससे घर फिर मत आने के लिए कहती है। 'थर्ड जेण्डर' अनूदित कहानियाँ की सभी कहानियों में ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों की समस्साओं को हम देख सकते हैं।

2.1.6. किन्नर समाज की लघुकथाएँ

'किन्नर समाज की लघुकथाएँ' लघुकथा संग्रह के संपादक डॉ. रामकुमार घोटड़ और डॉ. लता अग्रवाल हैं। इसमें 151 लघु कथाएँ संग्रहित हैं। परिवार एवं समाज से परित्यक्त ट्रांसजेंडरों की विवशता, संघर्ष, वेदना को इन कहानियों में हम देख सकते हैं। 'यह भारत है', 'कुदरत का तोहफा', 'तिलस्मी शरीर', 'फिर से मत आना', 'अपनी-अपनी ज़िन्दगी' आदि संपादक डॉ. रामकुमार घोटड़ की कहानियाँ इस कहानी संग्रह में संकलित हैं। तथा डॉ. लता अग्रवाल जी की 'दहलीज का दर्द', 'बिखरा दर्पण', 'वसूली', 'नजराना', 'सांझा दुःख', लैंगिक विकलांगता', 'पेट की आग', 'बृहन्नला', 'हिजड़ों की बस्ती', 'रक्षा कवच', 'देवीय अवतार', 'औलाद का सुख', 'अनाथ' आदि कहानियाँ इस संग्रह में संकलित हैं। इस कहानी संग्रह के अन्य प्रमुख कहानियाँ हैं नपुंसकता, पहचान, किरदार, किन्नर डॉट कॉम, हिजड़ापन आदि। इन कहानियों में परिवार एवं समाज से संघर्ष कर मुकाम बनाने वाले ट्रांसजेंडर चरित्रों का दिखाया गया है। 'बड़ी बहन', 'सर्कस का जोकर', 'भेद', 'निःस्वार्थ खाने लायक' कहानियों में ट्रांसजेंडर

समाज के लोगों में जो इंसानियत प्रेम, मातृत्व मनोभाव है उसे दर्शाया गया है। डरपोक हिजड़ा, नर पिशाच, रूदन, संस्कार, इंसान, अधिकार, तुमको नमन, नया प्रयोग, इसी दुनिया के आदि कहानियों में ट्रांसजेंडरों के संघर्ष और वेदना को चित्रित किया गया है।

2.2. कविता

हिन्दी साहित्य के 21वीं शती के इस दौर में ट्रांसजेंडर समाज पर भी कविता लिखी जा रही हैं। लेकिन नाम मात्र के कविता संग्रह ही इस विषय पर प्राप्त है। कविताओं का मुख्य विषय इस हाशिएकृत लोगों की व्यथा, उनकी जीवन संघर्ष, तड़प, अपनों के प्रति प्यार, संवेदना तथा उनके छटपटाहट को बनाया गया है। ट्रांसजेंडरों पर लिखा गया काव्य संग्रह हैं- 'अस्तित्व और पहचान' जिसके संपादक डॉ.विजेन्द्र प्रताप सिंह है। 'सिसकती दास्तान' काव्य संग्रह लता अग्रवाल की है। इसमें लगभग 122 कविताएँ हैं। 'पंखुड़ियाँ अंतर्द्वन्द्वों की' कविता संग्रह के संपादक डॉ.विजेन्द्र प्रताप सिंह हैं। 'अधूरी देह' गीतिका वेदिका का नवगीत संग्रह है। जिसका दूसरा संस्करण भी उपलब्ध है। 'किन्नरकथा' उपन्यास का काव्यानुवाद किन्नर काव्य में ट्रांसजेंडरों को विषय बनाया गया है। महेन्द्र भीष्म की प्रसिद्ध उपन्यास 'किन्नर कथा' का काव्य रूप 'किन्नर काव्य' की पाण्डुलिपि आशीष कुलश्रेष्ठ ने प्रेषित की है। विद्या राजपूत और रवीना बरिहा द्वारा संपादित 'जिन्दगी की दास्तान' ट्रांसजेंडरों द्वारा लिखित कहानियों, कविताओं और साक्षात्कारों का संग्रह है। 'किन्नर व्यथा' अशोक आकाश बालोद का प्रलंब काव्य है। इसके बीस भागों में ट्रांसजेंडरों के व्यथा को चित्रित किया गया है।

लता अग्रवाल की 'सिसकती दास्तान' काव्य संग्रह में ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों की पीड़ा, सामाजिक और पारिवारिक संघर्ष, निराशा, कुंठा को व्यक्त किया गया है। ट्रांसजेंडर कहते

हैं ''समझो हमें भी कभी आकर बैठो/करीब हमारे गौर से देखो/ हमें / हमसे बतियाओ/ हमारी धड़कनोम को सुनो/ भावनाओं को समझो/ हममें भी/ माँ, बहन, बेटी सी महक आएगी/''[29]

ट्रांसजेंडर व्यक्ति अपने जन्म से लेकर मरने तक अपने परिवार तथा समाज से संघर्ष करता रहता है। किसी घर में ट्रांसजेंडर बच्चे का जन्म होता है तो घरवाले दुखी हो जाते हैं, अपनी मान की रक्षा के लिए उस बच्चे को परिवार से अलग कर देते है - 'अस्तित्व और पहचान' कविता संग्रह में ट्रांसजेंडर बच्चे के पैदा होने पर परिवार वालों का दृष्टिकोण जाहिर किया गया है-

''जन्मते ही मेरे
चेहरे सबके
क्यूँ मायूस हुए
घर-भर के अधरों की
मुस्कानों पर कर्फ्यू लगे
देख मुझको
सबने मुख मोड़ा
किन्नर कहकर मुझको छोड़ा''[30]

कविता में कहा गया है कि ट्रांसजेंडर बच्चे के जन्म लेते ही घर के सभी के चेहरों में मायूसी छा जाती है, सभी के होठों से मुस्कान गायब हो जाती है। ट्रांसजेंडर बच्चे के जन्मने पर सभी को दुःख होता है, कोई भी उसे स्वीकार नहीं करता, सभी उसे किन्नर कहकर छोड़ते हैं।

'साँझ' कविता में पूनम प्रकाश जी ट्रांसजेंडर शरीर में कैद मन की पुकार को वाणी देती है-

''ये बेबस मन अपने कारागार में
तड़पकर चीखता है...
मेरा अपराध कोई बताये तो सही

मैं बस एक किन्नर?

आखिर इंसान क्यों नहीं?''[31]

ट्रांसजेंडर के रूप में जन्म लेने पर एक व्यक्ति को हमेशा दुःखित होना पड़ता है । ट्रांसजेंडर के रूप में जन्म लेने में उसका दोष नहीं, फिर भी उसे जीवन भर नरक तुल्य जीवन व्यतीत करना पड़ता है । समाज में उसे इंसान होने का दर्जा नहीं दिया जाता । ट्रांसजेंडर यहाँ पूछता है कि ट्रांसजेंडर होने के कारण उसे इंसान क्यों नहीं समझा जाता, उसका अपराध क्या है ।

डॉ. विष्णुकांत कहते हैं ट्रांसजेंडर व्यक्ति हमारे समाज का अहम् हिस्सा है, लेकिन इसके बावजूद हम हमेशा इन्हें अलग मानते हैं, तथा छेड़ते हैं । सभ्य समाज तथा अपनों द्वारा बहिष्कृत ये आज तृतीय लिंग माने जाते हैं । डॉ.विष्णुकांत अशोक जी अपनी कविता 'तृतिया लिंग' में ट्रांसजेंडर लोगों को मनुष्य का दर्जा दिलाने की बात करते हैं-

''यूँ तो वे हमारे ही समाज अनचाहे अंग हैं,

हर खुशी में शामिल वे हमारे संग संग हैं ।

प्रकृति की अजीब विडम्बना देखो यारों,

छोड़ दिया जिनको अपनों ने, समाज ने,

हीजड़े नही हैं वो, अब तृतीय लिंग हैं''[32]

रवि रश्मि ने 'हिजड़े' कविता में कहा है कि ट्रांसजेंडर भी मानव है उनसे सहानुभूति तथा प्यार हमें करना है-

''हिजड़े समाज का हिस्सा हैं, उनको भी प्यार करो

कुछ हो जो घर में शुभ तो, उनको भी याद करो

उनकी दुआओं से होते हैं शुभ, कई कार्य भी

आशिर्वाद और दुआओं के लिए, उनकी भी पुकार करो ।''[33]

हिजड़े कविता में व्यक्त किया गया है कि ट्रांसजेंडर लोग समाज का हिस्सा हैं इसी कारण हमें उनसे प्यार करना है , उनकी दुआ शुभ मानी जाती है इसलिए घर के शुभ अवसर पर हमें उन्हें बुलाना है। वे भी मानव हैं उनसे हमें प्यार करना है।

समय के बदलते आज इस हाशिएकृत समाज को उनकी पहचान मिल रही हैं। सरकार ने इनकी उन्नति के लिए कई कानूनी नियम जारी किये हैं। ये खुद अपने हक के लिए सामने आ रहे हैं। डॉ. विजेन्द्र प्रताप सिंह अपनी कविता 'अस्तित्व और पहचान' में कहते हैं -

''हमारे पास भी
अब अपना एक नाम है,
एक पहचान है,
शनै: शनै बदल रहा है
दुनिया का स्वरूप
धारण कर रहे हैं जीव परजीव
नए नाम और उपनाम
हम भी हैं अब विधिमानत
'थर्ड जेंडर'
यही होगा अब हमारा
वोटर कार्ड, राशन कार्ड, और नेम प्लेट पर
स्थायी अस्तित्व और नाम,
अब तृतीय लिंगी है हमारी पहचान,
अब मिली है हमको भी पहचान।''[34]

कविता में ट्रांसजेंडर लोगों का समाज में अस्तित्व स्थापित करने के बारे में कहा गया है। अपनों तथा समाज के द्वारा बहिष्कृत ट्रांसजेंडर आज समाज की मुख्यधारा से जुड़ने की कोशिश कर रहे हैं। अपनी पहचान को वे समाज में स्थापित कर रहे हैं, कल तक जिन्हें सभी घृणा की दृष्टि से देखते थे, गालियां देते थे आज वे अपना नाम पहचान बना रहे हैं। नये-नये उपनाम उनके साथ जुड़ रहे हैं। थर्ड जेंडर के रूप में वे जाने जाते हैं। वोटर कार्ड, राशन कार्ड सब कुछ उन्हें मिल गया है। अब ट्रांसजेंडर तृतीय लिंग के रूप में पहचाने जाने लगे हैं।

डॉ.विजेन्द्र प्रताप सिंह के संपादकत्व में प्रकाशित 'पंखुड़ियाँ अंतर्द्वंद्वों की' प्रबंध काव्य महाभारत के पात्र शिखण्डी पर आधारित है। ट्रांसजेंडरों का जीवन साँप की तरह केंचुली में जकड़ा हुआ होता है। साँप को केंचुल त्यागने में बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ता है। उसी तरह यौनिक अक्षमता की केंचुल ट्रांसजेंडरों से लिपटी हुई होती है उसे त्यागना इनके लिए कठिन है।

''साँप की केंचुल सी/वासना की चुनर/उतार फेंकी/ नहीं जा सकती / वासना मानव में / हर्ष नहीं ला सकती / साँप केंचुल की/ त्यागने पर/ आंतरिक हर्ष विशाद की/ स्थिति को/ प्राप्त नहीं होता है/''[35]

ट्रांसजेंडर का जीवन संताप से भरा हुआ है, वे भी पारिवारिक जीवन जीना चाहते हैं। जीवन भर वे दुःख भोगते हैं-

मैं एक पतझड़ हूँ/ जिसका बगीचे/ बस विदाई समारोह/ मनाते हैं/ मैं एक ऊसर भूमि हूँ/ जहाँ हरियाली/ निर्वसना रहना चाहती है/ मैं एक ऐसा/ जलयान हूँ/ जिसमें स्थान-स्थान पर/ तट से/ घृणा लिखी है।....मैं वह इमारत हूँ जिसमें रेत की/ दीवार है/ मैं भी चाहता हूँ/ किसी अनमोल/ हाड़ -मांस के/ पुखराज को/ अपनी अंगूठी में नगीने की भाँति/ पहचाना/ मैं भी चाहता हूँ मोरपंखी कोयलों को/अपनी बाजुओं में भींचना।''[36]

पाण्डवों द्वारा भीष्म का वध मुमकिन नहीं था सिर्फ शिकण्डी ही उन्हें मार सकता है इसलिए पाण्डवों ने शिकण्डी को अपनी सेना में शामिल किया-

''क्या पांडवों की/ मुझसे वास्तविक/ अंतरंगा बढ़ी है/ क्या उनके हृदय में / मेरे लिए/ प्रेम की सीमा/ इतनी बढ़ी चढ़ी है/ धूर्त पांडव ही क्या/ संपूर्ण हस्तिनापुर/ द्रुपद व अन्य राज्यों ने/ कभी मेरे/ अस्तित्व को भी/ नहीं स्वीकारा/ सामान्य स्थितियों में/ पर/ आज/ स्थिति असामान्य है/ आज पितामह के/ सम्मुख/ मुझे खड़ा करके/ उनका वध/ किया जायेगा।''[37]

भीष्म को मारने का वर्णन भी कविता में वर्णित है -

''यथा - सभी ने पितामह के/ तन को / मन को/ छलनी करने हेतु/ अनगिनत बाणों की/ बारिश की/ अपनी पूर्ण सामर्थ्य/ पितामह को/ वीदीर्ण करने को/ झोंक दी/पितामह/ कौशल की ढाल से/ स्फूर्ति की/ मशाल से / शक्ति की लय से/ स्वयं को/ बचाते रहे/ पांडवों की ओर के/ महारथियों को/ नचाते रहे/ तभी पूर्व नियोजित/ षड़यंत्र के/ आधार पर/ एक सधे/ व्यभिचार पर/ शिखंडी/ पितामह के/ सामने किया गया/ छल का शाश्वत/ अमृत पिया गया/ शिखंडी/ जो एक ओर वीर था/ रणधीर था/ गंभीर था/ परन्तु नियति के हाथों/ खेलने को।''[38]

गीतिका वेदिका का नवगीत संग्रह है 'अधूरी देह'। इस गीत संग्रह में ट्रांसजेंडर लोगों के अधूरे होने की व्यथा को वर्णित किया गया है । वे ईश्वर से पूछते हैं आखिर उन्हें क्यों अधूरा बनाया गया है -

''अधूरी देह क्यों मुझको बनाया
बता ईश्वर! तुझे ये क्या सुहाया?
किसी का प्यार हूँ, न कि वास्ता हूँ
न तो मंजिल हूँ, न मैं रास्ता हूँ

अनुभव पूर्णता का हो न पाया,

अजब यह खेल रह-रह धूप छाया,

अधूरी देह...''[39]

इसके अलावा इंटरनेट तथा समाचार पत्र-पत्रिकाओं में ट्रांसजेंडर समाज से जुड़ी कई कविताएँ प्रसिद्ध हो रही है। जिनमें अंजु मोटवानी की 'किन्नर' मनोहरलाल रत्नम की 'देश किन्नरों को दे दो' सपना मांगलिक की 'हिजड़े की व्यथा' आदि प्रमुख है। ये सभी कविताएँ ट्रांसजेंडर समाज की त्रासदी को व्यक्त करती हुई दिखाई पड़ती हैं।

2.3. नाटक

ट्रांसजेंडर समाज एवं उनसे जुड़ी समस्याओं का वर्णन नाटकों में भी मिलता है। राजनीश कुमार गुप्ता का नाटक 'प्रश्न चिह्न' में ट्रांसजेंडर बच्चे का जन्म होने पर उसके पिता का उस बच्चे के प्रति घृणा तथा विद्वेष को दिखाया गया है। पिता ट्रांसजेंडर बच्चे को अपनाने को तैयार नहीं होता तथा अपनी पत्नी को इस बच्चे को पैदा करने का दोषी ठहराता है। 'सेवन स्टेप्स एराउंड द फायर' (आग के सात फेरे) महेश दत्तानी का ट्रांसजेंडर समाज पर आधारित नाटक है। नाटक में ट्रांसजेंडर समाज की पीड़ा तथा शोषण को बया किया गया है। कमला तथा अनारकली नामक ट्रांसजेंडर के संघर्ष तथा पीड़ा को इस नाटक में हम देखते हैं। हरीश बी शर्मा की 'हरारत' लघुनाटक है। इसके अलावा मच्छिंदर मोरे द्वारा लिखित 'जानेमन' नाटक तथा रमा पाण्डेय की 'लल्लन मिस' ट्रांसजेंडर समाज के दुःख दर्द और नरकीय जीवन को उजागर करता है। 'लल्लन मिस' सच्ची घटना पर आधारित है। इस नाटक में ट्रांसजेंडर लल्लन गरीब बच्चों के लिए स्कूल का निर्माण करता है, लेकिन इसके लिए लल्लन को भू-माफिया के उत्पीड़न को सहना पड़ता है। इस सबका वर्णन इस नाटक में किया गया है।

2.4. आत्मकथा

साहित्यिक विधाओं में आत्मकथा का महत्वपूर्ण स्थान है। आत्मकथा लेखक के भोगे हुए जीवन या आपबीती घटना का जीवन्त चित्रण प्रस्तुत करता है। समाज में उपेक्षित एवं तिरस्कृत जीवन जीने वाले ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों ने भी आत्मकथा के माध्यम से अपने जीवनानुभवों को समाज के सामने प्रस्तुत किया है। यह आत्मकथा केवल लेखक की ही भोगी सच्चाई को ही नहीं, बल्कि पूरे ट्रांसजेंडर समाज के संघर्ष एवं दयनीयावस्था को प्रस्तुत करता है। ट्रांसजेंडर आत्मकथाओं में इनके द्वारा भोगे हुए वेदना, पीड़ा, तथा अपनों और समाज के द्वारा इनपर किया गया मानसिक तथा शारीरिक शोषण का वर्णन मिलता है। आज हिन्दी साहित्य में दूसरी भाषाओं से अनूदित आत्मकथा भी प्राप्त हैं।

'पुरुष तन में फँसा मेरा नारी मन' ट्रांसजेंडर मानोबी बंधोपाध्याय की आत्मकथा है। इसका मूल रूप 'A Gift of Goddess Lakshmi' अंग्रेजी में लिखा गया है। झिमली मुखर्जी पांडे ने इस आत्मकथा को लिपिबद्ध किया है तथा इसका हिन्दी अनुवाद रचना भोला यामिनी द्वारा किया गया है। यह आत्मकथा ट्रांसजेंडर सोमनाथ बंधोपाध्याय उर्फ मनोबी बंधोपाध्याय के संघर्ष भरे जीवन की अभिव्यक्ति है।

पश्चिम बंगाल में चितरंजन बंधोपाध्याय के घर में उनके तीसरे संतान के रूप में सोमनाथ का जन्म होता है। दो पुत्रियों के बाद एक लड़के के जन्म होने पर सभी बहुत खुश होते हैं। लेकिन यह खुशी अधिक सालों तक ठिकती नहीं,सोमनाथ के अंदर की स्त्रैणता धीरे-धीरे बाहर आने लगती है। सोमनाथ महसूस करता है कि केवल उसका तन पुरुष का है और मन नारी का। करीब छः साल की उम्र में वह अपनी बहन की कपड़े पहनने लगता है तथा माँ की श्रृंगार साधनों का उपयोग करने लगता है। उसके रवैये पर जब माँ उसे डॉटती है तब वह कहता है ''मैं एक स्त्री

हूँ...क्या आपको विश्वास नहीं आता? क्या मुझे आप लोगों से बेहत्तर तरीके से कपड़े पहनने नहीं आते? माँ, आप मुझे एक लड़की बनने दो...''।[40] स्त्रैणता के कारण उसे लड़के स्कूल में परेशान करते थे। सोमनाथ मानसिक संघर्ष से जूझता है। वह अपने ऊपर हो रहे यातनाओं को सहता है वह माँ से कहना चाहता है लेकिन कह नही पाता उसके शब्दों में "मैं अपनी माँ के पास जाकर रोना चाहती थी पर कई बार खुद को ही ऐसा करने से रोक भी देती...मैं उनसे ये सब बातें छिपाया करती जैसे मैंने उनसे यह बात भी छिपा रखी थी कि मुझे अपने जननांग से नफ़रत होने लगी थी। मैं अपने पुरुष जननांग स्वीकार नहीं कर पा रही थी। मैं अपनी बहनों के से जननांग चाहती थी।''[41] सोमनाथ का शारीरिक शोषण भी होता है। सोमनाथ के रिश्तेदार भाई ने पहले उसका यौन शोषण किया उसके बाद कई लोगों द्वारा उसका शारीरिक शोषण हुआ। उसका इस बारे में कहना है कि ''लोग मुझे हिजड़ा कहने व मेरी यौन लैंगिकता का मज़ाक उड़ाने का कोई अवसर हाथ से न जाने देते परन्तु जब भी मुझे अकेले पाते तो एक अंधेरे कोने में घेर कर, मेरा नाजायज़ लाभ उठाने और यौन शोषण करने वाले भी वही लोग होते।''[42] सोमनाथ पढ़ने में हेशियार था वह जानता था कि शिक्षा से ही वह अपना वजूद समाज में बना पायेगा।

स्कूल और कॉलेज में पढ़ते वक्त सोमनाथ कई लड़कों के संपर्क में आता है, वह अपनी इच्छानुसार उनके साथ शारीरिक संबंध भी बनाता है। लेकिन उन लोगों का सोमनाथ के प्रति प्रेम भावना ज्यादा दिनों तक नहीं ठिक पाता सोमनाथ उर्फ मानोबी का मानना है ''लोगों के लिए मैं एक पका हुआ फल थी, जिसे कभी भी तोड़कर खाया जा सकता था। घर और बाहर दोनों जगह मेरे लिए समान रूप से खतरे मौजूद थे।''[43] सभ्य समाज के लोग ट्रांसजेंडर व्यक्ति को अपना हवश का शिकार बनाने के लिए नहीं चूकते। उनका शारीरिक उपयोग वे करते हैं, लेकिन उनसे उनका कोई मानसिक लगाव नहीं होता। घर और बाहर हर क्षेत्र में ये यौन शोषण का शिकार बनते दिखाई पड़ते हैं।

अपनी पढाई एम.फिल के बाद उसकी नियुक्ति श्रीकृष्णा कॉलेज, बगुला में अंश कालिक लेक्चरर के पद पर होती है। इसी बीच ‘अबोमानोब’ नामक भारत की पहली ट्रांसजेंडर पत्रिका का प्रकाशन उसने किया। झाड़ग्राम के विवेकानंद सतबार्षिकी महाविद्यालय में जब लेक्चरर के रूप में वह काम करती है, तब वहाँ उसे शारीरिक और मानसिक शोषण का शिकार होना पड़ता है। उसे कॉलेज से निकालने का प्रयास भी किया जाता है। लोगों का कहना था कि ‘‘हिजड़े को कॉलेज में पढ़ाने नहीं दिया जा सकता। उसे एक ही स्टाफरूम, शौचालय और सुविधाओं का प्रयोग में लाने का अधिकार नहीं दिया जा सकता है।’’[44] शिक्षित लोगों का इनके प्रति बुरा व्यवहार हो तो, बाकी लोगों का क्या कहना था। सोमनाथ कॉलेज के अपने अनुभव व्यक्त करता है ‘‘मेरे सहकर्मी अब भी मेरे साथ इसी तरह पेश आते मानो मैं कोई अवमानव हूँ। मानो मुझे उनके साथ, उसी स्टॉफ रूप में बैठने और कॉलेज प्रोफसरों को मिली सुविधाओं का लाभ उठाने का अधिकार नहीं था। वे टीचर्स यूनियन मीटिंग्स में मुझे अपने साथ शामिल न करते, उनके सामाजिक मेल-मिलाप में मेरा कोई काम नहीं था, पर वे मुझे निर्धन और मंदबुद्धि बच्चों के लिए कक्षा या ट्यूशन लेने से नहीं रोक सकते थे। हालांकि अधिकतर छात्र मेरे विरुद्ध थे, जिन्हें यूनियन ने भड़का रखा था।’’[45] ट्रांसजेंडर व्यक्ति सारी यातनाओं को झेलकर, मानसिक, शारीरिक संघर्ष करके यदि आगे बढ़ता भी है, तो हमारा तथाकथित सभ्य समाज उसे आगे बढ़ने नहीं देता। लोगों को ट्रांसजेंडर व्यक्ति का आगे बढ़ना, उन्नति पर पहुँचना सुहता नहीं, वे ट्रांसजेंडर व्यक्ति को मानसिक रूप से तोड़ने की भरपूर कोशिश करते हैं।

सोमनाथ ने चिकित्सा द्वारा लिंग परिवर्तन करने का निर्णय लिया। कॉलेज में नौकरी करके पैसा इक्कठा कर उसने 2003 में सर्जरी किया और उसने अपने मन रूपी स्त्री शरीर का पा लिया। आज सर्जरी कराकर कई ट्रांसजेंडर अपना मनचाहा शरीर प्राप्त कर रहे हैं। इस सर्जरी के लिए भारी रकम की आवश्यकता पड़ती है। इसीकारण कई ट्रांसजेंडर सर्जरी चाहकर भी नहीं

करवा पाते। यदि सरकार मुफ्त में सर्जरी कराने का प्रावधान कराए तो यह इनके लिए लाभदायक होगा। लिंग परिवर्तन के बाद उसने अपना नाम मानोबी बंधोपाध्याय रखा। कानूनी तौर पर नाम बदलने में उसे कई कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। मानोबी को अपने घरवालों का साथ मिला था। जेंडर परिवर्तन पर पहले तो उन्होंने नाराज़गी जतायी लेकिन बाद में सभी ने उसके सच्चाई को स्वीकार किया। घरवालों का सहारा ही उसे ऊचे मुकाम पर पहुँचाता है। मानोबी इस बारे में कहती है ‘‘मैं जगदीश जैसे ट्रांसजेंडर लोगों की तुलना में स्वयं को बहुत हद तक सौभाग्यशाली मानती हूँ। अगर मेरे परिवार ने मेरे इस विचित्र रूप के बावजूद मुझे सहारा न दिया होता, मुझ पर पढ़ने का दबाब न रखा होता तो भगवान जाने मेरे साथ क्या हुआ होता।’’[46] एक व्यक्ति के मानसिक तथा शारीरिक विकास में परिवार का दायित्व बड़ा है। अपनों का साथ एक व्यक्ति को हमेशा हौसला देता है, आगे बढ़ने की शक्ति प्रदान करता है। ज्यादातर हाशिएकृत ट्रांसजेंडर व्यक्ति को दुर्भाग्यवश अपनों का साथ नहीं मिलता जिसकारण उन्हें नरकीय यातनाओं का सामना करना पड़ता हैं। मानोबी बंधोपाध्याय की खुशकिसमती है कि उन्हें अपने परिवारवालों का सहारा मिला और इसीकारण वे आगे बढ़ सकी।

बंगला साहित्य से ग्रेजुएट, पोस्ट-ग्रेजुएट, एमफिल तथा पी एच डी की उपाधि प्राप्त करने के बाद, अपने जीवन के हर उतार-चढ़ाव एवं संघर्ष का धैर्यपूर्वक सामना करनेवाली मानोबी नैहाटी के एक महिला कॉलेज में प्रिंसिपल बनी। वे प्रथम ट्रांसजेंडर पी.एच.डी प्राप्त करनेवाली, प्रथम ट्रांसजेंडर पत्रिका की संपादिका, प्रथम ट्रांसजेंडर लेखिका तथा प्रथम ट्रांसजेंडर कॉलेज प्रिंसिपल हैं। मानोबी ने निर्धन युवक देवाशीष को गोद भी लिया। सोमनाथ से लेकर मानोबी बंधोपाध्याय बनने तक का सफर उनके लिए आसान नहीं था। अत्यधिक मानसिक और शारीरिक शोषण एवं अनेक यातनाओं को झेलने के बाद आज वे उच्च पद पर पहुँची हैं। इस आत्मकथा ने में उन्होंने एक ट्रांसजेंडर को जन्म से लेकर किन..किन यातनाओं को परिवार तथा समाज में

झेलना पड़ता है उससे हमें वाकिफ कराया है। अपने आत्मबल, निष्ठा और अपनों का साथ इन्हीं के बलबूते, वे हर संघर्ष का धैर्यपूर्वक सामना करती हैं। मानोबीजी ये आत्मकथा उन लोगों को समर्पित करती है जिसके कारण आज वह इस ऊँचे मुकाम पर पहुँची हैं। उनके शब्दों में ''उन सबके नाम, जिन्होंने मुझे अपमानित किया और अवमानव कहकर जीवन के हाशिए पर धकेल दिया। उन्हीं के कारण मुझे लड़ने की ताकत मिली और मैं जीवन में आगे बढ़ पायी।''[47]

ट्रांसजेंडर लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी उर्फ राजू की आत्मकथा है 'मैं हिजड़ा... मैं लक्ष्मी'। इसका हिंदी अनुवाद शशिकला राय ने किया है। ब्राह्मण चन्द्रदेव चंडीनाथ त्रिपाठी का बड़ा बेटा राजू घर का पहला संतान होने के कारण सबका प्यारा था। उसके बाद उसकी बहन मिंटू (रूक्मणी) और छोटा भाई शशि नारायण का जन्म होता है। बचपन से ही राजू का रुचि नृत्य की ओर रहा था। आस्थमा से पीड़ित होने का कारण वह खेलकूद से दूर रहा। नृत्य को लड़कियों की कला समझने वाले लोग राजू को बायक्या, छक्का, मामू आदि कहकर छिड़ाते थे। धीरे-धीरे राजू में स्त्रीयोचित हाव-भाव दिखाई देने लगा। सात वर्ष की आयु में अपने गाँव के रिश्तेदार लड़के ने उसका यौन शोषण किया। अक्सर देखा जाता है कि ट्रांसजेंडर बच्चों का यौन शोषण उसके जाने पहचाने लोग ही करते हैं। वे इस बारे में अपने घरवालों से डर के मारे या जो उसके साथ घट रहा है उस कृत्य से अन्जान होने की वजह से कुछ भी कह नहीं पाते, और इन हैवानों का विरोध भी नहीं कर पाते। राजू के साथ यह सिलसिला ज़ारी रहा। गाँव के कई लड़कों ने उसका शारीरिक शोषण किया। अंत में वह इन सबका विरोध करता है। धीरे-धीरे राजू का झुकाव लड़कों के प्रति बढ़ने लगा। उसे अपने में कुछ अन्य लड़कों की तुलना में अलगाव प्रतीत होने लगा। वह कहता है - मैंने अनचाहे लड़को को अपनी जिन्दगी से दूर तो किया था, लेकिन अब मैं ही लड़को की तरफ आकर्षित होने लगा था। कुछ लड़के अच्छे नहीं लगते थे।...और कुछ अच्छे लगते थे...मुझे हो क्या रहा है? मै औरतों जैसा हूँ क्या ?" [48] आगे आगे उसका अपनी मर्जी से बहुत लड़कों के साथ

शारीरिक संबंध बनता है उसका मानना है ''रोहन का स्पर्श, उसका बाँहों में लेना बहुत अच्छा लगता था मुझे। धीरे से वो मुझे चूमता था और मैं उसी का हो जाता था। हमारा रिश्ता इस तरह से खुल रहा था। सेक्स उसमें बहुत बाद में आया। पर उसके साथ किए हुए सेक्स में भी मुझे संतोष मिलता था। इससे पहले का सेक्स मुझ पर थोपा हुआ था शरीर और मन दोनों को तकलीफ पहुँचानेवाला। पर अब सेक्स में मेरा चोइस था। मेरी मर्जी से होने वाला। इसने मुझे तकलीफ नहीं दी बल्कि खुशी ही दी।''[49]

राजू को घरवालों का आश्रय मिला जिसके कारण वह जिन्दगी के प्रतिकूल स्थितियों का सामना कर आगे बढ़ता गया। अपने अंदर छुपी पहचान को जानने के लिए वह अशोक राव के पास पहुँचता है। अशोक राव उसे आश्वासित करता है ''तुम एबनॉर्मल नहीं हो बच्चे; नॉर्मल ही हो, ऐबनॉर्मल हैं ये हमारे आसपास की दुनिया...ये हमें समझ नहीं सकती। पर तुम उसके बारे में मत सोचो। यहाँ आये हो न, अब हम मिलकर इसमें से रास्ता निकालेंगे। अब तुम जो कर रहे हो वही करो।...पढ़ाई करो। डांस सीख रहे हो, वो सीखते रहो...कुछ भी बदलाव लाने की जरूरत नहीं है...।''[50] हमारा पुंसवादी समाज एक व्यक्ति को उसके लैंगिक पहचान के साथ जीने की अनुमति नहीं देता। परंपरागत रूढ़ियों को माननेवाले लोग ट्रांसजेंडर व्यक्ति के लिंग अभिव्यक्ति को उसका पागलपन ठहरा देते हैं। आज समय बदल गया है हमें अपनी सोच में बदलाव लाना है। राजू के जीवन संघर्षों ने उसे बोल्ड बना दिया था। मुंबई के कॉलेज में वह कभी पुरुष का तो कभी औरत का कपड़ा पहनकर जाता वह डांसर के रूप में काम करता है लेकिन पैसों के लिए उसने कभी अपने शरीर को बेचा नहीं। इसीबीच ट्रांसजेंडर शबीना से उसका परिचय होता है उससे मिलने के बाद उसे एहसास होता है कि वह भी ट्रांसजेंडर है। 1998 में ट्रांसजेंडर समाज के रस्मों का पालन कर वह ट्रांसजेंडर बन गई।

ट्रांसजेंडर बनने के बाद लक्ष्मी ने दाई वेल्फेयर सोसायटी जो कि ट्रांसजेंडरों के स्वास्थ्य के हेतु बनी संस्था थी उसमें पियर एजुकेटर के रूप में काम किया तथा दाई की पहली अध्यक्ष भी वे बनी। ट्रांसजेंडर समाज के कल्याण हेतु वह काम करने लगी। परिवार वालों ने उसका पूरा साथ दिया। 'दाई वेलफेयर सोसाइटी' के अध्यक्ष के रूप में एच-आई-वी एड्स की स्थिति पर मुंबई में एक राउण्ड टेबल कान्फ्रेंस में युनाइटेड नेशन्स के तत्कालीन जनरल सेक्रेटरी कोफी अन्नान के साथ उसे भारत के नौ सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल में शामिल होने का मौका मिला। तथा 2006 में टोरंटो में सोलहवी अंतराष्ट्रीय एड्स कॉन्फ्रेन्स में यू-एन एड्स के डेलिगेट के तौर पर लक्ष्मी ने भाग ली। वहाँ से लौटकर उन्होंने दाई से इस्तीफा देकर 'अस्तित्व' नामक संस्था की स्थापना की जिसका उद्देश्य ट्रांसजेंडर समाज को सक्षम बनाना तथा उन्हें स्वास्थ्य संवैधानिक अधिकार दिलना, पुलिस द्वारा किए बलात्कार के केस दर्ज करना, हर क्षेत्र में उन्हें अधिकार दिलाना था। विदेशी दौरों ने उसे ट्रांसजेंडर समाज की समस्याओं को समझने तथा काम करने का हौसला प्रदान किया। वह खुद को एक्टिविस्ट मानती हैं ''अपने खुद के लिए भी मैं एक एक्टिविस्ट ही हूँ खुद की समस्या खुद हल करनेवाली।''[51] समाज के संपर्क में रहने तथा पर्यटन करने से अपने जैसे लोगों की समस्याओं को हमें ज्यादा समझने का मौका मिलता है। इन समस्याओं को दूर करने का सुझाव भी हमें मिल जाता है।

लक्ष्मी ने ट्रांसजेंडरों के लिए बहुत कुछ किया। सुप्रीम कोर्ट द्वारा शासकीय प्रपत्रों में स्त्री - पुरुष के अतिरिक्त, अन्य शब्द जोड़ पाने के निर्णय के पीछे लक्ष्मी का ही हाथ है। लक्ष्मी ने कई टीवी कार्यक्रमों में भाग लिया तथा अनेक डाक्यूमेंट्री, फिल्मों में अभिनय भी किया। लक्ष्मी विजिबिलिटी बढ़ाने के लिए समाज के साथ संवाद आवश्यक मानती है उसका कथन है "एक तो जैसा मैंने पहले कहा, वैसे मुझे समाज की विजिबिलिटी बढ़ानी थी। लोगों के सामने आना था। दूसरी बात, परिवार ने अपना कहा, सहारा दिया तो हिजड़े भी अपने माता-पिता के साथ रह सकते हैं,

संयुक्त परिवार में भी रह सकते हैं ये मुझे सभी को दिखाना था और तीसरी बहुत ज़रूरी बात, हिजड़ा कम्युनिटी हमेशा सभी बाते छिपाकर रखती है, इसी बात के लिए वह प्रसिद्ध हैं। पर एक हिजड़ा पूरे देश के सामने जाहिर तौर पर और निड़रता से सच का सामना कर सकता है, ये मुझे सिद्ध करना था। समाज की गलत फहमियाँ दूर करनी थीं।''[52] ट्रांसजेंडर व्यक्ति के उन्नति के लिए कानूनी प्रावधान तो कई बनाये गये हैं लेकिन वे जब खुद जंग के मैदान में उतरेंगे तभी अपना हक हासिल कर पायेंगे। उन्हें खुद समाज में आकर अपने हक को स्थापित करना होगा, अपनी पहचान बनानी होगी। अपने द्वारा भाग लिये सेमीनारों, टी.वी.शो, कॉन्फेरेन्स आदि में उसने अपने विचारों का खुल कर रखा। लक्ष्मी ने महाराष्ट्र 'तृतीय पंथी संगठन' की स्थापना की जिसके द्वारा ट्रांसजेंडरों की माँग की ओर सरकार का ध्यान आकृष्ट किया गया।

लक्ष्मी ने अमस्टरडम इंडिया फेस्टिवल में ट्रांसजेंडरों की नृत्य को पेश कर वहाँ हलचल मचा दिया। उन्होंने ट्रांसजेंडरों की सौंदर्य प्रतियोगिता 'इंडियन सुपरक्वीन' का आयोजन किया। 2016 में उज्जैन में संपन्न हुए सिंहस्थ महाकुंभ में लक्ष्मी को किन्नर अखाड़े का प्रथम आचार्य महामण्डलेश्वर बनाया गया। लक्ष्मी ने अपने परिवार में बड़े होने का हर दायित्व को निभाया। लक्ष्मी अगर जीवन में सफल हुई है तो इन उपलब्धियों के पीछे उसका मनोबल, इच्छाशक्ति, परिवार का सहयोग आदि की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। ज़्यादातर ट्रांसजेंडर लोगों को परिवार का सहयोग प्राप्त नहीं होता। लक्ष्मी का कहना है कि परिवारिक सहयोग अनिवार्य है ''असल में परिवार से ही हिजड़ों को सहारा मिलना चाहिए जैसे मुझे मिला, वैसे ही। वो जब तक नहीं मिलता तब तक क्षमता होने के बावजूद बहुत ऊँचाई तक जाना उनके लिए संभव नहीं है।''[53]

2.5. सिनेमा

साहित्य और सिनेमा का संबंध काफी पुराना है। जहाँ हिन्दी साहित्य जगत ने ट्रांसजेंडर समाज को अपना विषय बनाया वहीं हिन्दी सिनेमा जगत ने भी इस समुदाय के लोगों की समस्याओं, इनके संघर्षों को पर्दे में प्रस्तुत की। सिनेमा केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, यह सामाजिक तथा सांस्कृतिक मूल्यों को भी पेश करता है। हिन्दी सिनेमा जगत् में शुरुआती दशकों में इन्हें छोटे-मोटे किरदार ही दिए जाते थे, ज्यादात्तर ट्रांसजेंडर हँसी मज़ाक का पात्र बनकर हमारे सामने आते थे या तो फिर उन्हें शारीरिक धंधे से जुड़ा हुआ दिखाया जाता था। लेकिन समय के बदलते सिनेमा निर्माताओं ने ट्रांसजेंडर समाज को मुख्य किरदार के रूप में पेश करना शुरु कर दिया। पहले जहाँ सामान्य स्त्री-पुरुष लोगों द्वारा ट्रांसजेंडर पात्रों का अभिनय किया जाता था वहीं आज खुद ट्रांसजेंडर ही अपने किरदार निभाते दिखाई पड़ते हैं। लगभग नब्बे के दशक से लेकर मोटे तौर पर ट्रांसजेंडर समाज पर केंद्रित सिनेमा बनने लगा है।

ट्रांसजेंडरों में जो मानवीय संवेदना है उसे दर्शाने का प्रयास महेशभट्ट ने 1997 में अपनी फिल्म 'तमन्ना' के माध्यम से किया है। इस फिल्म की कहानी सच्ची घटना पर आधारित है। 1998 में इस फिल्म को राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार से नवाज़ा गया। यह फिल्म टिक्कू नामक ट्रांसजेंडर तथा उसके द्वारा पाली गई बेटी तमन्ना की कहानी है। परेश रावल ने टिक्कू नामक ट्रांसजेंडर पात्र को अभिनय किया है। तमन्ना का रोल पूजा भट्ट ने अदा की है।

टिक्कू अपनी कलाकार माँ नाजनीन बेगम की मौत हो जाने पर बहुत दुःखी होता है। उसी रात उसे सड़क किनारे कूड़ेदान से एक नवजाद बच्ची मिलती है। वह उसे उठाकर लाता है तथा उसे अपनी बच्ची मानकर उसका पालन पोषण करता है। उसका करीबी दोस्त सलीम उससे बच्ची को अनाथालय में छोड़ने को कहता है, लेकिन वह राज़ी नहीं होता। आर्थिक तंगी होने पर

भी वह उस बच्ची को पालता है। टिक्कू बहुत गरीब है, उसके पास रहने का मकान तक नहीं था लेकिन वह तमन्ना को जीवन में कोई कमी महसूस होने नहीं देता। वह उसे बोडिंग स्कूल में भेजकर पढ़ाता है। वह उसकी पढ़ाई एवं खर्चे के लिए अपनी माँ के गहनों को बेचता है। तथा अपने सौतेले भाई के पास जाकर सहायता पूँछता है,जहाँ से उसे दुत्कार प्राप्त होता है। अपनी बेटी तमन्ना की सुख-सुविधा के लिए वह घरों में जाकर नाचने तक लगता है। तमन्ना को कभी एहसास नहीं होने देता कि टिक्कू उसका पिता नहीं है और वह एक ट्रांसजेंडर है।

एक दिन अचानक तमन्ना टिक्कू को ट्रांसजेंडर वेश में देख लेती है, जब उसे पता चलता है कि टिक्कू ट्रांसजेंडर है तब वह भी औरों की तरह टिक्कू से घृणा करने लगती है। सलीम तमन्ना से उससे संबंधित सारी सच्चाई बताता है। तमन्ना के कहने पर टिक्कू उसकी सगे माँ-बाप की तलाश करने में उसका साथ देता है। तमन्ना को अपना माँ-बाप मिल जाता है लेकिन वे उसे अपनाने को तैयार नहीं होते क्योंकि वह लड़की है। उसके बाप ने अन्य दो बेटियों को भी तमन्ना की तरह कूड़ेदान में फेक दिया था, अब वे अपने इकलौते बेटे के साथ खुश थे। फिल्म के अंत में तमन्ना को टिक्कू के प्यार और अपनेपन का एहसास होता है और वह टिक्कू को अपना पिता मानती है। इस फिल्म में ट्रांसजेंडरों के जीवन संघर्ष का चित्रण है साथ ही स्त्री संघर्ष को भी प्रस्तुत किया है। फिल्म में तमन्ना अपने पिता के खिलाफ लड़ती है जिसने अपने बेटियों को कूड़ेदान में फेका।

कल्पना लाजमी के निर्देशन में बनी ट्रांसजेंडरों पर केंद्रित फिल्म है 'दरमियान' (1997)। इस फिल्म की प्रमुख पात्र जीनत बेगम बॉलीवुड की सूपर स्टार है। किरण खेर ने जीनत बेगम का रोल अदा किया है। जीनत वेगम और एक स्टूडियो मालिक के अवैध संबंध में जन्मा इम्मी जो ट्रांसजेंडर है, उसपर केंद्रित है यह फिल्म।

जीनत बेगम ट्रांसजेंडर बच्चे के जन्म होने पर निराश हो जाती है। वह समाज के सामने कह नहीं पाती कि उसका बच्चा ट्रांसजेंडर है। वह अपने बच्चे को अपने से दूर भी नहीं करना चाहती और उसे पाल भी नहीं सकती थी। जीनत बेगम इम्मी को अपने सौतेली माँ को सौंपती है और खुद इम्मी की बहन बनकर रहती है। इम्मी उसे आपा कहकर पुकारता है। वे दोनों आपस में बहुत प्यार करते हैं। जीनत बेगम इम्मी को समाज में पुरुष के रूप में पेश करती है। लोगों के चुनौती देने पर इम्मी का पौरुषत्व परखने के लिए एक स्त्री को उसके कमरे में भेज दिया जाता है, लेकिन इम्मी अपने पौरुषत्व को जगाने में नाकाम हो जाता है। इम्मी ट्रांसजेंडर समाज में रहकर जीवन जीना नहीं चाहता। वह नहीं चाहता कि वह अन्य ट्रांसजेंडरों की भाँति नाच गाये तथा देह व्यापार करे।

ढलती उर्म के कारण सिनेमा में सफलता ना पाने तथा अपने प्रेमी को खो देने की वजह से जीनत बेगम अवसाद के घिरोह में आ जाती है। वह शराब और जुए के दलदल में फँस जाती है। इम्मी अपनी माँ का बुरे वक्त में सहारा बनता है। इम्मी का जीनत बेगम के प्रति निस्वार्थ स्नेह इस फिल्म में देखने को मिलता है। वह अपनी माँ को नशे के चंगुल से बचाना चाहता है। जीनत बेगम के अंदर की माँ इम्मी से बहुत प्यार करती है लेकिन उसके ट्रांसजेंडर होने के कारण उसे अपना नहीं सकती। अंत में जीनत बेगम तथा इम्मी जहर खाकर मौत को अपनाते हैं।

श्याम बेनेगल की फिल्म 'वेल्कम टू सज्जनपूर' ट्रांसजेंडरों के राजनीति में प्रवेश तथा प्रति भागियों द्वारा उनपर किये जानेवाले अत्याचार का पर्दाफाश करती है। इस फिल्म की प्रमुख किरदार मुन्नीबाई है, जो ट्रांसजेंडर है। रवि झांकल ने इस किरदार को अपने अभिनय द्वारा प्रभावशाली बना दिया है।

मुन्नीबाई चुनाव में गाँव के भूतपूर्व सरपंच तथा गुंडा रामसिंह की पत्नी जमुनाबाई (भाभी साहिब) के खिलाफ खड़ी होती है। जमुनाबाई ने वहाँ गाँव की एक लड़की की हत्या की है। गाँव के सभी लोग रामसिंह तथा उसकी पत्नी से डरते है, उनके करतूतों से सभी परेशान हैं। उनके खिलाफ आवाज़ उठाने की हिम्मत किसी को नहीं है। ऐसे में मुन्नीबाई चुनाव में उनके खिलाफ खड़ी होती है। वह गाँव के साधारण लोगों को गुंडा रामसिंह और उसकी पत्नी से बचाना चाहती है। मुन्नीबाई को चुनाव में लड़ने से रोकने के लिए रामसिंह उसे डराता तथा धमकाता है और उसकी झोपड़ी तुड़वाता है। लेकिन सबकुछ सहने के बावजूद भी मुन्नीबाई अपना कदम पीछे नहीं हटाती। जो साहस वहाँ के मर्द नहीं दिखाते वह ट्रांसजेंडर मुन्नी दिखाती है।

मुन्नीबाई फिल्म के प्रमुख पात्र महादेव जो पढ़ा लिखा है वह उससे चुनाव के लिए गीत लिखाती है। महादेव इस शर्त पर गीत लिखकर देता है कि राम सिंह और उनके लोगों को पता नहीं चलना चाहिए कि उसने गीत लिखा है। महादेव भी उन लोगों से डरता है। मुन्नीबाई कलेक्टर से रामसिंह के गुंडागर्दी का शिकायत करती है तब कलेक्टर मुन्नीबाई के अनुकूल फैसला लेता है तथा उसकी सुरक्षा का प्रबंध करता है। गाँव के सभी चाहते हैं कि मुन्नीबाई चुनाव में जीते। वहाँ के लोग रामसिंह और उनके गुंडों के अत्याचार से बचना चाहते हैं। मुन्नीबाई को चुनाव में गाँव के सभी लोगों का समर्थन मिलता है और वह सरपंच का चुनाव जीत जाती है। लेकिन उसके प्रतिद्वंदी उसका जान लेकर अपनी हार का बदला लेते हैं।

इस फिल्म में दिखाया गया है कि जब वे समाज में अपने आत्मबल से आगे आने का हौसला दिखाते है तब क्रूर समाज उसे कूचल डालते हैं। मुख्यधारा में उन्हें लाने पर हम डरते हैं। लेकिन फिलहाल समाज में बहुत बदलाव देखने को मिल रहा है। ट्रांसजेंडर आज राजनीति में अपना नाम दर्ज करा रहे हैं। हमें उनका साथ देकर उन्हें मुख्यधारा से जोड़ना है।

सन् 1999 में तनुजा चन्द्रा के निर्देशन में बनी फिल्म 'संघर्ष' में ट्रांसजेंडरों में व्याप्त हैवानियत तथा भ्रष्टाचार को दिखाया गया है। यह फिल्म दर्शकों में ट्रांसजेंडरों के प्रति डर पैदा करता है। 'संघर्ष' फिल्म में ट्रांसजेंडर लज्जा शंकर पाण्डेय की भूमिका आशुतोष राणा ने अदा की है, जिसके लिए उन्हें फिल्मफेयर में सर्वश्रेष्ठ खलनायक के लिए पुरस्कृत किया गया। इस फिल्म में अक्षय कुमार प्रो.अमन के रूप में तथा प्रीति जिंटा रीति के रूप में गंभीर अभिनय प्रस्तुत करते हैं।

ट्रांसजेंडर लज्जा शंकर अमरता प्राप्त करने के लिए मासूम बच्चों की बलि काली माँ को देता है। उसका मानना है कि माँ काली प्रसन्न होकर उसे अमरता का वरदान देगी। वह कई निरीह मासूम बच्चों की बलि अपने अंधविश्वास के कारण चढ़ा चुका है। वह अपने दाँतों से काटकर बच्चों की हत्या करता है। लज्जा शंकर समाज में भोला-भाला पुरुष बनकर रहता है तथा बच्चों की तलाश करता है। किसी को उसपर शक नहीं होता। उसे पकड़ने के लिए सी.बी.आई रीति को भेजते हैं। रीति जेल में कैद प्रो. अमन की सहायता इस कार्य के लिए लेती है। फिल्म के अंत में प्रो. अमन लज्जा शंकर को मार डालता है और साथ ही उसकी भी मृत्यु हो जाती है। लज्जा शंकर को पकड़ने के लिए रीति को पुलिस विभाग पुरस्कृत करता है। ट्रांसजेंडर लज्जा शंकर को इस फिल्म में बहुत ही शातिर एवं क्रूर बहरूपिये के रूप में पेश किया गया है, जो समाज में भोला आदमी बनकर रहता है और अपने अंधविश्वास को फल प्राप्ति तक पहुँचाने के लिए हिंसात्मक प्रवृत्ति करता है। औरत की वेशभूषा में वह अपनी कृत्य को अंजाम देता है। आज के आधुनिक युग में भी हम ऐसी खबर सुनते आ रहे है, जिसमें अमरता के लिए मनुष्य की बलि दी जाती है। लज्जा शंकर के अंदर जो अंधविश्वास है वह उसे क्रूर और हैवान बनाता है। यह फिल्म दर्शकों में ट्रांसजेंडरों के प्रति डर पैदा करता है।

योगेश भारद्वाज के निर्देशन में 2005 को बनी बायोपिक फिल्म है 'शबनम मौसी' । 1998 में मध्यप्रदेश के सुहागपुर से चुनाव जीतनेवाली ट्रांसजेंडर शबनम मौसी के चरित्र को तथा ट्रांसजेंडर समाज के संघर्षपूर्ण जीवन को दर्शकों के सामने यह फिल्म प्रस्तुत करती है। फिल्म अभिनेता अशुतोष राणा ने शबनम मौसी के किरदार को बड़ी ही सजीदीगी से पेश किया है। शबनम का जन्म पुलिस अफसर के घर में होता है। बधाई देने आने वाले ट्रांसजेंडरों को जब पता चलता है कि बच्ची ट्रांसजेंडर है तब वे उस बच्ची को लेकर भाग जाते हैं। बच्ची के पिता ने उस बच्ची को वापिस ले आने का प्रयास भी नहीं किया।

ट्रांसजेंडर हलीमा ने बच्ची का नाम शबनम रखा और उसे अपनी बेटी की तरह पाला पोसा। हलीमा शबनम को अन्य ट्रांसजेंडरों की तरह गाना गाने नाचने तथा देहव्यापार के धंधे से जोड़ना नहीं चाहती थी। एक दिन हलीमा और उसके गुरु के बीच हुए तर्क में गुरु के हाथों से हलीमा की जान चली जाती है और उस हत्या का आरोप शबनम पर डाल दिया जाता है। शबनम को पुलिस हत्या के इलजाम में गिरफ्तार कर बहुत मारते है उसके सच्चाई पर पुलिस विश्वास नहीं करती। ट्रांसजेंडर होने के कारण पुलिस उसपर ज्यादा अत्याचार करती है। शबनम बहुत बुद्धिशाली और शातिर है। वह पुलिस के गिरोह से भाग निकलती है और मध्यप्रदेश के अनूपपुर गाँव में पहुँचती है। वहाँ सबके साथ मिलजुलकर रहती है। वहाँ सभी उसे बहुत मानते हैं।

शबनम वहाँ चुनाव में रतन सिंह के खिलाफ खड़ी होती है। गुंडा विधायक रतनसिंह से गाँव वाले डरते थे। कोई भी वहाँ रतनसिंह के खिलाफ कुछ कहने की हिम्मत नहीं रखता था। रतन सिंह को पता था कि शबनम से मुकाबला करना उसके लिए भारी पड़ेगा क्योंकि सारे गाँववाले शबनम को बहुत पसंद करते थे। उसका आदमी मदन पंडित उसके कहने पर शबनम को मारने के लिए जाता है लेकिन वह शबनम की अच्छाई को जानकर उसके साथ मिल जाता है।

अंत में चुनाव में शबनम मौसी की जीत होती है, यह जीत भारतीय इतिहास में दर्ज किया जाता है। पहली बार किसी ट्रांसजेंडर ने विधान सभा में जीता था। शबनम मौसी को अपने जीवन में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। लेकिन अपने आत्मविश्वास, मनोधैर्य, परिश्रम के कारण उनका नाम भारतीय इतिहास के पन्नों में दर्ज किया गया।

महेश भट्ट द्वारा निर्देशित 'सड़क' फिल्म (1991) में ट्रांसजेंडरों के नकारात्मक एवं खूंखार रूप प्रदर्शित किया गया है। फिल्म की मूल कथा वेश्यावृत्ति एवं देह व्यापार से जुड़ी है। फिल्म की प्रमुख ट्रांसजेंडर पात्र महारानी वेश्यावृत्ति का धंधा करती है। मासूम लड़कियों के जिस्म को बेच कर वह पैसा कमाना चाहती है। इस धंधे को आगे बढाने के लिए वह कई लोगों की जान भी लेती है। एक निष्ठुर कथापात्र के रूप में महारानी को फिल्म में प्रस्तुत किया जाता है। जिसकी वजह से ट्रांसजेंडरों के प्रति प्रेक्षक के मन में नकारात्मक तथा भयावह चित्र उभरता है। सदाशिव अमरापुरकर ने महारानी के किरदार का अभिनय किया है।

इस फिल्म की नायिका पूजा भट्ट है। महारानी उसे भी वेश्या बनाना चाहती है लेकिन वह तैयार नहीं होती। फिल्म का नायक रवि पूजा को महारानी के दलदल से छुड़ाता है। महारानी की पहुँच दूर तक है, पुलिसवाले भी उसके कुकृत्य के आगे चुप्पी साधने को मजबूर होते दिखाई पड़ते हैं। महारानी चालाक और शातिर हैं उसके कई गुंडे हैं, जो उसके कहने पर सबकुछ करते हैं।

यह सिनेमा जहाँ एक तरफ ट्रांसजेंडरों के प्रति भयानक एवं नकारात्मक दृष्टिकोण हममें पैदा करता है वहीं दूसरी ओर हमें सोचने पर विवश करती है कि आखिर ये लोग क्यों इस तरह देह के धंधे से जुड़ते हैं। घर और परिवार हर कहीं से इन्हें तिरस्कार और पीड़ा ही नसीब होता है। अशिक्षित ये लोग रोज़ी रोटी के लिए देह व्यापार से जुड़ जाते हैं। हमारा बेरहम समाज ही इन्हें

इस ओर पहुँचाता है। इस फिल्म के अंत में नायक रवि महारानी को मार डालता है। सदाशिव अमरापुरकर को महारानी के किरदार के अभिनय के लिए पुरस्कृत भी किया गया है।

1997 में अमोल पालेकर द्वारा निर्देशित 'दायरा' फिल्म एक ट्रांसजेंडर और एक औरत के बीच के प्यार को दिखाती है। 2013 में विश्वास पाटिल के निर्देशन में बनी फिल्म 'रज्जो' में ट्रांसजेंडरों के जीवन का वर्णन मिलता है। इस फिल्म में महेश मांजरेकर और रवि किशन दोनों ने ट्रांसजेंडर लोगों की भूमिका अदा की है। राघव लॉरेन्स द्वारा लिखित एवं निर्देशित लक्ष्मी (2020) उन्हीं के तमिल फिल्म कांजना (2011) का रिमेक है। इस फिल्म में अक्षयकमार ने ट्रांसजेंडर का रोल अदा किया है। 2022 को निकली 'गंगूबाई काठियावाड़ी' फिल्म जो कि संजय लीला भंसाली के निर्देशन में बनी है, इस फिल्म में विजय राज ने ट्रांसजेंडर पात्र की भूमिका निभायी है।

सूचना प्रोद्योगिकी के इस युग में सोशलमीड़िया में आये 'वजूद', 'हंसा एक संयोग', 'अर्द्धचांद' नामक लघु फिल्मों में भी ट्रांसजेंडर लोगों की पीड़ा, संघर्ष तथा उनके शारीरिक तथा मानसिक उत्पीड़न को पेश किया गया है। कलर्स चैनल में प्रस्तुत की गई धारावाहिक 'शक्ति-अस्तित्व के एहसास की' में एक ट्रांसजेंडर को किस प्रकार परिवार और समाज से अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करना पड़ता है दिखाया गया है। इस धारावाहिक की प्रमुख पात्र ट्रांसजेंडर है इस पात्र के द्वारा ट्रांसजेंडर के जीवन संघर्ष एवं उनकी शक्ति को हमारे सामने पेश किया गया है।

आज सिनेमा, सोशल मीडिया तथा धारावाहिक इन सभी ने अपने जरिए ट्रांसजेंडर समाज की समस्याएँ, उनके अंदर के द्वन्द्व, छटपटाहट, मनोदशा आदि को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इन माध्यमों ने इस हाशियेकृत समाज के प्रति हमारा जो पारंपरिक नकारात्मक सोच है,

उसमें बदलाव लाने का प्रयास किया है तथा सभ्य समाज में बहिष्कृत होकर जीने को विवश इस समुदाय के लोगों पर पुनर्विचार करने पर विवश किया है।

2.6. निष्कर्ष

आज ट्रांसजेंडर विमर्श का दौर चल रहा है। अनादिकाल से समाज की मुख्यधारा के द्वारा तिरस्कृत यह समुदाय आज साहित्य का मुख्य विषय बन गया है। पौराणिक ग्रंथों तथा साहित्य में इनका उल्लेख मात्र दिखाई पड़ता है। लेकिन समकालीन साहित्यिक विधाओं में इनकी चर्चा ज़ोर-शोर से हो रही है। वर्तमान साहित्यकार ट्रांसजेंडर समुदाय के अस्तित्व को बनाने के लिए भरसक प्रयत्न कर रहे हैं। हिन्दी भाषा के साहित्यकार विभिन्न साहित्यिक विधाओं जैसे कहानी, कविता, नाटक, सिनेमा आदि के द्वारा ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों की परेशानियों, उनकी संस्कृति, रीति रिवाज उनसे जुड़े हरेक पहलुओं का चित्रण कर सामान्य जनों तक पहुँचाने का कार्य कर रहे हैं। ट्रांसजेंडर खुद अपनी कथा लेखनबद्ध कर रहे हैं। उनकी आत्मकथा को पढ़कर हम उनकी जिन्दगी से रूबरू हो सकते हैं। दूसरी भाषाओं में ट्रांसजेंडर द्वारा लिखी गयी आत्मकथाएँ हिन्दी में अनूदित हो रही हैं। सिनेमा जगत् ने भी आज ट्रांसजेंडर किरदार को महत्वता प्रदान की है। ट्रांसजेंडर समुदाय से जुड़ी फिल्मों ने बाक्स ऑफिस में धमाका मचा दिया है।

सभ्य समाज के लोगों में ट्रांसजेंडर लोगों के प्रति जो घृणा फैली हुई थी आज वह कम होती दिखाई पड़ रही है। डॉ. राधेश्याम सिंह ट्रांसजेंडर विमर्श की महत्वपूर्ण कृतियों के संबंध में लिखते हैं ''किन्नरों के प्रति समाज की यथास्थितिवादी सोच को दर्शाने के लिए इधर हिन्दी के लेखक-लेखिकाओं का एक बहुत छोटा-सा वर्ग ही सही, सक्रिय हुआ अभी हाल ही के वर्षों में नीरजा माधव, प्रदीप सौरभ, निर्मला भुराड़िया, चित्रा मुद्गल, महेन्द्र भीष्म, सूरज बड़्त्या, एस.

आर. हरनोट, पारस दासोत आदि ने महत्वपूर्ण रचनात्मक सृजनात्मक योगदान दिया है।''[54] हिन्दी के साहित्यकार साहित्य के माध्यम से ट्रांसजेंडर समुदाय की पीड़ाओं तथा समस्याओं को वाणी देकर उनके उत्थान के लिए प्रयासरत हैं।

संदर्भ-सूची

1. डॉ. एम. फीरोज़खान, थर्ड जेण्डर हिन्दी कहानियाँ, पृ.सं. 26.
2. वही, पृ.सं. 30
3. वही, पृ.सं. 32
4. वही, पृ.सं. 35
5. वही, पृ.सं. 38
6. वही, पृ.सं. 50
7. वही, पृ.सं. 95
8. वही, पृ.सं. 131
9. वही, पृ.सं. 131
10. वही, पृ.सं. 139
11. वही, पृ.सं. 65
12. वही, पृ.सं. 85
13. वही, पृ.सं. 103
14. वही, पृ.सं. 100
15. वही, पृ.सं.117
16. वही, पृ.सं.117.
17. डॉ. एम. फ़ीरोज़खान, हम भी इंसान हैं, पृ.सं. 3
18. वही, पृ.सं. 17
19. वही, पृ.सं. 17
20. वही, पृ.सं. 17

21. वही, पृ.सं. 58
22. वही, पृ.सं. 77
23. वही, पृ.सं. 88
24. राकेश शंकर भारती, इस ज़िन्दगी के उस पार, पृ.सं. 47.
25. वही, पृ.सं. 24.
26. वही, पृ.सं. 24
27. वही, पृ.सं. 30
28. वही, पृ.सं.31
29. लता अग्रवाल, सिसकती दास्तान, पृ.सं.170
30. डॉ. विजेंद्र प्रताप सिंह, रवि कुमार गोंड, अस्तित्व और पहचान, पृ.सं. 120
31. वही, पृ.सं. 17
32. वही, पृ.सं. 15
33. वही, पृ.सं. 18
34. वही, पृ.सं. 156
35. विजेन्द्र प्रताप सिंह, पंखुड़ियाँ अंर्तद्वंद्वों की, पृ.सं. 20
36. वही, पृ.सं. 46
37. वही, पृ.सं. 84
38. वही, पृ.सं. 70
39. गीतिका वेदिका, अधूरी देह, पृ.सं. 13
40. रचना भोला यामिनी , पुरुष तन में फँसा मेरा नारी मन, पृ.सं.17
41. वही, पृ.सं. 15

42. वही, पृ.सं. 39

43. वही, पृ.सं. 49

44. वही, पृ.सं. 85

45. वही, पृ.सं. 141

46. वही, पृ.सं. 70

47. वही, पृ.सं. समर्पण से

48. शशिकला राय , मैं हिजड़ा... मैं लक्ष्मी, पृ.सं. 30

49. वही, पृ.सं. 33

50. वही, पृ.सं. 30

51. वही, पृ.सं. 94

52. वही, पृ.सं. 107

53. वही, पृ.सं. 147

54. डॉ. एम. फ़ीरोज़खान, 23. डॉ. विजेंद्र प्रताप सिंह, रविकुमारगोंड, कथा और किन्नर, पृष्ठ 24थर्ड जेंडर कथा आलोचना, कवर पेज

तीसरा अध्याय

चुने हुए उपन्यास : एक सामान्य परिचय

आज के वैज्ञानिक और प्रौद्योगिक युग में उपन्यास सर्वाधिक सशक्त और लोकप्रिय विधा है। अपने उत्थान काल से लेकर हिन्दी उपन्यास मानवीय संशक्तियों को दर्ज करता आया है। उपन्यास मानव जीवन को समग्रता से समझने का प्रयास करता है। हिन्दी उपन्यास जीवन के यथार्थ रूप को हमारे सामने रखता है। समकालीन साहित्य जगत् में आज विवध विमर्शों का दौर चल रहा है। उनमें ट्रांसजेंडर विमर्श का प्रमुख स्थान है, जो अभी आरंभिक अवस्था में है। हिन्दी उपन्यासकारों ने उपन्यास साहित्य में समाज में हशिएकृत जीवन जीने को मजबूर ट्रांसजेंडर समाज को अपनी लेखनी का विषय बनाया है। उपन्यास के माध्यम से इस उपेक्षित, हाशिएकृत समाज के लोगों की जैविक, सामाजिक, आर्थिक समस्याएँ उनकी पीड़ा, संघर्ष तथा जीवनशैली, लोक संस्कृति, विश्वास आदि को पाठकों तक पहुँचाने तथा उसपर विचार विमर्श करने को उपन्यासकार सभी को प्रेरित करते हैं। ट्रांसजेंडर समाज के लोगों के प्रति जानकारी हासिल करने की आकांक्षा सहृदय पाठक को उपन्यास पढ़ने को बाध्य करती है।

हिन्दी के कई उपन्यासकारों ने हमारे समाज में उपेक्षित ट्रांसजेंडर समाज को अपने उपन्यास का केन्द्रीय विषय बनाया है, जिनमें प्रमुख उपन्यास निम्नलिखित हैं -

1. मैं भी औरत हूँ - अनुसूया त्यागी
2. तीसरी ताली - प्रदीप सौरभ
3. किन्नर कथा - महेन्द्र भीष्म
4. गुलाम मंडी - निर्मला भुराड़िया
5. मैं पायल - महेन्द्र भीष्म
6. पोस्ट बॉक्स.नं.203 नाला सोपारा - चित्रा मुद्गल

7. जिन्दगी 50-50 - भगवंत अनमोल

8. अस्तित्व - गिरिजा भारती

9. दरमियाना - सुभाष अखिल

10. यमदीप - नीरजा माधव

11. श्रापित किन्नर - डॉ. मुक्ति शर्मा

12. अस्तित्व की तलाश में सिमरन - मोनिका देवी

13. ऐ जिन्दगी तुझे सलाम - हरभजन सिंह मेहरोत्रा

14. मंगलामुखी - डॉ. लता अग्रवाल

15. मेरे होने में क्या बुराई है - रेनू बहल

16. वह - श्री गोपाल सिंह सिसोदिया

17. हॉफ मैन (ए पेनफुल जर्नी) - भुवनेश्वर उपाध्याय

3.1. मैं भी औरत हूँ

'मैं भी औरत हूँ' डॉक्टर अनुसूया त्यागी द्वारा लिखित ट्रांसजेंडर लोगों के जीवन पर केन्द्रित उपन्यास है। कहा जाता है कि यह उपन्यास सच्ची घटना पर आधारित है। अनुसूया त्यागी पेशे से डॉक्टर है। उन्होंने इस उपन्यास के अलावा 'रिश्तों का बोझ', 'उम्मीदों का कलश', 'किसके लिए' आदि कहानी संग्रह लिखे हैं। 'लेबर रूप' उनके द्वारा रचित डॉक्टरी जीवन से संबंधित संस्मरण है। 'मैं भी औरत हूँ' उपन्यास ट्रांसजेंडर रोशनी और उसकी बहन ट्रांसजेंडर मंजुला की कहानी है। यह उपन्यास ट्रांसजेंडर लोगों की मानसिक व्यथा को जाहिर

करने के साथ ही साथ इनका चिकित्सा द्वारा आम लोगों जैसे सम्मानपूर्वक जीवन जीने के रास्ते को हमारे सामने रखता है।

इस उपन्यास का प्रमुख पात्र रोश्नी और उसकी बहन मंजुला है। वे दोनों बहनें ट्रांसजेंडर हैं, लकिन पहले इसका पता खुद उनको तथा उनके माता पिता को भी नहीं था। एक दिन रोशनी शौच के लिए घर के बाहर जाती है तब कुछ लड़के उसके साथ छेड़-छाड़ करते हैं। उनमें से एक लड़का उसके साथ बलात्कार करने की कोशिश करता है। जब उसे पता चलता है रोशनी ट्रांसजेंडर है, वह दोस्तों से आकर कहता है कि रोशनी ट्रांसजेंडर है "हाँ-हाँ ऊपर ही है पर नीचे कुछ नहीं। अब जल्दी चलो यहाँ से कहीं कोई आ नहीं जाए।"[1] उनके द्वारा कहा गया हिजड़ा शब्द सुन उसके मन को ठेस पहुँचता है। रोशनी इस हादसे का जिक्र किसी से नहीं करती। क्योंकि उसे डर है अगर यह बात समाज मे फैल गई तो घरवालों की इज्जत मिट्टी में मिल जाएगी। इस हादसे के बाद वह दुःखी रहने लगती है, वह कहती है "उसने एक दिन अपना कमरा बंद किया सलवार उतारकर सामने जाँघों के बीच एक शीशा रखकर उसने अपना निरीक्षण शुरु किया...ऊपरी बनावट बिलकुल वैसी ही थी जैसी उसने छोटी लड़कियों, नन्हीं बच्चियों में देखी थी, पर उभारों के नीचे उसे कोई छेद दिखाई नहीं दिया।"[2] उस वक्त उसे एहसास होता है वह सामान्य लड़कियों जैसी नहीं है।

दोनों बहनों का रजोधर्म प्रारंभ न होने के कारण उनकी चिंतित माता चन्द्रमुखी तथा पिता तुलसी राम उन्हें गाजियाबाद के डॉ.रमन्ना के नर्सिंग होम ले जाते हैं। वहाँ डॉक्टर माता पिता को उनके बच्चियों की अपरिपक्व जननांगों की बात बताती है। डॉक्टर उन्हें ऑपरेशन और प्लास्टिक सर्जरी करने का सुझाव देती है, जिसके बाद वे तमाम सुख भोग सकते हैं जिसे एक साधारण और स्वस्थ महिला भोगती है। डॉक्टर उन्हें बताती है कि रोशनी को गर्भाशय नहीं है।

रोशनी डॉक्टर द्वारा कही सारी बातों को छिपकर सुन लेती है। डॉक्टर के कहे मुताबिक उनका ऑपरेशन तथा प्लास्टिक सर्जरी कराया जाता है। उसके बाद रोशनी की बड़ी बहन मंजुला की शादी डॉक्टर विपिन से होती है जो एक साधारण इंसान है। मंजुला सुखी वैवाहिक जीवन जीती है तथा माँ भी बनती है।

रोशनी पढ़ने में होशियार थी। रोशनी मैट्रिक एवं इंटर में प्रदेश में प्रथम पोजीशन पर आती है। मास्टर तुलसीराम और सुधा चैनलवालों के इंटरव्यू में रोशनी के बारे में कहते हैं "हमें अपनी बेटी पर गर्व है, देखना एक दिन वह बहुत आगे जाएगी। हमारा और देश का नाम रोशन करेगी। भगवान ऐसी बेटी सबको दें।"[3] रोशनी की उच्च शिक्षा दिल्ली के आई.आई.टी में होता है। रोशनी के जीवन में नकुल और सौरभ दो लड़के आते हैं। नकुल को जब पता चलता है कि वह माँ नहीं बन पायेगी तब वह रोशनी से उससे दूर हो जाता है। सौरभ अपने पौरुष की कमी रोशनी पर थोप देता है। रोशनी एक बड़ी कंपनी की सी.ई.ओ बन जाती है। वहाँ उसकी मुलाकात ओंकार पटेल जो उसी कंपनी की दूसरी शाखा में काम करता है उससे होती है। ओंकार पटेल रोशनी से प्यार करने लगता है। रोशनी अपने बारे में सब कुछ उसे बताती है। सच्चाई जानने पर भी उसका प्यार रोशनी के प्रति बना रहता है। रोशनी ओंकार पटेल से शादी करती है और सुखी जीवन व्यतीत करती है। शादी के बाद वे दोनों सोरोगेटड मदर के ज़रिए बच्चा जनाना चाहते हैं। इला सावंत नाम की युवती सोरोगेटड मदर बनने को तैयार होती है लेकिन प्रसव से पहले इला सावंत पैसा लेकर उनके घर से भाग जाती है। इस हादसे से रोशनी और ओंकार पटेल को दुःख होता है। इस हादसे के बाद वे दोनों अनाथालय से एक नवजात शिशु को गोद ले लेते हैं। रिश्तेदारों को बताया जाता है कि वह बच्ची उन्हीं की है। उन दोनों ने बच्ची का नाम तेजस्विनी रखा।

तेजस्विनी पढ़ने में अव्वल थी। उसका प्रवेश आई. आई. टी दिल्ली में होता है। वहाँ उसका परिचय मयंक सावंत नाम के एक गरीब युवक से होता है। वहाँ उस लड़के को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ था और तेजस्विनी को द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ। मयंक की माँ स्तन कैंसर से पीड़ित थी। तेजस्विनी मंयक की माँ का उपचार में सहायता करती थी। मंयक की माँ की मृत्यु हो जाती है। मयंक अकेला पड़ जाता है। एक दिन मंयक को रोशनी के घर बुलाया जाता है। रोशनी से बात करते हुए वह बताता है कि वह और उसकी माँ रोशनी पटेल से मिलने ग्लेनमार्क कंपनी गये थे लेकिन तब वे उस कंपनी को छोड़ चुके थे। मयंक से रोशनी को पता चलता है कि उसकी माँ इला सावंत है, जो रोशनी के पास रह चुकी है तथा वह रोशनी को एक खत देता है जो उसकी माँ इला सावंत ने रोशनी के लिए लिखा था। उस खत को पढ़कर पता चलता है कि मयंक कोई ओर नहीं बल्कि रोशनी और ओंकार का अपना बेटा है। इला को कैंसर के रूप में उसके करतूतों की सजा मिल गई थी। रोशनी अपने बेटे मयंक को अपने पास रखना चाहती है। वह ओंकार की सहमति से पढ़ाई पूरी होने के बाद तेजस्विनी और मंयक की शादी करवा देती है। अंत में रोशनी को मयंक बेटे के रूप में न सही दामाद के रूप में मिल जाता है।

यह उपन्यास शारीरिक विकृतियों पर विजय प्राप्त करने का संदेश देते हुए पाठकों में इनके प्रति सकारात्मक चिंतन पैदा करता है।

3.2. तीसरी ताली

प्रख्यात पत्रकार प्रदीप सौरभ द्वारा लिखित बहुत ही चर्चित उपन्यास है, 'तीसरी ताली'। इस उपन्यास में ट्रांसजेंडरों, समलैंगिकों, लेस्बियनों, लौण्डों और विकृत यौनिक संदर्भों के लोगों के जीवन को चित्रित किया गया है। यह उपन्यास उनके सुख-दुःख, हाशिए पर जिन्दगी जीने की व्यथा, लैंगिक असमानता और भेदभाव की पीड़ा, आजीविका की समस्या, परिवार से बहिष्कृत

होने के दर्द आदि को रेखांकित करती है। पुस्तक के फ्लैप पर प्रो. सुधीश पचौरी की टिप्पणी सार्थकता प्रदान करती है "यह उभयलिंगी सामाजिक दुनिया के बीच और बरक्स हिजड़ों, लौण्डों, लौंण्डेबाजों, लेस्बियनों और विकृत - प्रकृति की ऐसी दुनिया है जो हर शहर में मौजूद है और समाज के हाशिए पर जिन्दगी जीती रहती है। अलिगढ़ से लेकर आरा, बलिया, छपरा, देवरिया यानि 'एबीसीडी' तक, दिल्ली से लेकर पूरे भारत में फैली यह दुनिया समान्तर जीवन जीती है। प्रदीप सौरभ ने इस दुनिया के उस तहखाने में झाँका है, जिसका अस्तित्व सब 'मानते' तो हैं लेकिन 'जानते' नहीं।"[4]

'तीसरी ताली' उपन्यास का आरंभ दिल्ली में स्थित एक हाउसिंग सोसाइटी, 'सिद्धार्थ एन्क्लेव' में रहनेवाले गौतम साहब के यहाँ बच्चा पैदा होने से होता है। बच्चा पैदा होने की खबर मिलते ही वहाँ बधाई देने ट्रांसजेंडर दल पहुँच जाते हैं। तीन बेटियों के बाद बेटे के जन्म लेने पर भी गौतम साहब ट्रांसजेंडर को शकुन देने के लिए दरवाजा नहीं खोलते गौतम साहब के घर बेटा होने की खुशी गम में बदल जाता है जब उनको पता चलता है कि उनका बेटा एक ट्रांसजेंडर है। वे ट्रांसजेंडर लोगों को शकुन देने के लिए दरवाज़ा नहीं खोलते। इसपर ट्रांसजेंडर दल को गुस्सा आ जाता है। शरारती सुनयना ने गुरु डिम्पल से कहा कि इसके दरवाजे में मूत देते हैं लेकिन डिम्पल ने सुनयना को इस बात के लिए इज़ाजत नहीं दी और बोली "हम हिजड़ें ज़रूर हैं, पर हमारे भी कुछ उसूल हैं। हमारे पेट पर लात मारेगा तो भगवान भी इसे माफ नहीं करेगा।"[5] गौतम साहब अपने बेटे विनीत की असलियत को समाज से छुपाकर पालते हैं। जैसे-जैसे वह बड़ा होता जाता है उसमें लड़कियों के लक्षण दिखाई देने लगते हैं। वह अपने को लड़की मानती है। अब उसका घर से बाहर निकलना बंद हो चुका था। अंत में वह घर छोड़कर चली जाती है। घर छोड़ने के बाद एक दिन शाम को अचानक एक कार उसके सामने रुकती है। गाड़ी के अंदर बैठा आदमी उसे अपने साथ ले जाकर उसका शारीरिक शोषण करता है तथा उसके हाथ 100 रुपए

देकर वापस उसे छोड़ जाता है। घर से निकलने के बाद उसे कई दुविधाओं और यंत्रणाओं का शिकार होना पड़ता है। अंत में वह कांस्टेबल राज चौधरी के पास पहुँचती है जो उसे सहारा देते हैं। उनकी मदद से अपने सीखे ब्यूटी पार्लर कोर्स का उपयोग कर वह ब्यूटी पार्लर खोलती है तथा ब्यूटी पार्लरों की मालकिन बन जाती है। वह अपने वक्षस्थलों की कास्मेटिक प्लास्टिक सर्जरी कराने के साथ वेजाइना रिकंस्ट्रक्शन भी कराती है। विनीत से वह विनीता बन जाती है। पार्लर की सफलता के बाद विनीता पेज थ्री सर्किल में आ गई थी। फैशन शो में जज बनकर जाने लगी थी। विनीता ब्यूटी की दुनिया में क्वीन बन गई थी। गौतम साहब जिन्हें विनीत का घर छोड़ कर जाने में विशेष गम न था वे अंत में पश्चाताप करते हुए दिखाई पड़ते है। गौतम साहब अपने बेटे विनीत उर्फ विनीता के लिए तोहफा लाते हैं एक बनारसी साड़ी, कुछ चूडियाँ, बिन्दी के पैकेट और सस्ती किस्म की कुछ लिपस्टिक व मेकअप का सामान। साड़ी देखकर विनीता भावुक हो जाती है। गौतम साहब विनीता को साड़ी भेंट करके प्रायश्चित करना चाहते थे। वे उससे यह कहना चाहते थे कि “तुम विनीत नहीं थे... तुम्हें विनीत बनाने की मेरी कोशिश झूठी थी।”[6]

गौतम साहब की तरह आनन्दी आण्टी ने भी अपनी बेटी निकिता को जिसका लिंग अस्पष्ट था समाज के नजरों से बचाकर बड़े प्यार से पाला। बिना किसी बात की परवाह किए आनंदी आण्टी निकिता को पढ़ाती है। छठी कक्षा में दाखिले की बारी आयी तो उनके सामने धर्मसंकट खड़ा हो गया। उसे लड़कियों और लड़कों के स्कूल में एड्मिशन नहीं मिला। जेंडर स्पष्ट न होने के कारण कोई उसे एडमिशन नहीं देता। ट्रांसजेंडर नीलम आनंदी आण्टी पर दबाव डाल रही थी कि वह निकिता को उसे सौंप दे। पहले तो आनंदी आण्टी इसके लिए राजी नहीं होती लेकिन अंत में वह दुनिया से हारकर निकिता को नीलम के हवाले कर देती है। निकिता नीलम के साथ जाने के लिए इस शर्त पर तैयार होती है कि आनंदी आण्टी उससे बराबर मिलने के लिए आती रहेगी। नीलम निकिता को बेटी की तरह पालती है। उसके लिए किताबें लाती है

लेकिन निकिता का मन वहाँ नहीं लगता। उसे अपना भविष्य अंधकारमय दिखने लगा था। वह यह बात सोचकर डरने लगी थी की नीलम उसे चुनरी पहनाकर मुकम्मल ट्रांसजेंडर बना देगी...तथा वह माँ से गुरु बन जाएगी। नीलम की गद्दी के अन्य ट्रांसजेंडरों की तरह उसे भी नाचना गाना पड़ेगा। यह सोचकर वह चूहे मारने की दवा खाकर आत्महत्या कर लेती है।

उपन्यास में विवशतावश मुकम्मल मर्द से ट्रांसजेंडर बने लोगों का भी वर्णन है। ऐसा ही एक पात्र है ज्योति जो मुकम्मल मर्द है। दलित और गरीब होने के कारण वह बाबू श्यामसुन्दर सिंह का लौंडा बनता है। श्यामसुन्दर सिंह के साथ रहते - रहते वह अपने को स्त्री समझने लगा था। एक दिन कुछ लड़कों ने ज्योति को छेड़ दिया उसके साथ बदतमीजी की इसके कारण श्यामसुन्दर सिंह ने ज्योति को छोड़ दिया। ज्योति को कहीं भी काम नहीं मिला। वह अब ट्रांसजेंडर बनना चाहता था। उसका मानना है "माना मैं मर्द हूँ, लेकिन ये समाज मुझसे मर्द का काम लेने के लिए राजी नहीं है। मुझे इस समाज ने मादा की तरह भोग की चीज़ में तब्दील कर दिया है। मैं मर्द रहूँ, औरत रहूँ या फिर हिजड़ा बन जाऊँ, इसमें किसी को कोई फर्क नहीं पडेगा।"[7] वह ट्रांसजेंडर डिम्पल के यहाँ शामिल हो जाता है ओर ट्रांसजेंडर बन जाता है।

उपन्यास में मंजू मुकम्मल स्त्री है। उसके माता पिता ने गरीबी के चलते उसे ट्रांसजेंडर डिम्पल को बेच दिया था। ट्रांसजेंडर डिम्पल उसे बेटी की तरह पालती है। डिम्पल मंजू को पढ़ाना लिखाना चाहती थी लेकिन समाज से हारकर वह मंजू को ट्रांसजेंडर बनाने का फैसला लेती है। बचपन से ट्रांसजेंडर लोगों के साथ रहते - रहते वह अपने को ट्रांसजेंडर मानने लगी थी। मंजू अपने डेरे में रहने वाले राजा जो कि पूर्ण पुरुष है उससे प्यार करने लगी थी। राजा गरीबी और भुखमरी के कारण ट्रांसजेंडरों के डेरे में शरण प्राप्त करता है। डिम्पल अपनी मंडली में राजा को गाय और भैंस संभालने का काम सौंपती है। राजा और मंजू दोनों अपनी कामवासनाओं की पूर्ति

करते हैं। मंजू गर्भवती हो जाती है। जब इस बात की खबर डिम्पल को मिलती है तब वह क्रोधित होकर राजा का पुरुषांग कटवा देती है तथा मंजू के बच्चे को मार डालने के साथ-साथ उसकी बच्चेदानी भी निकाल कर उसको सजा देती है। राजा का रानी बनने के बाद मंजू उससे दूरी बना लेती है। बाद में मंजू मोडल बन जाती है, उसका परिचय मशहूर फोटोग्राफर विजय से होता है तथा वह उससे प्रेम करने लगती है।

ट्रांसजेंडरों को बुढ़ापे में अनेक यातनाओं से गुज़रना पड़ता है। कला मौसी के बूढ़े हो जाने पर उनकी मंडली के अन्य सदस्य दूसरी मण्डलियों में शामिल हो जाते हैं। बुढ़ापे में जीने के लिए उन्होंने पैसा संभालकर रखा भी नहीं था। उनके इलाकों में रीना की मंडली ने गुंडों के बल पर कब्जा कर लिया था। बुढ़ापे में मौसी भीख माँगकर गुजारा कर रही थी। उपन्यास में गद्दी के लिए ट्रांसजेंडरों में जो संघर्ष होता है उसका चित्रण भी है। चन्दाबाई की गद्दी दिल्ली में सबसे बड़ी मानी जाती है। चंदाबाई की उम्र हो गयी थी। वह रीना, नरगिस और नीलम में नीलम को ज्यादा चाहती थी और उसे गद्दी का मालकिन बनाना चाहती थी। नरगिस गद्दी को अपनाने के लिए चंदाबाई की हत्या अपने गिरिया गोपाल के द्वारा करवाती है। नीलम और रीना नरगिस के खिलाफ पुलिस में गुरु की हत्या का रिपोर्ट दर्ज करवाती है। आशामाई सबको समझाती है "गद्दी को लेकर झगड़ा करने से दूसरी दुनियाँ के लोगों पर क्या असर पड़ेगा, कभी सोचा है इस बारे में? वे यही सोचेंगे कि प्रकृति के सताए हुए इस दुनिया के लोग भी दूसरी दुनिया के लोगों जैसे ही हैं। दोनों में अंतर नहीं है। दोनों में हिजड़पन कूट-कूटकर भरा है। हमें ईश्वर ने दूसरों को अपशकुन से बचाने की ताकत दी है। हमारा काम दूसरी दुनिया के लोगों को आशिर्वाद देना है, उसकी तरह लड़ना, झगड़ना नही। हमारी मुक्ति का यही रास्ता है। इस योनि से मुक्ति के लिए हमें दूसरी दुनिया के लोगों से अलग दिखना चाहिए।"[8] नरगिस को डर था कहीं गोपाल सच्चाई न व्यक्त कर दे। इसके चलते वह गोपाल को मारने का इरादा बनाती है लेकिन इस बात की खबर गोपाल

को हो जाती है और वह नरगिस की हत्या करता है। गोपाल गद्दी पर कब्जा करना चाहता है लेकिन ट्रांसजेंडर मंडली को किसी मर्द का ट्रांसजेंडर की गद्दी का गुरु बनना कबूल नहीं था, इसलिए वह ट्रांसजेंडर बनने को तय करता है। ट्रांसजेंडर बनकर वह सभी के सामने धोती उठाकर कहता है "देखो, अब मैं हिजड़ा बन गया हूँ दिखाता हूँ अब मुझे गद्दी से कौन बेदखल करता है।"[9]

उपन्यास में ट्रांसजेंडर रेखा चितकबरी शिक्षित है। उसने दिल्ली यूनिवर्सिटी से बी.ए किया था। इसके बावजूद उसे सेक्स के धंधे में जुड़ना पड़ा। वह दिल्ली की मशहूर कालर्गल सप्लायर बनती है। उसके पूरे शरीर में सफेद दाग होने के कारण उसका नाम रेखा चितकबरी पड़ा। उसे अंग्रेज़ी तथा अन्य विदेशी भाषाओं का ज्ञान था। भारतीय लड़के-लड़कियों को वह विदेश भेजती थी और देश में विदेशी लड़कियों को ले आया करती थी। इन्टरनेट के सहारे धंधा होता था। बाज़ार में ग्राहक सस्ती लड़कियों की माँग करते थे अगर लड़कियाँ न मिले तो ग्राहक ट्रांसजेंडर और लौण्डों से काम चलाने को तैयार थे। एक दिन दिल्ली पाँचसितारा होटल में एक कालर्गल की मृत्यु हुई। जाँच पड़ताल के दौरान रेखा चितकबरी पकड़ी जाती है।

ट्रांसजेंडरों को स्कूलों में मज़ाक का पात्र बनना पड़ता है। उपन्यास में मणिकलीका को स्कूल के बदमाश लड़कों ने नंगा कर दिया और उसके अविकसित गुप्तांग की नुमाइश कर हिजड़ा हिजड़ा कहकर नारा लगाने लगे। उस स्कूल को छोड़ने में वह विवश हो गई उसके बाद उसने कथक सीखना आरम्भ किया। गुरु अनन्तकुमार के स्कूल में उसने कथक सीखना प्रारम्भ किया। वहाँ के स्कूल के चपरासी ने पकड़कर उसका शारीरिक शोषण किया। कई यातानाओं को उसे झेलना पड़ा अंत में वह महाविद्यालय की डायरक्टर बनी। मणि का मानना है "सच्चे दिल से काम किया जाए तो अपमान और विरोध भी आपका रास्ता नहीं रोक सकते।"[10]

चाय की दूकान पर काम करनेवाला राजू जन्मजात ट्रांसजेंडर है, वह ट्रांसजेंडर वृत्ति से नफरत करता है। उसके माता पिता ने उसे बचपन में ही छोड़ दिया था। वह पढ़ लिखकर ग्रेजुएट होता है। कमाथीपुरा के निवासियों को एड्स से बचाने का कार्य वह करता है। वह एक एन. जी. ओ बनाता है तथा राष्ट्र संघ के एड्स को लेकर न्यूयार्क में हुए एक सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व करता है। वह वेश्याओं के दो बच्चों को गोद लेता है। वह तीसरी योनि के लोगों से अपील करता है “उठो और समाज में अपना मुकाम बनाओ। अपना हक हासिल करो। हक भीख में नहीं मिलता, उसके लिए संघर्ष करना पड़ता है।”[11] उपन्यास में सुप्रिया कपूर अपने ट्रांसजेंडर होने की सच्चाई को छुपाकर फिल्म फील्ड में आती है। वह फिल्मों में आइटम नम्बर डांस करती है। ‘दि छक्का’ शो में वह अपने रहस्य का खुलासा करती है। उसकी सच्चाई का पता चलने पर कई निर्माताओं ने उसे फिल्म से बाहर कर दिया। अखबार और फिल्मी पत्रिकाओं में उसके ट्रांसजेंडर होने की खबर भर गयी। एक पत्रिका के इण्टरव्यू में वह कहती है “मैं ने तो अपने हिजड़त्व को छिपाया, लेकिन जो फिल्मी पत्रकार इस तथ्य को जानते थे, उन्होंने भी इसका खुलासा नही किया। जानते हैं, क्यों नहीं किया? दरअसल, वे मुझे ब्लैकमैल करना चाहते थे कि मैं उनको मोटी रकम नहीं दूँगी तो वे मेरे हिजड़ी होने के सत्य को जगजाहिर कर देंगे। मैंने रकम नहीं दी फिर भी चुप रहे, तो सिर्फ इसलिए कि मैं औरत की तरह बिक रही थी और उनकी मैगजीन के कवर की शान थी। अब थोड़े दिन हिजड़ी की तरह बिकूँगी। मैं कैसी हूँ? क्या हूँ? कितनी पीड़ा सहती हूँ? इन सवालों से किसी को सरोकार नहीं है। किसी को इस बात से कोई सरोकार नहीं है कि मेरे जन्म के बाद मेरी माँ मुझे देखकर आत्महत्या कर ली। बाद में बड़ी बहन इसी बात के लिए ससुराल से निकाल दी गई कि बहन हिजड़ी है। मेरे पिता किस तरह तिल-तिलकर मरे, इस बात से किसी को कोई लेना देना नहीं है। मीड़िया को तो बेचने से मतलब है। चाहे वह औरत हो या फिर हिजड़ी। जब तक बिकूँगी तब तक आप बेचेंगे।”[12]

उपन्यास में पुरुष समलैंगिकता तथा स्त्री समलैंगिकता का भी चित्रण मिलता है। सुविमल भाई अपनी सेवा सुश्रूषा के लिए रति से शादी करता है। उन्हें औरतों की गंध से नफरत थी। रति विवाह के बाद भी कुँवारी रह जाती है। सुविमल भाई अनिल नाम के आदमी से रिश्ता बनाता है। अंत में रति सुविमल भाई से तलाक ले लेती है। सुविमल भाई अनिल आपस में शादी करके पति -पत्नी की तरह रहने लगते हैं। कुछ समय बाद सुविमल भाई विनीता के पार्लर में काम करनेवाले वैभव को पसंद करने लगते है। वे अनिल से तलाक ले लेते हैं। यास्मीन और जुलेखा दोनों बचपन की सहेलियाँ थी। यास्मीन और जुलेखा को पुरुष गंध से नफरत था। यास्मीन पक्की औरतखोर थी। जुलेखा अपने बाप और ममेरे भाई की वजह से पुरुष वर्ग से घृणा करती थी। उसका बाप हमेशा माँ को मारता था वह एक हिंसक था और उसके ममेरे भाई ने एक बार उससे जबरदस्ती करने की कोशिश की थी। इन दो लोगों के रवैये के कारण वह पुरुषवर्ग को हिंसक मानती थी और उनसे नफरत करती थी। यास्मीन और जुलेखा आपस में शादी कर लेते है। दोनों के पिता ने उनकी शादी को मान्यता प्रदान की। जुलेखा यास्मीन के घर पत्नी की तरह रहने लगी। जुलेखा के पिता ने उसकी बिदाई की और दान-दहेज भी दिया।

उपन्यास में किसन और बाबी के जरिए ट्रांसजेंडरों के प्रति उभयलिंगी समाज की हैवानियत का खुलासा हुआ है। बाबी फरीदाबाद के ट्रांसजेंडरों की गद्दी की मालकिन थी। किसन की मुलाकात बाबी से नये फरीदाबाद के एन आई टी मार्केट में हुई थी। वह वहाँ दूध का सप्लाई करता था। बाबी और किसन आपस में प्रेम करने लगते हैं। किसन की पत्नी को जब उनके संबंध के बारे में पता लगा तब वह किसन को छोड़कर मायके हमेशा के लिए चली जाती है। किसन बाबी को अपने गाँव ले आता है। बैठकों और चौपालों में किसन और बाबी की चर्चा होने लगी। पंचायत ने दोनों को गाँव से बेदखल करने का इरादा बनाया क्योंकि लोगों का मानना था कि गाँव में ट्रांसजेंडर रहेगी तो गाँव का माहौल खराब हो जाएगा। लेकिन किसन गाँव

छोड़कर जाने को इन्कार कर देता है। इस कारण रात को गाँव के जवान लोग किसन के घर में डीजल डालकर आग लगा देते हैं और वे दोनों मारे जाते हैं। पुलिस के सामने सभी लोग इस हादसे को दुर्घटना बना देते हैं।

'तीसरी ताली' उपन्यास में विजय कृष्णा अपने ट्रांसजेंडर होने के सत्य को छुपाकर समाज की मुख्यधारा से जुड़ता है। विजय कर्नाटक आढ़दजर्वर न्यूजपेपर का सीनियर फोटोग्राफर है। वह एक शराब कंपनी के लिए कैलण्डरों की एक सीरीज बना रहा था जिसका थीम था ट्रांसजेंडर। खूबसूरत ट्रांसजेंडरों की तलाश में वह देश के कोने-कोने में घूम रहा था। इसीबीच उसकी मुलाकात मंजू से होती है। विजय मंजू के साथ एक सेशन करता है। मंजू विजय से प्रेम करने लगती है। विजय भी मंजू से प्यार करता था, लेकिन वह तटस्थ रहता था। कुवागम मेले के दिन मंजू मंगलसूत्र कटवाने से इंकार करती है और वह विजय के पास आकर अपना उसके प्रति प्रेम जाहिर करती है, वह उसे बताती है कि वह साधारण स्त्री है। तब विजय मंजू से अपनी सच्चाई बताता है "मंजू मैं तुमसे शादी नहीं कर सकता। मैं जानता हूँ कि तुम एक मुकम्मल औरत हो। तुम्हारी खूबसूरती हासिल करना किसी की भी खुश किस्मती हो सकती है, पर मैं खुश किस्मत नहीं हूँ। मैं तुम्हारे निर्मल व पारदर्शी हृदय का समर्पण स्वीकार कर ही नहीं सकता। तुम मुकम्मल औरत ज़रूर हो, पर मैं मुकम्मल पुरुष नहीं हूँ...मैं एक हिजड़ा हूँ! हिजड़ा, हिजड़ा, हिजड़ा...।"[13] विजय ट्रांसजेंडरों की तरह ताली पीटकर और भीख मांगकर जीने को तैयार नही था। वह कहता है "दुनिया के दंश से अपने आपको बचाने के लिए मैंने लगातार लड़ाई लड़ी और खुद को स्थापित किया। मैं नाचना गाना नहीं, नाम कमाना चाहता था। भगवान राम के उस मिथक को झुठलाना चाहता था, जिसके कारण तीसरी योनि के लोग नाचने-गाने के लिए अभिशप्त है...परिवार और समाज से बेदखल हैं...।"[14]

'तीसरी ताली' उपन्यास में प्रदीप सौरभ जी ने ट्रांसजेंडरों की संस्कृति तथा लोकविश्वास को भी चित्रित किया है। ट्रांसजेंडरों की अपनी कुछ मान्यताएँ और उसूल हैं। उनकी बिरादरी में लड़कियों और आदमी को ट्रांसजेंडर बनाने की मनाही है। उनका मानना है जो ट्रांसजेंडर नहीं है उसे अगर ट्रांसजेंडर बनाते हैं तो उन्हें सौ बार ट्रांसजेंडर का जन्म लेना पड़ता है और फिर भी उसका पाप कम नहीं होता है। जब ज्योति ने सोनम से ट्रांसजेंडर बनने की ख्वाहिश व्यक्त की तो सोनम उससे कहती है "मैं तुम्हें हिजड़ा नहीं बना सकती। भगवान ने तुम्हें पूरा आदमी बनाया है। वैसे भी हम भगवान से डरते हैं। किसी सही अदमी को हिजड़ा बनाना हमारे समाज में क्रुफ है।"[15] चुनरी रस्म के बाद किसी को मुकम्मल ट्रांसजेंडर बनाया जाता है। चुनरी रस्म के बिना कोई भी ट्रांसजेंडर समाज का हिस्सा नहीं बन सकता। ज्योति के चुनरी रस्म में कई तरह के पकवान बनाये जाते हैं। मूर्गीवाली माँ की पूजा अर्चना होती है। ट्रांसजेंडर का दाह संस्कार भी साधारण लोगों से अलग है। इनकी शवयात्रा मध्यरात्रि के बाद आरंभ होती है। ट्रांसजेंडर शव को डण्डों से मारते है, उसपर चप्पल जूते बरसाते है। इसके पीछे की मान्यता है कि मरनेवाला दोबारा तीसरी योनि में जन्म नहीं लेगा। कुवागम मेले का चित्रण भी उपन्यास में है। तमिलनाडु के विल्लेपुरम जिले का छोटा सा गाँव है कुवागम। यह ट्रांसजेंडरों का पवित्र तीर्थ स्थल है। यहाँ हर साल मेला लगता है। यहाँ कठनदवार मंदिर है जहाँ जाकर ट्रांसजेंडर एक दिन के लिए सुहागन बनती हैं और फिर विधवा बन जाती हैं। पूरे कुवागम में सत्रह दिन का उत्सव मनाया जाता है। फैशन शो भी चलाया जाता है उपन्यास में मंजु फैशन शो में भाग लेती है तथा विजय के नाम मंगलसूत्र पहनती है। तीसरी ताली उपन्यास हमें तीसरी योनि के लोगों की संस्कृति तथा परंपरा का जीता जगता दर्शन कराता है।

लगभग दो सौ पृष्ठों के इस उपन्यास में लेखक ने ट्रांसजेंडर जीवन के अनेक पहलुओं तथा प्रसंगों के जरिए, उनकी वेदना, पीड़ा, तिरस्कार आदि का सजीव चित्रण किया है। तीसरी

ताली उपन्यास ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों के संघर्षमय जीवन को ही नहीं प्रस्तुत करता बल्कि उनकी परंपरा, संस्कृति, आकांक्षाएँ, सोच विचार से भी हमें रूबरू कराता है। इस उपन्यास के बारे में आलोचक सुधीश पचौरी ने ठीक ही लिखा है "प्रदीप ने इस दुनिया के उस तहखाने में झाँका है, जिसका अस्तित्व सब मानते तो हैं, लेकिन जानते नहीं।"[16]

3.3. किन्नर कथा

महेन्द्र भीष्म का ट्रांसजेंडरों के जीवन पर आधारित उपन्यास है 'किन्नर कथा'। महेन्द्र भीष्म हिन्दी के प्रमुख साहित्यकार हैं। इनकी प्रमुख कहानी संग्रह हैं – 'तेरह करवटे', 'एक अप्रेषित पत्र', 'क्या कहें?' आदि। महेन्द्र भीष्म जी का उपन्यास है – 'जय हिन्द की सेना'। इनकी एक कहानी 'लालच' पर टेलिफिल्म का निर्माण भी हुआ है। महेन्द्र भीष्म जी को मुंशी प्रेमचन्द कथा सम्मान, डॉ.विद्यानिवास मिश्र पुरस्कार, महाकवि अवधेश साहित्य सम्मान, अमृतलाल नागर कथा सम्मान आदि कई सम्मानों से सम्मानित किया गया है। 'किन्नर कथा' उपन्यास ट्रांसजेंडर सोना के चंदा बनने की कहानी है तथा यह उपन्यास ट्रांसजेंडर तारा, नगीना, रेखा जैसे अन्य ट्रांसजेंडरों की संघर्ष भरी जीवन को भी प्रस्तुत करता है।

हमारे समाज ने ट्रांसजेंडरों को हमेशा हाशिएकृत जीवन जीने को मजबूर किया गया है। इनके जन्म होते ही ये माता-पिता द्वारा त्याग दिये जाते हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि ट्रांसजेंडर बच्चों के घर में होने पर समाज में सभी उनका हँसी मज़ाक उड़ायेंगे। खुद का इज्जत खून के रिश्ते पर भारी पड़ जाता है। इस उपन्यास में राजा जगतराज सिंह बुंदेला की पत्नी आभा को जब दाई निरंजना से यह बात पता चलता है कि उसके जन्में दो जुड़वे बच्चियों में एक ट्रांसजेंडर है तब वह बहुत दुःखी होती है। वह दाई निरंजना से कहती है "काकी! अब हमाई सबकी लाज तुमाए हाथन है। तुम तो दायजू को सुभाव जानती हो, कितने गुस्सैल हैं वे, जा खबर तो वे बर्दाश्त न कर पेहें,

काकी तुमे जा बात सबसे छुपाने परे, हमाये तुमाये के अलावा कोऊ न जान पाए, जायजू भी....उने पता परे तो ई नन्हीं - सी जान खां मरवा डारे, काकी तुमे हमाई सौगंध...तुमे जो रुपइय्या पईसा चाऊने हो, मैं मौ मांगी करों, पर तुमें ई बात हां एकदम गुप्त रखने।"[17]

बच्चियों का नाम सोना और रूपा रखा जाता है। आभा और दाई निरंजना सोना को राजा दायजू से दूर रखते थे, हमेशा वे रूपा को सोना कहकर राजा के पास भेजते थे। सोना और रूपा जब दस महीने की हई तब आभा फिर गर्भवती बनती है और उनके यहाँ तीसरा संतान पैदा होता है। सोना के अस्तित्व को राजा से ज्यादा छुपाया नहीं जा सका। जब सोना चार साल की हुई उस वक्त राजा को सोना के ट्रांसजेंडर होने का पता चल गया, यह सच्चाई जानने पर उन्हें बहुत बड़ा धक्का लगता है "हे भगवान! हमारी संतान हिजड़ा। वीर बुंदेला खानदान में हिजड़ा ने जन्म लिया और उसे कानों कान खबर नहीं। इतना बड़ा धोखा, इतना बड़ा विश्वासघात..।"[18] सच्चाई का पता चलने पर राजा अपने दीवान पंचम सिंह को सोना तथा दाई निरंजना को मार डालने का आदेश देते हैं। राजा ने सोना को मारने के लिए पंचम सिंह के हवाले कर दिया। राजा के अंदर का पिता उसे मारना नहीं चाहता था, लेकिन समाज का डर एवं कुल की मर्यादा की रक्षा के लिए उसे सोना को मारने का निर्णय लेना पड़ता है।

सोना को मारने के लिए लाये चाकू से पंचमसिंह की उँगली कट जाती है और खून निकलती है। सोना अपने कक्काजू का मरहम पट्टी करती है। सोना के दीवान के प्रति अपनापन, प्यार एवं उसका मासूमियत देख पंचमसिंह उसे नहीं मारता। वे सोना को पहाड़ पर अपने परिचयवाले आश्रम ले जाते हैं और वहाँ आश्रम के मंहत के कहे अनुसार सोना को वहाँ मौजूद ट्रांसजेंडर गुरु तारा के हाथों सौंप देते हैं। दीवानजी इस बात को रहस्य रखने को तारा से कहते हैं "पर एक बात पक्की सुन लो तारा, महंतजी आप गवाह हैं। इस बात का पता किसी को नहीं

चलना चाहिए कि ये मोड़ी दायजू सरकार की या उनके वंश की है। दूसरी बात मैं कुछ देर में इतना धन दे जाता हूँ कि जिंदगी भर ई बिटिया के लालन-पालन के बाद भी कमती न हुए और आखिरी बात, जैतपुर से पच्चीस मील की दूरी बनाए रखियो, नही तो काल को मौ देखो।"[19] पंचम सिंह लौटकर राजा को सोना की मौत की खबर सुनाकर सन्यास के लिए कहीं दूर चले जाते हैं।

तारा सोना को लेकर डेरे पर पहुँचती है। तारा डेरे की गुरु है। सभी उसे गुरुमाई कहकर पुकारते हैं। तारा का पूर्ण नाम तारा चन्द्र अग्रवाल वल्द हुकुमचन्द्र अग्रवाल सागर वाले था। वह अपने माता पिता की सबसे छोटा संतान थी। उसका एक बड़ा भाई तथा चार बहनें थीं। तारा को अपनी बहनों के साथ रहना ज्यादा अच्छा लगता था। लड़कियों की वेशभूषा पहनना उसे पसंद था। स्कूल में लड़कियों से उसका ज्यादा संपर्क रहा, लड़कों से वह कटकर रहती थी। स्कूल में सभी उसके स्त्रैण स्वभाव का मज़ाक उड़ाने लगे। उम्र बढ़ने पर उसका हाव भाव लड़कियों जैसा होता गया इसी कारण भाई और पिता ने उसका स्कूल जाना बंद करवा दिया। उसकी जाँच कराई गई तो पता चला कि वह ट्रांसजेंडर है। उसके माता पिता उसे अपने साथ रखना चाहते थे लेकिन उसके भैया जो उससे घृणा करते थे, वे उसे घर में रखना नहीं चाहते थे। बहनों की शादी होने तथा घर की इज्ज़त बचाने के लिए तारा को अपने 14-15 साल की उम्र मे घर छोड़ना पड़ा। बहनों की शादी हुई तब भी उसे बुलाया नहीं गया। पिता की मृत्यु की खबर भी उसे नहीं दी गई। माँ के मरने पर जब वह शमशान पहुँची तब उसके भाई एवं भतीजे ने उसे पास आने तक नहीं दिया। भतीजा उसपर गुस्सा होता है "तू हिजड़ा है, हिजड़ा, हमारा तरे से कोई नाता नहीं, तू हमारा कुछ नहीं लगता, भाग जा यहाँ से क्यों हमारी नाक कटाने पर तुला है, हिजड़ा कहीं का।"[20] डेरे में सोना का नाम चंदा रखा गया। वहाँ मातिन नाम की स्त्री उसका देख रेख करती है। मातिन का असली नाम कुसुमावती है, वह विधवा थी। एक दिन वह उसके जेठ के साथ मायके जा रही थी, रास्ते में जेठ ने उसके साथ जबरदस्ती करने की कोशिश की। वह उसके साथ बलात्कार करके

उसे उसके साथियों को सौंप देना चाहता था, लेकिन उस वक्त तारा ने उसे बचाया और अपने साथ डेरे पर ले आई। तारा ने उसे बहन माना तथा डेरे की भंडार की मालकिन बनाया।

तारा चंदा का ऑपरेशन कराकर उसे पूर्ण स्त्री बनाना चाहती है । इससे पहले दो ट्रांसजेंडरों का ऑपरेशन कराकर उन्हें स्त्री बनाया गया था एवं उनका विवाह भी कर दिया गया था। आज वे सुखी जीवन व्यतीत कर रहे हैं। जैतपुर रियासत के दीवान पंचम सिंह को दिए वचन के अनुसार तारा चंदा को कभी दूर जगह नहीं भेजती। अपने बड़े भाई के बीमार होने पर तारा मातिन और चंदा के साथ उनसे मिलने जाती है। उन्हें वहाँ देख तारा का भतीजा गुस्सा होता है वह चौकीदार को डाँटता है। तारा को इसपर बहुत दुःख होता है। भैया के वहाँ उनकी मुलाकात उनके छोटे बेटे मनीष से होता है। वह सौम्य स्वभाव का था। मनीष और चंदा एक दूसरे के प्रति आकृष्ट होते हैं।

चंदा से मिलने के बाद, मनीष उनके डेरे पर आने जाने लगा। उसका डेरे पर आना जाना तथा ट्रांसजेंडरों के साथ रिश्ता बनाना उसके बड़े भाई को पसंद नहीं आता, वह मनीष को इस कारण बहुत मारता भी है। मनीष चंदा को बेहद प्यार करता था वह उससे शादी करना चाहता था उसे फर्क नहीं पड़ता था कि चंदा ट्रांसजेंडर है। उसका बड़ा भाई बालकृष्ण मनीष को छतरपुर से बाहर पढ़ने भेजना चाहता है ताकि वह चंदा और तारा से दूर रहे लेकिन मनीष उनका डटकर विरोध करता है। मनीष तारा को बताता है कि वह चंदा से शादी करना चाहता है। वह तारा को वचन देता है कि वह चंदा को कभी नही छोडेगा "मैं वचन देता हूँ, चंदा को आजीवन ऐसा ही प्यार देता रहूँगा, वह मेरे जीने का आधार है, संबल है, उसे स्वयं से अलग मैं कैसे कर सकता हूँ? हाँ मैं न रहू, तब बात और है।"[21]

इस उपन्यास का एक पात्र है लंबू जोकि गरीबी और लाचारी के कारण ट्रांसजेंडर बनकर नाच गाकर अपना पेट पालता है। तारा ने उसे अपने यहाँ आश्रय दिया था। धीरे -धीरे लंबू जैसे नकली ट्रांसजेंडरों की संख्या बढ़ती गई। बाद में लंबू ने अपना अलग डेरा बना लिया और वह गुरु बन बैठा। फिर आगे असली ट्रांसजेंडरों को उनके जैसे नकली ट्रांसजेंडरों के कारण भुखमरी आ पड़ी। लंबू और तारा में दुशमनी हो गई। कमलेश जो पुरुष है वह ट्रांसजेंडरों के डेरे में ड्राइवर का काम करता है। उसकी पत्नी को उसके और ट्रांसजेंडर नगीना के बीच अवैध संबंध होने का शक है। नगीना कमलेश को भाई मानती है वह जाकर कमलेश की पत्नी को उनके रिश्ते के बारे में समझाती है। डेरे में सम्मान और अच्छी तनख्वाह मिलने के कारण कमलेश वहाँ काम करता था। आर्थिक तंगी आने पर नगीना कमलेश की मदद भी करती थी।

महाराज छतरपुर की अग्रजा शोभनासिंह, बहनोई विजय सिंह के पुत्र कुंवर विजयेन्द्र से रूपा का विवाह तय हुआ। छतर पुत्र राजा के यहाँ राई नृत्य चंदा करती है। उसने अपने नृत्य कला से सबका दिल जीत लिया था। चंदा की नृत्यकला से मनविभोर महाराज जगतसिंह चंदा को रूपा के विवाह के अवसर पर नृत्य करने आमंत्रित करते हैं। जब इसका पता तारा को चलता है तब उसे पंचमसिंह को दिया वादा याद आ जाता है तथा वह सोना को वहाँ नहीं भेजने का निर्णय लेती है। इसी बीच तारा की हत्या कर दी जाती है। तारा की हत्या के इंजाम में लंबू ट्रांसजेंडर एवं अजनर के लंबरदार साहबसिंह को गिरफ्तार किया जाता है। तारा के मरने पर सभी दुःखित होते हैं। तारा के शव को मनीष के कहने पर दाह संस्कार किया जाता है। खुद मनीष तारा को मुखाग्नि देता है।

ट्रांसजेंडर मंडली जैतपुर महाराज की बेटी रूपा के विवाह में सम्मिलित होने जाती हैं। चंदा को महल के रास्ते पर पहुँचने पर अपना बचपन याद आने लगता है। पँचमसिंह भी साधु

बनकर 15 साल के बाद जैतपुर वापस लौट आते हैं। जब चंदा अपनी माँ को देखती है उसकी आँखे भर आती है। आभा की नज़र भी चंदा पर पड़ जाती है तो वह भी हतप्रभ रह जाती है। चन्दा सोचती है कि यदि वह पूर्ण स्त्री होती तो उसके विवाह का भी मंडप इसी तरह सजता और यदि पुरुष तो वह अपने भाई की तरह राजकुँवर बनकर घूमती। राई नृत्य करते वक्त सोना बेहोश हो जाती है। सोना उर्फ चंदा को आभा सिंह के कमरे में पहुँचाया जाता है। वहाँ माँ बेटी का पुनर्मिलन होता है। रूपा भी सोना को देख उसे बाहों में भर लेती है। आभा के बुलाने पर पंचम सिंह वहाँ आता है और स्वीकार करता है कि चंदा ही सोना है और घटी घटना व्यक्त कर देता है। राजा जगतसिंह पंचमसिंह की स्वीकारोक्ति सुन लेते हैं और पंचमसिंह पर क्रोधित होते हैं।

जब रूपा की सास शोभा को इन बातों का पता चलता है तब वे आभा को आश्वासन देती हैं और सोना को अपने साथ कनाडा ले जाकर ऑपरेशन कराने की बात करती है। राजा जगतसिंह खानदान की इज्ज़त को बनाये रखने के लिए जल्दी ही ट्रांसजेंडर मंडली को वहाँ से वापस भेज देते हैं। चंदा भी उनके साथ वापस चली जाती है वह अपने परिवार का जो सम्मान है, समाज में उसे ठेस पहुँचाना नहीं चाहती है। महल से वापस आयी चंदा अपनी दुःखी माँ को आश्वासन देने के लिए उसी रात उनसे मिलना चाहती है और वह मनीष के साथ जैतपुर रात को ही रवाना हो जाती है। महल के बाहर मनीष को ठहराकर वह महल में प्रवेश करती है। राजा जगतसिंह सोना को महल में देख उसपर पहले गुस्सा होते हैं लेकिन बाद में उनके पिता के अंदर का प्यार जागृत हो जाता है लेकिन इसीबीच कुंवर सोना पर गोली चलाता है। गोली की आवाज़ सुन मनीष तथा महल में मौजूद सभी वहाँ पहुँच जाते हैं। कुंवर को जब पता चलता है सोना उसकी सगी बहन है तब उसे बहुत दुःख होता है। सोना को अस्पताल पहुँचाया जाता है और उसकी जान बच जाती है। रूपा की सास शोभना रूपा के साथ सोना को चिकित्सा के लिए अपने साथ कनाडा ले जाती है।

‘किन्नर कथा’ यह एक सुखांत उपन्यास है। यह उपन्यास सकारात्मक सोच प्रदान करता है। दयाशंकर पाण्डेय इस उपन्यास के बारे में लिखते हैं “उपन्यासकार को इसके लिए बधाई ज़रूर देनी चाहिए कि न सिर्फ समाज में बल्कि लेखन में भी एक नितांत उपेक्षित विषय पर न सिर्फ उपन्यास लिखा बल्कि किन्नर समाज के लिए समाज और लेखन में एक नया परिवेश, एक नई और सकारात्मक धारणा का भी सूत्रपात किया है। अभी तक तो लगभग सभी समाज में किन्नर उपेक्षा और हँसी का ही पात्र रहे हैं पर यह उपन्यास पढ़कर किन्नर समाज के बारे में सम्मान और अपनेपन का स्थाई भाव मन में उपजता है। शायद यही इस उपन्यास की बड़ी ताकत है।”[22]

3.4. गुलाम मंडी

निर्मला भुराड़िया द्वारा लिखित उपन्यास है ‘गुलाम मंडी’। निर्मला भुराड़िया पत्रकार तथा लेखिका के रूप में विख्यात हैं। इनकी अभी तक छह पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं ‘ऑब्जेक्शन मी लॉर्ड’, ‘फिर कोई प्रश्न करो नचिकेता’, ‘खुशी का विज्ञान’ इनकी महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं। जिनमें ‘ऑब्जेक्शन मी लॉर्ड’ को साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश साहित्य परिषद् द्वारा तथा ‘फिर कोई प्रश्न करो नचिकेता’ को मध्यप्रदेश साहित्य सम्मेलन द्वारा वागीश्वरी सम्मान से सम्मानित किया गया है। ‘एक ही कैनवास पर बार-बार’, ‘मत हँसों पद्मावती’ उनकी कहनी संग्रह हैं एवं उनके द्वारा लिखित काव्य संग्रह है ‘विश्वसुन्दरी’।

निर्मला भुराड़िया जी का ‘गुलाम मंडी’ उपन्यास ह्यूमन ट्राफिकिंग, देहव्यापार तथा ट्रांसजेंडरों से जुड़ी समस्याओं पर केंद्रित उपन्यास है। उपन्यास में मानव तस्करी, देहव्यापार तथा ट्रांसजेंडरों की समस्या आदि एक दूसरे से जुड़ी हुई आगे बढ़ती है। उपन्यास के प्रमुख पात्र कल्याणी, उसके पति गौतम तथा जानकी, मोहन, लक्ष्मी, घुंघरू एवं अंगूरी जो कि ट्रांसजेंडर हैं

तथा अन्य कुछ ट्रांसजेंडर हैं। कल्याणी उच्च वर्ग की शिक्षित नारी है वह फिल्मों में काम करती है तथा अपने सौन्दर्य को बनाये रखना चाहती है। गौतम कल्याणी का पति है वह लाइफ साइंस रिसर्च सेंटर में वैज्ञानिक के रूप में काम करता था। गौतम पिता बनना चाहता था लेकिन कल्याणी बच्चा पैदा करना नहीं चाहती क्योंकि उसे डर था कि उसके बच्चे को जन्म देने पर उसके पेट पर सिलवटें आ जाएंगी और उसकी सुन्दरता पर उसका बुरा असर होगा। बच्चा और सुन्दरता के बारे में कहकर दोनों पति पत्नी में अक्सर कहा सुनी होती थी। कल्याणी बच्चा गोद लेना चाहती थी अंत में उसने गौतम को भी इसके लिए मना लिया।

कल्याणी और गौतम घुंघरू जो निम्न वर्ग का था उसकी बेटी जानकी को गोद ले लेते हैं। घुंघरू गरीब तथा पैसों का लालची था। अपनी पत्नी के मर जाने के बाद उसने अपनी बड़ी बेटी लक्ष्मी को महावत को बेच दिया और जानकी को कल्याणी तथा गौतम के हवाले कर दिया। जातपात को माननेवाले कल्याणी के ताई और ताऊजी को जानकी को गोद लेने की बात न चाहते हुए भी मानना पड़ता है। एक दिन जब जानकी ने चौके से दाल का डोंगा उठा लिया उस दिन ताई जी ने खाना नहीं खाया ताईजी की मान्यता है "नीचे लोगों का खून ही अलग तरह का होता है, सो छोटी जात में विवाह करने से अपना खून भी खराब हो जाता है और यह भी कि जो सवर्ण नहीं, वो भेजे से भोट होते हैं। उनको पढ़ाने-लिखाने का सवाल ही क्या, कितनी ही कोशिश करो, उनके भेजे में कुछ नहीं घुसेगा, चूँकि रामजी ने उनको गुलामी करने ही भेजा है।"[23] वे जानकी को अच्छे स्कूल में भर्ती करते हैं लेकिन जानकी पढ़ने में पीछे थी। कल्याणी मोहन को जानकी को ड्राइंग सिखाने के लिए नियुक्त करती है, मोहन को जानकी का साथ पसंद आता है। जब जानकी को पता चलता है कि वह कल्याणी और गौतम की बेटी नहीं है वह हीन ग्रंथि का शिकार बन जाती है। वह क्लबों, पबों, रेस्तरां पार्टियों में जाने लगती है। जानकी अपना एक नग्न चित्र शूट करवाती है, यह फोटो गौतम के हाथ लग जाता है, उस फोटो में जानकी के

वक्षःस्थल पर एक तिल था वैसा ही एक तिल गौतम के स्वर्गवासी माता के वक्षस्थल पर भी था। माता की याद में गौतम वह फोटो अपने पास रखता है। जब कल्याणी को गौतम के पास से जानकी का नग्न चित्र प्राप्त होता है तब दोनों में कहा सुनी होती है। कल्याणी गौतम को शक के नज़रिए से देखती है। जानकी कल्याणी और गौतम के बीच के झगड़े का कारण अपने को मानती है और घर छोड़ क्लब में परिचित केवल रमानी के जरिए लंदन में पहुँचती है। गौतम भी घर छोड़कर चला जाता है।

केवल रमानी के रचे षडयंत्र में जानकी फँस जाती है। मासूम जानकी केवल रमानी को भला आदमी मानती है, वह उसके साथ शारीरिक संबंध भी बनाती है। इसीबीच केवल रमानी की दुर्घटना में मौत होने की खबर जानकी को मिलती है, वह हताश तथा अकेली पड़ जाती है। वहाँ केवल रमानी का मित्र जोजो उसे जोशुआ को सौंपता है और वह उसे शिकागों से होते हुए डलास ले जाकर मैक नामक अदमी को सौंपता है। जानकी का पासपोर्ट उसके पास न होने के कारण वह उनके चंगुल में बुरी तरह फँस जाती है। उससे देह व्यापार कराया जाता है। उसे क्लबों में नग्न होकर डांस करना पड़ता है। अमेरिका में डांस ग्रूप में जाने का सपना उसे अमेरिका के टेक्साई शहर डलास में ला पहुँचाता है। जेन की तरह कई लड़कियाँ मानव तस्करी की शिकार बन चुकी थी "जेन ने नाचते नाचते उड़ती नजर से 'सूबिन' की ओर देखा जो अभी पन्द्रह बरस की ही थी। वह कोरियाई लड़की थी। अंग्रेज़ी नहीं जानती थी। किसी तरह जेन जान पाई थी कि वह कोरियाई है। दरअसल छोटे-छोटे बने इन स्टेजों में से लगभग हर एक पर एक अलग ही नस्ल की युवती नाच रही थी। कोई अफ्रीकन-अमेरिकन है, कोई मैकिसन है, कोई एशियन, तो कोई गोरी भी! नस्ल कोई भी हो, यहाँ बैठे लार टपकाते पुरुषों के लिए तो वे सब माँस की लुगदी ही हैं। उन्हीं को रिझाने के लिए वे नग्न नाच रही है। नाच क्या रही हैं, संगीत की धुन पर अश्लील, संभोग समान मुद्राएं कर रही हैं।"[24] जानकी की बहन लक्ष्मी भी अपने पिता द्वारा महावत

भेरूलाल को बेची जाती है और भेरूलाल पैसों के लिए उसे बेचता है। लक्ष्मी एड्स का शिकार बनती है तथा अंत में लक्ष्मी कल्पना थापा जोकि एन. जी. ओ चलाती है उसके संरक्षण में आ पहुँचती है।

इस उपन्यास में ट्रांसजेंडरों की समस्याओं की भी कथा समान्तर चलती है। उपन्यास का आरम्भ ही कल्याणी और ट्रांसजेंडर अंगूरी के मिलन से होता है। कल्याणी अंगूरी के साथ उनके डेरे पर जाती है। कल्याणी अपने सौन्दर्य को बनाये रखने के लिए जमनालाल के पास कोबरे के दंश के लिए जाती है। जमनालाल के घर का पता कल्याणी को अंगूरी द्वारा प्राप्त होता है। अंगूरी कल्याणी को अपने डेरे में ले जाती है। वहाँ आने पर कल्याणी के मन में डर भी बना हुआ था। क्योंकि उसने इन लोगों के बारे में बचपन में कई डरावनी बातें सुन रखी थी "हिजड़े उठा ले जाएंगे, झोली में भरके।"[25] वहाँ आले में एक कब्र बना था। जो वहाँ की रेखा अलबेली के कुनबे की पूर्व गुरु का कब्र था। उन्होंने वहाँ कौआ पाल रखे थे। अंगूरी ने अपने सौ वर्षीय गुरु से कल्याणी को मिलाया, अंगूरी गुरु से कल्याणी को भेंट करवाते कहती है "पैर छुओ और अच्छा सा एक आशीर्वाद अपने नाम कर लो। हिजड़ा गुरु का आशीर्वाद बहुत भलता है, वह भी सौ साल की गुरु। कई लोग आकर पैर छूकर जाते हैं इनके।"[26] गुरु के मरने के बाद हमीदा को गुरु चुना जाता है।

इस उपन्यास में लल्लन ट्रांसजेंडर का वर्णन है, जो वेश्यावृत्ति करने के लिए ट्रांसजेंडरों को प्रेरित करता है। लल्लन की नजर इस ग्रूप के रुपयों, गहनों और जेवरात पर भी थी और साथ ही साथ इस ग्रूप के दो सुन्दरी रेखा और रानी पर भी। लल्लन ने नकली ट्रांसजेंडर पाल रखा था, वह उनसे लूट और दादागिरी करवाता था। उपन्यास में अंगूरी जो ट्रांसजेंडर है उसकी माँ ने उसके जन्मते ही उसे घूरे पर फेंक दिया था। वह अपनी कहानी सबको बताते हुए कहती है "अब क्या

बार-बार मेरे मुँह से सुनेगी हरामजादी कि मेरे को मेरी माँ ही फेक गयी होगी घूरे पर, जब मूतने की जगह कोरा छेद देखा होगा तो ।"[27] ट्रांसजेंडर रमीला कहती है उसकी माँ ने उसके ट्रांसजेंडर होने के रहस्य को सबसे छुपाकर रखा लेकिन दाई ने सच उगल दिया और वृंदा गुरु के चेले आकर उसे जबरदस्ती ले आये। उपन्यास का प्रमुख पात्र अंगूरी की माँ को टी. बी था। उसके बाप ने दूसरी शादी कर ली थी। वे छह भाई बहन थे। सभी उसे ट्रांसजेंडर होने के कारण पसंद नहीं करते थे। पिता हमेशा उसे मारता, तंग आकर उसने घर छोड़ दिया। भुखमरी के कारण जब लोगों के घर बतरन मांजने गयी तो ट्रांसजेंडर होने के कारण वहाँ से दुत्कार ही मिला उसने जब कहा... "से बतरन थोड़ी मांजते हैं, मांजते तो हाथ से ही हैं न"[28] तो घरवाली ने थाने में रिपोर्ट दर्ज कर दी कि ट्रांसजेंडर औरतों को छेड़ रहा है। पुलीस ने उसे गिरफ्तार किया और उसका रेप भी किया।

ट्रांसजेंडर रानी जो पहले राजा था, वह अपनी कहानी कहती है। उसके घरवालों को उसका डांस सीखना पसंद नही था उसके लड़कियों की तरह सजना - संवरना उसके भाई तथा पिता को पसंद नहीं था। स्कूल के पास के चाय की दुकान में काम करनेवाला मनोज से उसका परिचय होता है। मनोज रानी की ख्वाहिशों को पूरा करता था और लड़कियों के आभूषण तथा कपड़े उसे खरीदकर देता था। घर से बाहर कर दिए जाने पर वह मनोज के पास आकर रहने लगी तथा फोक डांस तथा साल्सा सीखने लगी। रानी ऑपरेशन करके लड़की बनना चाहती थी लेकिन मनोज ने इसका विरोध किया। वह बोला "मेरे को तू छोकरा ही उच्छा लगता है, छोकरी चाहिए होती तो मेरे को एक नहीं, दस मिल जाती ।"[29] मनोज ने उसे पुड़िया देना भी शुरु कर दिया। एक बार मनोज के सामने उसके ब्लाउज से रोहित का फोटो गिर पड़ा, जो उसने शालू के पर्स से लिया था। इस कारण मनोज ने उसे धोखेबाज मान लिया और उसने अपने दोस्तों के साथ मिलकर रानी को पहले हेरोइन खिलाई तथा एक डॉक्टर की मदद से उसके मर्दाना अंग को कटवा

दिया। मनोज ने रानी को सत्तर हजार रुपए में चमेली ट्रांसजेंडर को बेच दिया। चमेली ट्रांसजेंडर के वहाँ से भाग कर वह वृंदा गुरु की शरण में आ गयी।

लल्लन गुरु के गैंग के आदमी अयूब सामी ने गुरु हमीदा की हत्या कर दी और अयूब सामी फरार हो गया। लल्लन के गैंग ने आकर वृंदा गुरु के घर और खजाने पर कब्जा कर लिया था। उन्होंने रानी तथा अनारकली जिनपर उनकी निगाहें पहले से ही थी उनसे देह धंधा करवाया। रानी किसी तरह वहाँ से भागकर निकल गई तथा बहरूपिया बनकर गाँव-गाँव घूमने लगी। अनारकली एड्स का शिकार बन गई थी। कल्याणी रानी को नकली ट्रांसजेंडरों के घेरे से बचाकर उसका ऑपरेशन कराने में मदद करती है। रानी को अपना मनचाहा शरीर प्राप्त हो जाता है। कल्याणी जोकि गौतम पर शक करती थी, उसकी गलतफहमी दूर होती है, वह गौतम तथा जानकी की तलाश में लग जाती है। उसकी इस तलाश में लक्ष्मी, मोहन, रानी, अंगूरी, कल्पना थापा आदि सहायता करते हैं। जानकी की तलाश में मुंबई के रेड लाइट इलाके में विडियो बनाते वक्त कल्याणी पर एसिड का आक्रमण होता है जिसकी खबर टी.वी चैनल पर देख गौतम कल्याणी के पास लौट आता है। अब गौतम भी अन्य सभी के साथ जानकी की तलाश में जुट जाता है। इसीबीच रानी अमेरिकन सरकार के यंग विम्न लीडरशिप के प्रोग्राम के लिए चुनी जाती है और वह तीन हफते के लिए अमेरिका जाती है। वहाँ उसे जानकी के बारे मे पता चलता है। रानी जानकी को बचाकर देश लौटती है। अपने ऊपर बीते हादसे को जानकी भुला नहीं पा रही थी। सभी मिलकर उसे जिन्दगी में वापस ले आते हैं।

25 छोटे-छोटे खंडों में विभाजित इस समस्या प्रधान उपन्यास में मानवतस्करी, ट्रांसजेंडर समुदाय की समस्या तथा जाति समस्या को सामने लाया गया है। कई पात्रों के जरिए भिन्न-भिन्न विषयों को लेखिका ने प्रस्तुत किया है। छोटे-छोटे कथानकों के माध्यम से विभिन्न विषयों की

कड़वी सच्चाईयों को हमारे सामने रखकर लेखिका ने उन विषयों पर हमें चिंतन-मनन करने पर मजबूर किया है।

3.5. मैं पायल

'मैं पायल' महेन्द्र भीष्मजी द्वारा लिखित जीवनीपरक उपन्यास है। इस उपन्यास में ट्रांसजेंडर गुरु पायल के जीवन संघर्ष को प्रस्तुत किया गया है। ट्रांसजेंडर होने के कारण पायल को अपने स्वयं के परिवार तथा समाज से मानसिक तथा शारीरिक यातनाओं को झेलनी पड़ती है। महेन्द्र भीष्म अपने इस जीवनीपरक उपन्यास में ट्रांसजेंडर समाज द्वारा भोगे जानेवाली पीड़ा एवं संत्रास का यथार्थ चित्रण करते हैं। महेन्द्र भीष्म जी ने पाँच कहानी संग्रह एक नाट्य संग्रह और दो उपन्यासों की रचना की हैं।

'मैं पायल' उपन्यास इक्कीस छोटे-छोटे अध्यायों में विभाजित हैं। पायल अपने माता-पिता की पाँचवी संतान थी। उसका एक बड़ा भाई राकेश और तीन बड़ी बहने कमलेश, आशा और गीता थी। पायल के पिताजी रामबहादुर सिंह उन्नाव के किसी सेठ का ट्रक चलाते थे। पायल के जन्म से वे दुःखी थे। पायल की अम्मा उसे बताती थी कि उसके जन्म लेने पर उसके बाप ने उसे उठाना तो दूर, उसकी ओर देखा तक नहीं इसलिए कि वह लड़की थी। पायल को लड़की के रूप में अस्पताल में दर्ज किया गया और उसे लड़की का जन्म पत्र मिला। पायल के स्वर्गीय बाबाजी के अनुज श्री शिवदत्त सिंह भारतीय थल सेना से सूबेदार के पद से रिटायर हुए थे, उन्हीं का संरक्षण उनके परिवार के ऊपर था। पायल के पिताजी ज्यादातर घर से दूर रहते थे। जब घर आते तो रात को दारु पीकर माँ को खूब मारते इसलिए बच्चे उनसे डरते थे। उनके वापस जाने पर सभी को सुकून मिलता था। कभी-कभार तो दारू के नशे में वे बच्चों को भी बेहरमी से मारते थे। पायल के बाबाजी उनका खूब ध्यान रखते उन्हे वे दाऊ कहकर संबोधित करते थे, लेकिन

किसी शक्ति वर्धक जड़ीबूटी के सेवन करने से उनकी मृत्यु हो गई और जिसके कारण घर की पूरी जिम्मेदारी पायल के पिताजी के ऊपर आ गया। घर की आर्थिक स्थिति खराब हो गई। इसीबीच पायल की एक ओर बहन निक्की का जन्म हुआ। पिताजी जब बाहर रहते तब इन लड़कियों की जिम्मेदारी उनके भाई राकेश के ऊपर रहता था।

पायल की माँ उससे बहुत प्यार करती थी। पायल की बड़ी बहने भी उसका खूब ख्याल रखती थी। पायल को नहलाते तथा कपड़े पहनाते वक्त उसका विशेष ध्यान रखा जाता था। पहले पायल को समझ में नहीं आया कि उसका विशेष ध्यान क्यों रखा जाता है लेकिन बाद में उसे सब पता चल गया। पिताजी दारू पीकर आते तो उसे कोसते, गाली देते "ये जुगनी, हम क्षत्रीय वंश में कलंक पैदा हुई है, साली हिजड़ा है।"[30] अपने लिए हिजड़ा शब्द सबसे पहले उसने अपने पिताजी के मुख से सुना था। उस वक्त वह हिजड़ा शब्द का अर्थ कोई गाली के रूप में प्रयुक्त होने वाला शब्द समझती थी। पायल को पहला यौन ज्ञान अपने बचपन में अपनी सहेली माया के साथ खेलते वक्त मिला था। खेलते वक्त माया पायल को चूमती और उसके जननांगों को छूती थी। एक बार माया ने उसे आलिंगनबद्ध कर कहा... "जुगनी! तुम बहुत सुन्दर हो कुछ अलग किस्म की हो बड़े होकर हम ब्याह करेंगे।"[31]

पायल पढ़ने में होशियार थी। गाँव के स्कूल में लड़की के रूप में उसका दाखिला करवाया गया। पायल के पिताजी उसे लड़का बनाकर रखना चाहते थे। एक बार उन्होंने नैकर शर्ट माँ को लाकर दिया ओर कहा "देखो यह अपनी जुगनी के लिए है। अब यह पैंट-शर्ट पहनेगी लड़का बनकर रहेगी और इसका नाम जुगनू होगा कोई भी इसे जुगनी नहीं बोलेगा...अब यह मेरा बेटा है।"[32] पायल को जुगनी से जुगनू बना दिया गया। जब वह शर्ट पैंट पहन जुगनू बनकर स्कूल गई तब सभी स्कूल के बच्चे उसे चिढ़ाने तथा उसपर हँसने लगे। पिताजी के गाँव में न रहने

पर बहनें उसे लड़की के रूप में स्कूल ले जाती थीं। पिताजी के घर आने पर वह स्कूल नहीं जाती, घर से बाहर भी नहीं निकलती थी। स्कूल में झूठ कहा जाता कि जुगनी बीमार है। पिताजी के घर आने पर जुगनी को जुगनू बनकर रहना पड़ता था। पायल के पिताजी उससे बहुत नफरत करते थे, सबसे ज़्यादा मार पायल को मिलती थी। पायल लड़कों के कपड़ों में अपने आप को असहज महसूस करती थी। बड़े होने पर उसे एहसास हो गया कि वह एक ट्रांसजेंडर है।

पायल के पिताजी राकेश भैया को बहुत चाहते थे। एक दिन राकेश भैया ने पिताजी को बता दिया कि पिताजी की अनुपस्थिति में उसे लड़कियों के कपड़े तथा पाउडर, काजल आदि लगाया जाता है। यह जानकर पिताजी क्रोधित हुए और उन्होंने पायल की अम्मा के साथ बहनों को भी खूब मारा। पिताजी ने माँ को चेतावनी दिया कि उसे लड़की के कपड़े कभी न पहनाये। राकेश भैया को भी पायल के चलते उनके सभी दोस्त चिढ़ाते थे "साला मादर छक्के का भाई छक्का बड़ा रौब दिखाता है। सब घुसेड़ दूँगा। सारी दादागिरी धरी की धरी रह जाएगी।"[33] दोस्तों के छिड़ाने के कारण राकेश भैया पायल से ज्यादा नफरत करने लगे।

एक दिन पिताजी और राकेश भैया के गैर मौजूदगी में बहनों ने पायल को लड़कियों के कपड़े पहनाकर सजाया संवारा लेकिन अचानक पिताजी वहाँ पहुँच गये, जब उन्होंने जुगनू को जुगनी बनकर देखा तो उसे खूब मारा और उसे फाँसी पर लटका दिया। उसके पैरों के पंजे ईंटो से बने चट्टे पर टिक गए थे इसलिए वह बच गई। वह आत्महत्या करने का विचार बनाकर घर से निकल पड़ती है लेकिन मरने का साहस वह जुटा नहीं पाती और वह ट्रेन चढ़ जाती है घर से दूर जाने के विचार से। ट्रेन में एक प्रौढ़ उससे गंदी हरकते करता है। वह आदमी उसकी ओर बीस रूपया बढ़ाकर कहता है, "ले रख ले और बाथरूम में आ जाना।"[34] स्टेशन आने पर वह आदमी उतर गया। ज़मीन पर पड़े बीस रूपये पायल ने रख लिया। स्टेशन पर जब वह उतरी उसे भूख

लगने लगी। उसने दो रुपये के चार समोसे खरीदकर खाली और प्लाटफार्म में एक बैंच पर सो गई। वहाँ एक सिपाही उसके साथ गंदी हरकतें करने की कोशिश करता है। पायल को समझ में आ गया कि लड़का बनकर रहने से ही इन जैसे हैवानों की नज़र से वह बच सकती है। वहाँ नहा रहे लड़कों के कपड़े चुराकर वह पहन लेती है। अब वह लड़का का वेश पहन जुगनू बन गई।

पायल उर्फ जुगनू की मुलाकात अनवर नाम के लड़के से होता है, वह ट्रेनों में दातून बेचता था और छोटी-मोटी चोरियाँ भी करता था। जुगनू को अनवर ने अपना पार्टनर बना लिया। जुगनू को एक रुपये का दातुन बेचने पर अनवर बीस पैसे देता। एक दिन चोरी करते भागते वक्त अनवर रेलगाड़ी के नीचे आ गया और उसकी मृत्यु हो गई। अनवर की मौत से वह बहुत दुःखी हुई। जुगनू को पंडितजी की चाय के दुकान में काम मिलता है। वहाँ उसे दो रुपये रोज़ दिया जाता था और साथ ही खाना भी मिलता था। पंडितजी की दुकान में चाय पीने के लिए आए अप्सरा टॉकीज की कैन्टीन के ठेकेदार संतोष सिंह ने उसे अपने यहाँ काम पर रख लिया। वहाँ उसे सौ रुपये तथा हर हफ्ते लगने वाली नई फिल्में मुफ्त में देखने को मिलती थी। संतोष सिंह जुगनू के काम से खुश थे लेकिन वहाँ का चौकीदार प्रमोद जो कामी प्रवृत्ति का था उसकी बुरी नज़र जुगनू पर था। अब पायल उर्फ जुगनू के सीने का उभार बढ़ने लगा था जिसे वह बनियान के अंदर ढीली शर्ट के सहारे छिपाये रखती थी।

चौकीदार प्रमोद से एक दिन पायल उर्फ जुगनू का झगड़ा हो जाता है और वह वहाँ का काम छोड़ देती है। पंडितजी की मृत्यु हो जाने के कारण उनकी चाय की दुकान में भी उसे काम नहीं मिलता। पेट की भूख मिटाने के लिए वह भीख मांगने लगी। वहाँ वह बच्चों से भीख मँगाने वाले गिरोह के कैद में आ जाती है। पायल उनके कैद से भागने की कोशिश करती है, लेकिन पकड़ी जाती है। एक दिन वहाँ पुलिस की रेड़ पड़ जाती है और वह बच जाती है। वहाँ से सभी बच्चों

को राजकीय बाल सुधार गृह लाया जाता है। वहाँ उसकी अम्मा और राकेश भैया आकर उसे कानपुर छोटी मौसी के घर ले जाते हैं। राकेश भैया और कमलेश दीदी की शादी हो गई थी और दोनों के एक एक बच्चे भी थे। जुगनू की मौसी उसे अपने घर रखने को मना करती है। मौसी के घर से पायल उर्फ जुगनू किसी से कुछ कहे वगैर निकल जाती है और फिर जाकर अप्सरा टॉकीज में काम करने लगती है। वहाँ उसकी माँ दो महीने के बीच में उससे आकर मिलती, वह अपनी माँ को फिल्म दिखाती थी और अपनी बची हुई पगार माँ को संभालकर रखने देती थी। दादा ने उसे केन्टीन के अंदर बने एक कमरे में सोने तथा उसी के साथ लगे टॉयलेट का प्रयोग करने की छूट दे दी थी जिसके कारण वह अपनी गोपनीयता बनाये रखने में कायम रही।

पायल उर्फ जुगनू बुचरा ट्रांसजेंडर थी। एक दिन चौकीदार प्रमोद जुगनू को नहाते देख लेता है और उसे जुगनू के सच्चाई का पता लग जाता है। वह उसके साथ बलात्कार करने की कोशिश करता है। जुगनू अपने को उस हैवान से तो बचा लेती है लेकिन उसकी सच्चाई का पता वहाँ सभी को चल जाता है। संतोष दादा की मेहरबानी से उसे पूनम टॉकीज में गेट कीपर की नौकरी मिल जाती है। सीखने की प्रबल इच्छा के कारण वह गेट कीपर से प्रोजेक्टर रूम में कटियार साहब की सहायक बन जाती है।

पायल उर्फ जुगनू कानपुर से लखनऊ जाकर नये सिरे से जिन्दगी शुरू करना चाहती थी। जुगनू जुगनी बनकर लखनऊ पहुंचती है। वहाँ के मंदिर परिसर में कीर्तन मंडली के सदस्यों से उसकी जान पहचान होती है, वे उसे अपने साथ जोड़ लेते हैं। वहाँ वह नाचती है। उसकी नाच का सभी लोग मुक्तकंठ प्रशंसा करते हैं। जुगनी पर ट्रांसजेंडर डेरे की नज़र पड़ जाती है, वे उसे जबरदस्ती डेरे पर ले आते हैं। वहाँ गुरुमाई उसे देख बहुत खुश होती है। जुगनी वहाँ से वापस जाना चाहती है लेकिन गुरुमाई उसे जाने नहीं देती। दो -तीन बार वह डेरे से भागने की भी

कोशिश करती है, लेकिन वह पकड़ी जाती है। वहाँ उसे ताली बजाना, ढ़ोलक बजना, नाचना, बधाई गाना सिखाने का प्रयास किया जाता है, लेकिन जुगनी यह सब सीखना नहीं चाहती इस पर गुरुमाई उसपर गुस्सा होती हैं। भूख मिटाने के कारण बेबस होकर वह भी बधाई के लिए अन्य ट्रांसजेंडरों के साथ जाने लगती है।

एक दिन बधाई के बाद वापस आते वक्त ट्रांसजेंडर तब्बसुम के यार पप्पू ने जुगनी के कमर पर हाथ रखते जोर से चिकौटी काट ली थी। जिससे क्रोधित जुगनी ने जोर से पप्पू को झापड़ लगा दिया। इस बात पर दोनों में मार-पीठ हुई थी। पप्पू ने जुगनी को खूब मारा तथा उसके कपड़े फाड़ दिये। वह सभी से चिल्लाकर मदद माँग रही थी, लेकिन किसीने भी उसकी मदद नहीं की। सभी उसको पीटते देखते रहें। वह वहाँ जो बैनर था उसे ओढ़े पास ही स्थित विधायक निवास 'दारुलशफा' में पहुँची। वहाँ बैठे विधायक जी और कुछ लोगों ने उसे अस्पताल पहुँचाया। विधायक जी के आदमी ने अस्पताल में उसकी देख-रेख की थी। पाँच दिन बाद गुरुमाई उससे मिलने अस्पताल में आती है तथा उसके प्रति सहानुभूति प्रकट करती है। जाते वक्त वह उसके साथ आये अन्य ट्रांसजेंडरों से कहती है "धीरे -धीरे लाइन पर आ रही थी, तुम नासपीटियों ने सब गुड़ गोबर कर दिया था...कित्ता अच्छा नाचती है, रुपये बरसेगें इस पर...अच्छे से देखभाल करो इसकी, दवा-दारू ढंग से हो, असली बुचरा हिजड़े आजकल कहा मिलते हैं...शाम को अस्पताल से छुट्टी करा इसे डेरे में ले आओ...लानत जाए तुम करमजालियों पर।"[35]

जुगनी पप्पू तथा गुरुमाई से बदला लेने का विचार बनाकर वापस कानपूर चली जाती है। और वह पूनम टॉकीज में फिर से काम करने जुट जाती है। उसका मन रात दिन पप्पू से बदला लेने के लिए तड़पता था। तीन महीने बाद पप्पू से बदला लेने का विचार बनाकर वह लखनऊ जाती है। वहाँ उसे आक्रेस्ट्रा आकाशवाणी व दूरदर्शन में काम मिलता है। अब नाम, शोहरत और पैसा

अब उसके पास था। उसकी अम्मा भी अब लखनऊ आकर उसके साथ रहने लगी थी। उसने दो कमरे का फलेट किराए पर ले लिया था। अशोक सोनकर उससे प्यार करने लगा था। वह टैम्पो चलाता था। एक दिन जुगनी अशोक के टैम्पों में जा रही थी तब उसे मोना गुरु और पप्पू दिखाई पड़ा। जुगनी ने पप्पू को खूब मारा और उसके बेहोश हो जाने के बाद उसके शरीर से कपड़े नोच कर उसे नंगा कर दिया, उसके शरीर पर कई बार थूका और लातमारा। इस तरह जुगनी ने अपना बदला ले लिया।

ट्रांसजेंडर सोनी से जुगनी को पता चलता है कि ट्रांसजेंडर गुरु मोना की मृत्यु हो गई है। अशोक सोनकर के अधिपत्य से जुगनी परेशान रहने लगी थी। वह उसे हिजड़ा छक्का बुलाता जो उसे पसंद नहीं था जिसके कारण वह अशोक से नफरत करने लगी थी। पायल और सोनी स्वतंत्र रूप से अपना एक ग्रूप बनाकर रहने लगीं। नशा पत्ती तथा लौंडा-लपाड़ियों से उसने दूरी बनाये रखा था। पायल और सोनी ट्रांसजेंडर गुरू माया की चेली बन गई, वहाँ कुछ ट्रांसजेंडर पायल को अपनी इच्छा से गुरु मानते थे और उसकी हर बात को महत्व देती थी जितना की ट्रांसजेंडर गुरु माया को। पायल को अपने तथा अपने जैसे लोगों के लिए हिजड़ा तथा छक्का शब्द का प्रयोग अच्छा नहीं लगता था।

'मैं पायल' जीवनी परक उपन्यास में ट्रांसजेंडर लोगों का संघर्ष हमारे सामने उभरकर आता है। उपन्यास में परिवार तथा समाज से तमाम उपेक्षा तथा यातनाएँ सहने के बाद भी पायल अपनी अस्मिता को बनाए रखने के लिए संघर्ष करती है। जीवन की विषम परिस्थितियों में भी वह ईमानदारी, सच्चाई, परिश्रम जैसे नैतिक मूल्यों को पकड़कर रहती है। वह कभी गलत राह में भटकती नहीं है। यह उपन्यास पायल की अस्मिता और संघर्ष को सार्थकता प्रदान करती है।

3.6. पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा

'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा' चित्रा मुद्गल द्वारा लिखित अप्रतिम उपन्यास है। यह उपन्यास ट्रांसजेंडरों के जीवन पर आधारित है। चित्रा मुद्गल ने नौ कहानी संकलन, तीन उपन्यास, एक लेख-संकलन, एक बाल उपन्यास, चार बालकथा संग्रह लिखा है, तथा छह पुस्तकों का संपादन भी किया है। बहुचर्चित उपन्यास 'एक जमीन अपनी' के लिए वे सहकारी विकास संगठन मुंबई द्वारा फणीश्वरनाथ रेणु सम्मान से सम्मानित हुईं। हिन्दी अकादमी दिल्ली द्वारा 1996 के साहित्यकार सम्मान से सम्मानित हुईं तथा 2000 में उन्हें आवां उपन्यास के लिए यू.के कथा सम्मान से सम्मानित किया गया। कृति 'पोस्ट बॉक्स नं 203 नाला सोपारा' पर उन्हें 5 दिसंबर 2018 को साहित्य अकादमी सम्मान से नवाज़ा गया। व्यास सम्मान प्राप्त करनेवाली प्रथम भारतीय महिला हैं चित्रा मुद्गलजी। 'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा' उपन्यास लगभग पाँच महीने की कथा है, जो एक संतान द्वारा अपनी माँ के लिए 17 पत्रों के जरिए लिखी एक विस्तृत जीवन है, जो कि 23 जुलाई, 2011 से शुरू होता है और 27 दिसम्बर, 2011 को खत्म होता है। इस उपन्यास में ट्रांसजेंडर विनोद उर्फ बिन्नी उर्फ बिमली अपनी बा (माँ) को पत्रों के माध्यम से अपने बारे में बताता है तथा परिवार की जानकारी लेता है। उपन्यास में बिन्नी अक्सर भूतकाल की यादों को याद करता और अपनी माँ से उसके जीवन में घटित होनेवाली सभी कार्यों को वह चिट्ठी के माध्यम से कहता है। बिन्नी की इन्हीं यादों के माध्यम से उपन्यास आगे बढ़ता है।

ट्रांसजेंडर विनोद अपने परिवार के साथ मुंबई में रहता था। उसके घर में उसके माता, पिता, उसका बड़ा भाई सिद्धार्थ तथा छोटा भाई मंजुल था। विनोद के पिता की किराने की दुकान थी। विनोद की माँ वंदना उसे बिन्नी कहकर पुकारती थी। विनोद पढ़ने में बहुत ही अव्वल तथा होशियार लड़का था। विनोद की ट्रांसजेंडर होने की सच्चाई को समाज से छुपाकर उसके

परिवारवाले उसे पढ़ाते हैं। माँ उसे समझाती है "और छोकरों से तू अलग है। यह मान लेने में ही तेरी भलाई है, न किसी से बराबरी कर न अपनी इस कमी की उनसे कोई चर्चा! समाज को ऐसे लोगों की आदत नहीं है और वे आदत डालना भी नहीं चाहते पर मुझे विश्वास है, हमेशा ऐसी स्थिति नहीं रहनेवाली, वक्त बदलेगा। वक्त के साथ नजरिया बदलेगा।"[36] माँ अपने बेटे बिन्नी से बहुत प्यार करती थी। अपने बेटे को वह हमेशा आत्मविश्वास देती रहती थी। चौदह वर्षों तक ही विनोद की असलियत समाज से छिप सकी। ट्रांसजेंडर मंडली के गुरु चंपाबाई को जब विनोद के बारे में पता चलता है तब वह उसे ले जाने उसके घर पहुँच जाती है। पहले तो वे छोटे भाई को उन्हें दिखाकर लौटा देते हैं। आगे बिन्नी का स्कूल जाना छुट जाता है, बिन्नी स्कूल न जा पाने के कारण दुखित होता है।

विनोद का बड़ा भाई तथा पिताजी का लगाव उससे कम होने लगा था। माँ ट्रांसजेंडर लोगों से बचाने के लिए उसे हॉस्टल में भेजना चाहती थी। बड़ा भाई माँ से कहता है कि हॉस्टल में भी ट्रांसजेंडर दल पहुँच सकते है। बहुत दिनों तक माँ, विनोद को अपने साथ नहीं रख पाती अंततः उसे ट्रांसजेंडरों के संग भेज दिया जाता है। सभी से कह दिया जाता है कि एक दुर्घटना में उसकी मृत्यु हो गई है। विनोद के घरवाले तत्पश्चात वहाँ का मकान बेचकर बम्बई शहर में नाला सोपारा में रहने लगे क्योंकि वे समाज के लोगों के प्रश्नों से बचना चाहते थे। वहाँ पहुँचकर माँ अपने जिक्री बेटे से पत्रों के माध्यम से संबंध बनाकर रखती है।

चंपा बाई को सौंपे जाते समय विनोद चौदह साल का था। वहाँ पहुँचने पर भी विनोद उनके रीति रिवाज़ के अनुसार ढ़लता नहीं, वह अपनी पहचान बनाये रखना चाहता है। जिस कारण उसे प्रताड़ना सहनी पड़ती है। विनोद आगे पढ़ना चाहता है। ट्रांसजेंडर बिरादरी में शामिल होने के बाद उसका नाम विमली रखा जाता है, लेकिन वह यह नाम स्वीकार नहीं करता। वहाँ

सभी स्त्रीलिंग शब्दों का उपयोग करते हैं, लेकिन विनोद ऐसे शब्दों के उपयोग करने से मना कर देता है क्योंकि वह पुरुष रूप में अपनी पहचान बनाए रखना चाहता है।

विनोद की माँ साईटिका की मरीज़ थी। विनोद के जाने के बाद उनकी तबियत और बिगड़ जाती है तथा पहले से ही कम बातचीत करनेवाले उसके पिता की बातचीत ही बंद हो जाती है। विनोद का छोटा भाई जो उससे बहुत प्यार करता था वह अकेला पड़ जाता है। विनोद के बड़े भाई सिद्धार्थ व मोटा भाई जो बाप बननेवाला है गर्भस्त शिशु के प्रति बहुत चिंतित रहता था। गर्भस्त शिशु यदि ट्रांसजेंडर हो तो वह उसे गिराना चाहता था। घर में विनोद के टंगे तस्वीर से भी उसे आपत्ति थी, उसे डर था कि कहीं इसका प्रभाव गर्भस्थ शिशु पर न पड़े।

विनोद जब अपने पुराने मित्र ईशान को फोन करता है तब उसे पता चलता है कि उसके घरवालों ने उसे मृत घोषित कर दिया है, तब उसका दिल टूट जाता है और वह आत्महत्या करने का विचार भी बना लेता है। वह सोचता है –

> “पापा की इच्छा पूरी ही न कर दी जाए?
>
> किस्सा खतम!
>
> कहाँ मरू? मरू तो कैसे मरू?
>
> कैसे जन्मूं यह तो नहीं चुन पाया। मौत चुन सकता हूँ।

शहर में मरूंगा तो लाश किन्नरों के हाथ लगेगी। किन्नरों के विधि-विधान से मौत का निपटारा होगा। किन्नर के रूप में मैं मरना नहीं चाहता। अपनी मर्जी से मर सकता हूँ तो मौत का निपटारा भी मेरी मर्जी से ही होना चाहिए। ऊँचे पहाड़ पर जाकर मरना उचित होगा। हजारों फीट गहरी अलंघ्य जटिल घाटी में कौन खोजेगा मेरी लाश को? लाश के टुकडों से चिपककर तुझे भी छाती कूटने का मौका नहीं मिलेगा। यह तो चहता हूँ मैं।”[37] इन सबके बावजूद बिन्नी का अपनों

के प्रति प्यार बना रहता है। पापा के प्रति उसकी चिंता हमेशा बनी रहती है, वह माँ से नये मकान के बारे में पूछता है "इसलिए जानना चाहता हूँ कि तुझे और पप्पा को सीढ़ियां तो नहीं चढ़नी पड़ती। कालबा देवी वाले घर की तरह लिफ्ट है न बिल्डिंग में। लिफ्ट न हो तो लिफ्ट वाला घर ले ले। पापा को पेसमेकर लगा है न? मोबाइल फोन इस्तेमाल करना भी ऐसे में मना है, लेकर तो नहीं दिया उनको।"[38]

विनोद का परिचय ट्रांसजेंडर बिरादरी के पूनम जोशी से होता है। ट्रांसजेंडर मंडली में पूनम जोशी उसकी हर हालात पर साथ देती है। उसने विनोद के आगे की पढ़ाई के खर्चे के लिए पैसा जुगाड़ किया। विनोद अपनी माँ से अपने बचपन की प्रेमिका ज्योत्सना के बारे में पूछता है, और माँ से वह कहता है "मैं कुछ बन जाता तो उससे ब्याह करता। सब कुछ बता देता उसे। कह देता, तू मुझसे फेरे भर ले ले। अपनी इच्छाएँ जीने के लिए तू स्वतंत्र है। बच्चा हम गोद ले लेंगे। गोद नहीं लेना चाहेगी तो जिससे मर्जी हो, बच्चा पैदा कर ले। खुशी-खुशी मैं उसे अपना नाम दूँगा। वे सारे सुख दूँगा जो एक बाप से औलाद उम्मीद करती है।"[39] जननांग विकलांगता के बारे में विनोद का मानना है कि "जननांग विकलांगता बहुत बड़ा दोष है लेकिन इतना भी नहीं कि तुम मान लो कि तुम धड़ का मात्र वही निचला हिस्सा भर हो। मस्तिष्क नहीं हो, दिल नहीं हो, धड़कन नहीं हो, आंख नही हो। तुम्हारे हाथ-पैर नहीं है। हैं, हैं, हैं सब वैसा ही है , जैसे औरों के हैं। यौन सुख लेने देने से वंचित हो तुम, वात्सल्य सुख से नहीं सोचो।"[40] विनोद मजदूरी करके जीवन यापन करना चाहता है। उमंग सोसाइटी में गाड़ियाँ धोने का काम वह करने लगता है। विनोद का मानना है कि शिक्षा द्वारा ही वे अपनी स्थिति में सुधार ला सकते हैं। पूनम जोशी विनोद का परिचय विधायक जी से कराती है। विधायक जी के मदद से विनोद को एन.आई.टी. बेसिक कंप्यूटर प्रोग्राम में दाखिला मिल जाता है। विधायकजी के दफ्तर में उसे नौकरी मिलती है। विनोद पूनम जोशी को भी शिक्षित करना चाहता है, वह उसे पढ़ाता है।

विनोद विधायकजी का चहीता बन जाता है, वह विधायकजी को बाऊजी पुकारता है। विधायकजी राजनीति में विनोद को मोहरा बनाते हैं। ट्रांसजेंडरों के बलबूते वे अपना वोट बैंक मजबूत करना चाहते थे। राजनीति के फायदे के लिए वे विनोद का इस्तेमाल करना चाहते थे, लेकिन विनोद विधायकजी के इरादों से बेखबर रहता है। चंडीगढ़ में आयोजित ट्रांसजेंडर सम्मेलन में विनोद को अध्यक्ष बनाकर आरक्षण विषय से संबधित भाषण देने को कहा जाता है, इसके पीछे विधायकजी तथा उनके सचिव तिवारी का उद्देश्य सिर्फ राजनीति था। तिवारी के आरक्षण संबंधित भाषण देने के निर्देश से वह सहमत नहीं था। उनके निर्देश का उल्लंघन करता विनोद समाज से उनके अधिकार की माँग करने को कहता है तथा वह लिंग दोषी बिरादरी की घर वापसी को सुनिश्चित करना चाहता है। वह सभा में उपस्थित सभी से कहता है "आप सबसे भी अपील है मेरी। सभा में उपस्थित आप सबसे स्वयं के अंतर्मन में झांकिए। भीतर दुबके हुए अपने बालपन को याद कीजिए, सुनिए, उसके भीतर के रूदन को। बरजिए बिरादरी को। शपथ लीजिए यहाँ से लौटकर आप किसी लिंग दोषी नवजात बच्चे-बच्ची को, किशोर-किशोरी को, युवक-युवती को जबरन उसके माता-पिता से अलग करने का पाप नहीं करेंगे। उससे उसका घर नहीं छीनेंगे। उपहासों के लात-घूंसों से उसे जलील होने की विवशता नहीं सौंपेंगे।"[41] विधायक जी द्वारा आयोजिक पार्टी में उनका भतीजा तथा उसके दोस्त नृत्य करने आई पूनम के साथ नृशंसतापूर्वक बलात्कार करते हैं। ट्रांसजेंडरों के गुप्तांग देखने के लिए छुरी से उसके अंगों को काटते हैं तथा पूनम को अधमरी हालत मे छोड़ वहाँ से चले जाते हैं। अस्पताल पहुँचाने पर भी पूनम की मृत्यु हो जाती है। विधायकजी हत्यारों को दूर भेजकर उन्हें सुरक्षित रखते हैं। इसी समय विनोद की माँ की तबीयत बिगड़ जाती है। विनोद द्वारा किए गए अपील का प्रभाव उसके माँ पर भी पड़ता है और वह मरने से पहले टाइम्स ऑफ इंडिया अखबार में अपना माफीनामा छपवाती है और अपने बेटे की घर वापसी की प्रार्थना करती है। उपन्यास का अंत विनोद के माँ के घर

वापसी की अपील के साथ ही साथ मुंबई में एक नदी से प्राप्त हुए ट्रांसजेंडर लाश की खबर से होती है। यह लाश किसी ओर का नहीं विनोद का था, जिसकी हत्या की जाती है। उसकी हत्या का जिम्मेदार ट्रांसजेंडर गिरोह के मुन्ना भाई को ठहराकर हत्यारे अपना हाथ साफ कर लेते हैं।

यह उपन्यास ट्रांसजेंडर समाज के जीवन संघर्ष को पाठकों के सामने पेश करने के साथ ही साथ भारतीय राजनीति पर भी करारा प्रहार करता है। चित्रा मुद्गल जी ने इस उपन्यास में अपना लिंग आप चुनने की स्वतंत्रता का आह्वान किया है, और घर वापसी का नया मार्ग प्रस्तुत किया है।

3.7. ज़िन्दगी 50-50

युवा लेखक भगवंत अनमोल कृत ट्रांसजेंडर जीवन पर आधारित उपन्यास है 'ज़िन्दगी 50-50'। यह उपन्यास उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान 'बालकृष्ण शर्मा नवीन' पुरस्कार से अलंकृत है। इस उपन्यास में हमें अनमोल नामक व्यक्ति का अनया नामक एक लड़की के प्रति प्रेम का चित्रण देखने को मिलता है। इस उपन्यास में दूसरी ओर अनमोल का अपने ट्रांसजेंडर भाई हर्षा तथा अपने बेटे सूर्या जो ट्रांसजेंडर है, उनके प्रति अपार प्रेम का चित्रण देखने को मिलता है और साथ ही साथ ट्रांसजेंडर जीवन संघर्ष को यह उपन्यास दिखाता है। ट्रांसजेंडर समाज के प्रति आम आदमियों में उत्पन्न हो रहे सकारात्मक विचार को भी हम इस उपन्यास में देख सकते हैं।

अनमोल बैंगलोर में एम एन सी में काम करता है। वहाँ वह अनया की तरफ आकृष्ट होता है। वह दोनों एक दूसरे से प्रेम करने लगते हैं। अनया तमिल है और अनमोल ब्राह्मण है इसीकारण दोनों आपस में शादी नहीं कर पाते। अनमोल मुंबई में नौकरी करने चला आता है और वहाँ अपना घर बसाता है। अनमोल और उसकी पत्नी आशिका के यहाँ ट्रांसजेंडर बच्चा पैदा होता है। डॉक्टर जब अनमोल को बताता है "आपके बेटे का शिश्न अपरिपक्व है और उनके दोनों टेस्टिकल्स भी नहीं हैं।"[42] यह सुनकर वह बहुत दुःखी होता है। बच्चे की भविष्य की

चिंता उसे सताने लगती है। लेकिन वह निर्णय लेता है कि वह अपने ट्रांसजेंडर बच्चे को समाज में इज्जत की ज़िन्दगी देगा। अनमोल अपने ट्रांसजेंडर भाई हर्षा के बारे में सोचता है। हर्षा को ट्रांसजेंडर होने के कारण अनेक संघर्षों का सामना करना पड़ा था। उसे प्यार नहीं मिला था। अनमोल सोचता है जो प्यार, इज्जत वह हर्षा को नहीं दे पाया वह अपने ट्रांसजेंडर बेटे को देगा। अनमोल अपनी माँ से कहता है "हाँ, माँ। इस बार हम उसे वे सारी खुशियाँ देंगे जो हर्षा को नहीं दी गयी। हम उसे इतना बड़ा अफसर बनायेंगे, जो लोग सपने में भी नहीं सोच सकते।"[43] अनमोल की माँ को समाज का डर सताता है। अनमोल और आशिका अपने बच्चे का नाम सूर्या रखते है तथा उसके जन्म की खुशी में पाँच सितारा होटल में कार्यक्रम आयोजित करके सभी को न्यौता देते हैं। वहाँ आये मेहमान उनका मज़ाक उड़ते हैं। अनमोल के अंदर के पिता अपने बच्चे पर किए खिल्ली को सह नहीं पाता वह उन लोगों पर क्रोधित होता है।

अनमोल अपने भाई हर्षा के बारे में सोचता है। हर्षा के ट्रांसजेंडर होने की वजह से उसे समाज के लोग घृणा की दृष्टि से देखते थे। गाँव के सभी उसे 'अलग' कहते थे। गाँव के बुज़ुर्ग अनमोल के पिताजी को भी चिढ़ाते थे। ट्रांसजेंडर कस्तूरी हर्षा को अपने साथ ले जाने को आती है, लेकिन हर्षा के पिताजी उसे उनके साथ नहीं भेजते अनमोल के पिताजी को सभी हिजड़े का बाप कहकर उपहास करते थे। सभी के छिड़ से परेशान वे हर्षा को जान से मार डालने का विचार बनाते है। मूष मारने की दवाई हर्षा को देकर उसके पिताजी उसे मार डालना चाहते थे, लेकिन अनमोल तथा उसकी माँ को जब पिताजी के इरादे का पता चला तब उन्होंने उन्हें इस हत्याकांड से रोक दिया। माँ पिताजी पर गुस्सा होकर कहती है "अगर मारना है तो पहले हमें मारो। हमारी लाश मा चढ़ के तुम हमारे बेटा को मार सकते हो।"[44] माँ हर्षा से बहुत प्यार करती थी। लड़कियों जैसा श्रृंगार करने पर हर्षा को पिताजी खूब मारते थे। स्कूल में भी सभी उससे अलग रहते, कोई उसके साथ बैठने को तैयार नहीं होता था। स्कूल की अध्यापिका रीतिका मैडम का

भी उसके प्रति बुरा व्यवहार था जब किसी को डाँटना होता तो वह कहती “अगर किसी ने बदमाशी की तो उसे हर्षा के पास बैठा दूँगी”[45] और बच्चों को डराती। हर्षा स्कूल में अमन जोकि समलैंगिक है उसके साथ संबंध बनाती है।

हर्षा ट्रांसजेंडर कस्तूरी के संपर्क में आती है। कस्तूरी हर्षा को अपने परिवार में रहकर पढ़ने लिखने का निर्देश देती है और हर्षा को आश्वासन देती है जब चाहे वह उनके डेरे पर आ सकती है, उनका घर उसके लिए हमेशा खुला रहेगा “फिर भी अगर तुम्हें कबहु लागे, वहाँ तुम चैन से नहीं जी पा रहे हो, तो हम तुम्हारी बहने ही है। यह घर हमेशा तुम्हारे लिए खुला है। हम तुम्हें वैसे ही रखेंगे जैसे ये सब लोग रहती हैं।”[46] एक दिन स्कूल से लौटते वक्त एक आदमी ने हर्षा का बलात्कार किया जब इस घटना के बारे में उसके पिताजी को पता चलता है तब वे हर्षा को ही दोषी ठहराते हैं। हर्षा ने कस्तूरी के साथ रहने का विचार बना लिया। वह अपने घर तथा समाज में घुट-घुट कर ओर जी नहीं सकती थी “अब मुझे समझ आ रहा था कि कस्तूरी जैसे लोग समाज से बाहर अपने समुदाय में क्यों रहते हैं। मैंने भी ठान लिया, कब तक इस समाज में मर-मर के जीती रहूँगी! भले ही अलग रहूँ लेकिन पल-पल मरते हुए जीना मुझे मंजूर नहीं।”[47]

अपने घरवालों की इज्जत बचाने के लिए वह कस्तूरी के यहाँ से फिर मुंबई चली जाती है। मुंबई में उसके डेरे में ज्यादातर ट्रांसजेंडर देह धंधा करते थे। लेकिन हर्षा इसके लिए तैयार नहीं थी। इस कारण उसकी गुरु राधिका उससे नाराज़ रहती। राधिका को अन्य ट्रांसजेंडर हर्षा से ज्यादा पैसा देते थे। देह धंधा न करने के कारण हर्षा को कम पैसा मिलता था। हर्षा अपने पिताजी का खेत बचाने के लिए सेक्स वर्क करती है और आठ लाख रुपए गड़रिये को देकर बाबूजी के नाम खेत करवा देती है। हर्षा अनमोल की आवाज़ में अपने बाबुजी को बुलाकर कहती है “बाबूजी, उस गडरिया को मैंने रुपये दे दिये हैं। आपके काबिल बेटे के होते हुए आपके खेत आपसे कोई

नहीं छीन सकता....खेत आप ही के नाम हुए हैं। आपका यह बेटा अपने पुरखों की जमीन कैसे दूसरों के हाथों में जाने देगा।"[48] अनमोल के पिताजी का देहान्त हो जाता है। हर्षा उर्फ हर्षिता एड्स् से पीड़ित होती है और अंत में आत्महत्या कर लेती है। हर्षा ने अपनी डायरी अनमोल को सौंपने को एक ट्रांसजेंडर से कहा था हर्षा की डायरी में वह अपने बारे में सबकुछ लिखती थी।

अनमोल ने अपने बेटे सूर्या को हर काम में आज़ादी दे रखी थी। उसे पता था कि सूर्या के अंदर अलग हॉर्मोन्स है जो उससे अलग है। अनमोल ने उसे कभी यह महसूस होने नहीं दिया कि वह उन सबसे अलग है। बड़ा होने पर सूर्या ने मुंबई में क्रिमनॉलजी की पढ़ाई की। वह एक प्राइवेट डिटेक्टिव एजेंसी खोलना चाहता था। इसके लिए पुलिस कमिश्नर के पास उसने एप्लीकेशन दी थी। सूर्या फोन करके अनमोल को बताता है लाइसेंस के लिए आये दूसरा लड़का एवं उसकी माँ का परिचय कमिश्नर साहब से है और वह लाइसेंस उन्हें ही मिलने की संभावना है। यह बात जानकर अनमोल निराश होता है तथा वह सूर्या से उनका पता पूछकर उनके घर जाता है। वहाँ पहुँचने पर वह चौंक पड़ता है क्योंकि वह महिला ओर कोई नहीं थी बल्कि अनाया थी। अनाया से अनमोल को पता चलता है कि लाइसेंस लेने जानेवाला लड़का अनमोल और अनाया का बेटा है। अनाया ने अपने बेटे का नाम अनमोल रखा था। अनमोल अपने बेटे से मिलना चाहता है लेकिन अनाया इस बात पर राज़ी नही होती। वह अनमोल को बताती है कि उसका बेटा अठाईस सालों से उससे नफरत करता है। अनाया उसे कसम दिलाती है कि वह कभी उससे और उसके बेटे अनमोल से आकर न मिले। अनाया का बेटा अनमोल वापस आकर माँ से कहता है उसके बगल में बैठा लड़का ट्रांसजेंडर था, उसे देखकर उसे अपनी माँ द्वारा सुनी हर्षा की कहानी याद आ गई। वह उस लड़के को जिसने समाज से लड़कर यहाँ तक पहुँचा है, उसे दुःखी नहीं करना चाहता था। उसने वह लाईसेंस उस लड़के को दिलाने के खातिर वह घर लौट आया। उसने एक सामाजिक व्यक्ति होने का कर्तव्य भी निभाया। अनाया अपने बेटे की बातों को सुनकर

बहुत खुश हो गई। उसे अपने बेटे को दिए संस्कार पर गर्व महसूस हुआ। ये बातें अनमोल ने छिपकर सुन ली थीं। अनमोल भी अपने दोनों बेटों के लिए खुशी महसूस करता है।

उपन्यास में उपन्यासकार ने हर्षा के पिता तथा उसके भाई अनमोल के जरिए दो पीढ़ियों के ट्रांसजेंडर समाज के प्रति जो सोच है उसको हमारे सामने रखा है। उपन्यास में हर्षा के पिता समाज के भय से हर्षा को अपने परिवार में नहीं रखते, वे हर्षा के साथ मृगतुल्य व्यवहार करते हैं, लेकिन वहीं हर्षा का भाई अनमोल अपने ट्रांसजेंडर बेटा सूर्या को हौंसला तथा मनोबल प्रदान करता है। अपने माता पिता द्वारा दिए गये आत्मविश्वास के बल पर वह काँटों से भरी जिन्दगी को आसानी से जी सका। यह उपन्यास हमें संदेश देती है कि सरकार की बनाई गई कानूनी प्रावधान ही इनके आगे आने के लिए काफी नहीं है, उन्हें हमारे समाज का अटूट हिस्सा बनाने के लिए पहले उनके परिवारवालों को खुद उनके प्रति सकारात्मक नजरिया जागृत करना होगा। ट्रांसजेंडर सूर्या के माता पिता की सोच वाकई आशावाहक है।

3.8. अस्तित्व

गिरिजा भारती द्वारा लिखित उपन्यास 'अस्तित्व' ट्रांसजेंडर लोगों के जीवन पर आधारित कहानी है। प्रस्तुत उपन्यास में प्रीत नामक ट्रांसजेंडर को अपने अस्तित्व को समाज में बनाने में किन-किन परेशानियों का सामना करना पड़ता है उसका चित्रण एवं एक ट्रांसजेंडर बच्चे को पालने में माता-पिता के संघर्ष को भी यह उपन्यास चित्रित करता है। इस उपन्यास का कथानक मध्यवर्गीय परिवार के ईद गिर्द बुना गया है। गिरिजा भारती जी का 'मैं श्याम का दीवानी' भजन संग्रह बहुत ही चर्चित है।

उपन्यास के प्रमुख पात्र वर्माजी एवं उनकी पत्नी को विवाह के चार वर्ष बाद एक बेटी हुई। जब उनके घर एक बेटी का जन्म हुआ तब उन्हें बहुत खुशी हुई। लेकिन यह खुशी गम में बदल

गया, जब उनकी पत्नी सुधा ने कहा कि जन्मी बेटी ट्रांसजेंडर है। सुधा और वर्माजी ने किसी को खबर नहीं होने दिया कि उनकी बच्ची ट्रांसजेंडर है। सुधा को हमेशा डर बना रहता था कि ट्रांसजेंडर लोग आकर उनकी बच्ची को उठाकर ले जायेंगे। वर्माजी सुधा को हौसला देतें हैं, दोनों ने घरवालों को भी भनक नहीं होने दिया था कि बच्ची ट्रांसजेंडर है। बच्ची प्रीत का सारा काम सुधा खुद करती है। सुधा हमेशा बच्ची के साथ साये की तरह रहती थी। उसकी सास हमेशा उससे नाराज़ रहती वह कहती "बेटी पैदा की है तो हाथ नहीं लगाने देती। अगर बेटा पैदा करती तो चेहरा भी नहीं दिखाती। पर्दे में रखती।"[49] अपनी सास की जली कटी बाते सुधा अपनी बेटी के लिए सहन करती। लेकिन सुधा की माँ से सच्चाई अधिक दिन छिपी नही रहती वह जान जाती है कि बच्ची ट्रांसजेंडर है। सुधा अपनी माँ से इस सच्चाई को राज़ रखने को कहती है।

वर्मा जी प्रीत की सुरक्षा के लिए दूसरी जगह अपना तबादला करवाते हैं। इसीबीच उनके यहाँ एक बेटा और फिर एक बेटी का जन्म होता है। सुधा और वर्माजी अपने बेटे शुभम तथा बेटी रीत को वर्मा जी की माँ को संभालने को दे देते हैं। वर्माजी और सुधा खुश थे, लेकिन प्रीत के भविष्य की चिंता उन्हें सताती रहती थी। सुधा की सास को लग रहा था कि सुधा रीत और शुभम के प्रति अपनी जिम्मेदारी ठीक से नहीं निभा रही है, वह ज्यादा प्रीत का ध्यान रखती है। समय बीतता गया वर्मा जी के तीनों बच्चे बड़े हो गये। प्रीत पढ़ने में अच्छी, समझदार और होशियार थी। उसे समझ में आ गया था कि वह अन्य लड़कियों से अलग है, वह एक ट्रांसजेंडर है। प्रीत के बारे में सोच चिंतित सुधा को प्रीत सांत्वना देते हुए कहती है "माँ आप मेरे बारे में सोचकर चिंता मत करो। कोई कभी नहीं समझ पाएगा कि मुझमें क्या कमी है और अगर मुझमें कोई कमी है भी तो माँ लोगों को क्या फर्क पड़ता है।"[50] शादी के लायक होने पर दादी प्रीत की शादी के बारे में ज़ोर देने लगती है इसपर सुधा और वर्माजी प्रीत पढ़ रही है, अपने पैरों पर खड़ी होकर ही वह शादी करेगी कहकर माँ की बात को टाल देते थे। दादी के व्यवहार और माता-पिता की चिंता

देखकर प्रीत भी परेशान एवं दुखी हो जाती थी। वह हर हालात का डटकर मुकाबला करना चाहती थी। प्रीत को अच्छी जगह नौकरी मिल जाती है। प्रीत को नौकरी मिलने पर सुधा एवं वर्माजी बहुत खुश होते हैं। उन्हें सुकून मिला कि उनकी बेटी अपने पैरों पर खड़ी हो गई है लेकिन हमेशा यह डर उन्हें सताता था कि वह एक ट्रांसजेंडर है।

प्रीत अपनी सहेली रुपाली की शादी में जाती है। वहाँ दुल्हे का पिता दहेज जुगाड़ न कर पाने के कारण शादी रोक देता है। लड़की के पिता के गिड़गिड़ाने पर भी वे कुछ सुनने को तैयार नहीं थे। इसपर प्रीत उनके खिलाफ कहती है जो लड़के के पिता को पसंद नहीं आता, वे प्रीत से कहते हैं "अरे किन्नर लोग शादी में नेग माँगने आते थे, अब राय भी देने आ गए।"[51] यह सुनकर प्रीत बहुत दुखित होती है। उसके अस्तित्व को छुपाने पर भी उसकी शारीरिक संरचना से पता चल जाता था कि वह ट्रांसजेंडर है। रीत जब शादी के लायक बनी तब सुधा और वर्माजी ने उसकी शादी करवाने का विचार बनाया। प्रीत से पहले रीत की शादी करवाने की बात वर्माजी के माँ को सुहाया नही। रीत की शादी धूमधाम से वर्माजी अच्छे खासे परिवार में करवाते हैं। बड़ी बेटी के रहते छोटी बेटी की शादी करने पर लोगों के बीच कानाफूसी हुई लेकिन वर्माजी और सुधा ने इन सभी बातों को नज़र अंदाज़ कर दिया।

वर्माजी की माँ की तबियत बिगड़ने पर उनकी मृत्यु हो जाती है। शुभम बड़ा हो गया था। उसे नौकरी के ट्रेनिंग के लिए प्रीत अपना पैसा खर्चा करके भेजती है। ट्रेनिंग के बाद शुभम को अच्छी नौकरी मिल जाती है तथा उसकी शादी रंजना से होती है जो डॉक्टर थी। वह समझ जाती है कि प्रीत ट्रांसजेंडर है। वह शुभम को प्रीत के बारे में बताती है तब शुभम उस पर गुस्सा होता है। शुभम अपने दीदी के बारे में बुरा सुनने के लिए तैयार नहीं था। रंजना का प्रीत के प्रति बुरा व्यवहार था जिसपर प्रीत बहुत दुःखी थी। प्रीत के प्रति रंजना का व्यवहार देखकर सुधा और वर्मा

जी को भी बहुत दुःख पहुँचता है। रंजना की पोसटिंग दूसरे जिले में हो गई, वह और शुभम वहाँ जाकर रहने लगे।

अब प्रीत की शादी के बारे में उसके माता-पिता को चिंता सताने लगी। उन्होंने अखबार में प्रीत के शादी के लिए विज्ञापन दे दिया। प्रीत के लिए रिश्ते बहुत आये लेकिन जब लड़केवालों को पता चलता कि लड़की ट्रांसजेंडर है तब वे मना कर देते। प्रीत को नेट पर अपने जैसे एक लड़के का जिसका नाम अमन है रिश्ता मिलता है। अमन के माता पिता ने ट्रांसजेंडर होने के बावजूद उसे पढ़ाया लिखाया, वह अच्छी कंपनी में नौकरी करता था। दोनों परिवारवालों की सहमति से प्रीत और अमन की शादी संपन्न होती है और दोनों अनाथालय से एक बच्ची गोद लेते हैं। बच्ची का नाम वे खुशबू रखते हैं। प्रीत का भरा पूरा परिवार देख वर्माजी तथा सुधा बहुत खुश होते हैं।

गिरिजा भारती ने अपने उपन्यास में ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों की दयनीय स्थितियों का वर्णन जहाँ किया है वहीं दूसरी ओर प्रीत के माता-पिता के ज़रिए समाज में इनके प्रति सोच में आए बदलाव को भी दर्शाया है। हमारे समाज में इनके प्रति जो रूढ़िग्रस्त नज़रिया है वह एक दिन में नहीं बदल सकता लेकिन इस दिशा में बदलाव लाने के लिए यह उपन्यास मार्गदर्शक ज़रूर बन सकेगा।

3.9. दरमियाना

सुभाष अखिल द्वारा लिखा गया एक मार्मिक उपन्यास है 'दरमियाना'। यह उपन्यास ट्रांसजेंडरों के जीवन पर आधारित है। सुभाष अखिल जी प्रमुख पत्रकार हैं। इन्होंने दो कहानी संग्रह तथा दो बाल कथा संग्रह का लेखन कार्य किया है। फिल्म लेखन भी इन्होंने किया है। इनके सैकड़ों व्यंग्य, आलेख, कहानियाँ एवं कविताएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं।

'दरमियाना' उपन्यास पाँच अध्यायों में विभक्त हैं। 'दरमियाना' एक के उपशीर्षक से 'तारा और रेशमा की संगत', दरमियाना दो में, 'संजय से संध्या होने तक' दरमियाना तीन में 'जिस्म और जज्बात का संतुलन' दरमियाना चार में 'कातिल अदाओं का कत्ल' और दरमियाना पाँच में 'दया की दया का अंत' है। यह उपन्यास सुभाष अखिल द्वारा रचित कहानी दरमियाना पर आधारित है। दरमियाना सारिका पत्रिका में 1980 अक्तूबर को प्रकाशित हुई थी। इस उपन्यास में उपन्यासकार ने ट्रांसजेंडरों के लिए दरमियाना नाम का प्रयोग किया है। पाँच अध्यायों में विभक्त दरमियाना उपन्यास कई दरमियानों की संघर्षमय कहानी कहता है। इस उपन्यास में 'मैं' शैली का प्रयोग किया गया है। इस उपन्यास में हम कई ट्रांसजेंडरों के जीवन से होकर गुजरते हैं।

उपन्यास का प्रथम अध्याय दरमियाना अर्थात् ट्रांसजेंडर तारा और उसकी चेली रेश्मा से संबंधित कहानी है। कथा नायक आशु जब दस ग्यारह साल का था तब उसकी मुलाकात तारा से हुआ। आशु को पहले तारा मनोरंजन का साधन लगती थी। जिस घर में विवाह या नये बच्चे जन्मते उसी घर में तारा जाती थी इसी कारण जब भी तारा उसके बस्ती में आती तब वह उसे सूचना देता कि किस घर में बच्चे जन्मे हैं। तारा आशु को नटराज कहकर बुलाती थी। आशु के घर उसके भाई के जन्मने पर जब तारा आती है वह आशु के माँ के द्वारा दिए गए ग्यारह रुपए में से केवल एक रुपया लेकर बाकी उन्हें लौटा देती है क्योंकि तारा को उनकी आर्थिक स्थिति का पता था। तारा आशु से बहुत प्यार करती थी। जब उसे पता चलता है कि आशु जुआरी और शराबी लोगों के संगत में आ गया है तब उसे दुःख होता है और वह आशु को डांटती है "तू ये क्या हरकते करने लगा है? मेरा नहीं तो कम से कम अपनी माँ का ही ख्याल किया होता! एक वो है बेचारी, जो दुनिया भर के कपड़े सीकर तुझे ठूँसाती है...और एक तू है!.. इससे तो हम जैसे नपूते ही अच्छे! जा हट जा यहाँ से...।"[52] वह नटराज से कहती है कि अगर पैसों की जरूरत हो तो उससे पूछ ले लेकिन पैसों के लिए गलत काम न करे।

एक दिन आशु के पास शराब के लिए पैसा नहीं होता तब अपने साथियों के कहने पर वह तारा से दाखिले के नाम पर झूठ कहकर पैसा वसूल करता है। जब इस बात का पता तारा और रेश्मा को लगता है तब वे उसपर क्रोधित होते हैं। रेश्मा उसे खूब गालियाँ देती है...हरामजदे! तू आदमी का नहीं, साँप का बच्चा है। तूने एक दुखिया की रूह को सताया है...खुदा करे, तुझे कफन भी, नसीब न हो! अगर अब भी गैरत...।"[53] आशु के पिता को तरक्की मिलने पर वे वहाँ से दूसरे कालोनी चले जाते हैं। आशु के बड़े होने पर उसकी शादी हो जाती है। एक दिन अचानक आशु तथा उसकी पत्नी मधुर की मुलाकात रेश्मा से होती है। रेश्मा से आशु को पता चलता है कि तारा बीमार है। वह आशु से तारा से आकर मिलने की विनती करती है। आशु तारा से जाकर मिलता है। तारा की हालत बहुत ही खराब थी।

उपन्यास के दूसरे अध्याय में संध्या का, संजय से संध्या होने की कहानी का वर्णन है। तारा के मरने पर आशु बेटे के रूप में सारी रस्म निभाता है। तारा के मरने के बाद रेश्मा को डेरे का उत्तराधिकारी बनाया जाता है। तारा के भोज के दौरान आशु का परिचय रेश्मा अपनी चेली संध्या से करवाती है। वहाँ आये आशु का ध्यान रखने की ज़िम्मेदारी संध्या को सौंपा गया था। उस दिन से संध्या आशु के घर आने जाने लगी। वह कभी कभार आशु से पैसे भी उधार लेती थी। मधुर के साथ भी उसका अच्छा संबंध था। संध्या आशु को भैया और मधुर का भाभी कहकर पुकारती थी। आशु के बच्चे संध्या को अंकल संबोधित करते थे। संध्या का गिरिया राहुल ग्लास फैक्टरी में प्रोडक्शन मैनेजर था। संध्या अपने बारे में आशु को बताती है कि उसका जन्म लड़के के रूप में हुआ था। घरवाले बहुत खुश थे, उसका परवरिश भी लड़कों की तरह ही हुआ। उसका नाम संजय रखा गया। धीरे-धीरे बड़े होने पर उसे महसूस हुआ कि वह सामान्य लड़कों से अलग है। लड़कों तथा उनके खेलों को वह पसंद नहीं करती थी। लड़कियाँ उसे अच्छी लगती थी। वह छिपकर बहन का कपड़ा पहनती थी, माँ की बिंदिया लगाती इसके कारण माँ उसे खूब

डाँटती तथा पिताजी उसे खूब मारते थे। भाई के जन्म लेने के बाद माता पिता ने उसका ध्यान नहीं रखा। संध्या आशु से कहती है "भैया मेरी इस देह में रूह एक स्त्री की है ...मेरा मतलब मैं आत्मा से स्त्री हूँ...और हूँ एक ऐसे शरीर में मुझे कुछ समझ नहीं आता, मैं क्या करू। आप मेरे बारे में क्या सोचते हैं, मैं नहीं जानती मगर मैं सच कह रही हूँ मैं औरत हूँ और वही होना चाहती हूँ..."[54] संध्या अपनी पिता के मौत के बाद दिल्ली में आकर रहने लगी थी। आशु उसके परिवार से मिलता है। संजय की माँ उसकी शादी करवाना चाहती है उनको लगता है कि शायद शादी के बाद वह सुधर जायेगा। ट्रांसजेंडर रेश्मा संध्या से नफरत करने लगी थी क्योंकि संध्या उसके गिरिया के साथ प्रतापगुरु के टोली में भाग गई थी।

मधुर चाहती है कि आशु संध्या के लिए कुछ करे। आशु एम्स के डॉक्टर से संध्या के बारे में बातचीत करता है, उनसे उसे पता चलता है कि सेक्स ट्रान्सप्लांट संभव है। इस बात की खबर जब संध्या को लगती है तब वह आशु से कहती है "भैया आप कुछ भी करो, मगर मुझे इस जिन्दगी से निजात दिलवा दो।...आप जो भी कहोगे, मैं करूँगा...बस मुझे ऐसे अधुरे शरीर से मुक्ति दिला दो।...मैं जिन्दगी भर आपका यह अहसान नहीं भूलूंगा...।"[55] आशु ने अपने जर्मनी के दोस्त प्रो.दयानंद अरोड़ा से कहकर संध्या के ऑपरेशन का इंतजाम करवा लिया, ऑपरेशन के लिए आठ लाख रुपए की ज़रूरत थी। संध्या बहुत खुश थी उसने पैसों का इंतज़ाम करने को ठान लिया। लेकिन जब प्रतापगुरु को उसके जर्मनी जाने की खबर मिलती है तब वह संध्या को जबरन छिबरा बना देती है। आर्मी से रिटायर्ड डॉक्टर परवान के यहाँ उसे छिबरा बनाया जाता है। हेमोफिलिया होने की वजह से उसका रक्तश्राव रूका नही। प्रतापगुरु ने संध्या को उसी हालत में उसके घर छोड़ दिया। उसे उसने धमकी भी दी कि इस बारे में किसी को न बताए। आशु की मदद से उसे अस्पताल ले जाया जाता है, लेकिन पहले अस्पताल से उसे यह गायनी केस है कहकर दूसरे अस्पताल में भेजा जाता है। दूसरे अस्पताल में यह गायनी केस नहीं है कहकर

वापस फिर पहले अस्पताल में भेज दिया जाता है। आशु के कहने पर डॉक्टर शिनाय उसका इलाज करता है। होश आने पर संध्या आशु से कहती है वह मर जाए तो उसका लाश रेश्मा गुरु को सौंप दे और उसकी तरफ से रेश्मा गुरु से माफी माँगे। संध्या मर जाती है उसकी इच्छानुसार उसके शव को रेश्मा को सौंप दिया जाता है।

उपन्यास का तीसरा अध्याय 'जिस्म और जज्वात का संतुलन' ट्रांसजेंडर सुनंदा की कथा है। आशु सुनंदा से अपने मित्र के घर पर मिलता है। वह वहाँ बधाई पर आई हुई थी। बधाई पर उसके माँगे 500 रुपए न मिलने पर वह उन लोगों से कहती है "न री बहना! देख चाँद उतरा है तेरे आँगन में ...और मैंने कौन से ज्यादा माँग लिए तेरे से...पाँच सौ ही तो माँगे हैं।....हमारे पास भी कुछ और हो न हो मगर पेट तो लगा है बहना...बता हम कहाँ जाएँगे।"[56] रोजा के दिन आशु उसके घर जाता है। वहाँ उसके ताई रुखसाना से उसे पता चलता है कि सुनंदा का नाम बचपन में नंदलाल मिश्रा था। ताई रुखसाना के घर के पास ही उसका घर था। रुखसाना के घर उसके पति फजल अहमद एवं उनकी बड़ी बेटी रुखसार तथा बेटा फतह थे। नंदलाल का उनके घर आना जाना बना रहता था। रुखसाना उसे अपने बेटा जैसा ही मानती थी। धीरे-धीरे वह समझ गयी कि वह नंदू नहीं नंदा है। उसने खुद रुखसाना से कहा था – "जो तुम समझती हो, मैं वो नहीं हूँ। मेरे घरवाले इसीलिए तुमसे नफरत करते हैं क्योंकि तुम मुझसे प्यार करती हो! भले ही मैं कुछ भी रहूँ....नंदू या नंदा! करती हो न मुझसे प्यार...ताई?"[57] वह ताई से कहता है कि वह उसे नंदू नहीं नंदा कहे। वह वहाँ आकर साज श्रृंगार करता था। मिसरानी अपने लड़के का बिगड़ने का दोष रुखसाना को देती है। वे नंदा को समझने को तैयार नहीं थे। बीस साल की उर्म मे नंदा छिबरवाकर आ गई। वह ताई से कहता है जो मेरे काम का नहीं उसे लटकाये रखने से क्या फायदा। उसके परिवारवालों ने उससे संबंध तोड़ दिये थे। ताई जब गर्भवती हुई तब नंदा ने ही उनकी देखभाल की। बच्चे का नाम सुलतान उसी ने ही रखा था। इसीबीच दंगे में फजलमिया

और फतह मारे गए। उसके बाद रुखसार की शादी नंदा ने ही कराई तथा बाद में वह ताई और सुलतान को लेकर दिल्ली आ गया। मुरादाबाद की नंदा दिल्ली में आकर सुनंदा बन गई। सुनंदा का गरिया सुधाकर को आशु का उसके घर आना भाता नही था। वह सुनंदा का रिश्ता आशु से जोड़ता है। इस बात को लेकर सुनंदा और उसके गिरिया के बीच झगड़ा होता है। सुनंदा अपने गिरिया को घर से भगा देती है। इस हादसे के बाद आशु जब उनके घर आता है तब ताई आशु से वहाँ आने और सुनंदा से मिलने को मना कर देती है।

चौथा अध्याय 'कातिल अदाओ का कत्ल' में ट्रांसजेंडर रेखा की पीड़ा की कहानी चित्रित है। सुनंदा की साथी नगमा से आशु को पता चलता है कि सुनंदा के गिरिया सुधाकर ने उन्हें धमकी दिया था कि वह आशु को मार डालेगा। इसी भय से सुनंदा तथा ताई अम्मा ने उसे वहाँ आने से मना किया था। नगमा अपनी सहेली रेखा का परिचय आशु से करवाती है। रेखा के साथ गुलाबो भी थी। आशु अपने मित्र प्रेस फोटोग्राफर मुकेश कपूर के साथ रेखा से मिलने उसके घर जाता है एवं उनकी कई तस्वीरें लेता है। रेखा का बचपन का नाम रजिन्दर था। उसके पिता मोहनलाल इंडिया गेट के पास फलों की रेहड़ी लगाते थे। रेखा से बड़ी एक बहन थी जो किसी बिमारी के कारण मर गई थी। उसकी एक छोटी बहन थी निशा, उसके पिता चाहते थे कि घर में एक बेटा हो लेकिन रेखा के जन्म से घर में मातम छा गया। बचपन में उसे लड़कों का कपड़ा पहनाया जाता था। बाल भी लड़कों जैसा काटा जाता था। एक बार साँगली मैस के लड़के हस्तमैथुन के लिए उसे पकड़कर ले जाते हैं, तब उन्हें पता चलता है कि वह दरमियाना है और वे भाग जाते हैं। उस घटना के बाद उसके दरमियाना होने की खबर हर जगह फैल जाती है। उसके बारे में सोचकर पिताजी परेशान रहने लगे तथा वे बीमार पड़ गये। सलमा गुरु आकर उसे अपने साथ ले जाती है। सात्रे पहनकर जब वह अपने घर जाती है तब उसे देख घरवाले क्रोधित होते हैं। पिता के मरने पर पिता के दाह संस्कार की सारी ज़िम्मेदारी वही उठाती है। पिता के मरने

के बाद उसकी माँ के कहने पर वह अपनी सहेलियाँ मोहिनी, चंदा और गुलाबो के साथ उसके घर आकर रहने लगती है। अपने घर में रहने के बावजूद वह गुरु सलमा के साथ जुड़ी हुई रहती है। घर में माँ तथा बहन निशा की जिम्मेदारी वही संभालती है।

उनके ऊपर छपे फीचर को देख वे सभी खुश हो जाते हैं। इसीबीच रेखा का मर्डर हो जाता है। पुलिस ए.सी.पी राजीव रंजन आशु को बताता है कि इस हत्या के पीछे दो हत्यारे हैं "ये दोनों अपराधी किस्म के लड़के थे। किन्नर के भेष में ये उगाही और लूटपात करते थे। इन्हें दबोचने में ज्यादा परेशानी नहीं हुई थी क्योंकि ऐसा वे काफी दिनों से अलग-अलग इलाकों में कर रहे थे। इन्हें उठाने के बाद पता चला कि साँगली मैस के भी दो लड़के इनके साथ मिले हुए थे, जो रेखा से रंजिश मानते थे, मगर उसे इसका आभास भी नहीं था।"[58] इस प्रकार नशा बेचनेवाले लड़कों तथा नकली ट्रांसजेंडरों का विरोध करने के कारण रेखा उन लोगों की दुश्मन बन जाती है तथा अंत में उसे अपनी जान गवानी पड़ती है। आशु के कहने पर मोहिनी रेखा तथा उसकी बहन की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले लेती है।

उपन्यास का पाँचवा अध्याय 'दया की दया का अंत' ट्रांसजेंडर दया मौसी की कथा है। आशु के पिताजी का निधन हो जाने पर वे गाजियाबाद शिफट् हो जाते हैं। वहाँ दया मौसी जो सलमा गुरु की बहन थी वह विधानसभा की चुनाव लड़ रही थी। वह पत्रकार होने के कारण आशु से मदद माँगती है। आशु अपने पत्रकार साथी सुधीर वर्मा के साथ दयारानी का साक्षात्कार लेता है। इससे पहले भी वह मेयर तथा लोकसभा का चुनाव लड़ चुकी है। वह दो अनाथ आश्रमों तथा दूधेश्वर नाथ मंदिर और गऊशाला की मदद करती है। इस बार वह चुनाव हार जाती है। दयारानी के पिताजी जूते बनाने का काम करते थे। उसका एक भाई भी था, लेकिन वे दोनों मर चुके थे। 17-18 वर्ष की आयु तक वह कड़ेताल (पुरुषों के कपड़ों में) रहता था।

परिवारवालों की उपेक्षा के कारण वह घर-बार छोड़ गुरु हाजी ट्रांसजेंडर के पास चली जाती है और वहाँ नाच, गाना, बधाई माँगना शुरु करती है। गुरु हाजी ट्रांसजेंडर की हत्या हो जाने पर दयारानी को गुरु की पदवी और उनकी सम्पत्ति मिलती है। तब से वह गरीब अनाथ बच्चों की सहायता करती है और भंडारे लगाती है, गऊशालाओं को दान देती है।

बाद में वह राजनीति में रुचि लेने लगी उसके कुछ साथियों एवं चेलियों तथा अन्य नेताओं की सहायता से वह 1996 में गाजियाबाद के मेयर के पद के लिए लड़ती है। दयारानी उसके बाद अपने समाज की अनेक समस्याओं के लिए लड़ने लगी थी। किन्नरों के लिए थर्ड या ट्रांसजेंडर के रूप में अधिकार माँगने लगी। दयारानी ने राज्यों और जिला स्तरों पर दरमियानों को जागरूक किया। छोटी-छोटी कमेटिया बनाकर लोगों को जोड़ा। वकीलों की सहायता से 'तीसरे लिंग' के रूप में अलग पहचान दिये जाने की माँग के प्रस्ताव को केन्द्रीय सरकारों तक भी पहुँचाया। उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर ट्रांसजेंडर अधिकार आंदोलन कमिटी बनाई और इस लड़ाई को मान्य सर्वोच्च न्यायालय तक ले गई। अनेक शहरों में प्रदर्शन तथा सभा-सेमिनार का आयोजन करवाया। बाबू के निधन के बाद भतीजी गीता उर्फ बवीता का देख रेख उसने माँ के समान किया। भाभी तथा अन्य बच्चों की भी मदद वह करती थी। दयामौसी कहती है "अपना जीना भी कोई जीना है बाबू! बस, इतना ही समझती हूँ कि यह जो ज़िन्दगी मिली है, वह समाज और अपनी बिरादरी के काम आ जाए, तो मेरा किन्नर होना भी सफल मान लूँगी।"[59]

2014 में सुप्रीम कोर्ट से इन्हें थर्ड जेंडर या तृतीय लिंगी के रूप में मान्यता मिल गई। इस आन्दोलन से जुड़ी अन्य ट्रांसजेंडर नेता रोशनी ने इस जीत का एक बड़ा श्रेय दयारानी को दिया था। एक दिन ट्रांसजेंडर गुरु एवं सामाजिक कार्यकर्ता दयारानी का किसी ने गोली मारकर हत्या कर दी, पुलिस की जाँच पड़ताल से मालूम हुआ कि उसकी हत्या उसके भतीजी के पति तथा

दयाबाई द्वारा निकाले गये ड्राइवर ने मिलकर की थी। मुख्य आरोपी बारिम ने चुपचाप एक साल पहले गीता से कोर्ट मैरिज कर ली थी। दयारानी का इनका मिलना जुलना पसंद नहीं था। इसीके प्रतिकार के चलते उन्होंने दयारानी को मौत के घाट उतारा था।

पाँच अध्यायों में विभक्त अलग अलग कहानियों के अनेक पात्रों के जरिए यह उपन्यास ट्रांसजेंडर समुदाय की समस्याओं को पाठकों के सामने पेश करता है तथा उनकी सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक पक्षों को भी प्रस्तुत करता है।

3.10. यमदीप

हिन्दी साहित्य जगत की सशक्त लेखिका नीरजा माधव ने हिन्दी साहित्य विधाओं के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी लेखनी चलाई है। उनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं 'चिटके आकाश का सूरज', 'अभी ठहरो अंधी सदी', 'आदिमगंध तथा अन्य कहानियाँ', 'पथदंश', 'चुप चंतारा रोना नहीं', 'वाया पांडेपुर चौराहा' आदि। 'चैत चित्त मन महुआ' उनके द्वारा लिखित ललित निबंध है। 'प्रथम छंद से स्वप्र', 'प्रस्थानत्रयी', 'प्यार लौटना चाहता है', 'लिखते हुए शोकगीत' आदि उनके प्रमुख काव्य संग्रह है तथा 'चैत्य चित्त मन जापानी', 'सांझी फूलन छवि', 'हिन्दी साहित्य का ओझल नारी इतिहास', 'रेडियो का कलापक्ष', 'यह राम कौन है', 'तत्वबोध विवेचन', 'साहित्य और संस्कृति की नींव', 'शंकराचार्य पृथिवी और परंपरा', 'हिन्दू धर्म स्वरूप', 'भारत शब्द और उनकी शिक्षा पद्धति', 'किन्नर नहीं हिजड़ा समुदाय', 'सरोजिनी नायडू: समय से अनंत काल तक' इनके द्वारा लिखित ललित निबंध तथा अन्य विधाएं हैं। यमदीप, तेभ्यःस्वधा, गेशे जम्पा, अनुपमेय शंकर, इहामृग, अवर्ण महिला कॉन्स्टेबल की डायरी, धन्यवाद सिवनी, शत्रिकालीन संसद, दंनपाः तिब्बत की डायरी, त्रिपुरा उनके प्रमुख उपन्यास हैं।

'यमदीप' उनका बहुत चर्चित उपन्यास है। इस उपन्यास में हमारे समाज में हाशिएकृत जीवन जीने को विवश ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों के दुःख, त्रासदी एवं संत्रास का चित्रण है। इस उपन्यास में उनके अंदर की मानवीयता, मातृत्व, अभिशप्त जीवन जीने की बेबसी को भी प्रस्तुत किया गया है। इस उपन्यास के लिए 'यमदीप' शीर्षक बहुत ही उचित प्रतीत होता है। दीपावली की पूर्व संध्या में घर के एक दिए को यम से संवाद करने के लिए उठाकर घर से बाहर रखा जाता है, वह दीपक यमदीप कहलाता है। यमदीप को बाहर रखने के बाद कोई उसे मुड़ कर नहीं देखता कि, वह जल रहा है या बुझ गया है। उसी प्रकार है ट्रांसजेंडर लोगों का जीवन, अपने घर जन्मे ट्रांसजेंडर बच्चे को घरवाले खुद ही घर से बाहर कर देते हैं फिर उसकी कोई खबर नहीं ली जाती। यमदीप के बारे में लेखिका उपन्यास की भूमिका में लिखती हैं "नहीं छूटतीं उसके प्रदीप्त होने पर फुलझड़ियाँ और पटाखे, नहीं होती पूजा-अर्चना या चढ़ते थाल पर भोग, पर काली रात के विरोध में वह टिमटिमाता रहता है चुपचाप, निःशब्द। सूखता रहता है अंतसरस बूँद-बूँद-बूँद।"[60]

यमदीप उपन्यास का प्रारम्भ प्रसव वेदना से कराह रही एक पगली औरत से होता है। किसी आदमी ने उस पागल औरत के पागलपन का नाजायज़ फायदा उठाया था। उस वक्त वहाँ से गुजर रहे ट्रांसजेंडर टोली की नाजबीबी तथा उनकी साथियाँ पगली का प्रसव लेती है। प्रसव के बाद पगली मर जाती है। बच्ची को नाजबीबी वहाँ छोड़कर आने को तैयार नहीं होती, वह बच्ची को अपने साथ डेरे पर लाती है तथा एक माँ के समान उसकी देख रेख करती है। नाजबीबी का बच्ची के प्रति प्यार को देखकर डेरे की सकीना कहती है "आय हाय, इसे देखो! ये तो दो ही घंटे में हिजड़ा से औरत बन गई - टेपकी की माई! जैसे अपने कोरव से बियाई है इसे।"[61] डेरे में गुरु तथा अन्य सभी को चिंता सताती है कि कहीं पुलिस को बच्ची की खबर मिल जाने पर वह कहीं लफड़ा न खड़ा कर दे, कि उन्होंने बच्ची को जबरदस्ती कहीं से उठा लाया है। बाद में

सभी निर्णय लेते हैं कि बच्ची थोड़ी बड़ी होने तक वहाँ पालेंगे उसके बाद किसी अनाथालय में उसे दे आयेंगे।

बच्ची का नाम सोना रखा जाता है। नाजबीबी बच्ची की सेहत को ध्यान में रखकर बीड़ी लेना बंद कर देती है, वह कहती है "सोना के मुँह पर धुआ जाएगा तो नुकसान करेगा।"[62] सोना के पालन पोषण के लिए पैसों की जरूरत को निपटाने के लिए नाजबीबी होमगार्ड रामसरन को अपना गिरिया बनाती है। नाजबीबी सोना के बड़े होने पर उसे स्कूल में भर्ती करना चाहती है। इस कार्य के लिए गुरुमाई नाजबीबी की सहायता करती है। नाजबीबी जब स्कूल में प्रवेश फॉम लेने जाती है तब वहाँ के सभी उसका हँसी मजाक उड़ाते हैं जिसपर उसे दुःख होता है। नाजबीबी अपनी असली पहचान, धंधा छिपाकर सोना को स्कूल भेजती है। उसे यह कहने को सिखाया जाता है कि उसकी माँ खटाले में काम करती है और बाप स्वर्गवासी है। वहाँ का छैलू मर्द के कपड़े पहन उसे स्कूल भर्ती कराने ले जाता है। सोना को स्कूल ले आ जाने का काम नाजबीबी छैलू को सौंपती है।

नाजबीबी को अपना बचपन याद आ जाता है। नाजबीबी के पिता सेना मे मेजर थे। नाजबीबी के जन्म होने पर वे बहुत रोए थे। उसके जन्म के बाद दादी ने ट्रांसजेंडरों के डर से उसे और उसकी माँ को नानी के घर भेज दिया था। नाजबीबी को गाँव के प्राइमरी स्कूल में भर्ती कराया गया, माँ ने उससे साफ-साफ कह दिया था "छोटे बाहर या बड़े बाहर किसी के साथ मत जाना। अपनी पढ़ाई करके सीधे घर।"[63] दादी की मृत्यु के बाद उसके पापा ने वहाँ की जमीन जायदाद बेचकर कानपुर में मकान ले लिया था। नंदरानी की शारीरिक बदलाव को देखकर जब माँ चिंतित होकर रोती तब नंदरानी माँ को आश्वासन देती "चिंता क्यों करती हो मम्मी? मैं पढ़-लिखकर डॉक्टर बनूँगी और तुम्हारी तथा पापा की सेवा करूँगी। ज़रूरी तो नहीं कि सभी

लड़कियों की शादी ही हो। मेरी सुजाता मैडम को देखो। पचास वर्ष की होंगी, पर आज तक विवाह नहीं किया मैं भी नहीं करूँगी। बाकी तो सब ठीक ही है न?"[64] आठवीं कक्षा तक पहुंचते उसके स्त्रियोचित अंगों में उभार आने लगें, चेहरे पर श्यामवर्ण रोएँ आने लगीं। अब उसकी सच्चाई को छुपाकर रखना आसान नहीं था। उसके पिताजी ने उसकी पढ़ाई रोक दी, जिससे उसे बहुत दुःख हुआ। नंदरानी के कारण उसकी बड़ी बहन की शादी टूट जाती है, तब उसके भैया उसपर बहुत गुस्सा होते हैं, जब वे नंदरानी को दोषी ठहराते हैं, तब अम्मा उनसे कहती है "अरे, चुप रे, नंदन! नंदरानी सुन लेगी तो उसका मन कितना अधीर होगा। वह अभागिन क्या करे? स्वयं तो नहीं गढ़ा उसने अपना शरीर? मेरी कोख ही ऐसी ऐबही रही तो वो क्या करें?"[65] अंत में अपने घरवालों के मान सम्मान को बचाने वह घर छोड़कर ट्रांसजेंडर मंडली में आकर शामिल हो जाती है। उसके माता पिता उसे वापस घर लाने ट्रांसजेंडर मंडली में पहुँचते हैं। गुरु उसके माँ बाप को आश्वासन देती हैं कि वे नंदरानी का ख्याल अच्छे से रखेगी। माँ पिता का नंदरानी से संबंध बनाए रखना नंदन भैया को पसंद नहीं था। नंदरानी सभी से छिपकर कभी-कभार अपने माता-पिता को फोन कर लिया करती थी। उसकी माँ कैंसर से पीड़ित होकर चल बसती है। वह जब श्मशानघाट पहुँचती है तब नंदन भैया को सभी के सामने शर्मिन्दा होना पड़ता है, वह उसपर वहाँ आने के कारण क्रोधित होता है। नंदन भैया मन ही मन उसे कोसता है "पता नहीं कहां से इसी समय यह भी आ गई? क्या सोच रहे होंगे नाते-रिश्तेदार कि जिसे वे मरी हुई घोषित कर चुके थे, वह तो ट्रांसजेंडर के रूप में आज तक जीवित है।"[66] जब भैया पिता पर क्रोधित होता है तब नाजबीबी भैया से माफी माँगकर फिर कभी अपना चेहरा न दिखाने का वादा करके, पिताजी को अच्छे से उनसे देखने की विनती कर वह लौट आती है।

पत्रकार मानवी महताब गुरु तथा उनके चेलों का इंटरव्यू लेने जाती है। नाजबीबी मानवी से कहती है कि वह देश में फैले भ्रष्टाचार को रोकना चाहती है "अपने देश के लिए तो देखिए, हम

लोग मर मिटेंगे। जिस तरह फौज में एक सिपाही भर्ती होता है, पुलिस होता है ...सरकार हमें भी हथियार दे दे। मैं तो लडूंगी। लड़ते-लड़ते हिन्दुस्तान के पीछे अपना जान दे दूँगी। बस मेरी यही तमन्ना है। मैं मेजर की लड़की हूँ, मेजर की।"[67] नारी उद्धारगृह की लड़कियों का इंटरव्यू लेने, तथा उसे छापने के सिलसिले में मानवी को धमकी देने कुछ आदमी पहुँचते हैं जिनमें हरींद्र नाम का आदमी भी था, जिसने काफी साल पहले गाँव में मानवी के साथ छेड़खानी की थी। बहन के साथ हुए हादसा का बदला लेने मानवी का छोटा भाई हरींद्र को गोली मारता है लेकिन हरींद्र बच जाता है और मानवी के भाई को जेल जाना पड़ता है। मानवी ने हरींद्र और उसके गुंडों द्वारा धमकी देने के बारे में डी एम आनंदकुमार को बताया, इसपर उन्होंने मानवी के लिए अंगरक्षक का प्रावधान किया।

महताब गुरु के डेरे पर पुलिस ने छापा मारा। ग्यारह-बारह साल तक उन्होंने सोना की सच्चाई सबसे छुपाकर रखी, लेकिन अब पुलिस को सच्चाई का पता चल गया कि सोना साधारण लड़की है। पुलिसवालों ने उनसे सोना को नारी उद्धारगृह पहुँचाने के लिए कहा। सभी के न चाहते हुए भी पुलिस के भय से उन्हें सोना को नारी उद्धारगृह भेजना पड़ा। सोना भी उन्हें छोड़कर नहीं जाना चाहती थी, लेकिन उसे भी बेबस होकर जाना पड़ा। छैलू जो सोना को बाप की तरह देखरेख करता था, वह और नाजबीबी सोना के जाने के बाद बहुत दुःखी रहने लगे। नारी उद्धारगृह में सोना को भी डेरे के सभी की बहुत याद आ रही थी। नारी उद्धारगृह से भागी एक लड़की द्वारा समाज के सभी को पता चलता है कि वहाँ की वॉर्डन उनसे वहाँ देह धंधा करवाती है। मन्नाबाबू नामक एक नेता भी इस गलत करनामे में जुड़ा हुआ था। इस बात की खबर लगते ही नाजबीबी और छैलू सोना को नारी उद्धारगृह से बचाने के लिए पहुँच जाते हैं। मानवी भी सोना को बचाने में उनकी सहायता करती है। जब मानवी नारी उद्धारगृह के अंदर घटनाओं का विवरण लेने जाती है तब वहाँ उसे जान से मारने की कोशिश की जाती है। नाजबीबी और छैलू मानवी को उन दुष्टों से

बचाते हैं, छैलू को गोली लग जाती है लेकिन वह बच जाता है। मानवी नाजबीबी से चुनाव में खड़ा होकर भ्रष्टाचारी मन्नाबाबू को हराने को कहती है तथा अंत में नाजबीबी मन्नाबाबू के खिलाफ चुनाव लड़ने को तैयार हो जाती है।

यह उपन्यास हाशिएकृत ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों के जीवन में प्रकाश फैलाता है। तथा लेखिका इस बात पर ज़ोर देती हैं कि अगर हमारे देश को अपराधिक प्रवृत्ति वाले लोगों के चंगुल से बचाना है, देश में व्याप्त बुराईयों को समाप्त करना है तो इन ट्रांसजेंडर समाज के लोगों को आगे लाना होगा, इन यमदीपों को परिवार एवं घर से बाहर करने की बजाए इन्हें मुख्यधारा में शामिल करना होगा।

3.11. श्रापित किन्नर

'श्रापित किन्नर' उपन्यास डॉ. मुक्ति शर्मा द्वारा लिखा गया है। 'जिंदा लाश', 'वो रात' उनकी प्रमुख कहानियाँ हैं। 'श्रापित किन्नर' उपन्यास में लेखिका ने ट्रांसजेंडरों के संघर्षमय जीवन का वर्णन किया है। उपन्यास के नाम से ही पता चलता है, हमारे समाज में ट्रांसजेंडरों को जन्म से ही श्रापित माना जाता है। इस उपन्यास में तीन ट्रांसजेंडर पात्र हैं नरगिस, हिना और जावेद। इन तीनों को श्रापित किन्नर होने के कारण जीवन में अनेक यातनाओं को झेलना पड़ता है। नरगिस हमें भाग्यशाली प्रतीत होती है। नरगिस के घरवाले उससे बहुत प्यार करते हैं, बुरी हालातों में उसका साथ देते हैं तो हिना का जीवन संघर्षों से भरा हुआ है। उसके जन्म होने पर ही पिता और सगे संबंधी उसे श्रापित मान लेते हैं। 'श्रापित किन्नर' उपन्यास हिना के जीवन संघर्ष की गाथा है। हिना डॉक्टर बनकर उसे श्रापित माननेवालों को दिखा देती है कि वह भाग्यशाली है। ट्रांसजेंडर जावेद का जीवन भी संघर्षों से भरा है। ये तीनों ट्रांसजेंडर अपने मनोबल से हर संघर्ष का डटकर सामना करते हैं।

उपन्यास में ट्रांसजेंडर नरगिस को उसके माता पिता एवं बड़े भाई बहुत प्यार करते हैं। नरगिस जब वह स्कूल जाती है, वहाँ उसे अवहेलना झेलनी पड़ती है। स्कूल में सभी बच्चे उससे दूरी बनाकर रखते हैं। उसे कोई अपने पास बैठाता नहीं तथा उसके साथ खेलने को कोई तैयार नहीं होता। जब इस बात की खबर उसके बड़े भाई फैसल को लगता है तब वह स्कूल के बच्चों से झगड़ा करता है। तब वह बच्चे उससे कहते हैं कि नरगिस न लड़की है न लड़का। नरगिस से दो साल बड़ा फैसल को भी नहीं पता था कि उसकी छोटी बहन ट्रांसजेंडर है। नरगिस की माँ जास्मिन नरगिस को उसकी सच्चाई से अवगत कराना चाहती थी, लेकिन उसके पिता का मानना था कि जब वह बड़ी होगी खुद ही अपनी सच्चाई से अवगत हो जायेगी। नरगिस की माँ जब उसे मानसिक विकलांग बच्चों के स्कूल में भर्ती दिलवाने पहुँचती है, तब वहाँ की प्रधानाचार्या उसे भर्ती करने को इंकार कर कहती है कि यह मानसिक विकलांगों का स्कूल है, ट्रांसजेंडरों का नहीं। जास्मिन अपने बेटी नरगिस को हर हाल में शिक्षित करना चाहती है। वह उसे पास के सरकारी स्कूल में दाखिला दिलाती है। वहाँ भी नरगिस को स्कूल के छात्र चिढ़ाते हैं, उसका हँसी मज़ाक उड़ाते हैं। एक बार नरगिस को, उसका एक लड़की द्वारा मज़ाक उड़ाना बर्दाश्त नहीं हुआ उसने पत्थर से उस लड़की को मार दिया। लड़की को चोट लगी। उस लड़की के घरवालों ने पुलिस में रिपोर्ट कर दिया। किसी तरह नरगिस के घरवालों ने केस को सुलझाया था। इस हादसे के दौरान ट्रांसजेंडर समूह को नरगिस के बारे में पता चल जाता है और वे आकर उसे अपने साथ ले जाते हैं। उसके घरवालों के विनती करने पर भी ट्रांसजेंडर लोग उसे घरवालों को नहीं लौटाते। नरगिस बहुत दुखित होती है वह अपने आप से पूछती है “कि मैं क्या करूँ? क्या मैं श्रापित हूँ? जो मुझे यहाँ धकेल दिया गया।”[68] वहाँ वह गुरु से अपने पढ़ने की इच्छा जाहिर करती है। गुरु उसे आगे पढ़ने की इजाज़त देती है। नरगिस के जाने के बाद उसकी माँ दुःखी रहती

है तब उसके पिताजी उसे समझाते हैं "वह हमारी थी ही नहीं वह उन लोगों के लिए बनी थी इसलिए उनके साथ चली गई।"[69]

नरगिस बारहवीं कक्षा में अच्छे नंबर से पास होती है। वह आगे कॉलेज की पढ़ाई करना चाहती है लेकिन वहाँ के अन्य ट्रांसजेंडर लोगों को उसका आगे पढ़ना पसंद नहीं था। लेकिन गुरु माँ नरगिस का साथ देती है। नरगिस को कॉलेज की पढ़ाई में भी बहुत कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। वहाँ भी उसे लोग ट्रांसजेंडर होने के कारण ताना मारते हैं। नरगिस के कॉलेज में पढ़ने वाला एक लड़का अकरम उसे पसंद करने लगता है। नरगिस की सच्चाई जानने पर भी वह उससे प्यार करता है, वह नरगिस से शादी करना चाहता है। अकरम जब नरगिस के बारे में बताने घर पहुँचता है तब उसे उसकी माँ से पता चलता है कि उसके मामा के यहाँ ट्रांसजेंडर बच्ची पैदा हुई है जिसके कारण परिवार के सभी सदस्य दुःखी थे। वह नरगिस की बात उस समय घर में बताना उचित नहीं समझता। मामा कि बेटी का नाम हिना रखा जाता है। हिना की माँ उसे बहुत प्यार करती है। हिना के पिता उससे नफरत करते थे। हिना का जन्म ट्रांसजेंडरों द्वारा दिए गये श्राप की वजह से हुआ था। ट्रांसजेंडर समूह जब उसके पिता की शादी में आये थे उन्होंने 21 हजार रुपए माँगे। दादाजी को इतनी बड़ी रकम माँगने पर उनपर गुस्सा आया और उन्होंने दो हजार रुपए देकर पीछा छुड़वाना चाहा लेकिन ट्रांसजेंडरों ने नहीं माना उन्होंने जाते वक्त शाप दिया। शाप के कारण कुछ ही दिनों में बुजर्ग दादा चल बसते हैं तथा उनकी बहु को आठ साल तक बच्चा नहीं होता और आठ साल के बाद बच्चा होता है और वह बच्ची है हिना। अकरम की नानी हिना के पैदा होने से दुःखी रहने लगती है। हार्ट अटैक होने की वजह से वह मर जाती है। इसका दोषी भी सभी हिना को ठहराते हैं।

अकरम नरगिस को बहुत चाहता है। अकरम और नरगिस के रिश्ते को ट्रांसजेंडर दल पसंद नहीं करते। अकरम को प्राइवेट कंपनी में नौकरी मिलती है। हिना की माँ को केंसर होता है, यह जानने पर अकरम के मामू हिना से ज्यादा नफरत करने लगते हैं। वे अकरम से कहते है "इसने मेरी माँ को मुझसे छीन लिया अब मेरी पत्नी, कमबख्त किस-किस की जान लेगी। पता नहीं यह हमारे परिवार के लिए श्रापित है।"[70] नरगिस को नौकरी मिलती है। वहाँ भी उसे हँसी मज़ाक का पात्र बनाया जाता है। अकरम नरगीस के घर अपने रिश्ते की बात करने जाता है। नरगिस के घरवालों को बहुत खुशी होती है यह जानकर कि उनकी बेटी से कोई शादी करना चाहता है। जब अकरम के घर नरगिस के माता पिता उनके रिश्ते की बात चलाते है और जब अकरम की माँ को नरगिस के ट्रांसजेंडर होने का पता चलता है तब उनके ऊपर मानो बिजली गिर पड़ता है। माँ नरगिस को स्वीकार करने को तैयार नहीं होती। माँ के खिलाफ जाकर वे लोग कोर्ट में शादी करते हैं। ऑफिस के मैनेजर द्वारा बदसलूकी करने के कारण नरगिस अपनी नौकरी छोड़ देती है। अकरम को प्रमोशन मिलता है। नरगिस राजनीति में आना चाहती है। वह भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ना चाहती है। हिना की माँ की मृत्यु हो जाती है और उसके पिता जल्द ही दूसरी शादी कर लेते है। हिना अपनी दूसरी माँ एवं पिता के क्रोध का शिकार बनती जाती है।

अकरम और नरगिस हिना को गोद लेते हैं। वे दोनों हिना को ढ़ेर सारा प्यार देते हैं। उसे स्कूल में भर्ती करवाया जाता है। इसीबीच नरगिस एच.आई.वी से पीड़ित होती है। अकरम की माँ इसका कसूर भी हिना को ठहराती है और उसे श्रापित मानती है। जब नरगिस और अकरम चिकित्सार्थ अस्पताल में थे, तब ट्रांसजेंडर मंडली आकर हिना को अपने साथ ले जाते हैं। नरगिस और अकरम उसे वापस ले आने जाते हैं लेकिन ट्रांसजेंडर मंडली उसे उनके साथ नहीं भेजते। हिना के पिता को जब लड़का होता है तब उनके घर बधाई देने ट्रांसजेंडर मंडली के साथ हिना भी जाती है। वहाँ भी उसके पिता उसे धक्का मारकर निकाल देते हैं इसपर ट्रांसजेंडर

मंडली उसके पिता को शाप देकर लौटती है। हिना का मन ट्रांसजेंडर मंडली में नहीं लगता। उसे अकरम और नरगिस की याद सताती है। एक बार तो वह आत्महत्या करने की कोशिश भी करती है लेकिन बच जाती है और अंततः वह वहाँ से भाग अकरम और नरगिस के पास पहुँच जाती है। हिना को अकरम ओर नरगिस पढ़ाते हैं। स्कूल में हिना को बहुत परेशानियों तथा बेइज्जती सहनी पड़ती है लेकिन वह हार नहीं मानती। हिना एक कश्मीरी युवक आकिब से प्रेम करती है, आकिब आतंकवादी हमले में मारा जाता है। आकिब के मरने पर हिना टूट जाती है। नरगिस उसको हौसला देती है उसे आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। हिना विदेश जाकर डॉक्टरी के लिए पढ़ती है तथा डॉक्टर बनकर अपने माथे से श्रापित ट्रांसजेंडर होने का कलंक मिटाती है। हिना ट्रांसजेंडरों लिए एक संस्था चलाती है जिसमें उनकी समस्याओं का निवारन किया जाता है। वह समाज के लोगों को दिखाती है कि वह श्रापित नहीं बल्कि उसका जीवन वरदान है।

इस उपन्यास में ट्रांसजेंडर जावेद का भी चरित्र चित्रण है। जावेद कश्मीर में रहनेवाली जास्मिन की सहेली का बेटा है। जावेद का परिवार बहुत ही गरीब है। जावेद को भी स्कूल में अवहेलना झेलनी पड़ती है। एक बार स्कूल के लड़कों ने उसे बाथरूम में बंद कर दिया था। स्कूल के बच्चों ने कह दिया था कि जावेद अगर स्कूल आयेगा तो वे नहीं आयेंगे। एक अध्यापिका जो उसे मानती थी वह अपने बहन के घर काम करने उसे भेज देती है। वहाँ जावेद घर का काम करता था। गरीबी और ट्रांसजेंडर होना जावेद के लिए श्राप बन गया। घर से दूर रहने पर उसे घरवालों की याद सताती है। वह जब घरवालों से मिलने जाता है तब उसे बहुत खुशी होती है। जो बच्चे पहले उसपर ताना मारते थे वे उसे खेलने बुलाते हैं। तब वह उनके साथ खेलने से इंकार करता है और कहता है कि वह आज भी ट्रांसजेंडर है। बच्चे उससे माफी माँगते हैं तथा संकल्प लेते हैं कि वे आगे उसे कुछ नहीं कहेंगे। जावेद के पिता की मृत्यु हो जाने पर घर का पूरा दायित्व उसपर आ जाता है। घर के पास एक दुकान मे उसे काम मिल जाता है।

'श्रापित किन्नर' नामक उपन्यास में नरगिस, हिना और जावेद को ट्रांसजेंडर होने के कारण श्रापित होने का दंश झेलना पड़ता है। ये तीनों पात्र अपने जीवन में कई यातनाएँ झेलते हैं, अपने मनोबल से सभी संघर्षों का सामना करते हुए ये अपना मुकाम हासिल करते हैं तथा सभी को दिखाते हैं कि ये श्रापित नहीं हैं ये भी इंसान हैं।

3.12. अस्तित्व की तलाश में सिमरन

'अस्तित्व की तलाश में सिमरन' मोनिका देवी द्वारा लिखित जीवनीपरक उपन्यास है। यह उपन्यास ट्रांसजेंडर सिमरन के दर्दनाक जीवन के पहलुओं को हमारे सामने पेश करता है। उपन्यास के कथानक में यथार्थ के साथ साथ कल्पना का भी समावेश किया गया है। इस उपन्यास में मोनिका जी ने ट्रांसजेंडर समुदाय के रीति-रिवाज, लोकसंस्कृति का भी वर्णन किया है। यह उपन्यास ट्रांसजेंडर समुदाय के हर पहलु से हमें परिचित कराता है, साथ ही साथ ट्रांसजेंडर समुदाय के प्रति हमारे मन में सकारात्मक सोच पैदा करने का प्रयास भी करता है। डॉ.मोनिका देवी की अन्य प्रमुख पुस्तकें हैं 'अंतिम दशक की कहानियों में वैचारिक संघर्ष', 'भगवती चरण मिश्र के उपन्यास', 'लक्ष्मणरेखा में समकालीनता बोध', 'अनुवाद के विविध आयाम' (संपादित), 'समकालीन कहानियों में विविध विमर्श' (संपादित)।

'अस्तित्व की तलाश में सिमरन' उपन्यास ट्रांसजेंडर सिमरन की कहानी है। सिमरन का बचपन का नाम शत्रोहन था, जिसका अर्थ शत्रु का विनाश करनेवाला है। सिमरन के पिता एक दवाई कंपनी में मशीन ऑपरेटर का काम करते थे और माँ सिलाई का। वे पाँच बहन-भाई थे। सिमरन घर की पहली संतान थी। उसके जन्म होने पर पूरे मुहल्ले में मिठाई बाँटा गया था। उसके जन्म के बाद पिताजी की नौकरी स्थायी हुई थी, इसीकारण पिताजी उसे भाग्यशाली मानते थे। उम्र के बढ़ने पर उसके हाव-भाव में परिवर्तन आने लगा। उसे लड़कों के बजाय लड़कियों की

चीजें पसंद आतीं। पहला बच्चा समझकर घरवाले उसे उसकी इच्छानुसार सबकुछ दिलवा देते थे। बाद में उसके अंदर छुपे स्त्रैणता को सभी समझ गये तब से पिताजी उससे नफरत करने लगे थे।

सिमरन उर्फ शत्रोहन जब पढ़ने स्कूल जाता है, वहाँ भी सभी उससे बुरा बर्ताव करते हैं। बड़ी कक्षा के लड़के उससे पेशाब से हाथ धुलवाते हैं। स्कूल में सब उसे लड़की कहकर चिढ़ाते थे। वह लड़कियों के साथ रहता था, लड़कों से उसे डर लगता था। स्कूल के बुरे वातावरण के कारण उसे स्कूल जाना पसंद नहीं था लेकिन घरवालों के डाँटने पर उसे स्कूल जाना पडता था। बचपन में जब सिमरन गली में बच्चों के साथ खेलने गई तब एक लड़का उसे एक सुनसान जगह ले जाकर उसका शारिरिक शोषण करता है और उसे वहाँ छोड़कर भाग जाता है। दर्द से रोती सिमरन को रास्ते से गुजरे लोगों ने उसके घर पहुँचाया था। स्कूल से आते वक्त कुछ लड़के उससे जबरदस्ती करने की कोशिश करते हैं। जब वह यह बात घर में बताती है, तब उल्टे उसपर सभी क्रोधित होते हैं और उससे इस बारे में किसी को न बताने को कहा जाता है। सिमरन के प्रति पिताजी का नफरत बढ़ता गया। पिताजी की कंपनी में हड़ताल चलने की वजह से उनकी नौकरी छूट गई। पिताजी की दुकान पर अब उनका गुजारा निर्भर करता था। सिमरन भी दूकान को संभालने लगी थी। वहाँ आकर भी लड़के उसे तंग करते थे। उसके पिताजी के दोस्त लोग भी उससे बुरा व्यवहार करते थे। वह दुकान नहीं जाना चाहती थी लेकिन पिताजी उसे मारपीठकर दुकान में बैठने को मजबूर करते थे। एक दिन एक आदमी आकर उसके साथ दुकान में बुरा व्यवहार करता है और उल्टे सिमरन के पिताजी से उसपर आरोप लगाता है कि सिमरन ने उसके लिंग को पकड़ना चाहा जिस वजह से पिताजी से सिमरन को खूब मार खानी पड़ी। पिताजी का एक घनिष्ट मित्र जिनका प्लास्टिक की फैक्टरी उनकी दुकान के पास था, उस अंकल ने सिमरन को फैक्टरी ले जाकर उसका शारीरिक शोषण किया और जिसकी शिकायत वह डर के कारण किसी से नहीं कर पायी।

स्कूल में भी सिमरन को शारीरिक तथा मानसिक शोषण का शिकार होना पड़ा। कक्षा के छात्र उसे कक्षा में बैठने को जगह नहीं देते थे। घर से बोरा ले जाकर वह नीचे बैठती थी। नवीं कक्षा में पढ़ते वक्त टाइफाइड हो जाने के कारण वह फैल हो गई थी। आर्थिक तंगी के कारण घर में माँ-बाप का झगड़ा बना रहता था। सिमरन के स्कूल की शिक्षकाएँ उसे आर्थिक सहायता देती हैं। सिमरन का भाई पढ़ता नहीं था वह मवाली बन गया था। नवीं कक्षा में अच्छे नंबर पर पास होने पर भी सिमरन के घरवाले खुश नहीं थे क्योंकि आगे पढ़ाने के लिए उनके पास पैसा नहीं था। पिताजी अब काम नहीं करते थे, माँ की सिलाई से घर का खर्चा चल रहा था। दसवीं की पढ़ाई को जारी रखने के लिए शिक्षाकाएँ उसे आर्थिक सहायता देती हैं, लेकिन सिमरन खुद मेहनत करके पढ़ना चाहती है। वह घरों में झाडू पोंछा बर्तन माँजकर अपनी पढ़ाई जारी रखती है तथा घर को भी संभालती है।

सिमरन को दूर फैक्टरी में काम मिलता है। वहाँ उसे उसके जैसा आदमी मिला, जिसका नाम अब्दुल था लेकिन सभी उसे बॉबी कहते थे। वह नाच गाकर पैसा कमाता था। बॉबी से सिमरन की दोस्ती होती है। बॉबी सिमरन को समझाता है "यहाँ इज्जतदार बनकर कोई फायदा नहीं है। मुझे देखकर कुछ सीख जितनी बेशर्म बनेगी उतना ही फायदा होगा। यह समाज तुझको समझनेवाला नहीं है, यहाँ कितनी भी मेहनत से काम लो। उसके बाद भी तुम्हारी पहचान वही रहेगी जो तुम हो।"[71] फैक्ट्री के मजदूर नेता काम स्थायी करने के लिए बॉबी से उसके साथ रात बिताने को कहता है, जिसके लिए बॉबी तैयार हो जाता है। यही प्रस्ताव वह सिमरन के सामने रखता है लेकिन सिमरन इसके लिए तैयार नहीं होती, जब सिमरन यह बात अपनी माँ को बताती है तब माँ सुनकर उससे कहती है "अगर तेरी नौकरी स्थायी करता है तो क्या बुराई है वह जो कहता है वही किया कर !"[72] माँ को सिर्फ उसके पैसों से मतलब था। एक बार माँ को पैसे की जरूरत आ गई तो उसने एक मज़दूर के साथ शारीरिक संबंध बनाकर पैसों की जुगाड़ की थी।

उसका दर्द माँ के लिए कोई मायना नहीं रखता था। काम के चलते उसकी दसवीं की पढ़ाई नहीं चल रही थी। वह अपना कमाया पूरा पैसा घरवालों के लिए खर्च करती थी। साहब लोगों के घर बर्तन साफ करने वह जाती थी, उनके साथ सोने पर उसे ज्यादा पैसा मिलते थे।

सिमरन के मामा के मरने पर माँ उनके यहाँ रहने चली गई। तब पिताजी उसे खूब मारते थे। छोटी बहन और छोटा भाई उसे खूब प्यार करते थे। सिमरन का ट्रांसजेंडर समाज से मेलजोल बढ़ता है। उसे उसके समाज से एक दोस्त मिला, वह उसे हमसफर ट्रस्ट ले जाता है। यह ट्रस्ट समलैंगिक और ट्रांसजेंडरों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक बनाता है। एक दोस्त ने 'उजेफा' नाम की संस्था में उसे काम दिलवाया, जिसमें उसका काम लोगों को एच अई वी के प्रति जागरूक करना तथा कोंडम के बारे में लोगों को बताना था। यह काम छूटने पर उसके घरवालों ने उसे घर से निकाल दिया। वह चंपागुरु के संपर्क में आती है। उसने चंपा को पहला गुरु बनाया। जब चंपा गुरु की संस्था में उसे काम मिला तब घरवालों ने उसे फिर घर में रखा। सिमरन का घर जाना चंपा गुरु को पसंद नहीं था। चंपा गुरु सिमरन को भीख माँगने जाने को मजबूर करती हुई कहती है "कि इस कमाई से काम नहीं चलता, तुझे माँगने भी जाना पड़ेगा। क्योंकि तू एक हिजड़ा है, हिजड़े का कोई परिवार नहीं होता, जिनके लिए तू इतनी मेहनत कर रही है वक्त आने पर वह तुझे छोड़ देंगे।"[73] सिमरन सुबह उठकर फैक्टरी में काम पर जाती उसके बाद शाम को ट्रेन में भीख माँगने और कभी कभार रात को कुछ खाये बिना ही सो जाती थी। ट्रेन में उसकी मुलाकात राजवीर नामक युवक से होती है जिसे उसके भाईयों ने घर से निकाल दिया था। सिमरन उसे अपने घर में रखती है। राजवीर को नौकरी मिलने पर वह पैसा उसके घरवालों को देता था।

सिमरन का भाई उसे धक्का मारकर घर से निकाल देता है। वह घर से दूर उल्लास नगर में किराये का घर लेकर रहने लगती है। वहाँ नाले का गंदा पानी घर के भीतर आता था। उस घर में रहना मुश्किल हो गया था। उसकी माँ उसका सामान घर में रखने को तैयार नहीं थी, क्योंकि उन्हें डर था कि कहीं वह घर वापस न आ जए। इस वक्त किराये के मकान के पास एक आंटी रहती थी, उन्होंने सिमरन की मदद की। आंटी उससे हमेशा भविष्य के लिए पैसा कमाकर रखने का निर्देश देती थी। एक दिन सिमरन की माँ ने जब उससे कहा कि तूने हमारे लिए किया ही क्या है, जो सुनकर वह बहुत दुःखी हुई और वह पुने को रहने चली गई। वहाँ उसकी मुलाकात बेला से होती है, जो उसे चेला बनाती है। बेला ने सिमरन के निर्वाण का खर्च अपने ऊपर लिया। बेला धोखेबाज निकली उसने ट्रांसजेंडर समाज की पंचायत के सामने एक लाख रूपये सिमरन को उधार के रूप में देने का नाटक किया और उस पैसे को बाहर आकर उसके पास से ले लिया। सिमरन का निर्वाण किया जाता है। राजवीर और उसकी माँ उससे मिलने आते हैं। गुरु शराब पीकर आती और उसे खूब मारती थी। गुरु ने हर महीने पाँच हजार रुपये उसे देने को कहा था। सिमरन वहाँ छोड़कर जा भी नहीं सकती थी क्योंकि उसे उसका कर्ज वापस करना था। निर्वाणा करने पर उसे पेशाब करने में दिक्कत होती है, जिसके कारण एक माइनर सर्जरी उसे करनी पड़ी। नाभि के नीचे एक छेद कर उसमें पाइप डालकर यूरिन बैग लगाया गया, बहुत दर्द उसे सहना पड़ा। इसी दर्द के बीच पेट भरने के लिए उसे काम पर जाना पड़ा ट्रेन में भीख मांगने वह जाने लगी। सिमरन की मुलाकात नगमा से होती है वह बहुत अच्छी थी, उसने सिमरन की बहुत मदद की। सिमरन की माँ ने एक दिन सिमरन से यह कहकर पैसा माँगा कि जरूरत पड़ने पर वह उसे पैसा वापस दे देगी। सिमरन को पैसों की जरूरत पड़ने पर जब उसने माँ से पैसा पूछा तब उन्होंने कहा कि अगर पैसा उसने माँगा तो वह उसके यहाँ आकर आत्महत्या कर देगी। राजवीर भी उसे

छोड़कर चला गया था क्योंकि वह बच्चा चाहता था, जो सिमरन दे नहीं सकती थी। उसे भय था कि यदि वह वहाँ रहेगा तो उसका विवाह नहीं हो पायेगा।

सिमरन सुभद्रा ट्रांसजेंडर की मदद से उत्तर प्रदेश पहुँचती है। वहाँ वह नाच गाना करके जीवन यापन करती है। तब भी वह अपने माँ को पैसा भेजती है। माँ की तबियत बिगड़ने पर माँ पैसों के लिए फोन करती है लेकिन उसका हाल चाल नहीं पूछती। सिमरन अपनों का प्यार चाहती है लेकिन वह उसे मिलता भी नहीं। उत्तर प्रदेश में रहने को मकान ढूंढ़ते वक्त सभी मकान देने के बदले उससे बिस्तर बाँटना चाहते थे। एक कमरा मिल गया तब उस घर में कुछ लोग आकर उससे जबरदस्ती करना चाहा, जब वह चिल्लाई तब आसपड़ोस के लोग आ गये। इस हादसे पर मकान मालिक ने घर खाली करने को कह दिया क्योंकि उनका मानना था कि सिमरन ने उन लोगों को अपने पास बुलाया था। सिमरन के सच्चाई कहने पर भी वे नहीं माने सिमरन कहती है शत्रोहन से सिमरन बनने का सफर उतना आसान नहीं था। सिमरन कहती है कुछ लोग ट्रांसजेंडर को मनोरंजन की वस्तु मानते हैं, अगर अपनों का साथ हो और उन्हें शिक्षा प्राप्त हो तो वे भी अच्छे मुकाम पर पहुंच सकते हैं। माता पिता अपने बच्चों को बेटा या बेटी माने न कि ट्रांसजेंडर तभी उनका जीवन संवर सकता है।

3.13. ऐ जिन्दगी तुझे सलाम

हरभजन सिंह मेहरोत्रा द्वारा लिखित, ट्रांसजेंडर समाज से जुड़ी एक उपन्यास है 'ऐ जिन्दगी तुझे सलाम'। हरभजन सिंह मेहरोत्रा जी ने रतनदीप पत्रिका का संपादन एवं प्रकाशन किया है। इनका प्रमुख उपन्यास है, 'अनाम जिन्दगी' तथा 'हिना और अनायास'। इनका साथी साहित्यकारों पर लिखा व्यक्ति चित्र 'सफर के साथी' (1988) है। इनके द्वारा लिखित प्रमुख कहानी संग्रह है 'दफन हुए शिलालेख' (2017), 'बा-मुलाहिजा होशियार' (2019)। इन्हें श्रीमंत

माधवराव सिंधिया मेमोरियल अवार्ड, 2018 तथा इनोवेटिव लीडरशिव अवार्ड 2019 से सम्मानित किया गया है। 'ऐ ज़िन्दगी तुझे सलाम' उपन्यास ट्रांसजेंडर समाज के संघर्ष, पीड़ा तथा उनके अंदर की काबलियत को जहाँ एक ओर चित्रित करता है, वहीं नारी विमर्श की झलक भी हम इस उपन्यास में देख सकते हैं।

'ऐ जिन्दगी तुझे सलाम' उपन्यास तीन भागों में बँटा हुआ है। तीनों भाग अपने आप में महत्वपूर्ण हैं। उपन्यास के पहले भाग का आरंभ एक पगलिया द्वारा बच्ची के जन्म देने से होता है। पगलिया का कोई अपना नहीं था। बच्ची का पिता कौन है किसी को नहीं पता था। किसी ने उसके पागलपन का फायदा उठाया था। यह उसके साथ घटी पहली घटना नहीं थी। इससे पहले भी वह कई बच्चों को जन्म दे चुकी है लेकिन कोई जीवित नहीं थे। इस बार सफाई कर्मचारी रूपा ने पगलिया की मदद की थी। रूपा शास्त्री नगर के लाइनिया में बने क्वाटरों में एक कमरे में रहती है। उसका पति कलुआ (मनोज) रिक्शा चलाता है जो अपनी कमाई शराब पीने तथा जुआ खेलने में लगाता है। उनका अपना बच्चा नहीं है जिसके कारण वे दोनों दुःखी थे। पगलिया के बच्ची को सभी ने अनाथालय में सौंपने का निर्णय लिया क्योंकि पगलिया उस बच्ची का देखभाल नहीं कर सकती थी। पगलिया और बच्ची के देखरेख करनेवाली रूपा का लगाव बच्ची से होता है। रूपा उस बच्ची को गोद लेने का निर्णय लेती है। रूपा कानूनी तोर पर बच्ची को अपनाना चाहती थी। कई लोग उसके इस निर्णय से खुश थे उनका मानना था कि "बड़ा नीक किया रूपा ने..पगलिया के बच्चे को लेकर। उसके पास तो मर ही जाना था उसने।"[74] तो कुछ लोगों में कानाफूसी होने लगी कहीं यह बच्चा कलुआ का तो नहीं है इसीबीच पगली लापता हो जाती है। कलुआ को जब रूपा का इरादा पता चलता है तब वह रूपा पर बहुत गुस्सा होता है। वह बच्ची को रखने से मना कर देता है लेकिन रूपा अपने निर्णय पर अड़िग रहती है। उसकी पड़ोसिन सुभद्रा और बेटी आरती रूपा का साथ देती है।

एक दिन लंगोट बदलते सरस्वती दाई ने बच्ची ट्रांसजेंडर है पहचाना। रूपा ने बच्ची को उठाकर देखा मामूली सा अंतर था इसलिए रूपा जान नहीं पायी थी। रूपा को कलुआ का डर सताने लगा था, पहले से ही कलुआ बच्ची से नफरत करता था। उसे डर था कि बच्ची ट्रांसजेंडर है पता चलने पर कहीं कलुआ बच्ची को पगलिया के यहाँ पटककर न आये। लाइनिया वालों को जब बच्ची का ट्रांसजेंडर होने का पता चला तो सभी ने अफसोस जताया। बच्ची ट्रांसजेंडर है जानने के बाद भी रूपा उसे पालना चाहती है "अब्बे ये हमार बचवा हेय....हमें कौने चिन्ता नाही...!"[75] वह बच्ची का नाम मधु रखती है। कलुआ को जब पता चलता है कि बच्ची ट्रांसजेंडर है तब वह रूपा से बच्ची को पगली के पास छोड़ आने को कहता है पर रूपा नहीं मानती। एक दिन वह बच्ची को लेकर घर छोड़कर चली जाती है। अपनी पत्नी से बेहद प्यार करने वाला कलुआ परेशान हो जाता है। वह रूपा को ढूँढ़ता है। अंत में एक मंदिर में उसे रूपा और बच्ची मिल जाती है। वह रूपा से बच्ची को अपनाने का वादा करके उसे घर वापस ले आता है। कानूनी तौर पर दोनों मिलकर बच्ची को गोद लेते हैं। घर में सुन्दर काण्ड का पाठ रखा जाता है तथा बच्ची का नाम मधु घोषित किया जाता है।

एक दिन रूपा के घर ट्रांसजेंडर टोली मधु को साथ ले जाने आ जाते हैं। रूपा मधु को उनके साथ भेजने को इंकार कर देती है। वहाँ उनकी बस्ती के पढ़े लिखे युवक सुरेश उन्हें पुलिस की धमकी देकर भगाने की कोशिश करता है। अंत में ट्रांसजेंर लोग हार मान वहाँ से लौट जाते हैं। सुभद्रा तथा अन्य लोगों के कहने पर रूपा ट्रांसजेंडरों के अड्डे जाकर गुरु माँ से मिलकर मधु को अपने पास रखने की अनुमति माँगती है। वहाँ से उसे पता चलता है कि उसके घर ट्रांसजेंडर अड्डे से कोई भी नहीं आया था, सभी नकली ट्रांसजेंडर आने के शक को जाहिर करते हैं। कलुआ और रूपा बच्ची को मेले में ले जाते हैं वहाँ से बच्ची को अगवा कर लिया जाता है। सभी के ढूँढ़ने पर भी बच्ची नहीं मिलती पुलीस में रिपोर्ट लिखवाया जाता है इसपर वे व्यंग्य करते

हुए बोलते है "जब अपन पेटजाई नहीं है फिर क्यों इतना रोना पीटना । जैसे इसे गोद लिया...किसी दूसरे बच्चे को गोद ले लेना....इस हिजड़े में क्या रखा है।"[76]

ट्रांसजेंडर रोशनी ने दसवीं कक्षा में पाँच सौ में पाँच सौ अंक लाकर महाराष्ट्र में इतिहास रचा खबर से उपन्यास का दूसरा भाग शुरू होता है। रोशनी की परवरिश ट्रांसजेंडर रज्जों ने की थी। रज्जों से रोशनी को पता चलता है कि उसके माता पिता से लड़की समझकर उसे चुराया गया था जब उन्हें उसके ट्रांसजेंडर होने का पता चला तब उन्होंने बच्ची को ट्रांसजेंडर लोगों को सौंप दिया। रोशनी को रूकसार बेगम ने मुन्ना नाम के आदमी से लेकर निर्मला गुरु को सौंपा था। निर्मला गुरु ने रज्जो को रोशनी की जिम्मेदारी सौंपी थी। रज्जों ने रोशनी को अपनी बेटी की तरह पाला। कभी कोई कमी नहीं छोड़ी उसके परवारिश में। निर्मला गुरु जो नेक स्वभाव की थी, उन्होंने भी रोशनी को पढ़ने को उत्साहित किया। रोशनी पढ़ने में ही नहीं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी अव्वल थी।

पढ़ने में होशियार रोशनी का दाखिला अच्छे स्कूल में होता है। राज्य सरकार ने उसके लिए वजीफे की घोषणा की थी। एक दिन बाहर एक बच्चे ने उसे हिजड़ा पुकारा वह पहला दिन था जब उसने अपने लिए हिजड़ा शब्द सुना था। हिजड़ा शब्द से अंजान रोशनी को रज्जो सब समझाती है। नई कक्षा के दाखिले के प्रपत्र मे उसने लिंग निर्धारण की जगह अपने से अलग कोष्ठक बनाकर अपने लिए हिजड़ा लिखा। कक्षा में विद्यार्थियों द्वारा भी उसका मज़ाक उड़ाया जाता है। स्कूल के शिक्षक रोशनी का सम्मान करते थे उसे आगे बढ़ने का हौंसला देते थे। उसके स्कूल के मास्टरजी ट्रांसजेंडरों की दयनीयावस्था का कारण सभ्य समाज को ठहराते हैं। ट्रांसजेंडरों द्वारा निर्णय लिया जाता है कि वहाँ आनेवाले हिजड़ों की परवरिश अच्छे से की जायेगी ताकि उन्हें आगे अच्छा जीवन मिले।

निर्मला गुरु के डेरे में सोलह ट्रांसजेंडर थे। सभी गाना बजाना, नाचना तथा बधाई देने का धंधा करते थे। वहाँ रानी चाची है जिनका एक पैर एक दुर्घटना में कट गया था। निर्मला गुरु ने उनके लिए डेरे के बाहर परचून की गुमटी लगावा दी थी। रानी चाची अपने माता-पिता की सबसे छोटी बच्ची थी जब उसके बाप को पता चला बच्ची ट्रांसजेंडर है तो वह अस्पताल में ही बच्ची को ज़मीन पर पटकनेवाला था लेकिन डॉक्टर और नर्स ने रोक दिया। उसके माँ ने बाप के डर से उसे नाना नानी के पास भेजा लेकिन मामा की क्रूरता के कारण अंत में माँ ने उसे ट्रांसजेंडर मंडली के पास छोड़ दिया, ताकि वह जिन्दा रह सके। पहले रानी चाची कलकत्ता के अड्डे में रहती थी वहाँ बहुत यातनाएँ उसे सहनी पडीं फिर वे बाम्बे आ गई। नविता रोशनी की सबसे नजदीकी दोस्त थी। वह रोशनी के सुख दुख में साथ रहती थी। निर्मला गुरु भी रोशनी की खुशी चाहती थी वह रज्जो से बोलती है "हम लोगों के भाग्य में कोई सुख तो बदा नहीं। रोशनी को जितना मिल जाये उसका नसीब।"[77]

ट्रांसजेंडरों के सम्मेलन में भाग लेने रज्जो मौसी तथा निर्मला गुरु जाती हैं, दुर्भाग्यवश वहाँ ऐक्सीडेंड़ में उन दोनों की मौत हो जाती है। रोशनी को बहुत बड़ा सतमा लगता है। डेरे की गुरु सुलताना बनती है। वह पहले से ही रोशनी को पसंद नहीं करती थी। रोशनी के प्रति उसका व्यवहार क्रूर था, वह रोशनी से कमाई का हिस्सा रोज देने को कहती है। रोशनी के पक्ष में जो कहता वह सुल्ताना का दुशमन बनती। सुल्ताना ने रानी चाची को रोशनी के पक्ष में कहने पर कहीं दूर ठिकाना लगा दिया था लेकिन रोशनी हार माननेवाली नहीं थी। उसने सुल्ताना का डटकर विरोध किया तथा आगे पढ़ने लगी। स्कूल के अध्यापक एवं दोस्तों ने उसे धमकी दी, जिससे सुल्ताना डर गई थी आगे उसने रोशनी के पढ़ने में रुकावट नही पैदा की।

उपन्यास के तीसरे भाग में रोशनी और नविता लोकसेवा आयोग की परीक्षा में विजयी होती हैं। रोशनी को चौथा रैंक मिला वह डी.एम.बन गई तथा नविता पुलिस अधीक्षक बनी। सरकारी कार्यालय में भी रोशनी को ट्रांसजेंडर होने के कारण अवहेलना का शिकार होना पड़ता है। रोशनी जीजान से अपना काम करती थी। इसीबीच नविता की शादी होती है। शादी में नविता की बुआ रोशनी से कहती है "तुम्हारे आशीर्वाद दिए बिना यह रस्म अधूरी रह जायेगी। यह तो अच्छा हुआ तुम यहाँ मौजूद ही हो...लगे हाथ इसे भी कर दो....।"[78] यह सुन रोशनी बहुत दुःखी होती है। रोशनी को अपने प्रेमी अक्षत समाधिया का ख्याल आता है जो स्नातक के प्रथम वर्ष में उसके क्लास में पढ़ता था। वह रोशनी को साधारण लड़की मानकर उसकी तरफ आकर्षित होता है लेकिन जब उसे रोशनी की असलियत पता चलता है तब वह रोशनी को छोड़कर चला जाता है।

रोशनी अपनी सहेली नविता की मदद से अपने माता-पिता को खोजती है। पुलिस की सहायता से उसे पता लगता है कि उसे रूपा तथा मनोज ने गोद लिया था। वह पुलिस के साथ अपने गृहनगर कानपुर के लाइनिया बस्ती में जाती है। वहाँ सुभद्रा चाची से उसे पता चलता है कि मनोज मर चुका है तथा रूपा बच्ची के खो जाने पर पागल हो गई थी। अब वह कहाँ है किसी को पता नहीं था। रोशनी समाचार पत्र में अपने माँ की खोज की खबर देती है। समाचार पत्र में एक ट्रांसजेंडर नवजात शिशु को किसी के द्वारा गंदेनाले के पास झाडियों में फेके जाने की खबर रोशनी पढ़ती है। उसका मन विह्वल हो उठता है तथा वह उस बच्चे को गोद लेने का निर्णय लेती है। इसके साथ उपन्यास का अंत होता है।

यह उपन्यास ट्रांसजेंडर जीवन का दस्तावेज है। उपन्यासकार ने मनोवैज्ञानिकता का सहारा लेकर इस कथा को आगे बढ़ाया है। मानवीय संवेदनाओं के विभिन्न पहलुओं को हम इस उपन्यास में देख पाते हैं।

3.14. मंगलामुखी

ट्रांसजेंडर समाज पर केंद्रित 'मंगलामुखी' उपन्यास डॉ. लता अग्रवाल द्वारा लिखा गया है। डॉ. लता अग्रवाल हिन्दी के वरिष्ठ साहित्यकार एवं शिक्षाविद हैं। उन्होंने साहित्य के अनेक विधाओं में अपनी लेखनी चलाई हैं। 'मैं बरगद', 'आँचल', 'सिसकती दास्तान', 'हस्ताक्षर हैं पिता' आदि उनकी प्रमुख कविता संग्रह हैं। उनके द्वारा लिखित बाल साहित्य में 'असर आपका', 'मुझे क्यूँ मारा? मेरा क्या कुसूर?', 'पुस्तक मित्र महान', 'मुस्कान' आदि प्रमुख है। उनका कहानी संग्रह है 'सिंदूर का सुख', 'साँझी बेटियाँ'। 'मूल्यहीनता का संत्रास', 'गांधारी नहीं हूँ मैं', 'तितली फिर आएगी', 'लकी हैं हम' आदि उनके द्वारा रचित लघुकथा संग्रह हैं। 'लघुकथा का अंतरंग' लताजी का साक्षात्कार संग्रह है। 'पयोधि हो जाने का अर्थ', 'उत्तर सोमारू' उनकी समीक्षा है। इसके अलावा अन्य कई विधाओं में उन्होंने अपनी लेखनी चलाई है तथा संपादन कार्य भी किया है। उनका मंगलामुखी उपन्यास ट्रांसजेंडर समाज के लोगों के सुख दुःख एवं उनमें कूट कर भरी मानवता तथा उनके रिश्तों को निभाने की लालसा को दिखाता है और साथ ही यह उपन्यास आम इंसान कहे जाने वाले वर्ग के धोखा, फरेब, क्रूरता आदि को भी उजागर करता है।

इस उपन्यास में शकुन नारी समाज का प्रतिनिधित्व करती है। वह अपने प्रेमी द्वारा ठगी जाती है। उसका प्रेमी उसे गर्भवती बनाकर भाग जाता है। घरवालों द्वारा बहिष्कृत शकुन तालाब में कूदकर आत्महत्या करने की कोशिश करती है। सभ्य समाज के स्त्री एवं पुरुष जब ये हादसा देखते रहते हैं तब भुजरिया पर्व में भाग लेने आये ट्रांसजेंडर टोली का छंगा अपनी जान की परवाह किये बगैर तलाब में कूदकर शकुन को बचाता है। पानी में भीगे छंगा के अधूरे शरीर को देख जब वहाँ उपस्थित लोगों द्वारा हँसी उड़ाया जाता है तब शिल्पा गुरु कहती हैं "अरे। मर्द के जनों। हम

तो हैं ही अधूरे...बड़ी मर्दानगी है न तुममें फिर काहे नहीं कूदे...हम भी देखते तुम्हारा...।"[79] बेसहारा शकुन को ट्रांसजेंडर मंडली के लोग सहारा देते हैं। वे शकुन को अपने साथ अपने डेरे ले जाते हैं। उनके डेरे में आई गर्भवती शकुन का वहाँ सभी बहुत ख्याल रखते हैं।

गुरु को शकुन गुरु माँ पुकारती थी, एक माँ के समान वह शकुन तथा उसके पेट में पल रहे बच्चे की देखरेख करती थी। उन्होंने शकुन को बच्चे के जन्म तक उसकी देखभाल करने का वादा किया था, लेकिन उसके बाद की बात को सोच वह बेचैन हो जाती है। वह ट्रांसजेंडर मंडली में सभी के साथ घुल मिल गई थी। वहाँ ट्रांसजेंडर सिमरन से शकुन को पता चलता है कि सिमरन के माता पिता ने समाज के डर से उसे उसके दादी के यहाँ भेज दिया था। सिमरन देखने में बहुत सुन्दर थी। गाँव का लड़का हरी उससे प्यार करता था। जब वह तेरह साल की थी तब उसने घर छोड़कर भागकर हरी से शादी कर ली थी। सुहागरात को हरी को पता चलता है कि वह ट्रांसजेंडर है। सच्चाई जानकर हरी उसपर बहुत गुस्सा होता है। खुद तब तक सिमरन को भी पता नहीं था कि वह ट्रांसजेंडर है। डॉली उर्फ सिमरन को हरी ने उस रात ही घर से धक्का मार निकाल दिया। रात को रास्ते में खड़ी सिमरन को कुछ लोगों ने सहारा देने का वादा करके सुनसान जगह ले जाकर उसका शारीरिक शोषण करके उसके ट्रांसजेंडर होने का मज़ाक उड़ाया। डाली से सिमरन बनी वह आज भी हरी के नाम का सिंदूर लगाती है। आज भी वह हरी को अपना सुहाग मानती है।

इस उपन्यास का प्रमुख पात्र महेन्द्री भी ट्रांसजेंडर होने के कारण पीड़ित है। महेन्द्री हमेशा शकुन से नाराज़ रहती थी। यह नाराज़गी शकुन के प्रति नहीं बल्कि उसके समाज के प्रति था। स्कूल में पढ़ने में होशियार महेन्द्री को ट्रांसजेंडर होने के कारण स्कूल से नाम कटवाना पड़ा। ट्रांसजेंडर मंडली को जब मणि उर्फ महेन्द्री के बारे में पता चला तब वे उसे अपने साथ ले आये। शिल्पा गुरु की भी अपनी दर्दनाक कहानी है। उसके माता पिता उससे बहुत प्यार करते थे। उसे

सभी से छुपाकर घर में रखा गया, लेकिन उसके शारीरिक बदलाव ने सभी को सूचना दे दी कि वह सामान्य नहीं है। पिता के आकस्मिक मौत के कारण वह अकेली पड़ गई। उसके भाई-बहन उससे नफरत करते थे। माँ की भी मृत्यु हो जाने पर वह घर छोड़कर ट्रांसजेंडर समाज में आकर शामिल हो जाती है। बहन की शादी की खबर सुनकर वह जब वहाँ पहुँचती है तब बहन उससे वहाँ से जाने को कहती है, लेकिन दूसरी ओर गुरु का मुँह भोला भाई उससे बहुत प्यार करता है। वह अपनी शादी के सालगिरह पर उसे न्यौता भी भेजता है। शकुन को अपने जान से खेल कर बचानेवाला छंगा के ट्रांसजेंडर होने की वजह से उसकी दोस्त राधिका ने उससे दोस्ती तोड़ दी थी। इस उपन्यास में ट्रांसजेंडर मंडली के रीतिरिवाज़ का भी वर्णन किया गया है। वहाँ सभी अपनी कमाई का हिस्सा गुरु को देते तथा गुरु सभी से प्राप्त हिस्सा तथा अपनी कमाई का हिस्सा अपनी कुल देवी के नाम पर अलग कर रखते थे। डेरे में सभी एक साथ बड़े स्नेह से रहते थे। उनके बीच दादी, बुआ, ताई,चाची, देवरानी आदि कई रिश्ते थे। वे आपस में अपना सुख-दुःख बाँटते थे। डेरे की शालिनी बुरे संगत में पड़कर पैसा कमाने के लिए देह-व्यापार करने लगी थी जिसका विरोध गुरु ने किया था। उपन्यास में लंगड़ा रमुआ बुचरा ट्रांसजेंडर है, उसके पैदा होने के दो तीन दिन बाद उसके घरवालों ने उसे कचरे में फेंक दिया था जहाँ जानवरों ने उसका एक पाँव खा लिया, वहाँ से उठाकर गुरु माँ ने उसे पाला पोसा।

ट्रांसजेंडर मंडली के सभी जब कुलदेवी की पूजा के लिए जाते हैं तब शकुन की देखरेख दादी को सौंपा जाता है। जाते वक्त गुरु को शकुन की चिंता सताती है वह शकुन से अपने सेहत का ध्यान रखने को कहती है "हाँ! री मुझे भी तेरी चिंता लगी रहेगी। तू बस कुछ उठा पटक मत करिया...नई तो लगे ऊपर चढ़कर सफाई करने। मैं तेरे बच्चे के लिए दुआएँ बटोर कर लाऊँगी, मालिक करे मेरी उम्र भी बच्चे को लग जाए।"[80] शकुन के प्रति गुरु माँ को वात्सल्य था। कुलदेवी की पूजा कर लौटते वक्त एक दुर्घटना में शिल्पा गुरु की मृत्यु हो जाती है। मरने से पहले

शिल्पा गुरु महेन्द्री से शकुन की देखरेख अच्छे से करने का वचन लेती है। गुरु माँ के चल बसने पर शकुन को बड़ा दुःख होता है। महेन्द्री गुरु बनती है वचन के अनुसार महेन्द्री शकुन का देखभाल अच्छे से करती है, उसको कोई कमी महसूस होने नहीं देती।

शकुन का गोद भराई रस्म मनाया जाता है। शकुन को बेटी पैदा होती है। अस्पताल में जन्म प्रमाणपत्र में बच्ची के पिता के नाम की जगह महेन्द्री महेन्द्र लिखवाता है, तब से महेन्द्री शकुन की बेटी अनुपमा का पिता बन जाती है। महेन्द्री अनु के लिए स्त्री वेश को उपेक्षित कर कमीज और पायजामा पहनकर मर्द की तरह रहने लगी। वह बच्ची से बेहद प्यार करती थी अनुपमा महेन्द्री को पापा बुलाती थी। ट्रांसजेंडर मंडली में सभी बच्ची को बहुत चाहते थे। शकुन को स्कूल में नौकरी मिलने पर वह डेरे के पास किराये मकान में रहने लगी थी। शकुन जब स्कूल जाती बच्ची को डेरे पर छोड़ जाती, वहाँ सभी उसका देख-भाल करते। शकुन को मकान में अकेले रहते देख रात को लोगों ने उसे तंग करना शुरू कर दिया, इसपर ट्रांसजेंडर मंडली के लोगों ने उसकी मदद की। शकुन सिलाई का काम भी करने लगी थी। अनुपमा पढ़ने में होशियार थी। बड़ी होने पर शकुन ने महेन्द्री की सच्चाई अनुपमा को बताया तब अनुपमा ने सहर्ष सभी को स्वीकार किया। जब अनुपमा को पता चलता है कि महेन्द्री बचपन में IAS बनना चाहता था, तब अनुपमा अपने पिता के सपनों को साक्षात्कार करने के लिए IAS बनने को ठान लेती है। इसके लिए वह जी तोड़ मेहनत करती है और अपने प्रदेश में दूसरी रेंक प्राप्त करती है। मीड़िया वाले जब उसके इंटरव्यू के लिए आते हैं तब वह अपने पापा महेन्द्र का परिचय सभी से करवाती है, उसका मानना है जो मुकाम उसने हासिल की है उसके पीछे उसके माँ और पापा का हाथ है। वह गर्व के साथ मीड़ियावालों से अपने पापा के बारे में कहती है "मुझे माँ की कोख में डालनेवाला कायर इंसान था। मगर मेरी परवरिश करनेवाला इंसान बेहद सच्चा है और वो सच्चे-अच्छे इंसान है 'मेरे पापा'।"[81]

अनुपमा का शिक्षामंत्री द्वारा आदर करने के लिए आयोजित कार्यक्रम में महेन्द्री भी साथ जाती है। वहाँ अनुपमा के साथ महेन्द्री का भी सम्मान किया जाता है। अनुपमा ट्रांसजेंडर लोगों के लिए काम करना चाहती है। उसका कहना है "अगर आप सपने की बात करती हैं तो बस एक ही सपना देखा है अभी जिसे हर हालत में पूरा करना है। मैं ट्रांसजेंडर के लिए काम करना चाहूँगी उन्हें लाचारी का कोई भय न सताए। उनके हुनर को भी तराशने का मौका मिले। हमारा देश तो कला का पुजारी रहा है, जिस तरह यहाँ विभिन्न संस्कृतियों का सम्मान किया जाता है। उसी तरह बधाई देने की परंपरा भगवान राम और कृष्ण के समय से चली आ रही। अतः इस परंपरा को सम्मान से देखा जाना चाहिए। इसके अलावा यदि किसी में कोई अन्य हुनर है तो उसे अपनी हुनर दिखाने का अवसर मिलना चाहिए।"[82]

लता अग्रवालजी ने इस उपन्यास के माध्यम से ट्रांसजेंडर समाज के लोगों में अंर्तनिहित मानवीय मूल्यों को उजागर किया है। इस उपन्यास में जहाँ मानव होने का दंभ रखनेवाले सभ्यसमाज के लोगों में मनुष्यता न के बराबर है, वहाँ समाज के हाशिएकृत ट्रांसजेंडर लोगों में मानवीय संवेदना हम देख पाते हैं। यह उपन्यास ट्रांसजेंडर लोगों के प्रति हमारी नकारात्मक सोच बदलने को प्रेरित करती है, इस अमंगलकारी दुनिया में सच में ये मंगलमुखी ही हैं।

3.15. मेरे होने में क्या बुराई है

रेनू बहल द्वारा लिखित 'मेरे होने में क्या बुराई है' उपन्यास अपनों द्वारा तथा समाज से तिरस्कृत एवं उपेक्षा और अमानवीयता का दंश झेल रहे ट्रांसजेंडर समाज के लोगों की दर्दनाक गाथा है। ट्रांसजेंडर होने के कारण ये लोग अपनों के लिए बोझ बन जाते हैं। अपनों के बीच में रहकर भी कोई इन्हें अपना नहीं समझता। समाज के अपमान के भय से या तो इन्हें घरवाले घर से बेदखल कर देते हैं, नहीं तो ये खुद ही अपनी राह तलाश लेते हैं। मेरे होने में क्या बुराई है रेनू

बहल की नवीनतम उपन्यास है। इसके अलावा उन्होंने कई उर्दू कहानी संग्रह लिखे हैं, जिसमें 'कोई चारासाज होता', 'आंखों से दिल तक', 'दस्तक', 'खुशबू मेरे आंगन की', 'आईना', 'बदली में छिपा चांद', 'खामोश सदाएं' प्रमुख हैं। 'कस्तूरी' इनकी हिन्दी कहानी संग्रह है।

शेखर उर्फ शिखा अपने परिवारवालों से बहुत प्यार करती है। शेखर के शिखा बनने के बाद उसके परिवारवालों ने उससे सारे संबंध तोड़ दिए इसके बावजूद उनके प्रति शिखा का प्यार और लगाव कम नही हुआ, इसीलिए माँ के बीमार होने पर जब उन्हें अस्पताल में दाखिल किया गया तब शिखा उनसे मिलने पहुँच जाती है। शिखा का अस्पताल में आकर माँ से मिलना उसके छोटे भाई को भाता नहीं। बहुत सालों बाद जब वह अपनों से मिलती है तब उसे लगता है कि उसके बाबा उसे गले से लगाकर उससे उनसे अलग करने के लिए माँफी माँगेंगे लेकिन ऐसा कुछ नहीं होता, उनके लिए बेटा का दर्द समाज के डर से बड़ा नहीं था। शिखा अस्पताल के वार्ड ब्वाय को पैसा देकर अपनी माँ की खबर लेती रहती है।

शेखर उर्फ शिखा के पिताजी नारायणदत्त तिवारी के यहाँ बड़ी बेटी रुकमनि के जन्म के तीन साल बाद बड़ी मन्नतों के बाद शेखर का जन्म हुआ था। उसके जन्म के चार साल बाद उसके भाई ललित का जन्म होता है। सात साल की उर्म में ननिहाल में एक शादी के दौरान उसके दूर के मामू द्वारा उसका शारीरिक शोषण होता है। उस क्रूर मामू ने उसे धमकी दे रखी थी कि अगर किसी को इस बारे में वह बताया तो उसके अम्मा को वह मार डालेगा। इसी भय के कारण वह चुप्पी साधे रहा, उसके बेबसी का फायदा उठाकर उस आदमी ने कई बार उसका शोषण किया। आठवीं कक्षा तक पहुँचते उसमें शारीरिक बदलाव दिखाई देने लगा। मोहल्ले और स्कूल के बच्चे उसे छक्का कहकर छेड़ते थे तथा उसका मज़ाक उड़ाते थे। वह चोरी छिपे अम्मा की कपड़े पहनता, श्रृंगार करता। बचपन से ही उसकी रुचि नृत्य के प्रति था। वह स्कूल के कार्यक्रमों

में नाचता उसके पिताजी को उसका नृत्य करना पसंद नहीं था । उसके घरवाले उससे डांस छुडवाना चाहते थे लेकिन डांस छोड़ना उसके लिए आसान नहीं था, वह अपने अंदर की बेचैनी तथा दुःख को इसी के माध्यम से भूल जाता था।

कॉलेज में भर्ती होने पर उसने डांस अकेडमी में डांस क्लास लेना आरंभ किया तथा कॉलेज के करीब एक डांस बार में वह काम भी करने लगा। इन दो जगहों से उसे जो पैसा मिलता उससे वह अपना शौक पूरा करता। डांस बार में उसकी मुलाकात ट्रांसजेंडर सितारा से होता है। सितारा का बचपन का नाम नूरा था। वह गरीब परिवार से थी। उसके पिताजी बाजार में सब्जी की रेहड़ी लगाता था। उसके दो बड़े भाई थे। जब वह आठ नौ साल का हुई उसमें शारीरिक बदलाव आना शुरु हुआ। सभी उसका मज़ाक उड़ाते थे। अपने खुद के बेटे से तंग आकर उसके बाप ने उसके हाथ सौ रुपये थमाकर धक्का देकर उसे घर से बाहर निकाल दिया। घर से निष्कासित होने के बाद वह दूसरे शहर आकर ट्रांसजेंडर समाज में शामिल हो गई और नूरा से सितारा बन गई। फिर वह डांस बार में काम करके, देह का धंधा करके अपना गुजारा चलाती है। अपने घरवालों को देखने की चाहत उसमें है लेकिन वहाँ जाने की हिम्मत नहीं।

शेखर अपने अंदर के अस्तित्व को छुपाकर चैन से जी नहीं पा रहा था "मुझे अब आज़ादी के साथ जीना है। मैं औरत हूँ, मर्द के बदन में कैद। मुझे आज़ादी चाहिए, पूर्ण औरत होने की।"[83] वह सितारा की सहायता से उसके ट्रांसजेंडर टोली में शामिल होता है। वहाँ गुरु चारूलता उसे जोग जन्म साड़ी देकर उसका दिल्लीवाले घराने में स्वागत करती है। उसे लोगों की खुशामद कर पैसा निकलवाने की ट्रेनिंग दी जाती है। सितारा शेखर को बताती है सात बार बधाई पर जाने पर ही उसे पूरी तरह ट्रांसजेंडर कबूल किया जायेगा। शेखर के शगुन के बाद उनके कबीले में जश्न मनाया जाता है। शेखर निरवाना करना नहीं चाहता था इसलिए वह रस्म नहीं

हुआ। शेखर अब शेखर से शिखा बन गई थी। वह अब सितारा के घर के करीब किराये का घर लेकर रहने लगी। ट्रांसजेंडर टोली में शामिल होने के कारण उसके घरवाले उसपर नाराज़ थे। जब वह घरवालों से मिलने गई तब पिता ने उसे उनकी नजरों से दूर चले जाने को कहा फिर वह घर वापस नहीं गई। अपने घर से दूर रहने पर भी वह घरवालों की खबर पता करती रही।

शिखा बधाई में जाकर अन्य ट्रांसजेंडर की तरह पैसा कमाना नहीं चाहती थी। शिखा ने अपनी डांस अकेडमी को विपुल बनाया। वहाँ अच्छे डांस उस्ताद रखे गये तथा वह भी वहाँ हर दिन दो घंटे क्लास लेती थी। बाकी समय वह ट्रांसजेंडर समुदाय के लगों की ज़िन्दगी में सुधार लाने के लिए कार्य करती थी। शिखा ने ऑपरेशन द्वारा सीने में उभार लाया, वह औरतों जैसे ही सुन्दर दिखने लगी। शिखा अपनों जैसे लोगों की शिक्षा, स्वास्थ्य और उनके अधिकार के लिए काम करती थी। वाइल्ड लाइफ फोटोग्राफर राशिद के साथ उसका प्रेम का संबंध बनता है। राशिद शिखा का सहारा बन गया था। शिखा अपने हर सुख दुःख उससे बाँटती थी। जब राशिद काम के सिलसिले बाहर जाता तो वह अकेले पड़ जाती थी। राशिद की सहायता से सरकार से उन्हें एक सेंटर खोलने की इजाजत मिली और उसके लिए आर्थिक सहायता भी मिल गई। बहुत सारे ट्रांसजेंडर इस सेंटर से जुड़े, ट्रांसजेंडरों को यहाँ शिक्षा दी गई। कई डॉक्टर तथा टीचर लोगों ने शिखा के इस पुण्य काम में साथ दिया। सभी ट्रांसजेंडर इस संस्था से जुड़ने के कारण गुरु माँ शिखा से नाराज़ होने लगी। राशिद अपने दोस्तों के साथ मिलकर ट्रांसजेंडर लोगों के लिए एन. जी. ओ बनाने की कोशिश करता है। शिखा अपने गम को भूलाने के लिए नशा करती थी, जो राशिद को पसंद नहीं था।

सितारा एड्स से पीड़ित होने की वजह से खुदखुशी कर लेती है। अपने करीबी दोस्त के मरने पर शिखा बहुत दुःखी होती है। शिखा दृढ़ निश्चय करती है कि, चाहे उसे किसी का भी

विरोध सहना पड़े लेकिन वह अपनी बीमार पड़ी माँ से मिलेगी। उसके दृढ़ निश्चय के आगे सभी झुक जाते हैं। पिताजी भी उसे घर आकर माँ से मिलने की अनुमति दे देते हैं। शिखा चाहती है कि राशिद अपनी ममेरी बहन निगहत से शादी करके घर बसाएँ लेकिन राशिद इसके लिए मना कर देता है। शिखा अपनी संस्था में ट्रांसजेंडरों को टेक्नीकल काम सिखाने की योजना बनाती है जिससे वे रोजी रोटी कमा सके। शिखा के साथ बहुत लोग जुड़ते हैं। शिखा का मानना है, अगर उन जैसे लोगों को घरवालों का सहारा मिल जाए तो दुनिया की हर मुश्किलों का सामना वे कर सकते हैं। उनकी बहुत सारी परेशानियों दूर हो सकती है।

यह उपन्यास ट्रांसजेंडर समाज के त्रासदीपूर्ण कटु जीवन के यथार्थ का चित्रण करने के साथ ही उनके रीति रिवाज़, विश्वास आदि को भी प्रस्तुत करता है। उपन्यास के अंत में शेखर उर्फ शिखा को घर से बहिष्कृत करनेवाले परिवार वाले उसे स्वीकार कर लेने के साथ उपन्यास का अंत सकारात्मक रूप से होता है। उपन्यास का शीर्षक हमें सोचने पर मजबूर कर देता है कि ट्रांसजेंडर रूप में जन्म लेने में आखिर उनका क्या दोष है। उपन्यास के पढ़ने के बाद यह सवाल हमारे मन को कचोटने के साथ ही साथ उनके प्रति हमारे मन में सकारात्मक सोच पैदा कर देती है।

3.16. वह

श्रीगोपाल सिंह सिसोदिया 'निसार' जी ने ट्रांसजेंडर समाज को मुख्यधारा में लाने के प्रयास हेतु लिखा गया एक उपन्यास है 'वह' । श्रीगोपाल सिंह सिसोदिया जी 'इंडियन एसोसिएशन ऑफ द ब्लाइंड' तथा 'प्रणेता साहित्य संस्थान', दिल्ली के संस्थापक हैं। उन्होंने पाँच कहानी संग्रह, एक लघुकथा संग्रह और दो उपन्यासों की रचना की हैं। सर्वनाम युक्त शीर्षक 'वह' उपन्यास ट्रांसजेंडर अंजू, कोमल, रविंदर, सलीमा, रानी, रज़िया, सुमन जैसे अन्य ट्रांसजेंडर लोगों की संघर्षमय जीवन को प्रस्तुत करती है और साथ ही राजेन्द्र, नवलकिशोर जैसे क्रूर इंसान

जो ट्रांसजेंडर को अपना हवश का शिकार बनाने से नहीं चूकते उनके मानसिक विकृतियों को भी पेश करती हैं। दूसरी ओर तप और उसकी पत्नी आरती तथा तप का दोस्त निशांत और उसकी पत्नी, जो ट्रांसजेंडर समाज के उन्नति के लिए कार्य करते हैं उसका भी चित्रण है।

यह उपन्यास तप के माध्यम से आगे बढ़ता है। तप इंदोर में आयकर विभाग में क्लर्क है लेखन कार्य में शौकिन घुमक्कड़ प्रवृत्ति के तप को आगरा में फतहपुर सीकरी देखकर लौटते वक्त दो आदमियों ने पैसा हासिल करने के लिए पकड़ लिया। लूटपात के दौरान जख्मी तप की सहायता अंजू नामक ट्रांसजेंडर करती है। जख्मी तप की सहायता करने जब अंजू तैयार होती है, तब वहाँ उसके परिचयवाले दूधवाले भैया उससे कहते हैं कि मर्डर का मामला है पुलिस फँसा देगी लेकिन वह अपने इरादे से पीछे नही हटती वह कहती है “अब जो होगा सो देखा जाएगा, मगर अपने फंसने के डर से किसी को मरते हुए तो नहीं देखा जा सकता ना?”[84] अंजू दूधवाले भैया की सहायता से तप को अपने झुग्गी तक पहुँचाती है तथा उसकी देखभाल करती है।

तप का अपना कहनेवाला कोई इस दुनिया में नहीं था। बचपन में माता पिता के मरने के बाद उसे ताऊ और ताई के पास भेजा गया लेकिन वहाँ ताऊ और ताई उसे मारने का षड़यंत्र रचते हैं, जिसके कारण वह वहाँ से भागकर अपने दादाजी के परिचित व्यक्ति मदनलालजी के यहाँ पहुँचता है। दयाशील स्नेहमयी मदनलालजी और उनकी पत्नी तप को अपने घर रखते हैं तथा उसकी पढ़ाई की व्यवस्था करते हैं। जब हृदयाघात के कारण मदनलालजी का देहांत होता है तब उनका बेटा जिसे तप पसंद नहीं था घर से बाहर कर देता है। तप ट्यूशन लेकर गुजरा करता है अंत में उसे आयकर विभाग में नौकरी मिल जाती है। अंजू तप की देखरेख अच्छी तरह करती है। अंजू अपनी कहानी तपको बताती है कि उसका जन्म भोपाल के प्रतिष्ठित वैश्य परिवार में हुआ था। उसके पिताजी बहुत बड़े व्यापारी थे, उनकी कई आटे और तेल की मिलें थी। उन्होंने कई

कोठियाँ किराये पर दे रखी थी। अंजू के पिताजी ने अपने कॉलेज की सहपाठिनी से विवाह किया था। अंजू के माता पिता के चार संताने थी। पहले दो लड़कियाँ थी जब अंजू पैदा होनेवाली थी तब उसके माता पिता ने बेटा पैदा होने के लिए पूजा पाठ तथा दान सब किया था लेकिन उनकी मनोकामना पूरी नहीं हुई फिर घर में बेटी ही पैदा हुई। जिसके दुःख के कारण उसके पिताजी उसके जन्म लेते ही कई सप्ताह के लिए बिज़नेस टूर पर चले गये थे।

लगातार बेटियाँ पैदा करने के कारण अंजु की दादी और बुआएँ उसकी माँ को कोसती रहती थीं। वे लोग उसके पिताजी का दूसरा विवाह करवाना चाहते थे लेकिन जिसके लिए पिताजी तैयार नहीं थे। एक बार तो दादी ने बच्ची अंजू को नौकरानी के हाथ सौंपकर उसे दूर फेंक आने को कह दिया था। यह मामला पुलिस तक चला गया, नौकरानी पकड़ी गई दादी का पुल खुल गया और दादी को अपमान सहना पड़ा। वह बीमार पड़ गयी तथा जल्दी ही चल बसी। तब से अंजू के पिता उससे ज्यादा घृणा करने लगे। पिताजी बड़ी बहनों को ज्यादा प्यार करते थें। इसीबीच अंजू की माँ ने फिर एक बच्ची को जन्म दिया। अंजू को सबसे चाहने वाले दादाजी के गुजरने पर उसे बहुत दुःख हुआ।

उम्र के बढ़ने पर अंजू के चाल तथा हाव-भाव में परिवर्तन आने लगा। उसकी बहनें तथा सहपाठी उसे चिढ़ाते थे। उसके साथ लड़कियाँ खेलना नहीं चाहती थी तथा अध्यापिकाएँ अजीब से नज़र से उसे देखती थीं। अंजू का शारीरिक विकास लड़कियों की तरह नहीं होने कारण उसकी माँ उसे लेकर स्त्री विशेषज्ञ चिकित्सक के पास जाती है। जननाँगों की जाँच के बाद उन्हें पता चलता है कि अंजू ट्रांसजेंडर है। माँ ने जब पिताजी से सारी बातें कहीं तो वे बहुत दुःखी हुए। उन्होंने तय किया कि वे सच्चाई किसी को नहीं बतायेंगे। उसकी बड़ी बहन ने पिताजी से कहा कि वह अंजू के साथ नहीं रहेगी। अंजू की सच्चाई का धीरे-धीरे सबको पता चल गया। कक्षा के

छात्रों ने उसके साथ बैठने से इंकार कर दिया था। एक दिन तो प्रधानाचार्य ने उसे बुलावाकर बाकी अध्यापिकाओं की मौजूदगी में उसके कपड़े उतरवाकर उसकी जाँच की और उसका उपहास कर उसे डाटाँ भी। उसका वस्त्र उसके ऊपर फेकते हुए अध्यापिका कहती है "ले पहन अपनी ड्रेस और अब से तू स्कूल कभी मत आना। चल अब भाग यहाँ से।"[85] तब से उसका स्कूल जाना बंद हो गया। घर में उसकी पढ़ाई की व्यवस्था की गई। इंटर तक वह आगे पढ़ी।

घर में कोई उत्सव होता तो उसे कमरे में बंद कर दिया जाता था। अपनी बहन की सगाई के समय, सगाई देखने की प्रबल इच्छा के कारण वह कमरे से बाहर निकली, लेकिन तब लड़के के पिता को पता लग गया कि लड़की की बहन ट्रांसजेंडर है। जिस कारण उन्होंने सगाई करने को इंकार कर दिया और अंजू के पिता को खूब गालियाँ देकर वहाँ से वे लोग चले गये। उस दिन बहनों ने उसे खूब डाटा, माँ ने मारा तथा पिताजी ने घृणा से उसे देखा तक नहीं। बहन की सगाई टूटने पर उसके ट्रांसजेंडर होने की खबर शहर में फैल गई। ट्रांसजेंडरों को जब इसका पता लगा वे उसे अपने साथ ले जाने आ पहुँचे। माँ ने उसे उनके साथ भेजने का विरोध किया लेकिन बाकि सभी ने अंजू को ट्रांसजेंडरों के साथ भेजना ही उचित समझा। अंजू को ट्रांसजेंडर लोग अपने साथ ले गये तथा उन्होंने अपने समाज में उसे शामिल किया। उसे नाच गाने की ट्रेनिंग दी गई, उसका चुनरी रस्म मनाया गया। वहाँ उसपर शारीरिक तथा मानसिक अत्याचार भी उन्होंने किया। अंजू को कोमल नाम की बूढ़ी ट्रांसजेंडर के निगरानी में रखा गया जोकि भली तथा स्नेहमयी थी। अंजू तप को कोमल की कहानी बताती है कि कोमल अपने माता पिता के संतानों में सबसे छोटी थी वे बहुत गरीब थे। कोमल को अक्सर गाँव के लोंडेबाज ज़मीनदार के हवश का शिकार बनना पड़ता था। इसके बदले उसे पैसा दिया जाता था जिससे उसके घर की आर्थिक तंगी दूर हुई। ज़मीनदार जब गाँव से शहर जाता तो कोमल को भी अपने साथ ले जाता इसके बदले वह उसके घरवालों को रोज़ एक रुपया देता था। वहाँ शहर में ज़मीनदार के दोस्तों ने भी उसे हवश का

शिकार बनाया। ज़मीनदार तथा उसके दोस्तों ने मोज मस्ती के लिए ट्रांसजेंडर रजिया तथा सुमन को भी लाया। रजिया और सुमन के सहारे वह ज़मीनदार के चंगुल से भाग ट्रांसजेंडरों के डेरे में पहुँचती है। वहाँ उसका लिंगाच्छादन कर उसके पुरुषत्व को मिटाकर गुरु मां बहिदा उसे पूर्ण ट्रांसजेंडर बनाती हैं। गुरु के मरने के बाद कोमल अपने विचारधारा के ट्रांसजेंडरों के साथ कानपूर आ गई।

इस उपन्यास में ट्रांसजेंडर होने के कारण, चिकित्सा सुविधा से किस प्रकार इन्हें वंचित किया जाता है इसका भी चित्रण है। कोमल की सहेली रानी को जब तेज बुखार होता है तब अस्पताल ले जाने को तँगा बुलाने पर भी तांगेवाले आने को तैयार नहीं होते अंत में किराया पहले देने के शर्त पर तांगेवाला राज़ी होता है। नर्सिंग होम ले जाने पर गार्ड अंदर उन्हें घुसने नहीं देते, तथा डॉक्टर ट्रांसजेंडरों को देख कहलवा देता है कि डॉक्टर नहीं है। वहाँ से उसे सरकारी अस्पताल ले जाया जाता है वहाँ डॉक्टर बिना इलाज किए दवाई लिखता है। डॉक्टर उसे ऐसे घूरता है जैसे वह कोई जानवर हो, अंत में रानी चल बसती है। कोमल मौसी से अंजू का घनिष्ट प्यार था। जब कोमल मौसी की मृत्यु हुई थी तब वह बहुत दुःखी हुई थी। उसने कोमल मौसी के शव को जूते मारने से इंकार कर दिया था लेकिन गुरु माँ के डांटने पर उसे शव को जूता मारना पड़ा। कोमल मौसी की मृत्यु पर जब अंजू रोती है तब गुरु माँ उसे रोने से मना करते हुए कहती है "हम किन्नर अपने साथी के मरने पर न होते हैं और न ही गम मनाते समझी।"[86]

गुरु माँ अंजू तथा रविंदर को उच्चवर्ग के लोगों से पैसा वसूल करके उन्हें सौपती है। वे लोग अंजू तथा रविंदर को हवश का शिकार बनाकर उन्हें अड्डे पर छोड़ते हैं रविंदर अंजू के कक्ष में रहता था। वह पठानकोर्ट के गरीब परिवार से थी। चार भाईयों की इकलौती बहन में जब ट्रांसजेंडरों के लक्षण प्रकट होने लगे तब पिताजी उसे कई हकीमों के पास जाँच कराने ले गए

लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। रविंदर के ट्रांसजेंडर होने के कारण उसके पिताजी को लोग गंदी गंदी बाते सुनाते धमकियाँ देते जिस कारण एक दिन उसके पिताजी ने आत्महत्या कर ली। उसकी माँ ने अपने पति के मौत का कसूरवार उसे ठहराया। गाँव के पंचायत ने उसे गाँव से निकालने का फैसला लिया। गाँव के लोगों ने ट्रांसजेंडर होने के कारण उसे धक्का मारकर निकाल दिया। अंजू को रविंदर के रूप में अच्छा साथी मिल गया था। वह गुरु माँ के अन्याय पूर्ण व्यवहार का विरोध करती थी।

एक दिन अंजू तथा ट्रांसजेंडर टोली, एक विवाह में बधाई मांगने उसका परिवार जहाँ रहता था उस इलाके में पहुँचे। उसके आने का पता चलने पर उसकी बहन नाराज़ हुई तथा बहन के कारिंदे ने आकर अंजू को जली कटी सुनाई इसपर अंजू के साथियों ने भी मुँह-तोड़ जबाब दिया। इन कारणों से अंजू उस जगह को छोड़ रविंदर के साथ आगरा चली आती है। वहाँ वे धर्मशाला में ठहरकर खिलौना बेचने का व्यापार करते हैं। व्यापार अच्छा खासा चला कुछ लोग वे ट्रांसजेंडर हैं जानने पर उन्हें सताने लगे, इसपर इन लोगों ने विशेष प्रकार की ब्रा तैयार करके धारण किया जिससे वे स्त्री लगने लगीं। इसीबीच रविंदर की मुलाकात सलीमा ट्रांसजेंडर से होती है वे एक दूसरे के निकट आते हैं तथा रविंदर अंजू को छोड़ सलिमा के साथ रहने लगता है। रविंदर के जाने पर अंजु अंदर से टूट जाती है। सलीमा रविंदर को पारम्परिक धंधे में शामिल करती है।

तप अंजू तथा उसके बिरादरी के लिए कुछ करना चाहता है उसका दिल उससे कहता है "तेरा यह जीवन उसकी देन है। यदि वह तुझे न उठाकर लाती तो तू वहीं मर गया होता। तेरा अब यह फर्ज है कि तू भी कुछ ऐसा करे जिससे उसका और उसके जैसे अन्य लोगों का भला हो सके।"[87] तप अपने दोस्त निशांत और निशांत की पत्नी की सहायता से ट्रांसजेंडरों के लिए एन. जी. ओ

खोलने का विचार बनाता है। इसके लिए वह अपनी पैतृक संपत्ति का इस्तेमाल करता है। पैतृक संपत्ति उसे दिलाने के लिए लालमदनलाल के बेटे विपिन जो अब तप से प्यार करता है और विपिन के ससुर जो वकील थे आदि उसकी मदद करते हैं।

तप निशांत के दोस्त का एक पुश्तैनी मकान खरीदकर वहाँ 'हम भी मानव है' नाम का एन. जी. ओ आरंभ करता है। अंजू इंदौर आकर अपना सहयोग देती है और साथ ही वह इंदौर में खिलौने का व्यापार करने लगती है। तप की शादी विपिन की पत्नी की बहन आरती से होती है। अंजू की अगुवाई मे निशांत की पत्नी, आरती एक टीम बनाकर भीख माँगनेवाले ट्रांसजेंडरों का कौंसलिंग करते हैं। धीरे धीरे कई ट्रांसजेंडर इस एन. जी. ओ से जुड़ते हैं। उमा, प्रियंका, नरगिस ट्रांसजेंडरों को वहाँ उनके रुचि तथा शिक्षा के अनुसार प्रशिक्षण दिया जाता है। नरगिस की मंडली के गुरु को जब इस एन. जी. ओ के बारे में पता चलता है तब उसके पैरों तले की जमीन खिसक जाती है, वह एन. जी. ओ के खिलाफ आरोप लगाती है कि तप मंडली के सदस्यों को वहाँ तोड़ तोड़कर रख रहा है। इसका खंडन कर नरगिस मीना को बताती है "माफ करना मीना माँ, मैं नाच-गाकर, दूसरों के सामने हाथ फैलाकर व खुद को बिचा-बिचाकर थक गयी हूँ। मैं इज्जत की ज़िन्दगी जीना चाहती हूँ। आपको तो ऐसे फरिश्ते का शुक्रिया अदा करना चाहिये, जिसने हम जैसों की ज़िन्दगी सँवारने का बीड़ा उठाया है। ऐसा करना तो दूर, आप तो उन्हें ही गालियाँ दे रही हो। ज़रा खुद से ड़रो मीना माँ।"[88] मीना दूसरे ट्रांसजेंडरों के अड्डे में जाकर भी उनके खिलाफ उन्हें भड़काती है। उसका मानना है कि अगर यह केन्द्र बंद न हुआ तो उनका धंधा नुकसान में होगा सभी स्वरोजगार या नौकरी करने लगेंगे।

धीरे-धीरे एन. जी. ओ चलाने में पैसे की कमी आ गई। सरकार द्वारा एन. जी. ओ को जो वित्तीय सहायता मिलती है उसके लिए आवेदन देने पर भी कोई सहायता नहीं मिली। सरकार

द्वारा सहायता मिलने के लिए अंजू तथा अन्य ट्रांसजेंडर समाज कल्याण विभाग के सामने आन्दोलन करने बैठ गए। अभियान के दौरान होनेवाले खर्चे की जिम्मेदारी विमल नामक व्यक्ति ने अपने ऊपर ली थी, क्योंकि उसका बेटा भी एक ट्रांसजेंडर था। बीस दिन व्यतीत होने पर भी जब सरकार ने इनकी माँग पूरी नहीं की तब अंजु आमरण अनशन पर बैठ गई। ट्रांसजेंडरों के द्वारा जारी अनशन की खबर छोटे-मोटे अखबारों तक ही सीमित रही। अनशन के पाँचवे दिन पुलिस ने आकर टेंट को गिरा दिया। पुलिस और ट्रांसजेंडरों के बीच मुट भेद हुई। अंजु घायल हो गई, खून की होली खेलकर पुलिस वहाँ से चली गई। घायल ट्रांसजेंडरों को अस्पताल पहुँचाया गया। अंजू सबको छोड़कर भगवान को प्यारी हो गई। इस बारदाद की खबर अब तमाम चैनलों में आ गई थी। पुलिस की हरकतों पर सभी सवाल कर रहे थे, विपक्षी नेता सत्ता को कोसने लगे। अंत में मुख्यमंत्री ने पुलिस कर्मियों को दंडित किया तथा ट्रांसजेंडरों की सभी माँगों को मंजूर किया। अंजू का सपना तो पूरा हुआ लेकिन वह यह देखने को नहीं रही।

यह उपन्यास समाज के विभिन्न क्षेत्रों में ट्रांसजेंडर लोगों द्वारा भुगते जाने वाली पीड़ाओं का कटु यथार्थ चित्रण करता है तथा अंत में वह उपन्यास समाज के लोगों में इनके प्रति आए बदलाव को दर्शाता है।

3.17. हॉफ मैन

हॉफ मैन (ए पेनफुल जर्नी) भुवनेश्वर उपाध्याय की ट्रांसजेंडर समाज के लोगों के जीवन पर आधारित उपन्यास है। भुवनेश्वर उपाध्याय ने कविता, कहानी, उपन्यास, लेख, व्यंग्य आदि अनेक विधाओं में अपनी लेखनी चलाई है। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं- 'समझ के दायरे में', 'दायरे में सिमटती धूप', (कविता संग्रह), 'समय की टुकड़ियां', 'फिर वहीं से', (कहानी संग्रह), 'महाभारत के बाद', 'एक कम सौ' (उपन्यास)। विभिन्न समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं मे उनकी

कहानी, कविता, व्यंग्य लेख, साक्षात्कार, समीक्षा आदि का प्रकाशन हुआ है । 'व्यंग्य, व्यंग्यकार...और जो जरूरी है' उनके द्वारा संपादित संकलन है ।

'हॉफ मैन' उपन्यास ट्रांसजेंडर बच्चों की संघर्ष एवं पीड़ा को व्यक्त करता है साथ ही उनके माता-पिता द्वारा भुगते जाने वाली भावनात्मक एवं मानसिक पीड़ा से भी हमें अवगत कराता है । जिस सभ्य समाज में ट्रांसजेंडर बच्चे के जन्म लेते ही उसके माता-पिता समाज में अपने सम्मान को बनाए रखने के लिए या तो उस बच्चे को जान से मार डालते हैं या अपने से दूर कर देते हैं वहीं इस उपन्यास के पात्रों द्वारा यह दिखाया गया है कि गर्भ में ट्रांसजेंडर बच्चा पल रहा है जानने के बाद भी वे एबोर्सन नहीं करवाते । वे उस बच्चे को जन्म देने का निर्णय लेते हैं तथा अपने घरवालों और समाज से लड़कर अपने बच्चे को पालते हैं, पढ़ाते हैं और उसे ऊँचे मुकाम हासिल करने योग्य बनाते हैं । इस उपन्यास का प्रमुख पात्र अर्जुन जो ट्रांसजेंडर है वह अपने माता-पिता तथा दोस्तों द्वारा दिए गए अपनापन एवं हौसले के बलबूते समाज से संघर्ष करता हुआ IAS के मुकाम पर पहुँचता है । भुवनेश्वर उपाध्यायजी ने उपन्यास की भूमिका में लिखा है... "ये उपन्यास उस आदमी की हिम्मत, धैर्य, द्वन्द्व, संघर्ष, प्रेम, नफरत और सफलता की बानगी भर है जो औरों जैसा नहीं है । इसी समाज का हिस्सा है, परंतु उसके लिए जगह नहीं है । वह अपने लिए जगह भी बनाता है और भविष्य के लिए अपने जैसों को जीवन के नये आयाम तलाशने के लिए प्रेरित भी करता है । साथ ही समाज और परिवार में अपनी भूमिका भी तय करता है ।"[89] उपन्यास में यह दिखाया गया है कि आदमी का सकारात्मक सोच उसे भविष्य में सुखी जीवन प्रदान करता है ।

इस उपन्यास का आरंभ ट्रांसजेंडर अर्जुन के IAS बनने पर उसे सम्मानित किए जाने से होता है, वह सभी से अपने आप को परिचित कराते हुए कहता है "मैं अर्जुन राज जो कॉलेज के

छात्रों के बीच हाफमैन के संबोधन से पहचाना जाता था। मैंने वर्षों इस अधूरेपन की पीड़ा को महसूसा है, परन्तु कलेक्टर बनकर आज जिस पूर्णता का एहसास हो रहा है उसे शब्दों में कहना मुश्किल है। हमारे जीवन की उपलब्धियाँ, जाँघों के बीच का हिस्सा तय नहीं करता, बल्कि हमारी मेहनत, मानसिक शक्ति और हमारा दृढ़ संकल्प तय करता है कि हम क्या बनेंगे? हमारे मन में उमड़ती संवेदनाएँ ही अपने देश और समाज के लिए कुछ कर सकने के लिए हमें प्रेरित करती हैं, और यही सोच हमारे जीवन को सार्थकता दे सकती है।"[90] वह बहुत यातनाएँ सहने के बाद IAS बनता है। अर्जुन की माँ सजल और पिता पारस उसके IAS बनने से काफी खुश थे। जो समाज कल तक उनपर उँगलियाँ उठा रहे थे वही आज उनका समर्थन कर रहे थे। सजल सरकारी बैंक में क्लर्क थी और पारस कॉलेज लेकचर जब सजल गर्भवती थी तभी उन्हें पता चला गया था कि पेट में पलनेवाला बच्चा ट्रांसजेंडर है। वे दोनों अबोर्शन किये बिना बच्चे को पैदा करने का निर्णय लेते हैं। पारस सजल के नर्णय को स्वीकार करता है। सजल बच्चे को जन्म देती है। बच्चे के बारे में डॉक्टर ने उनसे कहा था कि यह बच्चा लड़कों जैसा ही दिखेगा, इसमें मेल हार्मोन की अधिकता है। बच्चे के जन्मने पर उन्हें बधाई देनेवाला कोई नहीं था, दोनों के घरवालों ने उनका साथ नहीं दिया। सजल और पारस ने तय किया कि वे उस बच्चे को पढ़ा लिखाकर मानसिक और आर्थिक रूप से समर्थ बनायेंगे। वे समाज को भान नहीं होने देना चाहते थे कि उनका बच्चा ट्रांसजेंडर है। बच्चे की देख-रेख के लिए सजल ने अपना काम छोड़ दिया तथा वे दूसरे शहर में जाकर रहने लगे।

अर्जुन पढ़ने में होशियार था। आठवीं कक्षा में पढ़ते वक्त स्कूल से जब वे सब टूर गये तब कुछ बच्चों ने पेशाब करते वक्त उसके अपरिपक्व अंग को देख लिया था और उसे हिजड़ा कहकर चिढ़ाया। रात को वह अपनी जिगरी दोस्त नीरव जब सो रहा था तब उसके अंग की पड़ताल करने की कोशिश करता है। वह जान गया था कि वह अन्य साधारण लड़कों जैसा नहीं

है और न ही वह लड़की है। नीरव के सामने वह अपना पेंट खिसकाकर दिखाता है और वह उन लोगों जैसा नहीं है कहकर रोने लगता है। नीरव से उसे पता चलता है कि वह ट्रांसजेंडर है। नीरव इस बारे में उसे किसी से न बताने को कहता है। बारहवीं बोर्ड के रिजल्ट आने पर अर्जुन स्कूल में सेकंड़ आता है, अब वह शहर जाकर पढ़ना चाहता था लेकिन सजल को उसे अपने दूर भेजने में डर लगता है वह अर्जुन से कहती है "अर्जुन तुझे मैंने हमेशा दुनिया की नजरों से बचाकर रखा है और तुम्हारे पापा ने अपने परिवार और तुममें से तुम्हें चुना था।"[91] लेकिन अंत में अर्जुन अपने माता पिता को मना लेता है और नीरव के साथ दिल्ली उच्च्च शिक्षा प्राप्त करने चला जाता है। अर्जुन का मानना है "मुझे प्रकृति ने जो दिया ही नहीं है उसे आगे न बढ़ा पाने का अफसोस क्यों करू? परंतु जो दिया है उसकी अवहेलना भी तो गलत है। मुझे मानवीय देह और मस्तिष्क तो मिला है उसी के सहारे मुझे स्वयं को इन सब से ऊपर उठना है, और ये करने से मुझे कोई नहीं रोक सकता।"[92]

अर्जुन एडमिशन फार्म भरते वक्त दुविधा में पड़ जाता है तब नीरव उसके फॉम में मेल पर टिक लगाते हुए उससे कहता है "अर्जुन ये गलत नहीं है, मजबूरी है! घर-घर जाकर ताली पीटने से कहीं बेहत्तर है ये झूठ...मैं तो ये मानता हूँ, जब किसी प्रश्न का उत्तर हमारे पास न हो तो उसे समय पर छोड़कर आगे बढ़ जाना चाहिए। ये दुनिया उतनी सीधी नहीं है जितनी तुम समझते हो। अर्जुन, आज तुम्हारे पास एक ऐसा लक्ष्य है जो तुम्हारे अस्तित्व को सार्थकता तो देगा ही, साथ ही समाज में मान्यता भी दिलायेगा। जब तुम उसे प्राप्त कर लोगे तब लोगों की धारणाएँ भी बदलेंगी, और समय आने पर स्वयं तुम्हीं बता देना, परंतु अभी वो समय नहीं है।"[93] नीरव हमेशा अर्जुन को आश्वासन देता था। वहाँ सुबोध और कनुप्रिया से उनकी मित्रता होती है। आगे नीरव और कनुप्रिया में प्रेम उत्पन्न होता है। कनुप्रिया को उसके बड़े पापा ने गोद लिया था। उसके बड़े पापा सरजू सिंह के बारे में लोगों का कहना है कि वह ट्रांसजेंडर है इसलिए इतनी जायदाद होने पर

भी उसने शादी नहीं की। उन्होंने अपने मरने से पहले अपनी सारी जमीन बेचकर पैसा कनुप्रिया के नाम एफ डी कर दिया था तथा पढ़ाई के लिए पैसे उसके एकाउंट में डाल दिया था। अर्जुन अपनी असलियत सबको बताना चाहता था लेकिन नीरव ऐसा करने से उसे मना करता है क्योंकि उसे पता है कि फिर दुनिया में उसे जीने के लिए बहुत संघर्ष करना पड़ेगा।

कनुप्रिया की सहेली दीपा अर्जुन की असलियत जाने बिना उससे प्यार करने लगती है, जब वह अपना प्यार अर्जुन से जाहिर करती है तब अर्जुन मना करता है। एक दिन कॉलेज का एक लड़का रज्जू कनुप्रिया को छेड़ता है तथा उसके साथ बदतमीजी करता है इसपर अर्जुन को उसपर गुस्सा आता है और उन दोनों में आपस में खूब पीटाई होती हैं। रज्जू अर्जुन से बदला लेने का षड़यंत्र रचता है, उसके कहे मुताबिक एक लड़की अर्जुन पर उसपर बलात्कार करने का आरोप लगाती है। लड़की के आरोप लगाने के कारण अर्जुन को जेल जाना पड़ा। अपने को निर्दोष ठहराने के लिए आखिरकार अर्जुन को अपनी असलियत मजिस्ट्रेट के सामने बयान करना पड़ता है "जज साहब, मैं रेप करने लायक तो क्या सहमति से भी किसी से संबंध बनाने के योग्य नहीं हूँ। मैं थर्ड जेंडर हूँ।"[94] अर्जुन की मेडिकल जाँच कराकर सच्चाई का पता चलने पर उसे रिहा कर दिया जाता है, तथा रज्जू और उस लड़की को सजा दी जाती है। अब अर्जुन के ट्रांसजेंडर होने का पता सभी को चल जाता है। कनुप्रिया तथा सुबोध उसे आश्वासन देते हैं। तब से कॉलेज के छात्र उसे हॉफ मैन कहकर संबोधन करने लगते हैं। इसपर जब नीरव उनपर गुस्सा होता है तब एक लड़का कहता है "तमीज न होती तो इसे हिजड़ा या छक्का कहता, मैंने तो सम्मान से हाफमैन ही कहा है। सभी कहते हैं तुम किस किस को तमीज़ सिखाओगे।"[95]

पढ़ाई खत्म होने पर अर्जुन, नीरव, कनुप्रिया और दीपा दिल्ली में IAS की तैयारी करने लगते हैं। दीपा पहले ही एस डी एम बन जाती है। कनुप्रिया और अर्जुन आखिरकार अपना

लक्ष्य प्राप्त कर लेते हैं। IAS बनने के बाद एक दिन उसकी मुलाकात ट्रांसजेंडरों से होती है तब वह उनसे कहता है "हाँ। और यदि तुम भी चाहो तो ऐसे कलेक्टर बहुत बन सकते हैं। बस किन्नर बच्चों को नाच गाने की जगह पढ़ने लिखने की ओर ले जाना होगा। किन्नर होने के कारण जिन बच्चों को उनके माँ-बाप ने यह सोचकर छोड़ दिया है कि ये आगे जाकर उनकी बदनामी और दुख का कारण बनेंगे, उनके लिए मैं तो जो कर सकता हूँ करूँगा ही, तुम लोग भी उन्हें अपनाकर अपने बच्चों की तरह पालो... पढ़ाओं। सरकार, कानून सब हमारे साथ हैं। देखना एक दिन हमारी दुनिया बदल जायेगी।"[96] उपन्यास के अंत में अर्जुन अनाथालय से एक बच्चे को कानूनी तौर पर गोद लेता है, जिसका नाम वह अभिमन्यु रखता है। अभिमन्यु के साथ वह अपने घर जाता है। अभिमन्यु को देख सजल और पारस को खुशी होती है। अगर परिवारवाले ट्रांसजेंडर बच्चों को स्वीकारने को तैयार हो जाएं तो वे भी समाज में सामान्य मानव का जीवन जी सकते हैं। 'हॉफ मैन' उपन्यास में अर्जुन के माता पिता सजल और पारस के जरिए उपन्यासकार ने पाठकों में सकारात्मक सोच उत्पन्न करने की कोशिश की है।

3.18. निष्कर्ष

आज साहित्य में ट्रांसजेंडर विमर्श काफी महत्वपूर्ण हो गया है। साहित्य के माध्यम से ट्रांसजेंडर समाज के प्रति लोगों में जागरूकता बढ़ाने की कोशिश की जा रही है। हिन्दी उपन्यास ट्रांसजेंडर जीवन के परिदृश्यों को हमारे सामने रखता है और इस उपेक्षित और हाशिएकृत समाज की जीवनशैली, उनकी समस्या, पीड़ा, आक्रोश और संघर्ष को पाठकों के सामने प्रस्तुत करते हैं। ये उपन्यास व्यक्त करते हैं कि ट्रांसजेंडर समाज हमारे समाज का महत्वपूर्ण अंग है। हिन्दी उपन्यासकारों ने ट्रांसजेंडर जीवन के विविध पहलुओं का अपने उपन्यास में चित्रण किया है, उनकी जैविक संरचना से लेकर सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक आदि अनेक पक्षों से पाठकों

को रूबरू कराया है। डॉ. शरद सिंह लिखते हैं “समाज में धीरे-धीरे आते जा रहे परिवर्तन की यह गति और तेज हो सके तथा लोग थर्ड जेंडर की पीड़ाओं को समझ सकें, इस पर ध्यान देना साहित्यकारों का दायित्व था और इसे आगे बढ़ाकर साहित्यकारों ने स्वीकार भी किया।”[97] समाज में ट्रांसजेंडरों के प्रति प्रचलित मिथ्या धारणाएँ तथा सोच को बदलने में ऐसे उपन्यास काफी सहायक हुए हैं। हिंदी उपन्यास लेखन ट्रांसजेंडर समुदाय के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

संदर्भ-सूची

1. अनुसूया त्यागी, मैं भी औरत हूँ, पृ.सं.11
2. वही, पृ.सं.17.
3. वही, पृ.सं.31.
4. प्रदीप सौरभ, तीसरी ताली, तीसरी ताली फ्लैप से
5. वही, पृ.सं.11.
6. वही, पृ.सं.120.
7. वही, पृ.सं.57.
8. वही, पृ.सं.104.
9. वही, पृ.सं.106.
10. वही, पृ.सं.176.
11. वही, पृ.सं.176.
12. वही, पृ.सं.178.
13. वही, पृ.सं.194.
14. वही, पृ.सं.195.
15. वही, पृ.सं.56.
16. वही, तीसरी ताली फ्लैप से
17. महेन्द्र भीष्म, किन्नर कथा, पृ.सं.16
18. वही, पृ.सं.24.

19. वही, पृ.सं.41.
20. वही, पृ.सं.51.
21. वही, पृ.सं.119.
22. अनुसंधान शोध त्रैमासिक, जुलाई-दिसंबर 2018 (सं) डॉ.शगुफ्ता नियाज, पृ.सं.64.
23. निर्मला भुराड़िया, गुलाम मंडी, पृ.सं.101.
24. वही, पृ.सं.16.
25. वही, पृ.सं.12.
26. वही, पृ.सं.14.
27. वही, पृ.सं.68.
28. वही, पृ.सं.71.
29. वही, पृ.सं.75.
30. महेन्द्र भीष्म, मैं पायल, पृ.सं.24.
31. वही, पृ.सं.26.
32. वही, पृ.सं.30.
33. वही, पृ.सं.34.
34. वही, पृ.सं.44.
35. वही, पृ.सं.105.
36. चित्रा मुद्गल, पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा, पृ.सं.10.
37. वही, पृ.सं.33.
38. वही, पृ.सं.44.

39. वही, पृ.सं.30.

40. वही, पृ.सं.50.

41. वही, पृ.सं.186.

42. भगवंत अनमोल, जिन्दगी 50-50, पृ.सं.28

43. वही, पृ.सं.44.

44. वही, पृ.सं.42.

45. वही, पृ.सं.118.

46. वही, पृ.सं.139.

47. वही, पृ.सं.163.

48. वही, पृ.सं.204.

49. गिरिजा भारती, अस्तित्व, पृ.सं.30.

50. वही, पृ.सं.38.

51. वही, पृ.सं.60.

52. सुभाष अखिल, दरमियाना, पृ.सं.19.

53. वही, पृ.सं.23.

54. वही, पृ.सं.39.

55. वही, पृ.सं.48.

56. वही, पृ.सं.65.

57. वही, पृ.सं. 81.

58, वही, पृ.सं.109.

59. वही, पृ.सं.119.

60. नीरजा माधव, यमदीप, पूर्वोक्त,पृ.सं.6.

61. वही, पृ.सं.19.

62. वही, पृ.सं.28.

63. वही, पृ.सं.60.

64. वही, पृ.सं.61.

65. वही, पृ.सं.248.

66. वही, पृ.सं.112.

67. वही, पृ.सं.163.

68. डॉ. मुक्ति शर्मा, श्रापित किन्नर, पृ.सं.13.

69. वही, पृ.सं.14.

70. वही, पृ.सं.39.

71. मोनिका देवी, अस्तित्व की तलाश में सिमरन, पृ.सं.34.

72. वही, पृ.सं.35.

73. वही, पृ.सं.47.

74. हरभजन सिंह मेहरोत्रा, ऐ ज़िन्दगी तुझे सलाम, पृ.सं.21.

75. वही, पृ.सं.28.

76. वही, पृ.सं.109.

77. वही, पृ.सं.109.

78. वही, पृ.सं.177.

79. डॉ.लता अग्रवाल, मंगलामुखी, पृ.सं.25.

80. वही, पृ.सं.84.

81. वही, पृ.सं.136.

82. वही, पृ.सं.138.

83. रेनू बहल, मेरे होने में क्या बुराई है, पृ.सं.30.

84. श्री गोपाल सिंह सिसोदिया, वह, पृ.सं.24.

85. वही, पृ.सं.49.

86. वही, पृ.सं.74.

87. वही, पृ.सं.100.

88. वही, पृ.सं. 126.

89. भुवनेश्वर उपाध्याय, हॉफ मैन, भूमिका

90 वही, पृ.सं.10.

91. वही, पृ.सं.32.

92. वही, पृ.सं.35.

93. वही, पृ.सं.44.

94. वही, पृ.सं.121.

95. वही, पृ.सं.125.

96. वही, पृ.सं.173.

97. सामयिक सरस्वती (अप्रैल-सितंबर 2018) पृ.सं.6.

चौथा अध्याय

ट्रांसजेंडर : जीवन-रीति एवं संस्कृति

वर्तमान समय में समाज के उपेक्षित वर्गों पर साहित्य में चिंतन मनन हो रहा है। समाज एवं साहित्य एक दूसरे से संबंधित हैं। हमारे तथाकथित सभ्य समाज ने जिस ट्रांसजेंडर समुदाय को हाशिए पर रखा है आज उनसे संबंधित लेखन कार्य हिन्दी साहित्य जगत में प्रचुर मात्रा में हो रहा है। पहले पौराणिक ग्रंथों में इनका जिक्र मिलता था लेकिन बाद में साहित्य में इनका अस्तित्व न के बराबर था। ट्रांसजेंडर व्यक्तियों का वर्णन अगर पहले कुछेक रचनाओं में किया गया है तो उन्हें व्यंग्य पात्र के रूप में पेश किया गया है। आज साहित्यकार इन्हें केन्द्रीय पात्र बनाकर रचनाएँ कर रहे हैं। मानवाधिकारों से वंचित होकर जीवन जीने को विवश इस समुदाय पर आज उपन्यास सर्जन हो रहा है। हिन्दी उपन्यासकारों ने इनके जीवन से संबंधित विविध पहलुओं को उपन्यासों के माध्यम से साधारण जनता तक पहुँचाने का प्रयास किया है।

समाज में अपनी पहचान स्थापित करने के लिए संघर्षरत ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों की जीवन-रीति तथा संस्कृति समाज के अन्य लोगों से अलग है। ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों का अपना पारंपरिक पेशा है, वह है बधाई। लोगों में ऐसा विश्वास है कि इनके द्वारा दिए गए आशीर्वाद फलीभूत होते हैं। किसी घर में शुभ अवसर आने पर यह लोग वहाँ बधाई देने पहुँच जाते हैं। बधाई पर गए घर में ये नाच-गाना पेश करते हैं, उन्हें आशीर्वाद देते हैं। इनके द्वारा दिए आशीर्वाद के बदले लोग इन्हें नेग देते हैं, जिससे इनका गुजारा होता है। बधाई रस्म का चित्रण ट्रांसजेंडर केन्द्रित उपन्यासों में देखने को मिलता है। आज आर्थिक तंगी के कारण ये भीख माँगते हुए तथा वेश्यावृत्ति भी करते हुए नज़र आते हैं।

भारत में विभिन्न राज्यों में ट्रांसजेंडरों की संस्कृति तथा उनसे जुड़ी परंपराएँ अलग-अलग हैं। अपने परिवार से निष्कासित ये ट्रांसजेंडर समुदाय द्वारा बनाये गए घराने में पनाह पाते हैं। ट्रांसजेंडर

घराने में सभी ट्रांसजेंडर मिलजुलकर जीवन यापन करते हैं। ट्रांसजेंडर घराने का नायक या जिन्हें चौधरी भी कहते हैं वे गुरु को नियुक्त करते हैं। गुरु डेरे के सभी चेलों का ख्याल रखते हैं। ट्रांसजेंडर घराने में शामिल होने पर ट्रांसजेंडर व्यक्ति को वहाँ के कायदे-कानून को अनुसरण करना पड़ता है। ट्रांसजेंडर व्यक्ति को डेरे में शामिल होने के बाद उसका निर्वाणा, चुनरी रस्म, गोद भराई रस्म मनाया जाता है, जिसका चित्रण हिन्दी उपन्यासकारों ने उपन्यासों में किया है। गुरु इन्हें नाचने-गाने तथा बधाई देने की रीति का प्रशिक्षण देते हैं। ट्रांसजेंडर समुदाय के लोग बहुचरा माता, अरावन देवता पर असीम विश्वास रखते हैं। साल में एक बार ये तमिलनाडू के विल्लेपुरम में स्थित कठनद्वार मंदिर में जाकर अरावन की मूर्ति के साथ एक दिन के लिए शादी रचाते हैं। इनकी शवयात्रा भी साधारण लोगों से भिन्न है जिसका वर्णन हिन्दी उपन्यासकारों ने किया है। विभिन्न धर्मों पर विश्वास रखनेवाले ट्रांसजेंडर समुदाय के लोग एकता के साथ जीवन यापन करते हैं।

4.1. जीवनयापन के स्रोत

एक व्यक्ति को जीवनयापन करने के लिए रोजगार की आवश्यकता होती है। ज्यादातर ट्रांसजेंडर लोग जीवनयापन के लिए अपने पारंपरिक पेशे बधाई देने को अपनाते हैं। दूसरों के घरों में शुभ अवसरों में जाकर नाच-गाकर ये लोग उन्हें आशीर्वाद देते हैं, इनके आशीर्वाद के बदले घरवाले इन्हें बधाई के रूप में नेग या उपहार देते हैं। बधाई में मिले पैसों से ये अपनी आजीविका चलाते हैं लेकिन आज इनके द्वारा दिए जाने वाले बधाई में से लोगों का विश्वास उठने तथा नकली किन्नरों के हस्तक्षेप के कारण इस वर्ग के लोगों को अपनी पारंपरिक पेशे से जीवनयापन करना मुश्किल हो गया है। बचपन से ही परिवार से तिरस्कृत ये शिक्षा से भी वंचित रहने के कारण अन्य सरकारी तथा गैर सरकारी कार्यालयों में इन्हें रोजगार प्राप्त नहीं होता। भुखमरी के कारण ये भीख माँगते हुए, तथा देह

व्यापार में भी संलग्न होते दिखाई पड़ते हैं। प्रमुख रूप से ट्रांसजेंडर समुदाय के लोग जीवनयापन के लिए बधाई, भीख तथा देह धंधा करते हैं और इसके सहारे ये अपना पेट भरते हैं।

4.1.1. **बधाई**

ट्रांसजेंडर समुदाय में पारंपरिक पेशे के रूप में बधाई को माना जाता है। किसी के घर बच्चा पैदा होने पर, विवाह के अवसर तथा अन्य शुभ अवसरों में इस समुदाय के लोग वहाँ बधाई देने पहुँच जाते हैं। इनके द्वारा दिये जाने वाले अशीर्वाद फलीभूत होता है ऐसा माना जाता है, इसीलिए शुभ अवसरों के संदर्भ में ट्रांसजेंडरों के आशीर्वाद पाने के लिए सभी उत्सुक रहते हैं। वहीं दूसरी ओर इनके शाप को बुरा माना जाता है। इनके द्वारा दिया गया शाप भी फलीभूत होता है ऐसी मान्यता लोगों में है, जिस कारण सभी इनके शाप से बचने की कोशिश करते हैं। बधाई के अवसर पर ये नाच गाना पेश करते हैं तथा आशीर्वाद देते हैं। बधाई के देने के बदले इन्हें लोग पैसा या तोह्फा देते हैं, कभी-कभार ट्रांसजेंडर समुदाय के लोग मुँहमाँगी रकम माँगते हुए दिखाई पड़ते हैं।

बधाई में जाने पर वहाँ इन्हें कुछ रीति रिवाज़ का पालन करना होता है, जिसके बारे में 'अस्तित्व की तलाश में सिमरन' उपन्यास में सिमरन व्यक्त करती है "मेरा समाज जब बधाई के लिए जाते हैं वह समय हमारे लिए बहुत मंगल समय होता है। पूरी किन्नर मंडली वहाँ पहुँच जाती है और मंगलगीत या सोहर गाते हैं। मैंने अपने गीतों की शुरुआत देवी भजन से की थी। वैसे भी सभी हिजड़ों को बधाई की शुरुआत भजन या देवी के गीत से ही करनी होती है।"[1] आगे बधाई के रस्म के बारे में सिमरन विस्तार से बताती है "मैं जब बधाई माँगने गई तो मेरे साथ पूरी टोली जाती है। जिसके घर बधाई माँगने का दिन होता है। वहाँ पर हम सब गायन और नृत्य करते हैं। इसमें भी एक रिवाज़ छिपा हुआ है। हम सब एक साथ नृत्य नहीं कर सकते। सब बारी-बारी से अपने नाच और गायन से

समा बाँधते हैं। एक बार सबसे पहले मेरी बारी आई। मैंने अपने रीति-रिवाज़ के अनुसार देवी गीत गाया जिसे माई जागना भी कहते हैं यानी देवी माँ की स्तुति।"[2] बधाई में ट्रांसजेंडरों द्वारा पेश किए जानेवाले गीत एवं नृत्य उनके रिवाज़ के अनुसार होते हैं।

ट्रांसजेंडर परिवार में शमिल होने पर सात बार बधाई पर जाने पर ही ट्रांसजेंडर समाज में उसे स्वीकार किया जाता है 'मेरे होने में क्या बुराई है' उपन्यास में गुरु माँ शिखा से इस तथ्य को व्यक्त करती है "जानती हूँ, तुम पढ़ी लिखी हो, कमा लेती हो। चाहे तुम इस रवायत को पेशे के तौर पर स्वीकार मत करो, मगर बधाई पर नाचना-गाना, बधाई मांगना तो तुम्हें आना चाहिए, जब तक तुम सात बार बधाई पर नहीं जाओगी तुम्हें हिजड़ा स्वीकृत नहीं किया जाएगा।"[3] सभ्य समाज के लोग एक तरफ इन ट्रांसजेंडर लोगों को हिकारत की दृष्टि से देखते हैं, वहीं उनके आशीर्वाद और शाप पर विश्वास करते हैं। ये इनके आशीर्वाद पाने के लिए तरसते हैं। कुछ लोग इनकी बधाई देने पर इन्हें मोटी रकम और सोने जेवर तक दे देते हैं। 'अस्तित्व' उपन्यास में एक ट्रांसजेंडर कहती है "मैंने देखा कैसे माता-पिता अपने बच्चे के अच्छे भविष्य के लिए किन्नरों से दुआये लेते हैं, बदले में नवजात शिशु के माता-पिता किन्नरों को खुश करने के लिए ढेरों इनाम व रुपये देते हैं। अगर कोई व्यक्ति ज्यादा पैसेवाला है तो जेवर तक देता है।"[4] सभ्य समाज के लोग ट्रांसजेंडरों द्वारा दिये जाने वाले दुआ को बहुत मानते हैं, जिसके चलते वे उन्हें नेग के रूप में भारी रकम देने में भी नही हिचकिचाते।

आजकल लोगों का उनके आशीर्वाद तथा शाप देने में से विश्वास उठ गया है। 'अस्तित्व' उपन्यास में इस तथ्य को स्पष्ट किया गया है "लेकिन आज तो कोई भी उनके शाप या आशीर्वाद को नहीं मानता। वे खुशी के मौके पर पहुँच भी जाते हैं तो जो मन में आता है वही दे देते हैं और कभी वह कुछ माँग बैठे तो बहस हो जाती है। तब तो उन्हें बहस करके खाली हाथ ही भगा देते हैं।"[5]

आधुनिक समाज में शादी लोग कोर्ट मैरिज या मंदिर में कर लेते हैं, जिसकी वजह से ट्रांसजेंडर समुदाय को बधाईगिरी का अवसर नष्ट हो जाता है। उपन्यास में इसका जिक्र है एक ट्रांसजेंडर बताती है "अरे बेटा आजकल लोग कार्ट-मैरिज कर लेते हैं। मंदिर में शादी कर लेते हैं। हम लोगों को पता भी नहीं चलता। क्या करें। जब पता चलता है तो कहते हैं, अरे, शादी तो बहुत पहले हो चुकी है हम तो और किसी को नेग दे चुके। आप बहुत देर से आये हो, काफी बहस करते हैं फिर भी वह लोग नहीं मानते, खाली हाथ लौटा देते हैं।"[6]

नकली ट्रांसजेंडरों की वजह से इन्हें बधाई पर जाने से मिलनेवाली कमाई पर गिरावट आयी है। इनके घरों में बधाई पर पहुँचने के पहले नकली ट्रांसजेंडर वहाँ पहुँचकर मोटी रकम हथिया लेते हैं। इसके अलावा फ्लैटों में रहनेवालों के यहाँ शुभअवसरों पर इन्हें प्रवेश नहीं मिलता अतः आज के लोगों को इनके रीति रिवाज़ों पर से विश्वास भी उठ गया है यथा लोग ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों को अपने पास तक किसी भी कारणवश भटकने तक नहीं देते। कई लोग बधाईगिरी को ट्रांसजेंडर द्वारा माँगी जाने वाली भीख मानते हैं लेकिन बधाईगिरी भीख न होकर इनका हक है, इसके बारे में 'मेरे होने में क्या बुराई है' उपन्यास में सितारा शिखा से कहती है "हम तो बधाई पर जा रहे हैं। नाचेगें-गाएंगे, आशीर्वाद देंगे। यह तो हक है हमारा। हम तो अपना हक लेने जा रही हैं।"[7] कई बार बधाईगिरी में बधाई के रूप में ये भारी नेग माँगते दिखाई पड़ते हैं। पूछे गये नेग न मिलने पर ये गंदी हरकते करने को तक नहीं हिचकिचाते, नहीं तो शाप दे देते हैं, जिसके डर से लोग इनके द्वारा पूछा गया नेग किसी भी तरह दे देते हैं। 'मेरे होने में क्या बुराई है' उपन्यास में ट्रांसजेंडर समुदाय जब नये जन्में बच्चे को बधाई देने एक घर में पहुँचते हैं तब वे घरवाले दरवाज़ा नहीं खोलते इसपर सितारा क्रोधित होती है तथा उन्हें धमकी देती है "बैशरम। बगैरत कंजूस लोगो। दरवाज़ा तो खोलो। अगर

पाँच मिनट में दरवाज़ा न खुला तो भाई हम जिम्मेदार नहीं। सबके सब इस घर के सामने कपड़े उतारकर नंगे खड़े हो जाएंगे और फिर कहेंगे - तेरे घर में भी फूल खिले, हम जैसा ही फूल खिले।"[8] शाप के डर से घर की बड़ी औरत एक हज़ार रुपया उन्हें देती है लेकिन सितारा उस पैसे को उनके मुँह पर मारते हुए उनसे उस पैसों से उस बच्चे की नज़र उतार देने को कहती है। अंत में बच्चे की माँ अपने बच्चे को उनकी बद्दुआ से बचाने के लिए उन्हें पाँच हज़ार रुपया तथा एक पैकट देती है। इसीप्रकार एक शादी में साड़ी, मिठाई और ग्यारह हज़ार रुपये नेग मिलने पर भी वे खुश नहीं होते। सितारा उनसे सोने की बूँदे और इक्कीस हज़ार रुपये की माँग करती है। अपने इच्छित नेग प्राप्ति के बाद ही वह आशीर्वाद देते हुए बधाई गीत गाते हैं-

"झोली भरी रहे अम्मा तेरी,
जल्द ही गोद भी हरी हो जाए, बहू की तेरी
अगले बरस फिर रौनक सजे तेरे आंगन में।"[9]

माँगा हुआ नेग न मिलने पर बहस करके किसी भी तरह डरा धमकाकर ये पैसा वसूल करने में हिचकिचाते नहीं। कभी - कभी तो बच्चे को उठा ले जाने की धमकी तक दे डालते हैं। 'श्रापित किन्नर' उपन्यास में एक शादी वाले घर में जब उन्होंने नेग के रूप में 21 हज़ार रुपए माँगे तब वहाँ के बुज़ुर्ग को गुस्सा आ गया, उन्होंने 2 हज़ार रुपया देकर उनसे पीछा छुड़ाना चाहा लेकिन वे किसी कीमत पर मानने को तैयार नहीं होते तथा माँगा पैसा न मिलने पर वे उन्हें श्राप देकर जाते हैं। कुछ दिनों के अंदर ही उनके श्राप का असर होता है, बुज़ुर्ग दादा का देहान्त हो जाता है तथा उनकी बहु जिसको आठ साल तक बच्चा नहीं हुआ था उसको आठ साल के बाद एक ट्रांसजेंडर बच्चा पैदा होता है। लोगों में जो धारणा है ट्रांसजेंडर समुदाय बधाई में नेग के रूप में मोटी रकम माँगते हैं और न

मिलने पर गंदी हरकतें करते हैं या उन्हें बद्दुआ देते हैं इस धारणा को 'मेरे होने में क्या बुराई है' उपन्यास में सितारा गलत ठहराती है। सितारा शेखर उर्फ शिखा को बताती है "ऐसी बात नहीं है। कई बार ऐसा भी हुआ है कि किसी गरीब के घर कुछ देने को नहीं तो एक टुकड़ा गुड़ ही खाकर खूब दुआएं दी हैं, बल्कि दो - तीन बार तो दुल्हन को शगुन भी डालकर आए हैं। हम इन्सान है, लुटेरे नहीं।"[10] जिस घर में ट्रांसजेंडर लोग बधाई के लिए जाते हैं, वहाँ कि आर्थिक स्थिति देखकर वे नेग माँगते हैं।

हमारे सभ्य समाज के लोग बधाई के लिए आनेवाले ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों को हीन दृष्टिकोण से देखते हैं 'मैं पायल' उपन्यास में पायल समाज के लोगों की संकुचित मानसिकता पर अपना रोष प्रकट करती है "बधाई, गाने-बजाने के समय अक्सर मिलनेवाली दुत्कार, परिहास मुझे व्यथित कर देती थी। मैं सोचती हूँ कि किन्नरों द्वारा दी जानेवाली बधाई भी तो एक विधा है, फिर इसे लोग हास-परिहास व अश्लीलता के चश्मे से क्यों देखते - परखते हैं। इसे लोक-संस्कृति के अंतर्गत अन्य गायन-विधाओं की तरह मान्यता क्यों नहीं मिलती।"[11] अपने परिवार तथा समाज से बहिष्कृत होने के कारण इन्हें उचित शिक्षा नहीं मिल पाती है यथासंभव इन्हें रोजगार प्राप्त नहीं होता। इसीके चलते अपना पेट भरने ये अपनी पारंपरिक पेशा बधाई पर जाते हैं तथा वहाँ वे कई लोगों के भर्त्सना का शिकार बनते हैं। अगर परिवार और समाज इन्हें स्वीकार करता तो ये भी हमारी तरह शिक्षा प्राप्त कर नौकरी तथा अन्य धंधा कर सकते। 'श्रापित किन्नर', उपन्यास में एक ट्रांसजेंडर अपनी दयनीयता को प्रकट करता है "तुम इन्सानों को तो हमारी कीमत का पता ही नहीं है भगवान ने आप लोगों को सबकुछ दिया है। परिवार है सुख है हमसे तो सब छीन लिया। अगर हमें भी पूर्ण इंसान बनाया होता तो क्या आपकी चौखट पर आते! नहीं न। माफ कीजिए हमें नहीं चाहिए यह भीख।"[12]

पुराने जमाने से ही ट्रांसजेंडर समुदाय बधाईगिरी करते आ रहे हैं, यह उनकी पारंपरिक पेशा है। शुभ अवसरों में इनके द्वारा दिया दुआ पाना पुण्य समझने वाले लोग इन्हें अच्छा खासा नेग देते थे। लेकिन आधुनिक युग में लोगों को इनका द्वारा दिया दुआ पर विश्वास नहीं है, जिसके चलते सभ्य समाज के लोग अपने चौखट पर इन्हें आने की इजाजत नहीं देते हैं। बधाई पर से लोगों का उठता विश्वास तथा नकली ट्रांसजेंडर का बधाई पर जाकर मुँह माँगी रकम माँगना एवं रकम न मिलने पर बुरी हरकते करना ट्रांसजेंडर समाज पर भारी पड़ रहा है। शिक्षित न होने के कारण इनका गुजारा बधाई माँगने पर आश्रित रहता है। आज बधाई का अवसर कम होने के कारण इन्हें भुखमरी का सामना भी करना पड़ रहा है। गुजारा चलाने के लिए आज यह समुदाय बेबस होकर देह धंधे की ओर भी अग्रसर हो रहे हैं।

4.1.2. भीख

ट्रांसजेंडर समुदाय के लोग आजीविका के लिए ज्यादातर अपना पारंपरिक पेशा बधाई माँगने को अपनाते हैं। नकली ट्रांसजेंडर के अतिक्रमण तथा आधुनिक युग में बधाई के प्रति समाज के लोगों के विश्वास में आये कमी के कारण इन्हें सिर्फ बधाई पर जाने से अपना गुजारा चलाना नामुमकिन हो गया है। ये रेलगाडियों, बसअड्डों तथा अन्य सार्वजनिक स्थानों पर भीख माँगने को मजबूर हो गए हैं। अशिक्षित होने की वजह से हमारे समाज में अन्य क्षेत्रों में इन्हें कोई कामकाज नहीं मिलता। साधारण जनमानस में यह धारणा है कि एकमात्र भीख माँगकर ये अपना गुजारा करते हैं लेकिन यह गलत है।

भीख माँगकर गुजारा करना किसी भी व्यक्ति को पसंद नहीं होता, ट्रांसजेंडर व्यक्ति को भी भीख माँगकर गुजारा करना कतई पसंद नहीं है लेकिन परिस्थितिवश अपने पेट की आग मिटाने के

लिए ये दूसरों के आगे हाथ फैलाने के लिए मजबूर हो जाते हैं। लोगों का मानना है कि ट्रांसजेंडर व्यक्ति शारीरिक मेहनत किए बगैर पैसा ऐंठने के लिए भीख माँगते हैं लेकिन ऐसा नहीं है। ट्रांसजेंडर व्यक्ति मेहनत करके रोजी रोटी कमाना चाहते हैं, विवशतावश वे भीख माँगते हैं। 'अस्तित्व की तलाश में सिमरन' उपन्यास में सिमरन बताती है "कोई भी किन्नर भीख नहीं माँगना चाहता फिर भी पापी पेट की खातिर न चाहते हुए भी भीख माँगनी पड़ती है।"[13] शिक्षित न होने के कारण इन्हें आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ता है। रोजगार न मिलने के कारण रोजी रोटी के लिए इन्हें भीख माँगना पड़ता है।

ट्रांसजेंडर व्यक्ति जब भीख माँगते हैं तब सब कहते हैं कि कोई ओर काम करके गुजारा क्यों नहीं कर लेते लेकिन हमारे तथाकथित सभ्य समाज ने इन्हें परिवार तथा समाज से बेदखल कर दिया है, शिक्षण संस्थाओं में इन्हें शिक्षा प्राप्त करने का अवसर नहीं मिलता यथा शिक्षित न होने के कारण इन्हें सरकारी तथा गैरसरकारी कार्यालयों में रोजगार नहीं मिलता अतः भूख मिटाने के लिए भीख माँगना ही उनके लिए अंतिम तरकीब रहता है। 'ज़िन्दगी 50-50' उपन्यास में हर्षा भी भीख माँगकर गुजारा करती है "बिलकुल वैसे ही जैसे आप रोज देखते हैं सड़क पर, बसों में, अपने घर के पास या फिर मार्किट में। साड़ी पहने हुए, होठों पर लाल लिपस्टिक हाथों में चूडियाँ, मटकती कमर और ताली बजाते हाथ। मैं चढ़कर लोगों से पैसे वसूल रही थी, लोगों के चेहरों पर हाथ फेर रही थी, वैसे भी मुझे चिकने लड़के अच्छे लगते हैं। इसी बहाने उन्हें छूने का मौका भी तो मिल जाता है।"[14] बुढ़ापे के चलते भी कई ट्रांसजेंडर व्यक्ति को भीख माँगना पड़ता है। एक ट्रांसजेंडर को बुढ़ापे में बधाई में जाकर नाचने-गाने की क्षमता नहीं होती तब उसके सामने पैसा कमाने का एक ही ज़रिया बचता है ओर वह है भीख माँगना। ट्रांसजेंडर समुदाय में भीख माँगने की मनाही है। 'तीसरी ताली'

उपन्यास में जब कला मौसी भीख माँगकर जीवन यापन करती है तब गुरु डिम्पल उसे भीख माँगने पर डाँटती है “अपने इलाके में नाच-गाकर पैसा कमा भिखारियों की तरह सिगनल पर क्या भीख माँगती है। अपने साथ हम सबकी इज़्ज़त का भी कचरा करती रहती है।”[15] कोई ट्रांसजेंडर व्यक्ति भीख माँगकर गुजारा करे यह ट्रांसजेंडर समुदाय के लिए शर्मनाक बात है। विवशतावश ट्रांसजेंडर व्यक्ति को भीख माँगने जाना पड़ता है।

नकली ट्रांसजेंडर बने लोग बिना मेहनत किए आसानी से पैसा कमाने के लिए सार्वजनिक जगहों तथा रेलगाड़ी, रेलवेस्टेशन, बस अड्डों में भीख माँगते हैं। पैसा न देने पर ये गंदी हरकतें करते हैं तथा दूसरों को गाली भी देते हैं। जिसकारण लोगों में ट्रांसजेंडर समुदाय के प्रति डर एवं घृणा पैदा हो गया है और वे ट्रांसजेंडर व्यक्ति को देखते ही वहाँ से नौ दो ग्यारह हो जाते हैं। नकली ट्रांसजेंडरों की वजह से इनकी भीख में मिलनेवाली रकम में भी घटौती आ गई है। आज बहुत सारे एन.जी.ओ भीख माँगकर गुजारा करनेवाले ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को प्रशिक्षण देकर उन्हें रोजगार के लिए तैयार कर रहे हैं। ऐसा कार्य ट्रांसजेंडर समुदाय के लिए आशा प्रदान करता है।

4.1.3. वेश्यावृत्ति

वेश्यावृत्ति पैसों के लिए अपने शरीर को बेचना या कहें तो यह एक तरह का व्यापार है, जिसमें पैसा कमाने के लिए दूसरों से शारीरिक रिश्ता बनाया जाता है। पैसों के खातिर यौन संबंध बनाने के कारण ही इस यौन संबंध बनानेवालों में भावनात्मक संबंध नहीं होते। हमारे भारत में वैवाहिक यौन संबंध के अतिरिक्त अन्य यौनसंबंध को स्वीकार नहीं किया गया है। वेश्यावृत्ति या देहव्यापार गैरकानूनी मानी जाती है। वेश्यावृत्ति करनेवालों को वेश्या या यौनकर्मी कहा जाता है। आज भारत में वेश्यावृत्ति करनेवालों की संख्या बढ़ रही है, जिसका मूल कारण हमारी अर्थव्यवस्था

है। नौकरी की कमी के कारण युवावर्ग को आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ रहा है, यथा बहुत लोग यौनकर्म का पेशा अपनाते नज़र आ रहे हैं।

ट्रांसजेंडर समुदाय के लोग भी देहधंधा में संलग्न होते हैं। अपने परिवार से बहिष्कृत ये उचित शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते यथा शिक्षा की कमी तथा उनकी लैंगिकता के कारण उन्हें सभ्य समाज में कहीं नौकरी नहीं मिल पाती, परिवार से भी बहिष्कृत होने के कारण ये आर्थिक रूप से संबल नहीं होते। ट्रांसजेंडर समुदाय में शामिल हो जाने के बाद बधाई, भीख माँगना आदि इनके कमाई का जरिया होता है। अपनी कमाई का एक हिस्सा उन्हें गुरु को भी सौंपना पड़ता है। पहले बच्चों के घर में जन्म लेने तथा घर में अन्य शुभ अवसरों पर ट्रांसजेंडर लोगों का आना शुभ माना जाता था लेकिन आज आधुनिक युग में पुराने विश्वासों को लोग नहीं मानते, जिस कारण इनकी कमाई घट गई है। यह वर्ग आर्थिक रूप से बहुत कठिनाई का सामना कर रहा है। ये रोजी रोटी के लिए तड़प रहे हैं। इस कारण वे यौनकर्म की ओर अग्रसर हो रहे हैं। यौन कर्म वे स्वेच्छा से नहीं चुनते बल्कि उनकी परिस्थिति उन्हें यौनकर्मी बनने को विवश बनाती है। 'किन्नर कथा' उपन्यास में नगीना जिलाधिकारी से उनके यौनकर्म से जुड़ने का कारण बताती है "यह सच है सर कि शिक्षा की कमी, अन्य व्यवसाय में जुड़ने के सीमित अवसर, आर्थिक तंगी व परिवार का भावात्मक लगाव न होना ही अधिकांश हिजड़ों को यौनकर्म की ओर ले जाता है।"[16] पेट की आग बुझाने के लिए यह ट्रांसजेंडर वर्ग सेक्सवर्क करने के लिए बेबस होता है नहीं तो भला कौन मन से चाहता है कि वह अपने शरीर को बेचे। अन्य रोजगार का मार्ग ढूँढ़ने पर भी इनके हाथ लगता नहीं और न ही कोई उनकी आर्थिक सहायता करने को तैयार होता है। 'यमदीप' उपन्यास में मल्लू साव मानते हैं कि सभी ट्रांसजेंडर सेक्सवर्क में लिप्त हैं। नाजबाबी उनके इस विचारधारा को सुधारते हुए उनकी बेबसी उन्हें बताती है

"अब क्या है, भइया, कि किसी-किसी में पेट की आग बरदाश्त करने की बहुत आदत नहीं होती। सबीहा, अच्छे घर से है। खाते-पीते घर की। यहां आकर भी उसकी खाने-पीने की आदत नहीं छूटी है। हम लोग तो हालात से समझौता कर लेते हैं। कभी मिल गया तो मुर्गा-मलीदा भी खा लिया, नहीं हुआ तो एक टुकड़ा नमक मुंह में डाल, पानी पीकर सो रहे। अब धंधा बारहों महीने एक जैसा तो नहीं रहता....शायद इसी मजबूरी में आप सबीहा को ऐसा करते देखते होंगे। नहीं तो हम कोई इंसान तो है नहीं कि हमारे तन की आग हमें ऐसा करने को मजबूर करे। बस पेट की आग से ......।"[17] सभ्य समाज का जो पुरुष वर्ग दिन की रोशनी में ट्रांसजेंडर के पास जाने में हिचकिचाता है, शर्मिन्दगी महसूस करता है वहीं अपनी शारीरिक भूख मिटाने के लिए इन्हें इस्तेमाल करते हैं। 'जिन्दगी 50 – 50' उपन्यास में रजनी हर्षा को शारीरिक धंधे से रूबरू कराते हुए कहती है "ओह ! धंधे के बारे में जानना चाहती है। जानती है, ये मुंबई है, यहाँ कई बड़े-बड़े प्रोड्यूसर डायरेक्टर 'गे' हैं। उन्हें कोई 'गे' चाहिए होता है पर वे कहाँ से ढूँढें? अब हम ही मिलते हैं, इसके बदले में। वे हमें बहुत सारा पैसा देते हैं।"[18] उपन्यास में रामालक्ष्मी देह धंधा करती है वह हर्षा से कहती है "अरे धंधा करने जा रही हूँ। अपना धंधा दोनों टाइम होता है, दिन में भी रात में भी। सड़क पर भी, कमरे के अन्दर भी।"[19] रोजगार प्राप्त न होने के कारण ये आर्थिक रूप से पिछड़े हो जाते हैं। इन्हें अपना पेट भरने के लिए देह धंधा करके पैसा कमाना पड़ता है।

पैसे की लालच के कारण कई ट्रांसजेंडर वेश्यावृत्ति करते हैं। कम समय में डेर सारा पैसा इस धंधे से उन्हें मिलता है। बधाई पर जाने या भीख माँगने जाने से इतना बड़ा रकम मिलना संभव नहीं है। 'वह' उपन्यास में कोमल मौसी कहती है कि वे पैसों की लालच में सखियों के साथ वेश्यावृत्ति करने गई लेकिन वाहिदा गुरु वेश्यावृत्ति के सख्त खिलाफ थी। कई ट्रांसजेंडर तो वेश्यावृत्ति को अपना

पेशा ही बना लेते हैं। वेश्यावृत्ति से जुड़े ट्रांसजेंडर डेरे के अन्य ट्रांसजेंडर को भी पैसा का लालच देकर इस काम की ओर उन्हें आकर्षित करती हैं। 'तीसरी ताली' उपन्यास में रेखा चितकबरी वेश्यावृत्ति के व्यवसाय में लिप्त है। वह पैसा का लालच देकर अन्य ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को अपने साथ जोड़ती है। वह कस्टमर के पास ट्रांसजेंडर लोगों को पहुँचाती है। देह धंधा व्यापार में ट्रांसजेंडर लोगों की माँग बढ़ रही है, इसका खुलासा 'तीसरी ताली' उपन्यास में प्रदीप सौरभ ने किया है "सुनयना के आने की खबर पिंकी ने रेखा चितकबरी को दी तो उसकी बाँछे खिल गई। वह लंबे समय से समलैंगिक लड़कों और हिजड़ियों की तलाश में लगी हुई थी। बाज़ार में ग्राहक लड़कियों की जगह लौण्डै माँग रहे थे। लौण्डे लड़कियों की तुलना में सस्ते में भी उपलब्ध थे। विदेशी ग्राहक तो कमसिन लौण्डों की मुँहमाँगी कीमतें दे रहे थे। रेखा चितकबरी ने अपने लेपटॉप में सुनयना की तस्वीर डाल दी।"[20] आज भारी संख्या में ट्रांसजेंडरों का उपयोग देह-धंधा में किया जा रहा है।

आधुनिकीकरण तथा संयुक्त परिवार के बनने के कारण ट्रांसजेंडर को बधाई का अवसर कम मिलता है। बहुमंजिली इमारतों के अंदर उन्हें घुसने नहीं दिया जाता तथा नकली ट्रांसजेंडर इनके पहुँचने के पहले पहुँचकर पैसा वसूल कर चले जाते हैं इन कारणों से उनकी कमाई में गिरावट आ गई हैं। अपनी भूख मिटाने के लिए ये वेश्यावृत्ति अपनाने लगे हैं। 'यमदीप' उपन्यास में महताब गुरु वेश्यावृत्ति का विरोध करती है, चमेली और मंजू तथा अन्य ट्रांसजेंडरों का कहना है कि वे जो कुछ करते हैं पेट भरने के लिए करते हैं। चमेली के संवाद से यह व्यक्त है "तन तो भगवान ने आधा टुकड़ा बनाया कि किसी लायक नहीं रहे और पेट...? पेट तो नहीं न बंद करके भेजा। वह तो खुला ही है। रोज भरो, रोज खली।"[21] ट्रांसजेंडरों के पारंपरिक पेशे से लोगों का उठता विश्वास इन्हें आर्थिक तंगी

की ओर ले जाता है। तत्पश्चात ट्रांसजेंडर लोगों को न चाहते हुए भी अपना गुजारा चलाने के लिए देह धंधा करना पड़ता है।

कुछ ट्रांसजेंडर लोगों को अपनी मजबूरी से देह धंधा करना पड़ता है। ‘जिन्दगी 50-50’ उपन्यास में हर्षिता देह धंधा के खिलाफ थी। देह धंधा न करने के कारण उसकी कमाई अन्य देह धंधा करनेवाले ट्रांसजेंडरों से कम थी, जिस कारण उसके डेरे में गुरु उससे सक्त से पेश आते, उसे ज़मीन पर सोना पड़ता और सबके खाने के बाद खाना मिलता था। हर्षिता को अपने बाबूजी के गाँव के खेत को बचाने के लिए पाँच लाख रुपए कि ज़रूरत पड़ती है। रात दिन मेहनत करके भी जब वह पैसा जुटा नहीं पाती तो अंत में हारकर शारीरिक धंधा करने लगती है। वेश्यावृत्ति करके वह मोटा रकम कमाती है और अपने पिताजी के खेत को बचाती है। वेश्यावृत्ति का विरोध करनेवाली हर्षिता अंत में एड्स से ग्रसित होकर अकाल मृत्यु प्राप्त करती है।

‘यमदीप’ उपन्यास में महताब गुरु भी वेश्यावृत्ति करने के खिलाफ थी, क्योंकि इससे कई लोग रोगग्रस्त होकर मर चुके थे। महताब गुरु नाजबीबी से कहती हैं “देखो नाज, चोरी-छिपे यहाँ जो धंधा चल रहा है उसका फल तो तुम देख ही रही हो। जुबेदा चल बसी और अब सोबराती की बारी है - अब चला जाय कि तब। इसीलिए बस्ती में हम सबको मना करते रहे कि जिस करम को करने लायक अल्ला ने ही हमें नहीं बनाया तो उसके साथ कोई जोर-जबरदस्ती मत करो। लेकिन कौन सुनता है? कभी रेलवे स्टेशन पर मोर्चाखाए पुराने डिब्बे में से पुलिसवाले के साथ कोई निकलता है तो कभी शराबियों - कबाबियों के साथ हमारा कोई बिरादर पकड़ाता है। दस-बीस रुपयों के लिए इतना गंदा काम करने की क्या ज़रूरत? अरे थोड़ा कम खाएंगे, कम सोना -चाँदी पहनेंगे, लेकिन वेश्यागिरी तो नहीं करनी पड़ेगी।”[22] ट्रांसजेंडर डेरों में ज्यादातर गुरु को अपने चेलों के वेश्यावृत्ति

करना पसंद नहीं, क्योंकि वे जानते हैं कि इससे उनका सर्वनाश ही होगा। एड्स जैसी बीमारी से वे ग्रसित हो जाएंगे। 'मंगलामुखी' उपन्यास में गुरु शालिनी के शरीर बेचने के खिलाफ थी वह इसका विरोध करती है "कैसे जाने दूँ....कित्ती बार समझा दिया उसको वो मरा हरामी है पक्का...पैसे के वास्ते उसको इधर उधर फेंक रया है किसी दिन बड़ी बीमारी लेके आ जाएगी...देखि नइ पिछली दफे कैसी सुजा कर लाइ थी, कैसी तड़पी थी....नासपीटे ने जलती सिगरेट और दारू छोड़ी थी भीतर, चिल्ला-चिल्ला के गुँजा दिया था डेरा जिनावर है स्साला।....अब नइ जाऊँगी। मालम नइ ऐसे कित्ते नोट घुसा दिए मरी की पोल में कि दुम हिलाती कुतिया सी वापस चल दइ उसके पीछे।.... दारी हिजड़ों का नाम डूबो रइ ...लोग कहेंगे हिजड़े भी अब अपने धर्म के पक्के नइ रये। मार के फेंक देगा किसी दिन मरजानी को कहीं पता भी नइ चलने का।"[23]

कई ट्रांसजेंडर ऐशोआराम की जिन्दगी जीने के लिए देह धंधा करते हैं। इससे कम समय में ज्यादा शरीर तोड़ मेहनत किए बिना भारी रकम प्राप्त होती है। 'मंगलामुखी' उपन्यास में शालिनी बुरे संगत में पड़कर पैसा कमाने के लिए देह व्यापार करती है जो उसके गुरु एवं डेरे के अन्य लोगों को पसंद नहीं। गुरु ने कई बार शालिनी को इसके लिए डाँटा भी था। अशिक्षित ट्रांसजेंडर समुदाय के लोग पैसा जुगाड़ करने के लिए देह-धंधे की ओर अग्रसर होते हैं। यह देह धंधा जीवन को बरबाद कर देगी यह समझ होते हुए भी वे इस धंधे में लिप्त हो जाते हैं। 'मेरे होने में क्या बुराई है' उपन्यास में शेखर उर्फ शिखा देहव्यापार करने का विरोध करती है। जब उसे पता चलता है कि उसकी ट्रांसजेंडर सहेली सितारा देह धंधा करने निकली है तब वह उसके इस वेश्यावृत्ति करने के प्रति अपना आक्रोश प्रकट करती है "वह और उसके काम। सुबह से निकली है, आधी रात होने को आई है, ऐसे कौन से काम हो सकते हैं? भटक रही होगी किसी के साथ नशे में इधर-उधर। कितनी बार कहा, छोड़ दे यह

धंधा, एक दिन तबाह हो जाएगी, मगर वह मेरी सुनती ही कहां है।"[24] अंत में सितारा एड्स से ग्रसित होकर आत्महत्या कर लेती है । आर्थिक संकट के कारण ट्रांसजेंडर समुदाय के लोग मजबूरन वेश्यावृत्ति करते हैं । वेश्यावृत्ति करने के कारण इनका जीवन तबाह हो जाता है । अनेक स्वास्थ्य संबंधी रोगों का ये शिकार बनते हैं । एड्स जैसे भयंकर रोगों से ग्रस्त होकर नरकीय यातनाओं को झेलकर ये मृत्यु प्राप्त करते हैं।

4.2. ट्रांसजेंडर समुदाय और उनकी संस्कृति

विविधता में एकता रखनेवाले भारत देश में अनेक संस्कृतियाँ विद्यमान हैं। भारत देश में अनेक धर्मों में विश्वास रखनेवाले लोग रहते हैं। संस्कृति में हमारे रीति रिवाज़, परंपराएँ, पर्व, जीने के तरीके, वेशभूषा, विचारधारा, आदर्श सभी सम्मिलित हैं। संस्कृति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को प्रदान की जाने वाली होती है। देश के लोग अपनी संस्कृति के आधार पर पहचाने जाते हैं। एक समाज की संस्कृति दूसरे समाज से तथा एक राज्य की संस्कृति दूसरे राज्य की संस्कृति से भिन्न होती है । ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों की भी अपनी अलग संस्कृति है, जो जन -सामान्य लोगों की संस्कृति से भिन्न है, तथा ट्रांसजेंडर समुदाय की संस्कृति विभिन्न राज्यों में भिन्न-भिन्न इलाकों में एक दूसरे से अलग है। ट्रांसजेंडर व्यक्ति अपने संस्कृति के अनुसार जीवन यापन करते हैं। ट्रांसजेंडर केंन्द्रित हिन्दी उपन्यासों में उपन्यासकारों ने ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों की संस्कृति का वर्णन किया है, जिसे पढ़कर हम ट्रांसजेंडर संस्कृति से अवगत होते हैं।

4.2.1. बहुचरा माता

ट्रांसजेंडर बहुचरा माता की पूजा करते हैं। बहुचरा माता का मंदिर गुजरात के मेहसाणा जिले के बेचराजी नामक कस्बे में स्थित है। बहुचरामाता को बेचराजी भी कहते हैं। इसी नाम के कारण

इस कस्बे का नाम बेचराजी पड़ा। बहुचरा माता ट्रांसजेंडर लोगों की कुलदेवी मानी जाती है। ये मुर्गों पर स्वार दिखाई पड़ती हैं। मुर्गे में सवार होने के कारण इन्हें मुर्गेवाली देवी भी कहते हैं। बहुचरा माता मुर्गी पर सवार, चार भुजाधारी, एक हाथ में त्रिशूल लिए, दूसरे हाथ में तलवार, तीसरे में चूड़ियाँ और चौथे में धार्मिक ग्रंथ लिए हुए हैं। निःसंतान दंपति लोग संतान प्राप्ति के लिए इस मंदिर में आते हैं, माना जाता है कि बहुचरा माता के आशिर्वाद से निःसंतान लोगों को संतान सुख की प्राप्ति होती है। ट्रांसजेंडर लोग यहाँ पूजा अनुष्ठान करते हैं।

बहुचरामाता से जुड़ी लोककथाएँ प्रसिद्ध हैं। उनमें से एक कथा यह है कि एक बार देवी बहुचरा अपनी बहनों के साथ एक काफिले में यात्रा कर रही थीं तभी रास्ते में डाकू बपैया ने काफिले पर हमला कर दिया वहाँ के स्त्री-पुरुष उनसे लड़े, लेकिन इनकी संख्या कम होने की वजह से वे लोग हार गये। देवी बहुचरा ने इज्जत बचाने के लिए अपने स्तन काट डाले और उस डाकू को शाप दिया। शाप के कारण वह नपुंसक बन गया। शाप से मुक्त होने के लिए उसे एक महिला की तरह सज संवरकर महिला के हाव भाव के साथ रहना पड़ा।

दूसरी कथा के अनुसार कहा जाता है कि एक निःसंतान राजा का बहुचरा माता के आशिर्वाद से पुत्र की प्राप्ति हुई लेकिन बच्चा नपुंसक था। उसका नाम जेथो रखा गया। एक रात जेथो राजकुमार के सपने में बहुचरा माता आती है और उसे अपना भक्त बनने का निर्देश देती है। जेथो अपना गुप्तांग को समर्पित करके माँ का भक्त बन जाता है। इसके बाद जितने भी नपुंसक थे उन्होंने भी अपने गुप्तांगों की बलि देकर माँ की अराधना की ओर उनके चरणों में अपना जीवन समर्पित कर दिया। बहुचरा माता की कृपा हमेशा इनपर बनी रही। इस प्रकार से बहुचरा माता ट्रांसजेंडर समुदाय की कुल देवी मानी जाती है।

बहुचरा माता की प्रतिमा सभी ट्रांसजेंडर घरानों में होती हैं। 'किन्नर कथा' उपन्यास में बहुचरा माता का मंदिर का वर्णन है "तारा के डेरे के आँगन में तुलसी चौरा के पास बहुचरा देवी का छोटा, किन्तु दिव्य मंदिर बना हुआ था। मुर्गे के ऊपर सवार चार भुजाधारी माँ बहुचर देवी एक हाथ में त्रिशूल, दूसरे में तलवार तीसरे में चूड़िया तो चौथे में धार्मिक ग्रंथ धारण किए हुए थी। गले में पुष्पमाला, सिर पर श्री लिखा मुकुट धारण किए हुए खुले हुए केशों में माँ की मूर्ति सजीव दृष्टिगोचर हो रही थी।"[25] 'गुलाम मंडी' उपन्यास में जब कल्याणी ट्रांसजेंडर डेरे में जाती है तब अंगूरी उसे वहाँ बहुचरा माता के मंदिर को दिखाती है जिसका वर्णन उपन्यास में है "भीतर एक सिला सा कमरा था। वहाँ लकड़ी की एक पाटी बनी थी जिसके सामने अगरबत्ती स्टैंड पर चार-पाँच अगरबत्तियाँ जल रही थीं। पाटी पर किसी देवी की तस्वीर थी जो मुर्गे पर सवार थी। समीप ही एक कटोरी में कुछ चिरौंजी के दाने रखे थे और तस्वीर पर गुड़हल का एक फूल चढ़ा था। अंगूरी ने जैसे आज्ञा दी, "प्रणाम करो दीदी, यह बहुचरा माता है। हमारी कुलदेवी।"[26] अलग - अलग क्षेत्रों में बहुचरा माता के नामों में भी भिन्नता देखने को मिलती है। दक्षिण भारत के लोग बहुचरा माता की पूजा चेल्लामा देवी के रूप में करते हैं। बहुचरा माता की सवारी का साधन मुर्गी है जिस कारण ट्रांसजेंडर समुदाय के लोग मुर्गी का माँस नहीं खाते। ट्रांसजेंडर लोग मुर्गी पालते हैं लेकिन उसका अंडा और माँस नहीं खाते इस तथ्य के बारे में 'किन्नर कथा' में बताया गया है "बहुचरा माता की सवारी है 'मुर्गी', हम लोगों के लिए मुर्गी खाना पाप है। कुछ हिजड़े तो अंडा तक नहीं खाते, शुद्ध शाकाहारी होते हैं।"[27]

ट्रांसजेंडर समुदाय के लोग कई देवी देवताओं पर विश्वास रखते हैं एवं अपने विश्वास के अनुसार आचरण करते हैं। 'अस्तित्व की तलाश में सिमरन' उपन्यास में सिमरन बताती है "हर प्रदेश के किन्नरों के अलग-अलग रीति - रिवाज के साथ कई असमानताएँ मिलेंगी। महाराष्ट्र में हिजड़े

अधिकतर परशुराम की माता रेणुका को प्रमुख देवी के रूप में पूजते हैं। इन्हें कर्नाटक में देवी मलम्मा कहते हैं। वहीं गुजरात और राजस्थान में बहुचरा देवी को कुलदेवी मानते हैं, जो मुर्गे पर बैठी हुई होती है। प्रायः सभी हिजड़े बहुचरा देवी को ही अपना अराध्य मानते हैं। हर जगह की मान्यता अलग है। प्रत्येक हिजड़े को अपनी जिन्दगी में एक बार बहुचरा देवी का कलश भरना ही होता है और पूजा करनी पड़ती है।"[28] ट्रांसजेंडर बिरादरी के सभी अपने अराध्य देवता के साथ बहुचरा देवी की भी पूजा करते हैं।

'यमदीप' उपन्यास में नाजबीबी अपने बसेरामाता के बारे में मानवी को बताती है "हम लोगों की एक बहुचरा माता है यानि हिजड़ों की देवी। उनका मंदिर अहमदाबाद में है। वही गुजरात में। तो वर्ष में एक बार वहाँ हम सब लोग जुटते हैं। भंडारा करते हैं, नाचते - गाते हैं। यानि एक साथ दो - चार दिन रहते हैं।"[29] बहुचरा माता के प्रति सभी ट्रांसजेंडर असीम श्रद्धा तथा विश्वास रखते हैं। सभी बहुचरा माता का पूजा पाठ करते हैं, तथा बहुचरा माता के प्रकोप से ये डरते भी हैं।

4.2.2. भुजरिया पर्व

ट्रांसजेंडर समुदाय द्वारा माया जाने वाला एक विशेष पर्व है भुजरिया पर्व। सावन के महीने रक्षाबंधन के दूसरे दिन भुजरिया या कलजिया पर्व मानाया जाता है। भोपाल में इसे सभी जोरों शोरों से मनाते हैं। इस दिन ट्रांसजेंडर समुदाय के लोग सज-धजकर धूमधाम से जुलूस निकालते हैं। भुजरिया पर्व केवल ट्रांसजेंडर लोग ही नहीं सभी के द्वारा मनाया जाता है। मालवा, बुंदेलखंड़ क्षेत्रों में इस पर्व का विशेष महत्व है। इस पर्व के एक सप्ताह पूर्व घरों में भुजरिया बोई जाती है। इस पर्व के दिन भुजरियों को कुओं, ताल-तलैयों आदि पर जाकर निकालकर पहले भगवान को भेंट चढ़ाया जाता है। इसके बाद लोग एक दूसरे से भुजरिया बदलकर अपनी आपसी शिकवें भुलाकर गले मिलते हैं।

'मंगलामुखी' उपन्यास में लता अग्रवाल ने ट्रांसजेंडर द्वारा भुजरिया पर्व मनाने तथा भुजरिया पर्व की परंपरा का वर्णन किया है। वे भुजरिया पर्व के मनाने के बारे में बताती हैं "वैसे तो अब इसे कई समाज में मनाया जाता है मगर बरसों पूर्व जब भोपाल में वर्षा न होने से अकाल की स्थिति निर्मित हो गई थी तब उनके समुदाय द्वारा ही इस परंपरा का आरम्भ हुआ था।...जब वह नये-नये इस डेरे पर आये थे, शिल्पा गुरु ने बताया था कि इतनी रोशनी न थी कभी भोपाल में, ऊँची तराइयों में बसने से रोजगार की भी ज्यादा गुंजाइश न थी, कुछ पुरखों के काम चले आ रहे थे, कुछ खेती-बाड़ी थी, गौंड राजा ने कई तालाब खुदवाये तब पानी का आवक होते ही शहर बस गया।

गौड शासन नवाबों के हाथ आ गया, उनकी रियायत में एक बार पानी का ऐसा अकाल पड़ा कि सभी ताल-तलैय्या सूख गये, हर तरफ त्राहि-त्राहि मची हुई थी खेतों में बीज सूख गये, किसानों के साथ जन-जीवन भी प्रभावित हुआ जिससे व्यापार ठप्प हो गया। तब यहाँ के नवाब को किसी पीर ने सलाह दी कि अपनी सल्तनत को मौजूदा देखना चाहते हो तो किन्नरों के पास जाओ...उनसे सहायता माँगे। अगर वे ईश्वर से प्रार्थना करेंगे तो तुम्हारे राज्य में निश्चित ही बरसात होगी.....उनकी दुआओं में बहुत असर होता है। कारण वे मोहमाया से दूर...बिना अपने पराये के भेद से सबके लिए मंगलकामना करते हैं। नवाब ने पीर की आज्ञा स्वीकार की...किन्नरों ने भी नवाब का मान रखा प्रजा की भलाई के लिए ईश्वर से गुहार लगाई...बड़ी साधना और भक्ति के साथ अपने पंचम स्वर में राग मेघ-मलहार गाकर आखिर उन्होंने द्वंद्व देवता को प्रसन्न कर ही लिया। जमकर बरसात हुई राज्य में फिर से बहाली हो गई। तब से नवाब ने किन्नरों को यह अधिकार दिया कि वे हर बरस प्रजा के अमन की खातिर यह आयोजन जारी रखे। बस कहते हैं तभी से भोपाल में यह उत्सव किन्नर समाज द्वारा

बड़े ही उत्साह से माया जाता है। जुलूस निकाला जाता है जिसमें कई प्रदेशों के किन्नर शामिल होते हैं।"[30]

4.2.3. कुवागम उत्सव

आम जनता के समान ट्रांसजेंडर के लोग भी भगवान पर विश्वास रखते हैं, तथा उत्सव मनाते हैं। तमिलनाडु के ट्रांसजेंडर अरावन की पूजा करते हैं। तमिलनाडु की कई जगहों पर भगवान अरावन के मंदिर हैं, लेकिन उनमें सबसे प्राचीन तथा मुख्य मंदिर विल्लेपुरम जिले के कुवागम गाँव में है। हर साल तमिल वर्ष की पहली पूर्णिमा को इस मंदिर में उत्सव मनाया जाता है। यहाँ 18 दिनों का कार्यक्रम होता है, सभी देशों के ट्रांसजेंडर इस उत्सव में भाग लेते हैं। 16 दिनों तक यहाँ नाच-गाना होता है 17 वें दिन मंदिर के पुरोहित द्वारा विशेष पूजा होती है। अरावन देवता को नारियल चढ़ाया जाता है। इस दिन पुजारी ट्रांसजेंडरों के गले में मंगलसूत्र पहनाते हैं, जैसे थाली कहा जाता है। रात में ट्रांसजेंडर इरावन की मूर्ति से शादी रचाते हैं। 18 वें दिन पूरे कुवागम में अरावन देवता की प्रतिमा का घुमाया जाता है, तथा बाद में उस प्रतिमा को तोड़ दिया जाता है। उसके बाद सभी ट्रांसजेंडर अपने को विधवा मानकर मंगलसूत्र तोड़ देती है, सिंदूर पोंछ लेती है, तथा विधवाओं की तरह छाती पीटकर रोती है। इसी के साथ कुवागम मेला समाप्त हो जाता है।

कुवागम मेले का चित्रण 'तीसरी ताली' उपन्यासों में विस्तृत रूप से प्रदीप सौरभजी ने किया है पूरे कुवागम में सत्रह दिन का उत्सव जैसा माहोल होता है। देश के कोने - कोने से हिजड़े कुवागम में जमा होते हैं....देश -दुनिया की चिन्ता से दू र। सबमें एक प्रकार का बचपना लौट आता है। गाँव के लोग भी इनके रंग में रंग जाते हैं। उछल-कूद। हँसी – खिलन्दड़ी। रहट की आवाज़ें। छोटे-बड़े झूले। चाट - पकौड़ी के खोमचे। श्रृंगार की दुकानें। हिजड़ों से सम्बन्धित साहित्य फुटपाथ पर जगह-जगह

बिकता है - बृहन्नला की गाथा, अर्द्धनारीश्वर, शिखण्डी चरित जैसी न जाने कितनी किताबें। गाँव का पूरे साल का अर्थशास्त्र इसी मेले पर निर्भर है।"[31] कुवागम उत्सव में बकरे की बली दी जाती है जिसके बारे में कहा गया है "बलि देने का यहाँ अपना स्टाइल है। बकरे के गले में रस्सी बाँधी जाती है, एक व्यक्ति पीछे से उसकी टाँग पकड़ता है और दूसरा रस्सी से उसकी गर्दन खींचता है। देखते ही देखते पुजारी बकरे की गर्दन को धड़ से अलग कर देता है। बकरे का सिर से खून की चिपकारि छूट पड़ती है।"[32]

कुवागम मेले में एक दिन फैशन शो भी होता है। कुवागम में देश के कोने-कोने से आये ट्रांसजेंडर इसमें भाग लेते हैं। 'तीसरी ताली' उपन्यास की पात्र मंजू फैशन शो में भाग लेती है। "मंजू ने जैसे ही आधुनिक डिजाइन की घाघरा - चोली में रैम्प पर कदम रखा, लोगों की आँखें खुली की खुली रह गयी। हल्के पीच कलर का घुटने तक का घाघरा जो कुन्दन-वर्क से जड़ा हुआ था और उस पर गुलाबी चोली जो कमर से काफी ऊपर थी। घाघरा नाभि से काफी नीचे होने के कारण उसका बीच का हिस्सा एक थिरकन पैदा कर रहा था। रैम्प के बीच पहुँचकर मंजू ने जैसे ही एक खास अन्दाज़ में अपनी गर्दन मोड़कर पीठ दिखाई, तो पूरा पण्डाल तालियों से गूँज उठा। सिर्फ एक डोर से बँधी उसकी चोली के ऊपर गोरी देह पर एक बिच्छू का टैटू इस खूबसूरती से बना हुआ था कि उसका मादक दंश निर्णायक मण्डल के हर सदस्य ने महसूस किया।"[33]

फैशन शो के बाद कथावाचन का कार्यक्रम होता है। इसमें कथावाचक मेले के महात्म्य के बारे में बताता है। मेले में आये हर हिजड़े को यह सुनना होता है। कथा न सुनने पर कुवागम-यात्रा अधूरी मानी जाती है। तीसरी वाली उपन्यास में कथावाचक महाभारत का प्रसंग सुनाता है जो इस प्रकार है "पाण्डवों और कौरवों की सेनाएँ एक दूसरे को परास्त करने के लिए आमने-सामने थीं।

हाथियों, घोडों और रथों पर सवार दोनों तरफ के योद्दा अपने अस्त्र-शस्त्र लहरा रहे थे। अर्जुन के रथ पर बैठे कृष्ण के होंठों पर एक कुटिल मुस्कान थी। उन्हें पता था कि उनकी रणनीति के चलते पाण्डवों को युद्ध जीतने से कोई रोक नहीं सकता। रणभेरी बज उठी। इसी के साथ अर्जुन का बाहुबली पुत्र अरवाण अपनी बलि देने के लिए रणभूमि में पहुँच गया। वह अपने बाजू की रक्त से सराबोर त्वचा नोच-नोचकर युद्ध की देवी काली को अर्पित कर रहा था। दोनों तरफ मार-काट मचने लगी। अरवाण अपने शरीर की एक-एक बूँद काली को अर्पित किए जा रहा था। ऐसा करते-करते उसे अठारह दिन पूरे होनेवाले थे। उसका शरीर कंकाल में तब्दील हो रहा था। उसे लगा कि उसके साथ धोखा हुआ है। कृष्ण ने तो उससे कहा था कि उसके बलिदान के बाद युद्ध कुछ क्षणों में ही खत्म हो जायेगा। शरीर में रक्त खत्म होता देख उसने अपना विश्व रूप धारण कर लिया। अपने सिर को विशालकाय पत्थर में तब्दील करके उसे दुश्मन की सेना में लुढकाना शुर कर दिया। दुश्मन की सेना के लाखों लोग मारे गये और अठारहवें दिन महाभारत का कुरुक्षेत्र में लड़ा गया वह युद्ध समाप्त हो गया।"[34]

कुवागम मेला ट्रांसजेंडरों के लिए बहुत खास होता है। यहाँ वे साल में एक बार आकर अरावन देवता से शादी करते हैं। कुवागम उत्सव का वर्णन हिन्दी उपन्यासकारों ने अपने ट्रांसजेंडर केंद्रित उपन्यासों में किया है जिसके कारण साधारण जनता कुवागम उत्सव से परिचित होती है। अपने अराध्य देवता अरावन से शादी रचाकर एक दिन के लिए सुहागिन बनने का मौका प्राप्त होना ये अपने लिए भाग्य मानते हैं।

4.2.4. ट्रांसजेंडर डेरा

परिवार एवं समाज से निष्कासित ट्रांसजेंडर व्यक्ति ट्रांसजेंडर डेरे में पनाह लेता है। ट्रांसजेंडर डेरे में सभी ट्रांसजेंडर मिलजुलकर रहते हैं। परिवार तथा समाज से मानसिक तथा शारीरिक रूप से पीड़ित इस वर्ग के लोगों को अपने जैसे लोगों के साथ डेरे में रहने पर मनुष्य होने का एहसास प्राप्त होता है, इन्हें आज़ादी मिलती है। ट्रांसजेंडर डेरे में भिन्न-भिन्न धर्मों पर विश्वास रखने वाले खुद का आपसी रिश्ता बनाते हुए जीवन व्यतीत करते हैं। डेरे का संचालन गुरु करता है। डेरे में वहाँ के नियम कायदे के अनुसार सभी को जीना होता है।

ट्रांसजेंडर डेरा शहर से बहुत दूर होता है, जहाँ साधारण जनता की पहुँच कम होती है। इनकी बस्ती के तरफ दूसरों का आना जाना नहीं होता। 'यमदीप' उपन्यास में नीरजा माधव डेरे के बारे में बताती हैं "बीस-पच्चीस छोटे-बड़े घरोंवाली यह हिजड़ाबस्ती शहर में रहते हुए भी शहर से बहुत दूर है। दिन-भर अपने - अपने क्षेत्र में गा- बजाकर अपना जीवनयापन करनेवाले ये लोग आपस में मिल-जुलकर रहते हैं। एक दूसरे के सुख-दुःख के बराबर के भागीदार। कभी - कभी झगड़े होते भी हैं तो गुरुजी (महताबगुरु) के यहाँ जाकर सब शांत हो जाता है।"[35] डेरे में शामिल होने पर ये अपने परिवार तथा सभ्य समाज से दूरी बनाये रखते हैं। कई डेरों में तो इनका अपनों से रिश्ता बनाये रखना भी मना है, क्योंकि अपनों से इन्हें दुःख ही प्राप्त होगा, 'मंगलामुखी' उपन्यास में गुरु शकुन को बताती है "हमारे लिए उस दुनिया के पास देने को बस दुःख तकलीफ है, इसीलिए हमने उसूल बनाये कि इस दहलीज पर चढ़ने के बाद उस दहलीज को भूल जाना अच्छा है। इससे न इन्सान इधर का रहता है न उधर का.....।"[36] डेरे में कोई अपनों की यादों में दुःखी न हो यह सोचकर सभी से अपनों से दूरी बनाकर रखने का निर्देश दिया जाता है।

साधारण घरों में जिस प्रकार माता पिता घर को संभालते हैं, उसीप्रकार ट्रांसजेंडर डेरे में गुरु सबका ध्यान रखते हैं। गुरु का निर्देश सभी को मानना पड़ता है। डेरे के रीति रिवाज़ तथा नियमों के विरुद्ध कोई जाए तो उसे दंड भी मिलता है। ट्रांसजेंडर डेरे में दिनचर्या है उसके बारे में 'जिन्दगी 50-50' उपन्यास में हर्षा बताती है "सुबह तीन बजे ही हम घर से सज-धज कर शादी तलाशने के लिए निकलते। अगर कहीं शादी हो रही होती तो वहाँ आशीर्वाद देकर नेग लेते थे। दिन में हम किसी के यहाँ लड़का हुआ हो, मुंडन हुआ हो, उनकी खबर लिया करते थे। उसके बाद हम रोड पर लोगों से नेग लेते थे। फिर सारे दिन के कमाये हुए पैसों में से आधा पैसा हम कस्तूरी को देते और आधे में अपना खर्च चलाते थे। इस तरह अपनी जिन्दगी पहले से बेहतर कट रही थी।"[37] कमाये पैसा का एक भाग सभी को गुरु को देना होता है जो गुरु संभालकर रखते हैं।

डेरे में ऐसे भी लोग होते हैं जो दुर्व्यसन से ग्रस्त होते हैं। वे गैरकानूनी कार्यों में भी लिप्त रहते हैं। डेरे में कुछ ट्रांसजेंडर अपनी परंपरा के विरुद्ध सेक्सवर्क भी करते नज़र आते हैं। 'मैं पायल' उपन्यास में इसका वर्णन है "गुरुमाई के डेरों में दो दर्जन किन्नर थीं। ढोलक बजाने वाले से लेकर स्त्रैण स्वभाव वाले तीन-चार लोग हमेशा गुरुमाई की सेवा में लगे रहते थे। ये नाना प्रकार के दुर्व्यसन से ग्रस्त थे। साथ की किन्नरों में दो एक को छोड़कर सबकी सब स्वच्छन्द यौन संबधों में लिप्त थीं। अप्राकृतिक मैथुन के कारण इनमें से कई विविध रोगों से ग्रस्त थीं और नशे का सहारा लेती थीं। इनमें से कुछ लड़के पालें थीं, जिनका खर्च वे स्वयं वहन करती थीं।"[38] ट्रांसजेंडर डेरे में सभी को गुरु द्वारा बनाये गए नियमों का अनुसरण करके सत्मार्ग पर चलना होता है। अपनों के घर से बेघर होनेवाले इन ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों के लिए उनका डेरा तथा वहाँ रहनेवाले ही सबकुछ होते हैं।

4.2.5. गिरिया

ट्रांसजेंडर समुदाय में गिरिया रखने की प्रथा है। ट्रांसजेंडर जिन्हें अपना पति मानते हैं, या जिनके साथ शादी करते हैं उन्हें गिरिया कहते हैं। यह अनिवार्य नहीं है कि सभी गिरिया रखे। ज्यादातर ट्रांसजेंडर साधारण पुरुष वर्ग को अपना गिरिया बनाते हैं। अपने गिरिया के प्रति इनका असीम प्यार होता है। कई लोग पैसों के खातिर गिरिया रखते हैं, गिरिया लोगों की शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने पर इन्हें पैसा मिलता है। ट्रांसजेंडर लोग अपने गिरिया के लिए करवाचौथ का व्रत भी रखते हैं।

ट्रांसजेंडर समुदाय के लोग गिरिया रखते हैं लेकिन आम जनता की धारणा है कि ये गिरिया बदलते रहते हैं, एक के जाने के बाद दूसरा रख लेते हैं लेकिन ऐसा नहीं है। एक ट्रांसजेंडर अपने जीवनकाल में एक ही गिरिया रखते हैं, तथा वे उनके प्रति वफादार रहते हैं। 'यमदीप' उपन्यास में रामसरन नाजबीबी का गिरिया है, नाजबीबी को छोड़कर उसके गये सालों हो गए थे लेकिन उसके जाने के बाद नाजबीबी ने दूसरा गिरिया नहीं रखा। नाजबीबी गिरिया रखने के बारे में मल्लू साव को बताती है "राम, राम ऐसी रोजी न करें भगवान। किसी न किसी तरह कट ही जाएगी भइया। हम लोग हिजड़े हैं तो क्या हुआ? कुछ उसूल है हमारा भी। हम ये करम फानते नहीं, और यदि किसी मजबूरी में गिरिया बना ही लिया किसी को जीवन भर निभाते हैं। वह भले ही हमें छोड़ दे, पर हम वफादार कोती की तरह तमाम उम्र बिता देते हैं। वैसे ही जैसे बड़े लोगों के घर लुगाई कहीं दूसरे पर नहीं जातीं।"[39] किसी को गिरिया बना लेने पर ये उम्र भर उनका कोती बनकर जीती हैं। गिरिया के द्वारा किये जाने वाले अत्याचार वे सहते नहीं। गिरिया के विरुद्ध वे आवाज़ भी उठाते हैं। 'दरमियाना' उपन्यास में ट्रांसजेंडर सुनंदा का गिरिया है सुधाकर ईद के दिन उपन्यास का नायक सुनंदा के बुलाने पर उसके घर

आता है, लेकिन उसके गिरिया को लेखक का वहाँ आना सुहता नहीं। सुनंदा और उसके गिरिया सुधाकर के बीच इस बात पर झगड़ा हो जाता है। सुनंदा गिरिया को घर से बाहर निकाल देती है "निकल छिनाल की औलाद यहाँ से...तेरी रखैल नहीं हूँ मैं"[40] गिरिया चाहे जितना भी उसके लिए प्यारा हो लेकिन कोई उनकी ज़िन्दगी में ज़्यादा दखलन्दाजी करे उन्हें यह मंजूर नहीं।

'तीसरी ताली' उपन्यास में गिरिया लोगों के बारे में कहा गया है "गिरिया वे होते हैं, जिन्हें हिजड़े अपना पति मान लेते हैं। उनके लिए वे आम महिलाओं की तरह करवाचौथ से लेकर पति के लिए होनेवाले हर तीज-त्योहार मनाते हैं। आमतौर पर गिरिया ढ़ोलक या हारमोनियम बजानेवाले होते हैं या फिर गरीब आदमी। समलैंगिक भी कई बार गिरिया बन जाते हैं। आमतौर पर गिरियाओं की मूँछें ज़रूर होती हैं। हिजड़े मूँछवालों को ही गिरिया बनाना पसंद करते हैं। मूँछों से वे उनकी मर्दानगी महसूस करते हैं और उनका अपने स्त्री होने का अहसास भी पुख्ता हो जाता है।"[41]

4.2.6. गुरु

भारतीय समाज में गुरु का महत्वपूर्ण स्थान है। माता-पिता तथा गुरु भगवान तुल्य माना जाता है। गुरु ही है जो हमें पथ प्रदर्शन करता है। ट्रांसजेंडर समुदाय में भी गुरु को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है। परिवार तथा समाज से बहिष्कृत होने के बाद ट्रांसजेंडर व्यक्ति जब अपने समुदाय में प्रवेश करता है तब गुरु ही उसके लिए माता-पिता बनता है। गुरु के निर्देश के अनुसार ही ट्रांसजेंडर समुदाय के लोग जीवन व्यतीत करते हैं। ट्रांसजेंडर घराने में गुरु ही प्रमुख है। ट्रांसजेंडर घराने का सभी निर्णय गुरु के द्वारा लिया जाता है, उनका आदेश सभी मानते हैं। गुरु की सहमति से ही ट्रांसजेंडर घराने में किसी का प्रवेश होता है। माता-पिता के समान गुरु घराने में अपने सभी चेलों से प्यार करते हैं तथा गलत काम करनेवालों को सजा भी देते हैं। डेरे में होनेवाली आपसी मुटभेद को वे

सुलझाते हैं। डेरे के सभी को अपनी कमाई का एक हिस्सा गुरु को सौंपना पड़ता है, जो गुरु संग्रहित करके अन्य आवश्यकताओं के लिए रखते हैं।

गुरु के व्यक्तित्व में माता, पिता, भाई, पथप्रदर्शक, चिंतक आदि विविध रूपों का समनव्य हम देख पायेंगे। 'मंगलामुखी' उपन्यास में सभ्य समाज की शकुन जो अपने प्रेमी द्वारा गर्भधारण करती है तथा अंत में जब वह अपने प्रेमी तथा परिवालों से तिरस्कृत होती है तब उसे ट्रांसजेंडर समुदाय के लोग आश्रय देते हैं। ट्रांसजेंडर डेरे में पहुँची शकुन को गुरु उसकी माँ बनकर देख-रेख करती है। वह शकुन के लिए सिर्फ माँ ही नहीं एक पिता, गुरु,पथप्रदर्शक बनती है। गुरु उसे आगे बढ़ने का हौंसला देती है। ट्रांसजेंडर डेरे में गुरु को सर्वोपरी माना जाता है। गुरु के नेतृत्व में सभी को नाच-गाना सिखाया जाता है। गुरु नेक दिलवाले तथा सभी निर्णय लेने में सक्षम होते हैं। 'यमदीप' उपन्यास में मेहताब गुरु डेरे में सभी का ध्यान रखते हैं, उनका चरित्र बहुत मजबूत है। उनके आज्ञा का पालन सभी करते हैं "हिजड़ा समुदाय में उनकी ही बात चलती है। उनका अनुशासन ही सर्वोपरी है। उनका निर्णय सर्वमान्य है। कब, किसे किस क्षेत्र में नाचना गाना है? किसके बीमार होने पर किसे उसकी सेवा-टहल करनी है? उसकी कमाई न होने पर भी उसका एक हिस्सा गुरुजी के पास सुरक्षित हो जाता है। वैसे भी अपनी-अपनी कमाई का एक मोटा हिस्सा गुरुजी के पास ईमानदारी से जमा कर देना शहर के तमाम हिजड़ों का प्रतिदिन का नैतिक दायित्व है। इस कर्तव्य से कोई भी हिजड़ा मुक्त नहीं हो सकता।"[42] गुरु के निर्णय एवं आज्ञा को सभी को मानना पड़ता है।'यमदीप' उपन्यास में गुरु के निर्णय के बारे में बताया गया है "शहर भर के हिजड़ों के गुरु महताब की आज्ञा और निर्देश के बिना उनके समुदाय में कोई निर्णय नहीं लिया जा सकता। उनका अनुशासन और आदेश सर्वमान्य था।"[43] ट्रांसजेंडर डेरे में रहनेवाले सभी को एक सूत्र में बाँधे रखने का कार्य गुरु करते हैं। ट्रांसजेंडरों के बीच

के आपसी झगड़ों तथा कलह को वे सुलझाते हैं। 'मंगलामुखी' उपन्यास में गुरु के नेतृत्व का वर्णन है, "गुरु का नेतृत्व पूरे डेरे को एक सूत्र में बाँधे रखता है। इतना ही नहीं परिवार का मुखिया होने से सभी अपनी कमाई का एक हिस्सा गुरु को समर्पित करते हैं। गुरु भी अपनी कमाई में से एक हिस्सा अपनी कुल देवी के नाम से निकालकर रखते।"[44] डेरे का हर चेला कमाई का एक हिस्सा गुरु को देता है 'मेरे होने में क्या बुराई है' इसमें इसका वर्णन है "हर चेला अपनी कमाई में से गुरु को हिस्सा देता है। वह घर की मुखिया; बड़ी बुजुर्ग है, इसलिए सबके लिए यह जरूरी है कि वह इसको खर्ते पानी के लिए रकम् दे। बस इसी तरह दो वक्त की रोटी का सहारा हो जाता है।"[45] ट्रांसजेंडर घराने में गुरु का महत्वपूर्ण स्थान होता है। डेरे में रहनेवाले सभी ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को एकसूत्र में बाँधे रखने का कार्य गुरु करते हैं। हर ट्रांसजेंडर व्यक्ति के हित का ख्याल रखना उसका उत्तरदायित्व है। ट्रांसजेंडर डेरे में रहनेवाले सभी को एकसूत्र में बाँधे रखने का कार्य गुरू करते हैं। ट्रांसजेंडरों के बीच के आपसी झगड़ों तथा कलह को वे सुलझाते हैं। बधाई का प्रशिक्षण देने का कार्य भी गुरू करते हैं।

डेरे में जिसकी सभी इज्जत करते हो, तथा जो सभी के लोकप्रिय हों, ज्यादातर उन्हें गुरु बनाया जाता है। 'किन्नर कथा' में तारा जो सभी का लोकप्रिय थी, उसे गुरु बनाया जाता है "तारा अपने किन्नर समाज का गुरु है। यह पद उसने काफी संघर्षों के बाद पाया था। किन्नर समाज में वह लोकप्रिय था। उसकी आज्ञा -इच्छा की अवहेलना कोई नहीं कर सकता था। सभी उसकी इज्जत करते थे, उसकी न्यायप्रियता व सौम्य स्वभाव के सभी कायल थे। तारा व उसके संगी साथी माँ बहुचरा देवी के अनुयायी थे। जिन्हें वह देवी स्वरूप मानते हुए पूजते है।"[46] ट्रांसजेंडर घराने का मुखिया नायक होता है, नायक ट्रांसजेंडर गुरु को चुनता है "किन्नर समाज में सात घर होते हैं, जिसका मुखिया नायक होता है, जो गुरु नियुक्त करता है। गुरु का महत्वपूर्ण स्थान होता है। किन्नर चाहे वह

हिन्दू के यहाँ पैदा हुआ हो, मुस्लिम या किसी अन्य धर्म में, किन्नर समाज में सम्मिलित हो, वह सभी एक पंथ के गामी बन जाते हैं, जो स्व अर्जित आय का निर्धारित हिस्सा अपने गुरु के चरणों में ईमानदारी के साथ रखते हैं। सभी एक परिवार के सदस्य की तरह साथ-साथ रहते हैं। एक दूसरे के सुख-दुःख में बराबर से शरीक होते हैं। विवाद की स्थिति में गुरु के द्वारा दिए आदेश का पालन करना सभी का परम कर्तव्य होता है।"[47] गुरु घराने में सख्त नियम बनाते हैं, जिस नियमों का सभी को पालन करना होता है। गुरु सभी के आय का एक भाग जुगाड़ करके उनके भविष्य की आवश्यकताओं के लिए रखते हैं।

डेरे के लोगों द्वारा गलत काम करने पर गुरु उन्हें दंड भी देते थे। जिस प्रकार हमारे परिवार में पिता घर का देख-रेख करते हैं उसीप्रकार ट्रांसजेंडर समुदाय में गुरु के नेतृत्व में सारा काम होता है। बिरादरी में जिस काम को करने की मनाही होती है, वह काम करने पर गुरु उन्हें दंड़ देते है, कभी - कभी तो बिरादरी से बहिष्कृत भी कर देते हैं। 'यमदीप' उपन्यास में गुरु के द्वारा दिये जाने वाले दंड़ प्रावधान का वर्णन देखने को मिलता है "कभी- कभी ट्रेनों और बसों में चढ़कर भी ये धन उगाही करने लगते लेकिन ऐसे हिजड़ों का पता चलते ही उन्हें बिरादरी से बहिष्कृत करने जैसा दण्ड भी गुरुजी द्वारा दे दिया, जाता क्योंकि उनके समुदाय में भीख, मांगना, चोरी-हिंसा करना पाप माना जाता है।"[48] ट्रांसजेंडर समुदाय में गुरु नेक दिल के होते हैं, वे डेरे के सभी को प्यार करते हैं तथा उनका हित चाहते हैं 'ऐ ज़िन्दगी तुझे सलाम' उपन्यास में निर्मला गुरु नेक दिल की है। रोशनी को जब ट्रांसजेंडर डेरे में लाया जाता है तब निर्मला गुरु उसके पालन-पोषण का दायित्व रज्जो को सौंपती है तथा रोशनी का पढ़ाने में वह पूरा सहयोग देती है। किसी चीज़ की कमी वह रोशनी को नहीं होने देती। 'यमदीप' उपन्यास में भी गुरु के नेक दिल हमें देखने को मिलता है। नाज बीबी द्वारा पालित सोना को

स्कूल में भर्ती कराने तथा उसके पढ़ाई के खर्चे के लिए पैसा चाहिए था, जिसके जुगाड़ करने के बारे में सोचकर नाजबीबी चिंतित थी। पैसा न मिलने पर वह सोना की पढ़ाई फिर कभी पैसा हाथ लगनेपर कराने का विचार बनाती है तब महताब गुरु पैसा देकर उसकी सहायता करती है। महताबगुरु नाजबीबी से कहती है "दो दिन का खेल है क्या पढ़ाई, जो आज नहीं, दो दिन बाद खेलेंगे? सोना पढ़ेंगी और इसी साल पढ़ेगी। बेसरा माता के लिए जो हिस्सा रखा है, उसमें से कल मैं तुम्हें दूंगी। कमाई होने पर उसमें फिर डाल देंगे उतना। तू चिंता न कर। बस, ठीक हो जा, लेकिन फिर खैरगल्ले न करना।"[49] इस प्रकार गुरु की सहायता करने पर सोना को स्कूल में दाखिला कराया गया। ट्रांसजेंडर डेरे में जब कोई नया-नया प्रवेश करता है तब वे अपने को नये माहौल में असहज पाते हैं उस समय गुरु उन्हें मानसिक तौर पर सहारा देते हैं। तथा माँ के समान उन्हें उस परिवार में स्वीकार करते हैं। 'श्रापित किन्नर' उपन्यास में जब नरगिस ट्रांसजेंडर डेरे पहुँचती है तब गुरु उसका स्वागत करती है तथा प्यार से समझाती है "देखो नरगिस अब यही तुम्हारा परिवार है। तुम्हें हम लोगों के साथ ही रहने के लिए अल्लाह मियाँ ने भेजा है। हम सब एक परिवार की तरह रहते हैं।"[50] तथा जब नरगिस पढ़ने की इच्छा जाहिर करती है तब गुरु उसे आगे पढ़ने का मौका भी देती है। 'जिन्दगी 50-50' उपन्यास में घर छोड़कर ट्रांसजेंडर डेरे में शामिल होने आई डरी हुई हर्षा को गुरु हौंसला देती है इसके बारे में हर्षा कहती है "मेरे पीठ पर हाथ फेरते हुए वह मुझे समझाने लगी "इतना डरा हुआ काहे है ? हम तुम्हारी सहेली, भाई या जो तू माने वो है", उसने मुझसे नज़र मिलाकर बात करनी शुरू की,"हमसे कबहुँ डरने का नहीं। हम तुम्हारे हितैषी हैं। चल अच्छा ये बता स्कूल काहे नहीं गया ? इधर काहे आ गया ?"[51] अपने परिवार से तिरस्कृत ट्रांसजेंडर व्यक्ति जब ट्रांसजेंडर डेरे में आता है, वहाँ उसे गुरु से माता-पिता का स्नेह मिलता है तथा संरक्षण भी प्राप्त होता है।

बहुत सारे ट्रांसजेंडर गुरु पैसों के लालची भी दिखाई पड़ते हैं और साथ ही साथ वे दुष्ट भी होते हैं। पैसों के लिए वे अपने चेलों से देह धंधा करवाते हैं। जिससे उनके हाथों में भी मोटी रकम मिलती है। 'जिन्दगी 50-50' उपन्यास में गुरु राधिका ने अपने चेले को जिस्म का धंधा करने की इजाजत दे दी थी। लेकिन हर्षा देह व्यापार करने को तैयार नहीं थी, इस कारण गुरु राधिका हर्षा से नाराज़ थी। गुरु को वहाँ के अन्य लोग हर्षा से कई गुणा अधिक पैसा देते थे, क्योंकि वे देह धंधा करके मोटी रकम कमाते थे। हर्षा से कम पैसा मिलने के कारण गुरु उससे बुरा व्यवहार करती थी। हर्षा कहती है "जब मेरे पास से लगातार राधिका को कम पैसे मिलने लगे तो वह मुझसे अलग तरह का बर्ताव करने लगी। ठीक वैसे ही जैसे बेरोजगार लड़को को बाप भी कम प्यार करने लगता है और कभी-कभी हिस्सेदारों में भी कम देने की धमकी देता है।"[52] 'वह' उपन्यास में गुरु पैसों के लिए चेलों को दूसरों को सौंपती नज़र आती है। गुरु ने अंजू तथा रविन्दर को पैसों के लिए दूसरों को उनकी हवश पूर्ति करने के लिए सौंप दिया था। तप ट्रांसजेंडर अंजू के साथ मिलकर ट्रांसजेंडर समुदाय की उन्नति के लिए एन.जी.ओ बनाता है। कई ट्रांसजेंडर एन. जी. ओ में आकर शामिल होते हैं। नरगिस की मंडली के गुरु मीना को यह एन. जी. ओ स्वीकार्य नहीं होता, क्योंकि बहुत ट्रांसजेंडर लोग इसमें शामिल हो गए थे तथा वे वहाँ से अपने पैरों में खड़े होने काबिल बन रहे थे। एन. जी. ओ की वजह से उनके धंधे को नुक्सान होने का डर मीना को था। इस कारण वह एन जी ओ के खिलाफ थी।

कई गुरु ऐसे होते हैं कि जिन्हें अपने चेलों से लगाव ही नहीं होता, उन्हें सिर्फ पैसा चाहिए होता है। जिसके लिए वे उन्हें सेक्सवर्क के लिए भी प्रोत्साहित करते हैं। चेलों से अपने हिस्से का पैसा वसूल करने में वे कोई चूक नहीं आने देते। 'अस्तित्व की तलाश में सिमरन' उपन्यास में सिमरन बताती है कि उसकी गुरु उसे पैसों के लिए तंग करती थी "मेरी गुरु दुष्ट प्रवृत्ति की निकली। उसने

कहा कि तू कुछ भी कर। किसी के साथ रात भर सोकर पैसा कमा कर ला, मुझे तो बस पैसा चाहिए।"[53] और सिमरन बताती है कि उसका गुरु भीख माँगते वक्त बदतमीज़ी करने का भी उपदेश देती है, जिससे लोग जल्दी उन्हें पैसा दे देंगे। सिमरन मानती है कि गुरु पद के लिए वह योग्य है ही नहीं"भीख माँगते वक्त अगर कोई पैसा न दे तो उसके सामने निर्वस्त्र हो जाओ। यह अजीब ही शिक्षा थी। कैसे गुरु थे ये। जिनको गुरु का सही मतलब भी नहीं पता था।"[54] ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों के लिए नाच-गाना आना चाहिए होता है। सिमरन को सिर्फ नाच आता था गाना उसे नहीं आता था, जिसके लिए भी उसे गुरु का अत्याचार सहना पड़ा। वह कहती है "एक बार तो गुरु ने सारी सीमा ही लाँघ दी। मुझे आज भी याद है। भीड़ भरा इलाका था जहाँ पर मैं सब के साथ बधाई के लिए गयी हुई थी। गुरु ने सबके सामने चप्पल उठाई और मुझ पर दे मारी और कहने लगी तेरी खूबसूरती का मैं क्या करूँगी ? तू गा नहीं सकती, अब मैं क्या करूँ, बता तू।"[55] चेलों की भलाई कुछ गुरु बर्दाशत नहीं कर पाते, उन्हें अपना स्वार्थ ही मुख्य होता है। अपने स्वार्थ के लिए अपने चेलों का बुरा हाल करने तथा मौत की घाट उतारने तक को वे बाज नहीं आते।

ट्रांसजेंडर घराने का संचालन करना गुरु का उत्तरदायित्व होता है। डेरे में रहने वाले सभी ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के बीच एकता बनाये रखना तथा डेरे में आपसी मुठभेड़ हो तो उसे सुलझाना गुरु का दायित्व होता है। गुरु सभी को सही राह प्रदर्शित करते हैं। गलत धंधे करने में ये रोक लगाते हैं। डेरे में रहनेवाले हरेक व्यक्तियों के हित अकांक्षी होना इनके लिए अनिवार्य है। लेकिन कुछ लोग पैसों के खातिर इस पद पर आसीन होते हैं, ये गुरु डेरे के लिए अभिशाप बन जाते हैं। ये डेरे के व्यक्तियों के हित के लिए कुछ नहीं करते, इन्हें सिर्फ पैसे से मतलब होता है। नेक दिल का गुरु डेरे के सभी से लगाव रखते हैं उनके सुख-दुःख में उनका साथ निभाते हैं।

4.2.7. निर्वाण

ट्रांसजेंडर समुदाय में निर्वाण एक रस्म है जिसमें ट्रांसजेंडर घराने में नये-नये शामिल हुए ट्रांसजेंडर व्यक्ति का लिंग छेदन किया जाता है। निर्वाण प्रक्रिया से गुजरने के बाद ही एक व्यक्ति को पूर्ण रूप से असली ट्रांसजेंडर माना जाता है। ट्रांसजेंडर परंपरा के अनुसार ऐसा विश्वास है कि उनकी कुलदेवी बहुचरा माता ने निर्वाण प्राप्त व्यक्ति को नवदंपति लोगों को संतान प्राप्ति का वरदान देने की शक्ति प्रदान की है। ट्रांसजेंडर समुदाय में पहले निर्वाण दाई करती थी उस वक्त ट्रांसजेंडर व्यक्ति को बहुत ही दर्द से गुजरना पड़ता था,जान जाने की संभावना रहती थी, लेकिन आजकल यह प्रक्रिया अस्पतालों में डॉक्टर करते हैं।

निर्वाण प्रक्रिया के बारे में उपन्यासकारों ने जिक्र किया है, जिसके तहत सामान्य जन निर्वाण प्रक्रिया से परिचित होते हैं। ‘अस्तित्व की तलाश में सिमरन’ उपन्यास में सिमरन निर्वाण के बारे में बताती है “हमारे किन्नर समाज में निर्वाण का संस्कार बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। यह एक ऐसा संस्कार है जिसमें हमें पूर्ण रूप से स्त्री बना दिया जाता है।”[56] निर्वाण प्रक्रिया के बारे में विस्तार से सिमरन कहती है “निर्वाण एक ऐसी संस्कार प्रक्रिया होती है जिसके अंतर्गत उस किन्नर की देह से पुरुष लिंग को हटा दिया जाता है। इस क्रिया को कहीं - कही छिबरना भी कहते हैं। पहले यह क्रिया दाईयाँ करती थीं जो किन्नर ही होती थीं। बिना किसी दबाई और सुई के इस क्रिया को अंजाम दिया जाता था। अब इस क्रिया को डॉक्टर करने लगे हैं। एनस्थेशिया के बाद डॉक्टर ऑपरेशन से इस क्रिया को पूर्ण करता है। डॉक्टरों से करवाने में खर्चा आता है। इस खर्च को वह किन्नर चुकाता है जो अपने नाम पर दूसरे किन्नर को चेला बनाता है। डॉक्टर का सारा खर्चा और बाद में दवाई खर्च बहुत महंगा पड़ता है। तो कोई भी हिजड़ा बना किसी को चेला बने निर्वाण नहीं कर सकता उसके लिए

किसी के नाम का चेला बनना आवश्यक होता है।"[57] आजकल ट्रांसजेंडर अस्पताल में जाकर डॉक्टरों से निर्वाण करवाते हैं।

निर्वाण प्रक्रिया बहुत ही पीड़ादायक होता है, पूर्ण रूप से ट्रांसजेंडर बनकर ट्रांसजेंडर समुदाय में शामिल होने की चाह से ये लोग सभी दर्द हंसी खुशी सहने को तैयार हो जाते हैं। निर्वाण करनेवाले व्यक्ति के जख्म भरने में कई दिन लग जाते हैं 'मेरे होने में क्या बुराई है' उपन्यास में सितारा शेखर उर्फ शिखा को निर्वाण से परिचित कराते कहती है "सदियों से यह काम दाई करती आ रही है। कमरे में ऊंची आवाज़ में गाने लगा देते हैं और फिर एक ही झटके में जननांग को जिस्म से अलग कर देते हैं। म्यूज़िक की ऊंची आवाज़ में दर्द से निकलती चीखें दबकर रह जाती हैं।"[58] आगे वह कहती है "फिर जख्म पर कोई मरहम - पट्टी नहीं होती। ख़ून को बहने देते हैं, ताकि ख़ून के द्वारा मर्दानगी जिस्म से बहकर उसके बदन को पाक कर दे। चालीस दिन न वह किसी औरत और मर्द से मिल सकती है और इन चालीस दिनों में जख्म भर जाता है, सिर्फ निशान रह जाता है।"[59] एक ट्रांसजेंडर व्यक्ति के निर्वाण के बाद ही, वह उस ट्रांसजेंडर घराने का सदस्य पूर्ण रूप से बनता है।

4.2.8. गोद भराई रस्म

ट्रांसजेंडर समुदाय में यह एक रस्म है जिसमें निर्वाण होने के बाद चालीसवें दिन ट्रांसजेंडर व्यक्ति का गोद भराई होता है। 'अस्तित्व की तलाश में सिमरन' उपन्यास में उपन्यासकार ने गोद भराई रस्म का वर्णन किया है "किन्नर समाज में गोद भराई एक ऐसा संस्कार है जिसमें बहुचरा माता की उपासना की जाती है और कलश भरा जाता है। इस रस्म में यह मान्यता प्रचलित है कि उस हिजड़ा का भगवान से विवाह होता है जिसकी गोद भराई की जा रही है या गोद भराई की जायेगी।"[60]

उपन्यास में सिमरन अपनी गोद भराई का वर्णन करती है "रात दस बजे मुझे हल्दी लगाई गयी। हल्दी लगाने के बाद मुझे स्नान कराया गया। हरे रंग की साड़ी व हरी चूड़ियाँ पहनाई गईं। मेरा सोलह सृंगार किया। सब कुछ हो जाने के बाद मुझे पकड़कर देवी की प्रतिमा के आगे बिठा दिया गया। मैं दुल्हन की तरह सजी हुई थी अब मेरी गोद भराई की रस्म शुरु हो गई। रस्म पूरी होने के बाद कलश का पवित्र जल किसी बहती हुई नदी में बहा देना पड़ता है। इसे कोई बाहरी व्यक्ति नहीं देख सकता। उसके लिए सख्त मनाई है।"[61] गोद भराई रस्म को सभी ट्रांसजेंडर धूम-धाम से मनाते हैं।

4.2.9. शवसंस्कार

ट्रांसजेंडर समुदाय के व्यक्तियों के शवसंस्कार संबधित कई भ्रम साधारण जनों में फैली हुई है। ऐसा माना जाता है कि इन लोगों की मृत्यु तथा शवसंस्कार को गुप्त रखा जाता है। जीवित रहते वक्त ट्रांसजेंडर समाज के लोगों को घृणा, नफरत, अकेलेपन का दंश झेलना पड़ता है, मरने पर भी इन्हें सम्मानजनक शवसंस्कार नसीब नहीं होता, मरने के बाद भी पीड़ा, यंत्रणा झेलनी पड़ती है।

ट्रांसजेंडर लोगों के शवसंस्कार का चित्रण हमें विभिन्न उपन्यासों में देखने को मिलता है। कहा जाता है कि इनकी शवयात्रा रात को निकलती है, जिसके पीछे यह मान्यता है कि रात में शवयत्रा निकलने से कोई इसे देख नहीं पायेगा, अगर कोई साधारण जनता इनकी शवयात्रा देख ले तो पुनः इन्हें ट्रांसजेंडर रूप में जन्म लेना पड़ेगा। इनकी शवयात्रा मध्यरात्रि के बाद शुरु होती है। इसलिए कोई भी इनकी शवयात्रा को देख नहीं सकता। ट्रांसजेंडर शव को डंडों से मारते हैं, चप्पल - जूते बरसाते हैं। अन्ना मौसी की मौत के द्वारा प्रदीप सौरभ ने ट्रांसजेंडर समुदाय के दाह संस्कार से हमें परिचित कराया है "दिल्ली में आमतौर पर हिजड़े के शव को रात को डंडों से मारते, उस पर चप्पल-जूते बरसाते और सड़क पर खींचते हुए श्मशान घाट ले जाते हैं। इस तरह शव को श्मशान में ले जाने

के पीछे मान्यता यह है कि मरनेवाला दोबारा तीसरी योनि में जन्म नहीं लेगा।"[62] ट्रांसजेंडर शवयात्रा में शामिल नहीं होता है उसके बारे में मानना है "हिजड़े शवयात्रा में शामिल नहीं होते हैं। वे अपने को औरत समझते हैं। हिंदू रीति-रिवाज़ों की तरह औरतें श्मशान नहीं जाती हैं। इसलिए हिजड़ों की शवयात्रा को कोई पहचान नहीं पाता कि यह हिजड़े की शवयात्रा है।"[63] उपन्यास में अन्नामौसी ने चंदाबाई की गद्दी और बिरादरी की परंपरा बचाने के लिए जान दी थी। डिम्पल तथा नीलम चाहती थी कि अन्नामौसी को साधु सन्तों जैसी समाधि दी जाए उन्होंने वैसा ही किया "श्मशान ले जाने से पहले मौसी को भगवा पहनाया गया समाधि की मुद्रा में उन्हें अर्थी पर बिठाया गया। माला-फूल चढ़ाये गये। इसके बाद खुशी-खुशी उनके शव को रवाना कर दिया गया।"[64] ट्रांसजेंडर व्यक्ति के मरने पर कोई शोक नहीं मनाते क्योंकि उनका मानना है कि मरने पर उस व्यक्ति को उसके नरकीय जीवन से मुक्ति मिलती है, इसलिए उनकी मृत्यु पर सभी दुःखी होने के बदले खुशी मानते हैं "किसी की आँख में कोई आँसू नहीं था। अन्ना मौसी को मुक्ति जो मिल गई थी। वैसे भी हिजड़ों के मरने पर उनकी बिरादरी में कोई शोक नहीं मनाया जाता। जब तक उनका चौथा, तेरहवीं रोटी होती है, तब भी नाच-गाना होता है।"[65] मरनेवाले व्यक्ति के शव संस्कार में सभी खुशी से शामिल होते हैं।

ट्रांसजेंडर हिन्दू हो या मुसलमान उसको कब्रिस्तान में दफनाया या जलाया जाता है। 'मेरे होने में क्या बुराई है' उपन्यास में शेखर द्वारा सितारा के शव को क़ब्रिस्तान ले जाने का वर्णन प्राप्त होता है "कुछ लोग पहले ही कब्रिस्तान पहुंच चुके थे। हिजड़ों का कब्रिस्तान आम लोगों से दूर हटकर बना हुआ है। शाम के साये उतर आए तो आठ दस करीबी दोस्त खामोशी से उसे आखिरी मंजिल तक पहुँचाने निकल पड़े। पहुँचकर नामाज़े जनाज़ा अदा की गयी। क़ब्र पहले से तैयार की जा चुकी थी। कलमा शहादत पढ़ते - पढ़ते मैयत को कब्र में उतारा गया। गोरकुनों ने ईंटों की पट्टी से

क़ब्र को पक्का किया तो सबने आगे बढ़कर मिट्टी डालने का काम शुरू किया। देखते ही देखते क़ब्र तैयार हो गयी। अगरबत्तियां जलाकर लाल गुलाब की पत्तियों की चादर से उसे ढंक दिया। सबने मिलकर दुआ के लिए हाथ उठाए और फिर सितारा को क़ब्र में अकेला छोड़कर वापस लौट आये।"[66]

ट्रांसजेंडर व्यक्ति की मृत्यु तथा अंतिम संस्कार के बारे में समाज में जो भ्रान्तियाँ फैली हुई हैं उसका खंडन 'अस्तित्व की तलाश में सिमरन' उपन्यास में सिमरन करती है, वह इस बारे में कहती है "मैंने आज तक ऐसा कहीं नहीं देखा। हमारे समाज में अगर किसी की मृत्यु हो जाती है तो मरनेवाले की मर्जी को अनुसार ही उसका अंतिम संस्कार किया जाता है। मरनेवाले के ओहदे के अनुसार भी किया जाता है। अगर वह किसी डेरे का प्रमुख होता है तो उसके लिए नियम अलग होते हैं। हमारे समाज में अधिकतर किन्नरों की मृत्यु के उपरांत दफनाया जाता है। उसके लिए मरनेवाला पहले से ही अपनी ज़मीन का बंदोबस्त करके रखता है। जैसे बताया गया है कि मरनेवाले की इच्छा पर निर्भर करता है कि उसका अंतिम संस्कार कैसा होगा। जैसे में हिन्दू हूँ, मैंने अपने साथ वाले लोगों को कह दिया है कि अगर मैं मर जाऊँ तो मेरा अंतिम संस्कार हिन्दू रीति-रिवाज़ के अनुसार ही करना। मेरे समाज में किसी की मृत्यु होने पर रोया नहीं जाता न ही मातम मनाते हैं। हमें ऐसा बताया गया है कि रोने से मरनेवाले की आत्मा को शांति नहीं मिलती और उनको दुःख होगा और तेरहवीं जैसा संस्कार भी नहीं मनाया जाता। किसी भी हिजड़े की मृत्यु के बाद तीसरे दिन भोजन कराया जाता है इसे तीजा कहते हैं ठीक मरनेवाले दिन से चालीसवें दिन गरीबों को भोजन कराया जाता है और साथ ही साथ मरनेवाले की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करते हैं इस रस्म को चालीसवाँ कहते हैं।"[67] जन्म से लेकर मृत्यु तक दुःख को सहनेवाले इन लोगों के मरने पर इनके साथी रोते नहीं, उन्हें खुशी-खुशी इस

दुनिया से विदा किया जाता है। इनके दाह संस्कार के वक्त ट्रांसजेंडर समुदाय के सभी अरावन देवता से प्रार्थना करते हैं कि मरनेवाले को अगले जन्म ट्रांसजेंडर न बनाए।

4.2.10. धार्मिक समन्वय

भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है। अनेकता में एकता का आह्वान करनेवाले भारत में जाति और धर्म के नाम पर संघर्ष विद्यमान है। जाति और धर्म के नाम पर आज मानव मानव का दुश्मन बन गया है। राजनीति के क्षेत्र में भी धर्म को एक हथियार के रूप में आजमाया जा रहा है। सभ्य समाज के लोग जहाँ धर्म के नाम पर एक दूसरे की बलि चढ़ा रहे हैं, वहीं ट्रांसजेंडर समुदाय के लोग विभिन्न धर्मों में आस्था रखनेवाले होकर भी एकजुट होकर भाइचारे के साथ प्रेम से अपने घराने में जीवन व्यतीत करते हैं।

ट्रांसजेंडर घराने में विभिन्न परिवारों से ट्रांसजेंडर व्यक्ति आकर अभय प्राप्त करते हैं। ये व्यक्ति अपने जन्म लेने वाले परिवार में जो धर्म होता है उसपर विश्वास रखनेवाले होते हैं। ट्रांसजेंडर घराने में भिन्न-भिन्न धर्म को माननेवाले तथा उसके अनुसार आचरण करनेवाले होते हैं। अगर कोई हिन्दू परिवार से है तो वह हिन्दू धर्म के अनुसार तथा जो मुसलमान है वह उस धर्म के अनुसार जीने की स्वतंत्रता रखता है। वहाँ रहनेवाले अपने धर्म के साथ- साथ अन्य धर्मों का भी सम्मान करते हैं। डेरे में सभी ट्रांसजेंडर सभी धर्म को माननेवाले होते हैं। इनके बीच ऊँच-नीच भावना नहीं होती। मंगलामुखी उपन्यास में गुरु शकुन को डेरे के धार्मिक एकता के बारे में बताती है "हम धरम ईमान को चोट नहीं पहुँचाते हमारे पास बाइबिल भी है और गुरुबानी भी, सबको जिन्दा रखते हैं....तू देखी न भगवान कने गीता भी रखी है, कुरान भी रखी है। हम किसी के धर्म का अपमान नहीं करते...तीरथ

भी करते हैं, हज भी जाते हैं।"[68] सभी धर्मों का सम्मान करने के कारण उनमें धर्म के नाम पर आपसी कलह नहीं होता।

ट्रांसजेंडर डेरे में सभी लोग हरेक धर्म को मानते हैं तथा हर त्योहार को मिलजुलकर मनाते हैं। ट्रांसजेंडर धर्म के नाम पर आपसी भेदभाव नहीं करते। 'मेरे होने में क्या बुराई है' उपन्यास में शेखर उर्फ शिखा के कथन से यह बात अवगत होती है "सब एक दूसरे के धर्म की इज़्ज़त करते हैं। ईद भी उसी तरह मनाई जाती है, जिस तरह दीवाली या क्रिसमस। क़बीले की ज़्यादातर रस्में हिन्दू धर्म से जुड़ी हैं और समाजी और ख़ानदानी ढांचा इस्लाम से लिया गया है। शिव भगवान को ईष्ट देवता मानते हैं, अर्धनारीश्वर के रूप में पूजते हैं। शिव-शक्ति यानी आधे शिव, आधी शक्ति और उनकी पूजा के साथ-साथ बरूचा माता की पूजा भी की जाती है। इस्लाम से जुड़े हिजड़े पूजा भी उसी अक़ीदत से करते हैं, जिस अक़ीदत से नमाज़ अदा करते हैं। जिस तरह माता के मंदिर में साल में एक बार धूम-धाम से मेला लगता है, पूजा होती है, जिसमें विभिन्न हिस्सों से हिजड़े वहाँ जमा होते हैं, ठीक उसी तरह ख्वाजा गरीब नवाज़ के उर्स में शरीक होने के लिए उनका दरगाह पर ज़ियारत के लिए अजमेर शरीफ पहुँचते हैं। दो साल पहले सितारा ही मुझे वहाँ लेकर गई थी। ख्वाजा मोईनउद्दीन चिश्ती के देहान्त की सालगिरह पर यह उर्स मनाया जाता है और दुनिया भर से हिजड़े शुक्राने अदा करने सज-संवरकर हाथों में सिक्कों या जेवरों से भरे कलश लिए आते हैं, जिसे नज़राने के रूप में पेश किया जाता है। कहा जाता है कि बारहवीं सदी में ख्वाजा गरीब नवाज़ ने हिजड़ों को शादो-आबाद रहने और उनकी रोज़ी में हमेशा बरकत बने रहने का आशीर्वाद दिया था और उर्स के बीच शुक्रगुजारी का इज़हार करने का मौका मिलता है।"[69] एक ट्रांसजेंडर व्यक्ति वह चाहे किसी भी धर्म से हो लेकिन सभी धर्म पर वह विश्वास रखता है।

'तीसरी ताली' उपन्यास में सोनिया मौसी ट्रांसजेंडर समुदाय के धर्म के प्रति जो समभाव है उसके बारे में बताती है "एक हमारी बिरादरी है, जिसमें सभी धर्मों को माननेवाले एक साथ रहते हैं। होली दिवाली, ईद-बकरीद एक साथ मनाते हैं। हज करने जाते हैं तो चारों धाम की यात्रा भी करते हैं। चर्च में भी हमें सिर झुकाने में शर्म नहीं आती।"[70] ट्रांसजेंडर समुदाय के लोग जाती-पाँति को नहीं मानते, सभी धर्मों का वे आदर करते हैं। 'दरमियाना' उपन्यास में दयाबाई के वक्तव्य से यह स्पष्ट होता है, दयाबाई कथा नायक आशु को बताती है "मैं भी छोटे जात की हूँ बाबू.....मगर जैसे साधुओं की जात नहीं होती, वैसे ही हिजड़े भी जात-पात नहीं मानते।....मेरी गुरु मुसलमान थी अब मेरी एक चेली भी मुसलमान है। हमारी तो अपनी ही देवी है, सब उसे मानते हैं।"[71] ट्रांसजेंडर डेरे में सभी धर्म के लोग एकता के साथ रहते हैं। वे धर्म की अपेक्षा मानवता एवं प्रेम को महत्व देते हैं। 'यमदीप' उपन्यास में मेहताब गुरु धार्मिक समनव्य को बनाये रखने के पक्ष में कहती है "राम भी वही, रहीम भी वही। जाना भी एक बात है, आना भी एक। कोई जनेऊ पहनकर हिन्दू बच्चा तो पैदा नहीं होता। ना ही कोई मुसलमान बच्चा खतना करवाकर। ये तो हम लोगों की भावना है कि यह मेरा अल्लाह है, यह मेरा गाँड है। सभी धर्मों के लोगों का खून थोडा - थोडा इकट्ठा करिए, उसे देख कर कोई डॉक्टर या साइंस बता दें कि यह हिंदू का खून है, यह मुसलमान का, तो हम अपना नामै बदल दें....।[72] ट्रांसजेंडर डेरे में सभी धर्म के लोग मिलजुलाकर सभी धर्म के त्योहारों को मनाते हैं।

ट्रांसजेंडर समुदाय का हर व्यक्ति अपने धर्म के साथ-साथ सभी धर्मों पर विश्वास रखता है तथा सभी धर्मों का सम्मान करता है। इसीकारण इस समुदाय के लोगों में ऊँच-नीच की भावना नहीं है, सभ्य समाज के लोगों के समान धर्म के नाम पर लड़ाई-झगड़ा नहीं है। इस समुदाय के लोग धार्मिक समन्वय पर बल देते हुए प्रेम और एकता के साथ जीते हैं।

4.3. प्रेम और मनुष्यता

प्रेम एवं मनुष्यता मनुष्य के आंतरिक भाव तथा गुण हैं। सृष्टि के विकास में योग देनेवाली सहज एवं सशक्त प्रवृत्ति है प्रेम तथा मनुष्यता की भावना। मनुष्य के अंदर की सहज एवं स्वाभाविक गुण है ये दोनों। प्रेम एक उदात्त अनुभूति है। यह प्रेम ही है जो दो व्यक्तियों को परस्पर एक डोरी में बाँधे रखती है। मनुष्यता में भी व्यक्तियों के अंदर की परस्पर सहानुभूति तथा दया की भावना अंतर्निहित है। दूसरों के प्रति हमदर्दी रखने तथा दूसरों के दर्द को समझ पाने के लिए व्यक्ति में मनुष्यता का होना अनिवार्य है। आज इस भौतिक युग में किसी को भी दूसरों के बारे में सोचने का समय नहीं है। दूसरों के प्रति सहानुभूति तथा दया भाव कोई नहीं रखता। सभी को अपने बारे में सोचने की फुर्सत है। दूसरों की सहायता करने का मनोभाव मनुष्य में आज लुप्त हो गया है। प्रेम की बात करें तो आज सच्चे प्रेम करनेवाले बहुत ही कम नज़र आते हैं। प्रेम के स्थान पर सभी वासना को ज्यादा अहमियत देते हैं। अपनों के प्रति यानि माता पिता एवं सगे संबंधियों के प्रति प्यार का महत्व भी कम हो गया है। ऐशो आराम की ज़िन्दगी बिताने की दौड़ में मनुष्य के अंदर की प्रेम भावना तथा मनुष्यता में गिरावट आ गयी है, मनुष्य बर्बर बनता जा रहा है। हमारे समाज के लोगों में जहाँ प्रेम तथा मनुष्यता आज न के बराबर है, वहीं ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों में परस्पर स्नेह तथा प्रेम एवं मनुष्यता कूट-कूट कर भरी पड़ी है। अपनों द्वारा तिरस्कृत ट्रांसजेंडर व्यक्ति में प्यार पाने की आकांक्षा तथा दूसरों से प्यार करने की प्रवृत्ति ज्यादा रहती है। ये दूसरों के प्रति सहानुभूति, दया की भावना रखते हैं। दूसरों के दुःख दर्द में ये उनका साथ देते हैं। परोपकार की भावना इस समुदाय के लोगों में हमें देखने को मिलती है जिसका वर्णन ट्रांसजेंडर केन्द्रित उपन्यासों में लेखकों ने किया है।

4.3.1. प्रेम की भावना

हर मनुष्य के अंदर प्रेम की भावना होती है। यह एक तरह का एहसास है इसका संबंध दिल से होता है। प्राचीन काल से ही प्रेम का महत्व रहा है। स्त्री और पुरुष का परस्पर आकर्षण तथा प्रेम की डोरी में बँधना तो स्वाभाविक है। जिस प्रकार स्त्री और पुरुष परस्पर एक-दूसरे से प्रेम करते हैं, उसी प्रकार ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों में भी प्रेम की भावना पाई जाती है, वे भी किसी न किसी के प्रति आकर्षित होते हैं। एक मनुष्य के अंदर होनेवाली सभी मनोवृत्तियाँ इनमें भी देखने को मिलती हैं। ट्रांसजेंडर भी प्यार करना जानते हैं तथा प्यार पाने की आकांक्षा भी रखते हैं।

हिन्दी उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में ट्रांसजेंडर व्यक्ति के अंदर जो प्रेम भावना है, उसे चित्रित करने का पूरा प्रयास किया है। 'पोस्ट बॉक्स नं.203 नाला सोपारा' उपन्यास में विनोद उर्फ बिन्नी अपने बचपन की सहेली ज्योत्सना के प्रति आकृष्ट होता है, वह ज्योत्सना के प्रति प्रेम की भावना रखता है। वह अपनी बा से पत्राचार करते वक्त उनसे बराबर ज्योत्सना की खबर लेता रहता है। वह पत्राचार में अपनी बा को बताता है वह ज्योत्सना से शादी करना चाहता था –"मुझे लगता है बा, मैं कुछ बन जाता तो उससे ब्याह ज़रूर करता। सब कुछ बता देता उसे। कह देता, तू मुझसे फेरे भर ले ले। अपनी इच्छाएं जीने के लिए तू स्वतंत्र है। बच्चा हम गोद ले लेंगे। गोद नहीं लेना चाहेगी तो जिससे मर्जी हो, बच्चा पैदा कर ले। खुशी-खुशी मैं उसे अपना नाम दूंगा। वे सारे सुख दूंगा जो एक बाप से औलाद उम्मीद करती है।"[73] उपन्यास में ट्रांसजेंडर पूनम जोशी बिन्नी के प्रति प्रेम भावना रखती है। वह बिन्नी का खूब खयाल रखती है तथा बिन्नी को जीवन में हौंसला देती है।

सभ्य समाज में जीनेवाले साधारण व्यक्ति का ट्रांसजेंडर के प्रति प्रेम भावना उत्पन्न होने की कथा को कुछ उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में दिखाया है। ज़्यादात्तर लोग ट्रांसजेंडर व्यक्तियों से

घृणा करते हैं, उनसे दूरी बनाकर रखते हैं, लेकिन ऐसे भी लोग दुनिया में हैं,जो इनसे दिल का रिश्ता जोड़ते हैं। इन्हें अपना जीवन साथी बनाते हैं। 'श्रापित किन्नर' उपन्यास में अकरम नरगिस से जो एक ट्रांसजेंडर है प्यार करता है। दोनों एक ही कॉलेज में पढ़ते थे। नरगिस यह सोचकर अपनी जान लेने की कोशिश करती है कि उसके अस्तित्व की सच्चाई जानकर अकरम उससे प्यार नहीं करेगा। लेकिन अकरम का नरगिस के प्रति प्यार सच्चा था, वह नरगिस से मिलने अस्पताल पहुँचता है और उससे कहता है "नरगिस तुम यह क्या करने जा रही थी, तुमने एक पल के लिए भी नहीं सोचा कि तुम्हारे बिना मैं कैसे जिन्दा रह पाऊँगा।"[74] अकरम नरगिस से शादी करना चाहता है लेकिन उसकी माँ इस शादी के खिलाफ है, एक ट्रांसजेंडर बहु को स्वीकार करने के लिए वह तैयार नहीं थी। अकरम माँ से कहता है "अम्मी यह कड़वा सच है नरगिस किन्नर है ! मैं उससे विवाह करना चाहता हूँ उसके बिना जीना दूभर हो जायेगा।"[75] माँ के खिलाफ जाकर अकरम नरगिस से शादी करता है तथा उसका जीवन भर साथ निभाता है। 'किन्नर कथा' उपन्यास में मनीष जो साधारण पुरुष है वह चंदा से बेहद प्यार करता है। उसका मानना है "चंदा उसकी है, उसके लिए है और वह चंदा का है, चंदा के लिए है, फिर चंदा हिजड़ा है तो है , उसे कुछ फर्क नहीं पड़ता, क्या हिजड़ों के दिल नहीं होता? क्या उन्हें प्रेम करने से मनाही है।"[76] मनीष पढ़ाई में कुशल था। ट्रांसजेंडर डेरे में उसका आना जाना लगे रहने पर उसके बड़े भैया को लगने लगा कि वह कहीं ट्रांसजेंडर तो नहीं है, इस शंका के चलते उन्होंने उसकी जबरदस्ती मेडिकल भी कराई। मनीष के घरवाले उसे चंदा से दूर रखने के लिए उसे पढ़ने के लिए छत्तरपुर से बाहर भेजने का इरादा बनाते हैं। लेकिन मनीष इसका विरोध करता है "हाँ मारो मुझे, मारकर क्या साबित करना चाहते हैं आप, चाहे जितना मारो, पर मुझे सागर नहीं भेज सकते, मैं यहीं पढ़ूंगा, छत्तरपुर में और मुझे डेरे में जाने से कोई नहीं रोक सकता और कोई नहीं रोक

सकता चंदा से मिलने से, मैं उससे सच्चा प्यार करता हूँ, वह चाहत है मेरी ।"[77] चंदा भी मनीष से बेहद प्यार करती है। चंदा को उसके परिवार से मिलाने में मनीष उसका साथ देता है।

'मेरे होने में क्या बुराई है' उपन्यास में शिखा जो ट्रांसजेंडर है उसकी मुलाकात मशहूर वाइल्ड लाइफ फोटोग्राफर राशिद से होती है। दोनों एक दूसरे के निकट आते हैं। राशिद ट्रांसजेंड़रों के उन्नति के लिए शिखा का साथ देता है। शिखा अपने लोगों की शिक्षा, स्वास्थ्य और उनके अधिकार के लिए काम करता थी। राशिद की सहायता से सरकार से उन्हें एक सेंटर खोलने की इजाजत मिली और आर्थिक सहायता भी। राशिद को खो देने का भय उसे सताता था "आधी-अधूरी औरतें सीने में ममता का जज़्बा तो रख सकती हैं, उपजाऊ कोख नहीं। छातियाँ तों है, मगर खुश्क। मर्दाना जिस्म में औरत की रूह तो बस्ती है, औरत का दिल सीने में धड़कता भी है, तड़पता भी है, माँ की ममता, मुहब्बत से दिल सराबोर भी है मगर बनावटी शुक्राणु से माँ तो नही बन सकती। रब की इस नाइन्साफी के साथ हँसकर जीना, बहुत मुश्किल है। यह भी कहना कि तेरी रज़ा से मेरी रज़ा आसान नहीं है।"[78] शिखा चाहती थी कि राशिद का घर बसे उसका भरा-पूरा परिवार हो इस कारण वह राशिद से उसकी ममेरी बहन निगहत से शादी करने को कहती है "तुम निगहत से निकाह करके घर बसा लो, हमारा साथ नहीं छोड़ना। तुम्हारी ज़िन्दगी पूरी हो जाएगी, तुम्हारा घर, तुम्हारे बच्चे देखकर लगेगा मेरा अधूरापन कम हो गया।"[79] लेकिन राशिद दूसरी शादी करने से मना कर देता है। 'मैं भी औरत हूँ' उपन्यास में ट्रांसजेंडर रोशनी को गर्भाशय नहीं था। वह कभी माँ नहीं बन सकती थी। उसके जीवन में दो पुरुष नकुल और सौरभ आये लेकिन उसकी सच्चाई जानकर उससे दूर चले गए। लेकिन रोशनी की मुलाकात ओंकार से होता है, वह रोशनी काम कर रही कंपनी की दूसरी शाखा में काम करता था। ओंकार रोशनी से प्यार करता है, रोशनी के बारे में सबकुछ जानकर भी वह उससे

शादी करना चाहता है। वह रोशनी को आश्वासन देते हुए कहता है "रोशनी! यह नियति ने तुम्हारे साथ बहुत क्रूर मज़ाक किया है, पर फिर भी भगवान को धन्यवाद दो कि...उन्होंने तुम्हें इतना अच्छा दिमाग, इतना सुन्दर चेहरा व इतना अच्छा दिल दिया है। अरे क्या हुआ जो उसने तुम्हें गर्भाशय नहीं दिया? हम इस समस्या को आसानी से हल कर सकते हैं।"[80] दोनों शादी करते हैं और सेरोगेटड मदर के ज़रिए बच्चा पैदा करके सुखी जीवन बिताते हैं।

इसके विपरीत प्रेम में लैंगिकता को प्रमुखता देनेवालों को भी दिखाया गया है। 'मंगलामुखी' उपन्यास में ट्रांसजेंडर सिमरन देखने में बहुत खूबसूरत थी, उसे खुद यह नहीं पता था कि वह एक ट्रांसजेंडर है। गाँव का लड़का हरी उससे प्यार करता है। वे दोनों भागकर शादी करते हैं। सुहागरात को जब हरी को पता चलता है कि सिमरन ट्रांसजेंडर है, तब वह उसे गाली देता है तथा धक्के देकर घर से बाहर कर देता है "साली! धोखा करती है मेरे साथ, मैं ही पागल था तेरे रूप जाल में फस कर समझ नहीं पाया। तू प्यार मोहब्बत के लिए नहीं बनी तू मेरे क्या, किसी मर्द के काम के लिए नहीं बनी।"[81] हरी सिमरन को रात को ही घर से धक्के देकर बाहर निकाल देता है। सिमरन हरी से बेहद प्यार करती थी वह हरी के नाम का सिंदूर उससे बिछड़ने पर भी लगती है। सच्चे प्रेम में लिंग कोई मायना नहीं रखता, दो आत्माओं की निकटता ही प्रेम की कसौटी है। सच्चे दिल से प्यार करनेवाले शारीरिक सौंदर्य तथा लिंग को नहीं देखते।

4.3.2. अपनों के प्रति प्यार

ट्रांसजेंडर भी मनुष्य है। हर मनुष्य में पायेजानेवाले स्वाभाविक मनोविकार इनमें भी हम देख सकते हैं। ज्यादातर ट्रांसजेंडर जन्म लेते ही अपनों द्वारा त्याग दिये जाते हैं, तो कुछ परिवारवाले समाज में अपनी बेइज्जती न हो इस वजह से इन बच्चों को उनके अस्तित्व को छुपाकर पालने पर

मजबूर होते हैं । माता - पिता तथा अपनों के द्वारा तिरस्कार तथा नफरत मिलने के बाद भी ये ट्रांसजेंडर अपनों से प्यार करते हैं। अपनों के प्रति इनका प्यार कम नही होता। ट्रांसजेंडर बनकर जन्म लेने में इनका कोई कसूर नहीं है फिर भी ये अपनों द्वारा जीवन के हर मोड़ पर तिरस्कृत होते हैं। अपनों के क्रोध का ये मानसिक तथा शारीरिक रूप से शिकार बनते हैं। अपनों द्वारा चाहे उन्हें कितनी ही पीड़ा अनुभव करनी क्यों न पड़ती हो लेकिन अपनों के प्रति वे कभी द्वेष नहीं रखते। अपनों के प्यार के लिए वे तरसते हैं तथा अपनों से ये बेहद प्यार करते हैं।

हिन्दी उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में ट्रांसजेंडर व्यक्तियों का अपनों के प्रति जो प्यार है, उसका सटीक चित्रण किया है। 'ज़िन्दगी 50-50' उपन्यास में ट्रांसजेंडर हर्षिता अपने पिता द्वारा पीड़ित है। उसके पिता ने उसे जान से मार ड़ालने की कोशिश की थी। अंत में वह घर छोड़कर जाने को विवश हो गई। लेकिन बाद में जब हर्षिता के पिता का खेत उनके हाथों से निकल जाने वाला था, उस खेत को बचाने के लिए 8 लाख रूपए की आवश्यकता थी, उस वक्त हर्षिता अपने पिता के खेत को बचाने के लिए खुद को बेचकर 8 लाख रूपए का इंतजाम करती है। वह खेत के साथ-साथ उससे जुड़े अपने पिता के सम्मान को बचाती है "मैं जुट गयी पैसा कमाने में दिन भर काम करती मेरी तबियत खराब रहती। मैं दवा खाती। फिर काम पर जाती कभी खाँस -खाँसकर बुरा हाल होता धूप में तपती, बुखार आता, फिर अपनी दवा खाती और चल पड़ती सड़क पर। दवा खा-खा कर मैं काम करती रही बाबूजी की खुशी का इंतजाम होता रहा। मैं अंदर से खोखली होती जा रही थी पर जब भी मन कमजोर होता, बाबूजी के चेहरे पर मुस्कान की कल्पना, मेरी आँखों में चमक ला देती। उनकी यह मुस्कान एक दवा की तरह थी जो खोखले होते शरीर में नया जोश पैदा कर देती।"[82] जो

पिता हमेशा उसे हीनता की दृष्टि से देखता था, उसे प्रताड़ित करता था उन्हीं के मान की रक्षा के लिए वह अपने शरीर को बेचकर पैसा कमाती है और अंत में एड्स का शिकार होकर मर जाती है।

ट्रांसजेंडर होने की वजह से इन्हें अपने परिवार तथा समाज से बहिष्कृत होना पड़ता है। अपनों के द्वारा ही प्रताड़ित होना एक व्यक्ति भला कैसे सहन कर पाए। ये तो परिवार के अपनों के ही नहीं बल्कि समाज से भी प्रताड़ित हैं। इस समुदाय का हरेक व्यक्ति प्यार पाने का इच्छुक है तथा ये अपनों से भी बहुत लगाव रखते हैं। 'किन्नर कथा' उपन्यास में ट्रांसजेंडर तारा का भाई जब बीमार पड़ता है तब वह उसे देखने को बेचैन हो जाती है। तारा के भाई ने उसे हमेशा पीड़ित किया, अपमानित किया था। लेकिन जब तारा को उसके भाई के बीमार होने की खबर मिलती है तब वह उसे देखने निकल पड़ती है। भैया को देखने उनके घर पहुँचने पर उसे वहाँ भी उसके भतीजे द्वारा अपमानित होना पड़ता है। उसका भतीजा चौकीदार पर गुस्सा होता कहता है "तुम यहां अंदर कैसे आ गए ? क्यों वे सुरिंदर के बच्चे किसकी इजाजत से तू इस हिजड़े को अंदर ले आया।"[83] 'अस्तित्व' उपन्यास में ट्रांसजेंडर प्रीत का भाई शुभम नौकरी की ट्रेनिंग के लिए जाना चाहता था लेकिन उनके पिता वर्माजी के पास इसके लिए पैसा नहीं था, जब प्रीत को इस बात की खबर लगी तो वह अपने भाई को ट्रेनिंग पर भेजने का खर्चा उठाने का जिम्मा अपने ऊपर लेती है।

'दरमियाना' उपन्यास में ट्रांसजेंडर रेखा जो पहले रजिंदर था उसके पिता के मर जाने पर पिता के शव संस्कार की सारी जिम्मेदारी वह उठाती है तथा वह माँ के कहने पर डेरे से आकर अपनी माँ के साथ रहने लगती है। माँ और बहन निशा की जिम्मेदारी वह संभालती है। अपनों से दूर रहने पर भी अपनों को ये भूल नहीं पाते तथा अपनों के प्रति उनका लगाव कम नहीं होता। 'मेरे होने में क्या बुराई है', उपन्यास में शिखा को उसके घरवालों ने उसको शेखर से शिखा बनने के कारण घर से निकाल

दिया था। जब उसे अपनी माँ के अस्पताल में भर्ती होने की खबर मिलती है तब वह उनसे मिलने अस्पताल पहुँच जाती है। सालों बाद जब वह अपनों से मिलने जा रही थी, तब उसे लगा था कि उसके पिताजी उसे गले लगाएँगें, लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। भाई उसके अस्पताल आने पर क्रोधित होता है “बाबा की तबियत आपको देखकर बिगड़ जाती है। अभी तो अम्मा हमसे नहीं संभल रही और आप जिद पर अड़े हैं। वापस चले जाए, सबकी नजरों से दूर, अपनी दुनिया में। हमें हमारे हाल में छोड़ दें।”[84] अपनों द्वारा घर से निकाले जाने पर भी अपनों के प्रति उनका प्यार बना रहता है। इनके घर से दूर चले जाने पर भी इनके घरवाले इन्हें घृणा की दृष्टि से ही देखते हैं।

‘यमदीप’ उपन्यास में नजबीबी परिवार से दूर रहने पर भी अपने माता-पिता से टेलीफोन पर बातें किया करती है। उसके भाई को माता-पिता का नाजबीबी से संबंध बनाये रखना पसंद नहीं है। माँ के मरने पर जब नाजबीबी वहाँ पहुँचती है तब भाई पिता पर गुस्सा होते हैं। नाजबीबी भाई से पिता का ध्यान रखने को कहते हुए वहाँ से चली जाती है “भइया मेरी वजह से पापा का दिल क्यों दुखाते हो मैं खुद चली जा रही हूँ। पर भइया, पापा का ध्यान रखना बहुत दुखी हैं वे और दुख न पहुँचाना। मैं कभी तुम्हारी जिन्दगी में दखल नहीं दूँगी, भइया। बस, अब पापा ही बचे हैं उनको संभालकर रखना।”[85] ट्रांसजेंडर लोग अपने माता-पिता से बेहद प्यार करते हैं। उनका दुःख दर्द उनसे सहा नहीं जाता। अपनों की खुशी उन्हें महत्वपूर्ण है। माता-पिता के लिए वे अपनी बेइज्जती सह लेते हैं।

ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों को अपनों से पीड़ित होकर विवशतावश घरवालों से दूर होना पड़ता है तो कई लोगों को परिवारवाले ही घर से निकाल देते हैं, जो भी हो ये अपनों से बेहद प्यार करते हैं, अपनों से उनका लगाव सालों से दूर रहने पर भी कम नहीं होता। वे अपनों से नफरत नहीं

कर पाते। प्रदीप सौरभ का कहना है "असल में हिजड़ों को अगर खुशी मिलती है तो किसी से रिश्ता बनाने में। अतीत के उनके सभी रिश्ते टूट जाते हैं, शायद इसलिए।"[86]

4.4. निष्कर्ष

हमारे समाज का अभिन्न हिस्सा होते हुए भी समाज की नजरों से दूर अपना जीवन बिताने के लिए मजबूर ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों की जीवन-रीति, संस्कृति आदि समाज के अन्य लोगों से भिन्न हैं। ट्रांसजेंडर समुदाय के लोग पारंपरिक पेशे के जरिए अपना जीवन यापन करते हैं। तथाकथित सभ्य समाज के लोगों में बधाई से उठता विश्वास, नकली ट्रांसजेंडर के अतिक्रमण से इनके धंधे में आ रही अड़चन तथा ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों को गरीबी एवं भुखमरी से विवश होकर किस प्रकार गैर कानूनी कार्यों में संलग्न होना पड़ता है, इन सबका चित्रण हिन्दी उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में किया है। ट्रांसजेंडर समुदाय की संस्कृति भी सामान्य लोगों से भिन्न है। भिन्न–भिन्न धर्मों में विश्वास रखनेवाले ट्रांसजेंडर लोग बहुचरा माता, अरावन देवता की पूजा करते हैं। तमिलनाडु के विल्लेपुरम में स्थित कठनद्वार मंदिर में लगनेवाले मेले तथा वहाँ जाकर अरावन देवता से शादी रचाने का जीता जागता चित्रण हिन्दी उपन्यासों में देखने को मिलता है। ट्रांसजेंडर घराने में शामिल होने पर निभाये जाने वाले निर्वाण, चुनरी रस्म, गोद भराई रस्म आदि रीति-रिवाजों का वर्णन हिन्दी ट्रांसजेंडर केंद्रित उपन्यासों में हम पाते हैं। ट्रांसजेंडर घराने में गुरु का महत्वपूर्ण स्थान है, गुरु अपने चेलों की रखवाली करते हैं उन्हें सही राह प्रदर्शित करते हैं। मृत्यु होने पर इनके शव को डंडे तथा चप्पलों से मारकर रात को शवयात्रा निकाला जाता है ऐसा करने के पीछे उनका मानना है कि वह व्यक्ति अगले जन्म में इसी लिंग में जन्म नहीं लेगा। ट्रांसजेंडर समुदाय की जीवनरीति तथा संस्कृति का सटीक चित्रण हिन्दी उपन्यासों के जरिए चित्रित करके साधारण जनता को इनके जीवन

से परिचित कराने की कोशिश हिन्दी उपन्यासकारों ने की हैं, एक हद तक वे अपने दायित्व में कामयाब भी हुए हैं।

संदर्भ-सूची

1. मोनिका देवी, अस्तित्व की तलाश में सिमरन, पृ.सं.107.
2. वही, पृ.सं.107.
3. रेनू बहल, मेरे होने में क्या बुराई है, पृ.सं.48.
4. गिरिजा भारती, अस्तित्व, पृ.सं.53.
5. वही, पृ.सं.58.
6. वही, पृ.सं.65-66.
7. रेनू बहल, मेरे होने में क्या बुराई है, पृ.सं. 49.
8. वही, पृ.सं. 60.
9. वही, पृ.सं. 53.
10. वही, पृ.सं. 54.
11. महेन्द्र भीष्म, मैं पायल, पृ.सं.98.
12. डॉ. मुक्ति शर्मा, श्रापित किन्नर, पृ.सं.16.
13. मोनिका देवी, अस्तित्व की तलाश में सिमरन, पृ.सं.9.
14. भगवंत अनमोल, जिन्दगी 50-50, पृ.सं.164.
15. प्रदीप सौरभ, तीसरी ताली , पृ.सं.14.
16. महेन्द्र भीष्म, किन्नर कथा, पृ.सं.91.
17. नीरजा माधव, यमदीप, पृ.सं.137.
18. भगवंत अनमोल, ज़िन्दगी 50-50, पृ.सं.170.
19. वही, पृ.सं.169.

20. प्रदीप सौरभ, तीसरी ताली, पृ.सं.78.
21. नीरजा माधव, यमदीप, पृ.सं.27.
22. वही, पृ.सं.28-29.
23. डॉ.लता अग्रवाल, मंगलामुखी, पृ.सं.75.
24. रेनू बहल, मेरे होने में क्या बुराई है, पृ.सं.16.
25. महेन्द्र भीष्म, किन्नर कथा, पृ.सं.58.
26. निर्मला भुराड़िया, गुलाम मंडी, पृ.सं.13.
27. महेन्द्र भीष्म, किन्नर कथा, पृ.सं.117.
28. मोनिका देवी, अस्तित्व की तलाश में सिमरन, पृ.सं.108-109.
29. नीरजा माधव, यमदीप, पृ.सं.164.
30. डॉ.लता अग्रवाल, मंगलामुखी, पृ.सं.18-19.
31. प्रदीप सौरभ, तीसरी ताली, पृ.सं.182.
32. वही, पृ.सं.183.
33. वही, पृ.सं.186.
34. वही, पृ.सं.187-188.
35. नीरजा माधव,यमदीप, पृ.सं.16.
36. डॉ.लता अग्रवाल, मंगलामुखी, पृ.सं.64.
37. भगवंत अनमोल, ज़िन्दगी 50-50, पृ.सं.164.
38. महेन्द्र भीष्म, मैं पायल, पृ.सं.98-99.
39. नीरजा माधव, यमदीप, पृ.सं.137.

40. सुभाष अखिल,दरमियाना, पृ.सं.88.

41. प्रदीप सौरभ, तीसरी ताली, पृ.सं.44.

42. नीरजा माधव, यमदीप, पृ.सं.16.

43. वही, पृ.सं.20.

44. डॉ.लता अग्रवाल, मंगलामुखी, पृ.सं.69.

45. रेनू बहल, मेरे होने में क्या बुराई है, , पृ.सं.37.

46. महेन्द्र भीष्म, किन्नर कथा,, पृ.सं.46.

47. वही, पृ.सं.46-47.

48. नीरजा माधव, यमदीप, पृ.सं.42.

49. वही, पृ.सं.47.

50. डॉ. मुक्ति शर्मा, श्रापित किन्नर, पृ.सं.13.

51. भगवंत अनमोल, ज़िन्दगी 50-50, पृ.सं.138.

52. वही, पृ.सं.171.

53. मोनिका देवी, अस्तित्व की तलाश में सिमरन, पृ.सं.76-77.

54. वही, पृ.सं.86.

55. वही, पृ.सं.96.

56. वही, पृ.सं.66-67.

57. वही, पृ.सं.67.

58. रेनू बहल, मेरे होने में क्या बुराई है, पृ.सं.35.

59. वही, पृ.सं.35.

60. मोनिका देवी, अस्तित्व की तलाश में सिमरन, पृ.सं.75.

61. वही, पृ.सं.76.

62. प्रदीप सौरभ, तीसरी ताली, पृ.सं.147.

63. वही, पृ.सं.148.

64. वही, पृ.सं.148.

65. वही, पृ.सं.147.

66. रेनू बहल, मेरे होने में क्या बुराई है, पृ.सं.83.

67. मोनिका देवी, अस्तित्व की तलाश में सिमरन, पृ.सं.109.

68. डॉ.लता अग्रवाल, मंगलामुखी,पृ.सं.56-57.

69. रेनू बहल, मेरे होने में क्या बुराई है, पृ.सं.95.

70. प्रदीप सौरभ, तीसरी ताली, पृ.सं.137.

71. सुभाष अखिल, दरमियाना, पृ.सं.121.

72. नीरजा माधव, यमदीप, पृ.सं.165-166.

73. चित्रा मुद्गल, पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा, पृ.सं.30.

74. मुक्ति शर्मा, श्रापित किन्नर, पृ.सं.22.

75. वही, पृ.सं.44.

76. महेन्द्र भीष्म, किन्नर कथा, पृ.सं.72-73.

77. वही, पृ.सं.97.

78. रेनू बहल, मेरे होने में क्या बुराई है, पृ.सं.76-77.

79. वही, पृ.सं.110.

80. अनुसूया त्यागी, मैं भी औरत हूँ, पृ.सं.86.

81. डॉ.लता अग्रवाल, मंगलामुखी, पृ.सं.49.

82. भगवंत अनमोल, ज़िन्दगी 50-50, पृ.सं.201.

83. महेन्द्र भीष्म, किन्नर कथा, पृ.सं.63.

84. रेनू बहल, मेरे होने में क्या बुराई है, पृ.सं.11.

85. नीरजा माधव, यमदीप, पृ.सं.114.

86. प्रदीप सौरभ, तीसरी ताली, पृ.सं.43.

पाँचवाँ अध्याय

ट्रांसजेंडरों की प्रमुख समस्याएँ

21 वीं सदी के हिन्दी साहित्य में कई विमर्श चल रहे हैं। विभिन्न प्रकार के विमर्शों में दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, आदिवासी विमर्श तथा ट्रांसजेंडर विमर्श प्रमुख हैं। ट्रांसजेंडर विमर्श और ट्रांसजेंडरों की अस्मिता वर्तमान साहित्य जगत का एक ज्वलंत मुद्दा है। समाज में उपेक्षित ट्रांसजेंडर समूह के लोगों को साहित्य में प्रतिष्ठित करने का प्रयास हिन्दी के साहित्यकार कर रहे हैं। कुछ साल पहले तक देखा जाए तो ट्रांसजेंडर विमर्श हिन्दी साहित्य में एक ऐसा विषय था, जिसपर हमारे साहित्यकारों ने अपनी लेखनी न के बराबर चलाई थी। मनुष्य होने पर भी मनुष्य को प्राप्त होनेवाली मूलभूत सुविधाओं से वंचित तथा समाज से प्रताड़ित ट्रांसजेंडर वर्ग को साहित्य जगत में भी हाशिए पर रखा गया।

स्वतंत्र भारत में हमारे समाज में ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। हमारे देश तथा वहाँ रहने वाले लोगों को ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता प्राप्त किए सालों बीत गए, लेकिन देश में ट्रांसजेंडर समुदाय के लोग आज भी संघर्ष भरा जीवन व्यतीत कर रहे हैं। इनका जीवन आज भी हाशिए पर है। अपने अस्तित्व एवं अस्मिता को स्थापित करने के लिए ये संघर्ष कर रहे हैं। इतिहास को परखे तो प्राचीन काल में समाज में ट्रांसजेंडरों की स्थिति सम्मानजनक थी। सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक क्षेत्रों में ट्रांसजेंडर लोगों की स्थिति आज से बेहत्तर थीं, जिसका वर्णन हमें पौराणिक ग्रंथों में देखने को मिलता है। ब्रिटिश शासन के समय से इन्हें हाशिए में रखा गया। ब्रिटिश शासन के आने के बाद इनकी स्थिति बदतर हो गई। समाज का अंग होकर भी इन्हें समाज से कटकर जीने को विवश होना पड़ा। ब्रिटिश शासन के चंगुल से भारत तथा भारतवासी आज़ाद तो हो गए, लेकिन ट्रांसजेंडर लोग आज भी पराधीनता के चंगुल में फँसे हुए हैं। समाज में ये हाशिएकृत जीवन बिताने को मजबूर हो रहे हैं। समाज के अन्य लोग इन्हें हीनता भरी दृष्टिकोण से देखते हैं। स्वतंत्र भारतीय संविधान ने हर एक व्यक्ति को मौलिक अधिकार प्राप्त कराए हैं, लेकिन इन अधिकारों से ट्रांसजेंडर व्यक्ति

वंचित है। इनका अस्तित्व ही श्राप माननेवाले इनके परिवारवाले इनसे छुटकारा पाना चाहते हैं। एक व्यक्ति को जो मूलभूत सुविधाएँ प्राप्त होती हैं, वे सब इन्हें अप्राप्य हैं। परिवार की छाया न मिलने के कारण शिक्षा में भी ये पिछड़े रह गये। शिक्षा की कमी के कारण आर्थिक क्षेत्र में भी इन्हें घोर विषमता का अनुभव करना पड़ रहा है। सामाजिक, आर्थिक क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि कानूनी, राजनैतिक स्तर पर भी ये हाशिएकृत बना दिए गए हैं। अपनों तथा समाज द्वारा पीड़ित इनका अपना अलग समाज है, जिसकी सृष्टि इन्होंने की है, वहाँ भी इन्हें कई परेशानियों का सामना करना पड़ता है। अपने जन्म से लेकर अभिशप्त जीवन जीने को बाध्य इन्हें समाज के हर क्षेत्र में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

5.1. सामाजिक समस्या

एक व्यक्ति समाज का हिस्सा होता है। परिवार और समाज दोनों में रहकर ही एक व्यक्ति का विकास संभव होता है। समाज से मिलनेवाला सम्मान व्यक्ति में आत्मविश्वास जगाता है। एक व्यक्ति के दृढ़ बनने में समाज का सहयोग आवश्यक है। साधारण व्यक्ति जहाँ समाज में अपने अस्तित्व को स्थापित करता है, वहाँ ट्रांसजेंडर व्यक्ति को समाज से कटकर जीने को विवश होना पड़ता है। ट्रांसजेंडर समुदाय के व्यक्तियों को समाज हाशिए में रखता है। हमारे समाज के सभ्य कहे जाने वाले लोग ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों के साथ अछूतों जैसा व्यवहार करते हैं, उन्हें अजूबे की तरह देखते हैं। 'अस्तित्व की तलाश में सिमरन' उपन्यास में सिमरन सभ्य समाज के लोगों की इनके प्रति जो नज़रिया है उसपर खेद प्रकट करती हुई कहती है"हिजड़ा एक भावना है अंतरात्मा की एक पुकार है जो एक शरीर से आती है पर दुःख की बात है कि आम जनमानस इसे दो जांघों के मध्य खोजते हैं। यही सबसे बड़ा दुर्भाग्य है।"[1] हमारा समाज परंपरागत रूढ़िग्रस्त सोच से निकलने को तैयार नहीं है। विषमलैंगिकता को ही वह स्वीकार करता है। ट्रांसजेंडर होने को अधिकांश लोग लैंगिक विकलांगता मानते हैं।

ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों को समाज घृणा की दृष्टि से देखता है। अश्लीलता की नज़रों से उन्हें परखा जाता है। सभ्य समाज ने उन्हें सामाजिक दायरे से बाहर हाशिएकृत बना दिया है। 'किन्नर कथा' उपन्यास में महेन्द्र भीष्म ने ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के प्रति सभ्य समाज की सोच को व्यक्त करते हुए उन्हें मुख्य धारा से जोड़ने की बात रखी है "हिजड़ा को हिजड़ा कहो तो उसे गाली सी नहीं लगती, पर कहीं अंतस तक उसके मन में कचोट जरूर होती है। 'आखिर ईश्वर ने उसके साथ अन्याय क्यों किया?'क्यों हम उन्हें अपने से दूर, सामाजिक दायरे से बाहर हाशिये पर रखते चले आ रहे हैं? उनके प्रति हमारी सोच में अश्लीलता का चश्मा क्यों चढ़ा रहता है? किसी किन्नर के साथ बेहिचक घूमने, टहलने या उसे अपने ड्राइंगरूम में बैठाकर उसके साथ जलपान करने से हम क्यों हिचकते हैं, क्यों? इस पर विचार करना होगा, उन्हें अपने साथ समाज की मुख्यधारा से जोड़ना होगा, उनका पूरा मान-सम्मान करना होगा।"[2] समाज में ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के अस्तित्व को स्वीकार करने के लिए सभ्य समाज के लोग तैयार नहीं हैं। समाज में अपने अस्तित्व को स्थापित करने के लिए यह वर्ग कोशिश कर रहा है। ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के लिए सभ्य समाज द्वारा प्रयुक्त ट्रांसजेंडर शब्द महज़ एक गाली बन गया हैं। ट्रांसजेंडर होने के कारण यह वर्ग खुद के परिवार से तिरस्कृत हो रहा है। 'ऐ ज़िन्दगी तुझे सलाम' उपन्यास में रोशनी ट्रांसजेंडर होने के कारण खुद के परिवार से बहिष्कृत है, एवं समाज द्वारा हिजड़ा शब्द गाली के रूप में प्रयोग करने पर वह आक्रोशित है। समाज में उनकी स्थिति के बारे में वह बताती है –"न वह लड़का है, न लड़की। बस आधी-अधूरी इंसान सी है। जिसका इस समाज में कोई अस्तित्व नहीं है। बस गाली की तरह एक शब्द है 'हिजड़ा' जो उसके शरीर में रसौली बनकर चिपक गया है।"[3] 'मैं पायल' उपन्यास में भी ट्रांसजेंडर समुदाय के लोग हिजड़ा शब्द को संबोधन शब्द न मानकर उनके लिए प्रयुक्त गाली शब्द मानते हैं। मनुष्य होकर जन्म लेने पर भी उन्हें मनुष्य नहीं समझा जाता, पशुओं से बदत्तर सलूक उनसे किया जाता है, सभी हीनता की दृष्टि से इस वर्ग को देखते हैं।

समाज ट्रांसजेंडर व्यक्तियों की जिन्दगी को अंधकारमय बना देता है। इन लोगों के प्रति समाज का नकारात्मक दृष्टिकोण तथा उलाहने ट्रांसजेंडर बच्चों के घरवालों को परेशान कर देते हैं। समाज के रवैये से भयभीत, समाज में अपनी इज्जत बनाए रखने के लिए इन ट्रांसजेंडर बच्चों के परिवार इन्हें अपने से दूर करने के लिए मजबूर हो जाते हैं। 'ज़िन्दगी 50-50' उपन्यास में कथानायक अनमोल अपनी प्रेमिका अनाया से अपने ट्रांसजेंडर भाई के बारे में बताते हुए कहता है –"हाँ, अनाया। मेरा वह छोटा भाई एक किन्नर है। पर उसका किन्नर होना मानो हमारे परिवार के लिए कोई अभिशाप था। उसके जन्म के बाद शायद ही कोई दिन ऐसा हो जो हमने चैन से गुजारा हो। इसका जिम्मेदार न वह था, न ही मेरे माता - पिता। पर उसके किन्नर होने को एक अभिशाप में बदल दिया था हमारे तथाकथित समाज ने। मेरा भाई जन्म से ही सामान्य नहीं था, जो भी उसे देखता तो नाक-भौ सिकोड़ लेता था। ऐसी कानाफूसी, ऐसे कमेंट्स कि बाबुजी का राह चलना मुश्किल हो गया था। माँ बेचारी किंकर्तव्याविमूढ़ - सी रहती।"[4] समाज के लोग ट्रांसजेंडर बच्चों के माता पिता तथा अन्य परिवार के सदस्यों को भी उपहास का पात्र बनाते हैं, उनकी खिल्ली उड़ाते हैं। जिस कारण परिवारवालों में इन ट्रांसजेंडर बच्चों के प्रति क्रोध पैदा हो जाता है, वे अपने क्रोध का शिकार इन्हें बनाते हैं। अनमोल अनाया को बताता है –"मेरे बाबूजी को भी लोगों से तरह-तरह की बातें सुननी पड़ती थीं। जहाँ भी जाते थे उनके कानों में एक ही बात पड़ती थी- देखो, हिजड़े का बाप जा रहा है। उसके बाद उपहास के कुछ ऐसे शब्द कि बाबूजी धीरे-धीरे अपनी सहनशक्ति खोने लगे। धीरे-धीरे उनके बर्ताव में एक अजीब - सा बदलाव देखने को मिला। वे दिन-ब-दिन ज़्यादा हिंसक होते गये। उनके सारे दुःख, क्षोभ और आक्रोश का शिकार मेरा छोटा भाई बनने लगा। बात-बात पर ऐसे मारते-पीटते कि पत्थर का भी कलेजा पिघल जाये।"[5] घर में ट्रांसजेंडर बच्चे के जन्म होने पर उस परिवार के सगे संबंधी तथा पड़ोसियाँ उस परिवारवालों को मानसिक रूप से पीड़ित करते नज़र आते हैं। आश्वासन देने के

बजाय वे दुःखित परिवारवालों के घाव पर नमक छिड़कने का काम करते हैं । आपस में कानाफूसी करकर, ट्रांसजेंडर बच्चे के माता पिता को उलाहने देकर और उनका मज़ाक उड़ाकर सभ्य कहे जाने वाले व्यक्तियों को सुख मिलता है । हर्षा के पिताजी को जो लोग अब तक सम्मान देते थे, आज उनके यहाँ ट्रांसजेंडर बच्चे के जन्मने पर सभी उनका मज़ाक उड़ाते हैं ।

ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों द्वारा दिया गया आशीर्वाद शुभ माना जाता है । इनके द्वारा दिया गया आशीर्वाद फलीभूत होता है ऐसा विश्वास समाज में व्याप्त है । घरों में शादी-बच्चा जन्मने तथा अन्य खुशी के अवसर पर सभी इनके आशीर्वाद के लिए इनकी राह ताकते हैं, लेकिन अन्य वक्त सभी इनकी छाया से दूर रहना चाहते हैं । 'किन्नर कथा' उपन्यास में तारा सभ्य समाज की इस मनोवृत्ति को उजागर करती है, "मेलजोल केवल वहीं तक जहाँ तक इनकी खुशी, शादी, ब्याह, बच्चों का जन्म हो या मुण्डन, हो हमीं बिन बुलाये बेशर्म से तालियों पीटते पहुँच जाते हैं, बिन बुलाए मेहमान की तरह हमें हिकारत से देखते हैं, कोई नहीं चाहता हमारा साथ, दूर भागते हैं हमारी छाया से जैसे हम इंसान न हों, कोई अजूबा हों, अछूत की तरह व्यवहार किया जाता है हम हिजड़ों से, उठो मातिन हम हिजड़ों के नसीब में जो लिखा है, वह हमें भोगना है, शापित ज़िन्दगी जी रहे हैं हम लोग ।"[6] ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों को शुभ अवसरों पर शगुन तथा अन्य अवसरों में उनको देखना अपशगुन मानने की जो विचारधारा हमारे सभ्य समाज के लोगों में व्याप्त है उसपर करारा व्यंग्य 'गुलाम मंडी' उपन्यास में किया गया है । जब कल्याणी ट्रांसजेंडर डेरे में पहुँची, तब वहाँ के लोगों द्वारा कौओं को पालते हुए देख वह उनसे कहती है कि वे लोग श्राद्ध के दिनों में कौओं को खीर पूडी खिलाते हैं, कल्याणी द्वारा कहे इस वक्तव्य को सुनकर वहाँ उपस्थित ट्रांसजेंडर हमीदा, कल्याणी जिस सभ्यसमाज से है, उसपर व्यंग्य कसते हुए समाज के घिनौनी नजरिये पर कारारा तमाचा मारते हुए कहती है "श्राद्ध के दिनों में ही न ! स्वार्थ रहता है न तुम्हारा । आड़े दिन में जो कहीं कव्वा आकर बैठ जाए न तुम पर, तो नहाओगी-

धोओगी, अपशगुन मनाओगी। जैसे हम ना तुम्हारे जो शादी-ब्याह हों तो नाचेंगी-गाएंगी, शगुन पाएंगी मगर यूं जो रास्ते में आ पड़ी ना हम, तो हिजड़ा कहकर धिकारोगी।"[7] अपना स्वार्थ साधने के लिए ही लोग ट्रांसजेंडर लोगों का इस्तेमाल करते हैं अन्यतः अपने पास तक भटकने नहीं देते। इनसे दूरी बनाकर रखते हैं।

'अस्तित्व' उपन्यास में एक ट्रांसजेंडर टी वी प्रोग्राम के इंटरव्यू में एंकर से समाज के लोगों का उनके प्रति जो हीन दृष्टिकोण है, उसपर अपना क्षोभ प्रकट करते हुए सभ्य समाज को वह प्रश्न के कटघरे में खड़ा करती है "मैं मानती हूँ कि न तो मैं पुरुष हूँ और न ही स्त्री। जब समाज में कोई शुभ कार्य होता है तो हम जैसे लोगों का आना अनिवार्य है बधाई देने के लिए अच्छे कार्य में जब हमारा आना शुभ माना जाता है तो फिर अपने ही घरों से हमारे परिवार वाले क्यों निकाल देते हैं? हम जिधर से गुजरते हैं, लोग हमें देखकर हास-परिहास क्यों करते हैं? यहाँ तक हम जिस संगीत को बजाते-गाते हैं इसे भी लोग हेय दृष्टि से देखते हैं। आखिर क्यों किन्नर एक इंसान नहीं है? क्या वो एक अजूबा है? क्या इस तरह उसका सामाजिक तिरस्कार करना अच्छा है?"[8] हमारे समाज में ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों की स्थिति बहुत दयनीय हैं। घर और समाज से इन्हें हास परिहास तथा दुत्कार ही प्राप्त होता है। जीवन भर ये दर-दर भटकते रहते हैं। समाज के लोगों की रूढ़िग्रस्त सोच तथा अंधविश्वास इन लोगों पर भारी पड़ता है। 'वह' उपन्यास में ट्रांसजेंडर रविंदर को गाँव से बाहर निकालने का निर्णय गाँव के पंचायत की बैठक में सभी ने मिलकर लिया क्योंकि सबका मानना है कि अगर रविंदर गाँव में रहेगा तब इसका बुरा असर वहाँ के बच्चों तथा गर्भवती महिलाओं पर पड़ेगा। गाँव के दलवीर सरपंच से अपनी उत्कंठा व्यक्त करता है "ऐसा है सरपंच जी, इसके यहाँ रहने से मोहल्ले का माहौल बिगड़ता जा रहा है। मुझे तो ऐसी आशंका है जी कि इसके यहाँ रहने से गर्भवती महिलाओं पर इसकी छाया पड़ेगी और इसके जैसी ही संतानें पैदा होंगी। इसलिए मेरी फरियाद है जी कि इसे गाँव से निकाल दिया जाए जी।"[9] समाज

ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों को शक की दृष्टि से देखता है। समाज के लोगों में यह धारणा घर कर गई है कि ट्रांसजेंडर समुदाय के लोग गैर कानूनी कार्यों में संलग्न रहनेवाले हैं । चोरी-डकैती, शारीरिक धंधा करना इनका काम है। 'यमदीप' उपन्यास में नाजबीबी जब पगली की बच्ची सोना को आश्रय देने का विचार बनाकर अपने साथ डेरे पर लेकर आती है तब महताब गुरु समाज की क्रूरता से उसे वाकिफ कराती हुई कहती है कि उसे उस बच्ची को सोच विचार करके डेरे पर ले आना चाहिए था, क्योंकि अच्छे काम करने पर भी समाज के लोग उन्हें शक की दृष्टि से ही देखेंगे।

ट्रांसजेंडर होने के नाते समाज मे कोई उन्हें सम्मान नहीं देता, कोई उनसे रिश्ता नाता जोड़ना नहीं चाहता। अगर कोई इनके साथ रिश्ता बनाता है तो उन्हें भी समाज में दुत्कारा जाता है, उनपर भी व्यंग्य कसे जाते हैं। 'मंगलामुखी' उपन्यास में छंगा जिसका नाम पहले नारायण था वह बताता है, बचपन में उसकी सहेली राधिका ने उससे दोस्ती तोड़ दी थी क्योंकि वह ट्रांसजेंडर था । राधिका का मानना है छंगा के साथ दोस्ती करने पर समाज के लोग उसपर भी हँसेंगे । उपन्यास में ट्रांसजेंडर महेन्द्री भी समाज से प्रताड़ित है। समाज के प्रति उसका जो आक्रोश है वह डेरे पर रहने आई शकुन पर दिखाता है। समाज में रहनेवाले सभ्य कहे जानेवाले लोग रात के अंधेरे में इनका शारीरिक शोषण तो करने पर नहीं हिचकिचाते लेकिन दिन के उजाले में लोग इन्हें घृणा की दृष्टि से देखते हैं। इनके साथ बात करना या इनके पास बैठना अपमान के समान उन्हें लगता हैं । 'यमदीप' उपन्यास में सभ्य समाज की इस मनोवृत्ति को हम देख पायेंगे । जब नाजबीबी बस में सफर कर रही होती है तब उसके बगलवाले खाली सीट पर कोई बैठने को तैयार नही होता। वहाँ खड़े व्यक्ति से वह बैठने को कहती है तब सभी उपहास भरी नज़र से उसे देखते हैं, खड़े पुरुष को भी उसके बगल में बैठना मंजूर नहीं था।

हमारे समाज में अपनी इज्जत बनाए रखने के लिए ट्रांसजेंडर बच्चों के माता पिता उनसे छुटकारा पाने का विचार बनाते हैं। हमारा समाज लूला, लंगड़ा, अंधे आदि सभी लोगों को

स्वीकार कर लेता है, लेकिन ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों को स्वीकार करने को तैयार नहीं होते हैं। लैंगिकता को जीवन की कसौटी बना दिया गया है। नाजबीबी से डेरे पर मिलने आये उसके माता-पिता को महताब गुरु समाज से रूबरू कराती हैं "आप इस बस्ती में रह नहीं सकते बाबूजी, और अपनी बेटी को अपने साथ रख भी नहीं सकते... दुनिया में बदनामी और हँसी हँसारत के डर से। हिजड़ी के बाप कहलाना न आप बरदाश्त कर पाएंगे और न आपके परिवार के लोग। लूली-लंगड़ी होती यह, कानी-कोतर होती तो, भी आप इसे अपने साथ रख सकते थे... इसलिए इसे अब इसके हाल पर छोड़ दीजिए। यही उसका भाग्य था, यही बदा था...सोच लिजिए, मर गई, सब्र कर लिया।"[10] ट्रांसजेंडर समुदाय के व्यक्ति का समाज में जीना आसान नहीं। पल-पल यातनाओं को सहकर उसे जीना पड़ता है। उस बच्चे को माता-पिता द्वारा पनाह देना भी दुष्कर बन जाता है। यह सच्चाई 'ज़िन्दगी 50-50' उपन्यास में कस्तूरी ट्रांसजेंडर सूर्या के पिता से कहती है "पर एक बात नोट कर ले तिवारी। हिजड़े का बाप है तू, हिजड़े का! और इतना आसान न है समाज में एक हिजड़े का बाप बनकर जीना। सुई की नोक पे रहना होत है ! इसकी चुभन से तेरी पैर ही नहीं, तोरा शरीर ही नहीं, तोरी आत्मा तक भी तड़पेगी...यह समाज तुझे जीने न देगा, या तू खुद मर जायेगा, या फिर तंग आकर खुद चलते हुए उस बच्चे को हमार यहाँ देने आएगा।"[11] अगर कोई ट्रांसजेंडर बच्चे का परिवार अपने जिगर के टुकड़े को पालता भी है तो हमारा समाज उसे पालने की मंजूरी नहीं देता। बच्चे सहित परिवारवालों को कई यातनाएँ सहनी पड़ती हैं।

ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों को समाज में सुकून से जीने के लिए अपनी लैंगिकता को छुपाकर जीना पड़ता है। अगर उनकी असलियत की खबर सबको चल जाए तो उनका समाज में जीना मुश्किल हो जाता है। समाज उनके रास्ते में रोड़े खड़ा कर देता है। 'हॉफमैन' उपन्यास में ट्रांसजेंडर अर्जुन अड़मिशन के फार्म में जेंडर के स्थान पर क्या लिखे इस दुविधा में पड़ जाता है तब उसका मित्र नीरव फार्म में मेल पर टिक लगाते हुए उससे दुनिया की सच्चाई से अवगत

कराता है “अर्जुन ये गलत नहीं हैं; मजबूरी है ! घर-घर जाकर ताली पीटने से कहीं बेहतर है ये झूठ...मैं तो ये मानता हूँ, जब किसी प्रश्न का उत्तर हमारे पास हो न तो उसे समय पर छोड़कर आगे बढ़ जाना चाहिए। ये दुनिया उतनी सीधी नहीं है जितनी तुम समझते हो!”[12] कोई जानबूझकर अपने अस्तित्व को छुपाना नहीं चाहता, समाज ही है जो उसे अस्तित्व को छुपाने को मजबूर बनाता है। अर्जुन को भी समाज के भय से मजबूर होकर अपने अस्तित्व को छुपाना पड़ा।

तथाकथित सभ्य समाज के लोग ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को समाज का हिस्सा ही नहीं मानते। न उनके अस्तित्व को वे स्वीकार करते हैं, न उनके विचार तथा भावनाओं का कद्र करते हैं। ‘अस्तित्व’ उपन्यास में ट्रांसजेंडर प्रीत की माँ हमारी सामाजिक व्यवस्था पर अपना दुःख प्रकट करती है, वह अपनी माँ से कहती है “मुझे यह समझ नहीं आता माँ, लोग कुत्ते पालते हैं उसको अच्छे - अच्छे साबुन, शैंपू से नहलाते हैं। उसको कितना प्यार और इज्जत देते हैं। कितने प्यार से उसको खाना खिलाते हैं, दूध पिलाते हैं, गाड़ियों में बिठाते हैं, उसको बिस्तर पर सुलाते हैं, वो तो एक कुत्ता है, जानवर है। जब आप उसे जीने का अधिकार देते हैं तो एक किन्नर को क्यों नहीं।”[13] हमारे समाज में बच्चों के खेल को भी लिंग के आधार पर वर्गीकृत किया गया है। अगर लड़कियों वाला खेल लड़के तथा लड़कों वाले खेल लड़कियाँ खेले तो उन्हें मज़ाक का पात्र बनना पड़ता है। ‘जिन्दगी 50-50’ उपन्यास में अनमोल इस बारे में कहता है “हमारे गाँव में दो तरह के खेल होते हैं। एक तरह के खेल जो लड़के खेलते थे, जैसे क्रिकेट, गुल्ली- डंडा, कंचा और पतंग उड़ाना। दूसरी तरह के खेल जैसे इत्ती-बित्ती, घर घर, रस्सी - कूद, झूला, चौखट जो ज़्यादात्तर लड़कियाँ खेला करती थीं। पहली तरह के खेल अधिकतर लड़के खेलते थे। अगर कोई लड़की खेलती मिल जाए तो उसे तरुन्त‘मर्दाना’ कहकर बेइज़्ज़त किया जाता था। दूसरी तरह के खेल अगर लड़का खेलना भी चाहे तो मारे शर्म के नहीं खेलता था क्योंकि उसके दोस्त उसे लौंडिया कहके चिढ़ाने लगते थे। मुझे पहली श्रेणी के खेल अधिक पसंद थे और वहीं हर्षा

को दूसरी श्रेणी के खेल या यूँ कहे वो खेल जो लड़कियों को पसन्द थे ।"[14] हमारे समाज में लैंगिकता का आधिक्य है। बच्चों के खेल को भी लैंगिकता की कसौटी में बाँध दिया गया है।

ट्रांसजेंडर बच्चों को उनके माता- पिता समाज के भय से त्याग देते हैं, चाहकर भी वे अपने बच्चों को अपने पास रख नहीं पाते । 'तीसरी ताली' उपन्यास में आनंदी आण्टी अपनी ट्रांसजेंडर बेटी निकिता से बहुत प्यार करती है, उसे वह अपने पास रखती है, लेकिन जब उसमें ट्रांसजेंडर होने का लक्षण दिखाई पड़ने लगता है तब आनंदी आण्टी को न चाहते हुए भी निकिता को ट्रांसजेंडर नीलम के हाथों सौंपना पड़ता है । 'ज़िन्दगी 50-50' उपन्यास में अनमोल समाज को चुनौती देते हुए अपने जन्मे ट्रांसजेंडर बच्चे को पालने का इरादा बनाता है । वह समाज को फटकारता है वह माँ से कहता है "माँ वो हमारा बेटा है। हमें उसे पालना है, आप किस समाज की बात कर रही हैं ? जो समाज, भूखे रहने पर कभी खाने को नहीं पूछता और अगर हमारे यहाँ रोज़ का खाना खाने के लिए भोजन है तो आये दिन हमें निमंत्रण देता है । आप उस समाज की बात कर रही हैं। मैं उस समाज को अपनी ठोकर पर रखता हूँ जिसे किसी व्यक्ति की इज़्ज़त करना नहीं आता। किसी लड़के को प्रोत्साहित करने की बजाय, उसे हतोत्साहित करना आता है ।"[15] अनमोल समाज से टक्कर लेकर एक बाप साधारण बच्चे के लिए जो कुछ करता है वह सब अनमोल अपने ट्रांसजेंडर बच्चे के लिए करता है। वह उसे प्यार देता है वह सूर्या अपने बच्चे के लिए फाइवस्टार होटल में पार्टी रखता है,सबको न्यौता देता है । वहाँ आये कई मेहमान अनमोल पर व्यंग्य करते हैं। हमारे समाज में ज्यादातर लोग ऐसे हैं जिन्हें दूसरों की खुशी बर्दाशत नहीं होती, वे खुद अच्छा काम करते भी नहीं दूसरे अगर कुछ अच्छा काम करे तो उनपर व्यंग्य कसते हैं तथा उनकी खिल्ली उड़ाते हैं। पार्टी में आये खट्टर साहब अनमोल पर व्यंग्य करते हैं "हाँ, अभी अनमोल भाई पार्टी दे रहे हैं, कुछ सालों बाद उनका बेटा हिजड़ों की टोली में शामिल होकर 'हाय, हाय' करता भीख माँगता नज़र आएगा ।"[16] 'ऐ ज़िन्दगी तुझे सलाम' उपन्यास में रूपा भी

काफी विरोध तथा तानों के बीच ट्रांसजेंडर बच्ची को पालने का दृढ़ निश्चय लेती है। ऐसे लोगों के विचार से समाज में एक आशा की किरण हम देख सकते हैं।

ट्रांसजेंडर होने की वजह से एक व्यक्ति को जन्म से मृत्यु तक हर क्षेत्र में हाशिए पर जीना पड़ता है। वह अपनी पहचान तक नहीं बना पाता। 'ज़िन्दगी 50-50' उपन्यास में ट्रांसजेंडर हर्षा परिवार तथा समाज से प्रताड़ित है, वह अपना आक्रोश व्यक्त करती है "इतने वर्षों में मैं यह समझ गयी थी कि यह समाज मुझे प्यार तो छोड़ो, मुझे समझने की भी कोशिश नहीं कर सकता। आखिर मेरी गलती क्या है? मेरा एक अंग अविकसित है। बस इतनी - सी! शायद इस तथाकथित समाज में सारा फसाद सिर्फ़ इसी अंग को लेकर होता है। लड़ाई-झगड़ा, प्रेम -मार-पीट सब इसी अंग के कारण तो होती है। मेरे शरीर का हर अंग आहत था, चोट थी, मेरा शरीर टूट रहा था, हाथ-पैर से लेकर गुदा तक। मैं बिलख रही थी। मेरे आँखों के सामने अपने भविष्य का अंधकार मंडरा रहा था। मैं ऐसी कठपुतली बन गयी थी, स्कूल से लेकर घर, बाहर तक कि हर कोई मेरा मज़ाक उड़ाता। गाहे-बगाहे मुझे हिजड़ा कहने से नहीं चूकता। यहाँ तक कि लिखते - पढ़ते वक्त मुझ जैसों के लिए अलग ही कॉलम होता है। पुरुष, महिला या अन्य। हर वक्त मुझे एहसास दिलाया जाता है कि मैं हर किसी से अलग हूँ।"[17] इस शरीर में जन्म लेने के पीछे उनका दोष नहीं है, फिर भी उन्हें जीवन भर पीड़ित होना पड़ रहा है। सामाजिक बहिष्कार को सहन करना आसान नहीं। ये उनके अस्तित्व को कबूल करने के लिए सबसे गुजारिश करते हैं। ये चाहते हैं कि इन्हें मानव समझा जाए। ट्रांसजेंडर समुदाय के प्रति समाज की ओछी सोच ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों की दयनीयावस्था का कारण है। 'वह' उपन्यास में कोमल मौसी सच्चाई को व्यक्त करती हैं "शादी - ब्याह अथवा बच्चों के जन्मोत्सव के मांगलिक शुभ अवसरों पर हमें शुभ मानकर चंद कागज़ के टुकड़े और वस्त्र आदि देकर उन्होंने अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ ली है। अर्थात् हम मंगलमूर्ति बने छलावे की लालीपॉप चूसते रहें और अपने

नागरिक अधिकारों की बात न करें। न हम आरक्षण की माँग करें और न मूलभूत आवश्यकता, यथा-खाने के लिए भोजन, पहनने के लिए वस्त्र, रहने के लिए मकान और शिक्षा की तो भूलकर भी बात न की जाए, क्योंकि यदि हम शिक्षित हो गये तो नागरिक अधिकारों के प्रति जागरूक हो जाऐंगे। इसलिए हम यदि हाशिए पर पड़े हैं, तो वहीं पड़े रहें।"[18] सभ्य समाज के लोग नहीं चाहते कि ये समाज का अभिन्न हिस्सा बनें तथा उनकी तरह जीवन बिताये।

समाज में ट्रांसजेंडर वर्ग के लोगों को तभी सामान्य मनुष्य की तरह देखा जाएगा जब परिवार और समाज की सोच में बदलाव आयेगा। ट्रांसजेंडर समुदाय के लोग चाहते हैं उन्हें मनुष्य का दर्जा प्राप्त हो। एक मनुष्य को जिन-जिन मूलभूत चीज़ों की आवश्यकता है वे उन्हें प्राप्त हो। समाज के हाशिए पर से समाज की मुख्यधारा से वे जुड़ना चाहते हैं। 'किन्नर कथा' उपन्यास में महेन्द्र भीष्म ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों को समाज का अभिन्न हिस्सा बनाने पर बल देते हुए कहते हैं "वे भी हमारी अपनी माँ की कोख से जन्मे अपने पिता की संतान हैं, वे ज़्यादा नहीं माँग रहे, 'हमें हिजड़ा नहीं, इंसान समझा जाए।' बस इतनी सी माँग है उनकी वे समाज की मुख्यधारा से जुड़ना चाहते हैं। वे समाज में स्वयं की हिस्सेदारी चाहते हैं। देश के विकास में वे भी अपना योगदान सुनिश्चित करना चाहते हैं, ज़रूरत है उनकी बुनियादी आवश्यकताओं को समझने की। विश्व में तीस प्रतिशत किन्नर ऐसे हैं, जो मामूली ऑपरेशन द्वारा पुरुष या स्त्री बनाए जा सकते हैं। आवश्यकता है जागरूकता की, शिक्षा की और उनको नैतिक समर्थन देने की। उन्हें त्यागने की नहीं अपनाने की ज़रूरत है। हम उनका दर्द बाँटे, उन्हें हिजड़ा नहीं, इंसान समझे।"[19] ट्रांसजेंडर व्यक्ति को समाज में तभी सम्मान प्राप्त होगा जब हम उनके प्रति संवेदनशील होंगे। रूढ़िग्रस्त सोच को त्यागकर हमें उन्हें मनुष्य होने का दर्जा देना है।

5.2. पारिवारिक समस्या

हर बच्चों की तरह ट्रांसजेंडर बच्चे का जन्म भी एक परिवार में होता है। जन्म लेने के साथ ही उस घर के सदस्यों से उस बच्चे के कई रिश्ते-नाते जुड़ जाते हैं। माता-पिता, भाई-बहन, दादा - दादी, नाना-नानी आदि अनेक रिश्तों से वह बंध जाता है। परिवार में एक बच्चे के जन्म लेने पर वहाँ खुशी का माहौल बनता है लेकिन जब जन्मा बच्चा सामान्य बच्चा न होकर कोई ट्रांसजेंडर बच्चा हो तो खुशी के माहौल में मातम छा जाता है। परिवार ही है जो एक बच्चे को संबल प्रदान करता है। एक बच्चे को प्यार, नैतिक मूल्य, शिक्षा सभी परिवार से ही प्राप्त होता है। मानसिक, शारीरिक एवं आर्थिक रूप से एक व्यक्ति को सक्षम बनाने में परिवार अहम भूमिका निभाता है।

जो बच्चा संतुष्ट परिवार मे पलता-बढ़ता है, वह मानसिक रूप से दृढ़ होता है। परिवार से एक बच्चे को माता पिता का प्यार तथा अपनों का सहारा मिलता है। एक व्यक्ति अपना सुख दुःख सब कुछ अपने परिवार के सदस्यों से बाँटता है। हर अच्छे और बुरे वक्त में एक व्यक्ति को उसके परिवार से सहयोग मिलता है। एक व्यक्ति के पूर्ण विकास में परिवार की अहम भूमिका है, लेकिन दुःख की बात है कि ट्रांसजेंडर बच्चे को अपने परिवार से प्यार हासिल नहीं होता। अपने ही परिवार में अपनों द्वारा ये तिरस्कृत हैं। ट्रांसजेंडर बच्चे के जन्म को सभी हेय की दृष्टि से देखते हैं इसीलिए जब घर में ट्रांसजेंडर बच्चे का जन्म होता है तब सभी दुःखित होते हैं। ‘अस्तित्व’ उपन्यास में वर्माजी तथा सुधा को उनके विवाह के चार वर्ष बाद जब बेटी पैदा होती है तब उन्हें बहुत खुशी होती है लेकिन वह खुशी तथा उत्साह गम में बदल जाता है जब उन्हें आभास होता है कि उनकी बेटी ट्रांसजेंडर है। ट्रांसजेंडर नंदरानी के जन्म लेने पर उसके पिता मेजर साहब जो फौज के उच्च अधिकारी थे, वे देश को दुश्मनों से बचानेवाले वीर जवान थे, वे भी फूट-फूट कर रो पड़ते हैं। उन्हें पता था कि इस बच्चे के कारण उन्हें समाज में लज्जित होना पड़ेगा। समाज से

बचने के लिए बच्ची को माँ सहित ननिहाल भेज दिया जाता है। ऐसे बच्चों का घर पर जन्म लेना माता पिता अपने द्वारा किये गए पाप का फल समझते हैं।'किन्नर कथा' उपन्यास में जब राजा जगतराज को पता चलता है कि उनके घर ट्रांसजेंडर बच्ची ने जन्म लिया है तब वे दुःखित होते हैं तथा भगवान को कोसते हैं "भगवान हां हमाए संगे इत्तो बड़ो अन्याय नहीं करो चाहिए तो है! कामदगिरि महाराज कौन पाप की सजा दई तुमने।"[20] ट्रांसजेंडर बच्चे के जन्म लेते ही घरवालों को यह चिंता खाने लगती है कि अब इस बच्चे को कैसे समाज में पाले क्योंकि हमारा समाज इन बच्चों को मनुष्य का दर्जा नहीं देता और न ही उन्हें स्वीकार करता है।

'ज़िन्दगी 50-50' उपन्यास का नायक भी अपने घर ट्रांसजेंडर बच्चे के जन्म होने की खबर पाकर दुःखित होता है। उसके अंदर एक पिता का दर्द उभर कर दिखता है तथा समाज का भय उसे सताता है। वह सोचता है भगवान ने उसके यहाँ क्यों ट्रांसजेंडर बच्चा पैदा किया, अब वह उस बच्चे को इस दुनिया में कैसे पालेगा। भारतीय समाज मे ऐसा विश्वास है कि परिवार में बेटा उनके वंश को आगे बढ़ानेवाला होता है और यही विचार 'जिन्दगी 50-50' का नायक भी रखता है। अपने ट्रांसजेंडर बच्चे के जन्म पर वह यह सोचकर दुःखित होता है कि उनके बच्चे को समाज के हर क्षेत्र में दुहरे व्यवहार का सामना करना पड़ेगा तथा उसे समाज में हाशिए पर जीना पड़ेगा। उसका मानना है कि ऐसे बच्चों के जीने से अच्छा मर जाना है। समाज में अपना नाम -सम्मान बनाए रखने के मोह के कारण ज्यादातर परिवारवालें ट्रांसजेंडर बच्चों से हमेशा हमेशा के लिए छुटकारा पा लेना चाहते हैं। महेन्द्र भीष्म के 'किन्नर कथा' उपन्यास में इस बात का जिक्र है "संतान कैसी भी हो, उसमें कैसी भी शारीरिक कमी क्यों न हो, माता - पिता को अपनी संतान हर हाल में भली लगती है प्यारी होती है, फिर भले ही संतान हिजड़ा ही क्यों ना हो। फिर भी सामाजिक परिस्थितियों, खानदान की इज्जत-मर्यादा झूठी शान के सामने अपने हिजड़े बच्चे से यह उसके जन्मदाता हर हाल में छुटकारा पा लेना चाहते हैं।"[21] 'नाला सोपारा' उपन्यास में

विनोद उर्फ बिन्नी के परिवारवाले उसे चंपाबाई के हवाले कर देते हैं तथा समाज के प्रश्नों से बचने के लिए उसके मर जाने की खबर गढ़ लेते हैं। फिर भी उनके अंदर भय बना रहता है कि सच्चाई का पता किसी को न लग जाए, इस वास्ते वे घर भी बदल लेते हैं।

जिन घरों में ट्रांसजेंडर बच्चे होते हैं उस परिवार के सदस्यों को समाज के लोगों की खरी खोटी सुननी पड़ती है, उपहास सहना पड़ता है। ट्रांसजेंडर होने के कारण उन्हें अपनों का प्यार नसीब नहीं होता। ट्रांसजेंडर रूप में जन्म लेने में उनका कोई दोष नहीं है फिर भी उन्हें अपनों द्वारा निष्ठुर व्यवहार को सहना पड़ता है। 'किन्नर कथा' उपन्यास में तारा मातिन से अपना दुःख बाँटती है "मातिन! भगवान ने मेरे साथ ऐसा अन्याय क्यों किया? मैं हिजड़ा हूं तो इसमें मेरा क्या कसूर? मुझ निर्दोष को किस बात की सजा मिला रही है? मेरा अपना कौन है? घर-बार, मां -बाप, भाई-बहन, बच्चे कोई नहीं हैं मेरा, जिसे मैं अपना कह सकूं। सब कुछ होते हुए भी कोई मुझसे रिश्ता नहीं रखना चाहता, कोई मुझे अपनाने को नहीं तैयार है।"[22] खून के रिश्ते से माता-पिता को बड़ा होता है समाज में अपना नाम सम्मान। 'श्रापित किन्नर' उपन्यास से ट्रांसजेंडर हिना के पिताजी अकरम से अपने डर को जाहिर करते हैं "यह लड़की है और ऊपर से किन्नर कल को समाज क्या कहेगा। हम लोगों के सामने मुँह नहीं दिखा सकते ! अब क्या होगा!"[23] परिवारवाले ट्रांसजेंडर बच्चों के जन्म को सभी से छुपाकर रखने को मजबूर होते हैं। ऐसे बच्चे को पालते वक्त डर बना रहता है कि यदि सच्चाई सभी को पता चल जाए तो परिवार तथा घर के अन्य बच्चों पर इसका गलत प्रभाव पड़ेगा। 'यमदीप' उपन्यास में नंदरानी उर्फ नाजबीबी के माता पिता भी परेशान थे इसी कारण उसके पिता दादी की मृत्यु के बाद वहाँ की ज़मीन जायदाद बेचकर कानपुर में आकर रहने लगे तथा नंदरानी को दूसरे विद्यालय में दाखिला दिलाया जाता है ताकि किसी कारणवश सच्चाई का पता चल भी जाए तो उनके अन्य दो बच्चों पर इसका कोई बुरा प्रभाव न पड़े।

परिवार में एक पिता से प्यार पाने की इच्छा कौन बच्चा नहीं रखता। ट्रांसजेंडर बच्चों को पिता का प्यार नसीब नहीं होता। ज्यादातर ये बच्चे अपने पिता द्वारा ही परिवार में पीड़ित होते हैं। 'अस्तित्व की तलाश में सिमरन' उपन्यास में सिमरन कहती है उसे अपने पिता से कभी प्यार नहीं मिला था। पिताजी के प्यार के लिए वह तरसती थी। 'मंगलामुखी' उपन्यास में ट्रांसजेंडर सिमरन शकुन को बताती है कि उसके माँ बाप ने उसे समाज के डर से दादी के घर भेज दिया था और सभी को कारण के रूप में यह बताया गया कि उसके भाई-बहन दोनों को संभाला नहीं जाता और दादी गाँव में अकेली है, सिमरन के वहाँ रहने से दादी को सहारा मिल जायेगा। अगर घर में कोई आपत्ति आ जाए तो सभी का कसूरवार ट्रांसजेंडर बच्चे के माथे मढ़ दिया जाता है। उन्हें घर के लिए अपशकुन ठहरा दिया जाता है। 'श्रापित किन्नर' उपन्यास में अकरम के मामू अपनी पत्नी और माँ की मृत्यु का कारण अपने ट्रांसजेंडर बेटी हिना का मानते हैं। उन्हें लगता है हिना श्रापित है, जिसके जन्म लेते ही उसकी माता और पत्नी चल बसे।

एक ओर जहाँ ट्रांसजेंडर बच्चा जन्मने पर माता - पिता तथा पूरा परिवार उस बच्चे को अपने से अलग कर लेने का निर्णय लेते हैं, वहीं एक तबका आज ऐसा भी है जो बच्चे को हर हाल में अपने पास रखने को तैयार होते हैं। अपने जिगर के टुकड़े को सामान्य बच्चों की तरह अपनाते हैं। उन्हें समाज से ज़्यादा अपने बच्चे की फिक्र हैं। 'हॉफ मैन' उपन्यास में सजल और पारस को बच्चे के जन्म लेने से पहले ही पता चल गया था कि पेट में पल रहा बच्चा ट्रांसजेंडर है। इसके बावजूद वे बच्चे को गिराने को तैयार नहीं होते। वे उस बच्चे को जन्म देने का निर्णय लेते हैं। सजल पारस को अपना निर्णय सुनाती है "ठीक है पारस हो गया निर्णय, मैं इसे हर हाल में जन्म दूंगी। दूसरा बच्चा होगा तब भी, और नही होगा तब भी।"[24] सजल और पारस से जुड़े सभी लोग समाज के डर से उनका साथ नहीं देते, उनका मानना है कि बच्चे को अपनाने से उनकी पारंपरिक छवि खराब हो जाएगी लेकिन पारस सभी को नज़र अंदाज कर अपने खून को पालने

का इरादा बनाता है। 'ज़िन्दगी 50-50' उपन्यास में अनमोल अपने ट्रांसजेंडर बेटे सूर्या को पालने का निर्णय लेता है। वह नहीं चाहता जिस प्रकार उसका ट्रांसजेंडर भाई हर्षा को ट्रांसजेंडर होने के कारण यातनाओं को झेलना पड़ा, उसी प्रकार उसका बेटा सूर्या भी जीवन बिताने को मजबूर हो। अनमोल अपनी माँ से कहता "हाँ, माँ। इस बार हमें उसे वे सारी खुशियाँ देंगे जो हर्षा को नहीं दी गयी। हम उसे इतना बड़ा अफसर बनायेंगे, जो लोग सपने में भी नहीं सोच सकते।"[25] अनमोल निडर होकर समाज की परवाह किए सूर्या को पालता है। कई लोग अनमोल पर व्यंग्य कसते हैं, लेकिन वह हार नहीं मानता। अनमोल सूर्या को अपने से अलग नहीं करता।

परिवार में भाई बहन का संबंध अटूट होता है। जब कोई मुसीबत आ जाये तो भाई बहन एक दूसरे का सहारा बनते हैं। प्यार का गहरा रिश्ता होता है अपनों में। लेकिन ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों को यह भाई बहन का प्यार भी नसीब नहीं होता। 'पोस्ट बॉक्स नं 203 नाला सोपारा' उपन्यास में विनोद उर्फ विमली का भाई उससे नफरत करता है। जब उसकी पत्नी गर्भवती होती है तब वह उसकी तस्वीर को भी घर में टाँगने से मना कर देता है। उसको डर बना रहता है कि विनोद जैसा उसका बच्चा न बने। अपने जन्म लेने वाले बच्चे के प्रति वह बहुत चिंतित होता है। कई भाई-बहन यह सोच कर उनसे दूरी बनाते हैं कि अगर वे घर में रहेंगे तो उनकी ज़िन्दगी भी बरबाद हो जायेगी। उनकी शादी में इनकी वजह से अड़चन आ जायेगी, कोई उनके घर रिश्ता बनाने को तैयार नहीं होंगे। मंगलामुखी' उपन्यास में गुरु कहती है "अब तो मेरा रहना भाई - बहन को खलने लगा...वे मुझे एक आँख नहीं देख पा रहे थे...उन्हें लगता मेरे रहते कोई उस घर में रिश्ता नहीं करेगा....लड़की नहीं देगा...न बहन ब्याही जाएगी...सो बात-बात पर मुझ पर खीझ पड़ते, अपमान करते।"[26] ये उनकी ज़िन्दगी में रोड़ा पैदा करेंगे इस सोच के कारण ट्रांसजेंडर व्यक्ति के भाई-बहन इन्हें अपने जीवन से कोसो दूर रखते हैं। इनके साथ वे कोई रिश्ता कायम रखना नहीं चाहते। जब गुरु अपनी बहन की शादी में शामिल होने गई तब बहन उससे विनती

करती है कि उसके जीवन में आकर मुश्किलें न पैदा करें "दीदी! माँ - बाबू के जाने के बाद बहुत मुश्किल से जमा है मेरा ब्याह... हमें पुरानी जगह...पुरानी पहचान छोड़नी पड़ी। अब इस दफन हुए रिश्ते की चिंगारी उछालकर मेरे लिए और मुश्किल पैदा मत करो,...जैसे आई हो वैसी चली जाओ दीदी। मुझे तो इसी समाज में रहना है।"[27] सभी को अपने काम से मतलब है। कोई भी भाई-बहन ट्रांसजेंडर से रिश्ता बनाकर अपने जीवन में मुसीबत पैदा करना नहीं चाहते।

अपनापन और दोस्ती का रिश्ता होता है भाई-भाई में। ट्रांसजेंडर व्यक्ति को उसकी लैंगिकता के कारण रिश्ता निभाने का मौका भी दिया नहीं जाता। अपनों के लिए वह मुसीबत बन जाता है। चाहे वह अपनों से प्यार क्यों न कर ले बदले में उसे नफरत ही नसीब होती है। उसे अपनों के जुबान से खरीखोटी सुननी पड़ती है। 'मेरे होने में क्या बुराई है' उपन्यास में शेखर उर्फ शिखा माँ के बीमार पड़ने पर उन्हें देखने अस्पताल जाती है लेकिन शिखा का वहाँ आना उसके भाई को नहीं भाता। उसका भाई उससे वहाँ से चले जाने तथा फिर कभी वहाँ न आने को कहता है। शेखर उर्फ शिखा की बड़ी बहन जो अपनी शादी से पहले उसे बेहद प्यार करती थी, अब वह उसे देखना भी नहीं चाहती। बहन के पति अनमोल का शेखर के प्रति नफरत और व्यंग्य का रवैया उसके बहन के लिए शर्मिन्दगी का कारण बनता है। ट्रांसजेंडर व्यक्ति अपनों के होते हुए भी अकेला रह जाता है उपन्यास में शिखा का वक्तव्य सच्चाई जाहिर करता है "घर में तो सब रिश्ते मौजूद हैं, मगर मेरा अपना कोई नहीं।"[28] इस सच्चाई से कोई भी मुंह मोड़ नहीं सकता।

सभ्य समाज के लोगों से ट्रांसजेंडर बच्चों के परिवारवालों को बुरा बर्ताव सहना पड़ता है। लोग ट्रांसजेंडर बच्चों के साथ -साथ परिवारवालों का भी मज़ाक उड़ाते हैं इस कारण सभी ऐसे बच्चों से नफरत करते हैं। 'दरमियाना' उपन्यास में ट्रांसजेंडर संध्या का भाई सचिन आशु से कहता है कि उसे सभी संध्या को लेकर चिढ़ाते हैं, जो उसे अच्छा नहीं लगता। 'वह' उपन्यास में ट्रांसजेंडर अंजू की बहन ने तो अपने माता-पिता से साफ-साफ कह दिया था कि वह अंजू के साथ

नहीं रहेगी। अंजू का घर में रहना उसकी माँ के अलावा किसी को पसंद नहीं था। जब अंजू को ट्रांसजेंडर समुदाय के लोग ले जाने आते हैं उस वक्त अंजू की माँ को बहनों ने मिलकर एक कमरे में बंद कर दिया था तथा अंजू को उनके साथ भेज दिया। 'किन्नर कथा' उपन्यास में तारा गुरु को उनके माता पिता अपने साथ रखना चाहते थे लेकिन उसके भाई ने तारा को वहाँ रखने का विरोध किया। भाई तारा को पसंद नहीं करते थे। तारा गुरु को बहनों की शादी तथा घर की इज्जत बचाने के लिए 14-15 साल की उम्र में अपना घर छोड़ना पड़ा। जब तारा अपनी माँ की मृत्यु की खबर जानकर शमशान पहुँचती है तब भाई और उसका भतीजा उसपर गुस्सा करते हैं। अपनों द्वारा बेइज्जती सहना किसी के लिए आसान नहीं है। ट्रांसजेंडर होने मात्र से उसे मनुष्य भी नहीं माना जाता, ट्रांसजेंडर बनकर जन्म लेने में उसका कोई कसूर नहीं है फिर भी सभी उससे निष्ठुर व्यवहार करते हैं। 'यमदीप' उपन्यास में नाजबीबी के ट्रांसजेंडर होने के कारण उसकी बहन नंदिनी दीदी की शादी टूट जाती है। लड़के के घरवाले विवाह से एक महीने पहले शादी करने से मना कर देते हैं, जिससे नंदरानी के घरवाले बहुत दुखित होते हैं। नंदरानी का भैया नंदरानी को दोषी मानकर उसपर क्रोधित होता है "लगता है, नंदरानी के कारण घर में किसी की शादी तो नहीं ही हो पाएगी, समाज में भी हम मुँह दिखाने लायक नहीं रहेंगे।"[29] जिन्दगी में ट्रांसजेंडर भाई-बहन के होने पर कई अड़चने आती हैं जिस कारण सभी इनसे दूरी बनाये रखने में अपनी भलाई समझते हैं।

'अस्तित्व की तलाश में सिमरन' उपन्यास में सिमरन का भाई उसे पसंद नहीं करता। कई बार तो ट्रांसजेंडर अपनों के द्वारा शारीरिक रूप से पीड़ित भी होते हैं। सिमरन का भाई उसे खूब पीटता है सिमरन कहती है "मेरे भाई से मेरी कभी नहीं बनी। अब तक वह मेरा तीन बार सिर फोड़ चुका था।"[30] किसी ट्रांसजेंडर व्यक्ति को अपना सगा संबंधी कहना सभ्य समाज के लोगों के लिए शर्मिन्दगी की बात है। 'यमदीप' उपन्यास में नाजबीबी जब माता पिता से मिलने अपने घर जाती है, तब वहाँ उसकी मुलाकात उसके भैया की पत्नी से होती है। वह उसे भाभी कहकर

संबोधन करते हुए बताता है कि वह उसकी ननद है उस समय भैया की पत्नी को शर्मिन्दगी महसूस होती है। ननद अपने चारों ओर देखती है कि किसी ने नाजबीबी का वार्तालाप सुन तो नहीं लिया। नाजबीबी का जीवित रहना उसके खुद के भाई के लिए शर्मिन्दगी है। माँ की मृत्यु की खबर जानकर जब वह शमशान घाट पहुँचती है तब उसे देखकर भाई बहुत क्रोधित होता है। उसे चिंता सताने लगता है कि नाजबीबी को उनके घरवालों ने मरा घोषित कर दिया था लेकिन आज अचानक उसे ट्रांसजेंडर रूप से देखकर लोग क्या सोचेंगे। पायल की असलियत जानने पर उसकी सगी मौसी ने उसे अपने यहाँ रखकर शिक्षा दिलाने की उसकी माँ की गुजारिश को मानने से मना कर दिया "दीदी! जब तुम जुगनी को अपने पास नहीं रख पाई तो मैं कैसे इसे रख सकूँगी। एक-दो दिन की बात तो है नहीं....बच्चों को जब जुगनी की असलियत पता चलेगी कि वह एक 'हिजड़ा' है तो वे भी उससे नाक-मुँह सिकोड़ेंगे और ये तो एक पल भी रखने को तैयार नहीं होंगे। न दीदी न मैं न रख सकूँगी तुम्हारे इस हिजड़े जुगनू को।"[31] सगे संबंधी भी ट्रांसजेंडर व्यक्ति से दूरी बनाने में अपनी भलाई मानते हैं।

समाज में ट्रांसजेंडर समुदाय के प्रति जो नकारात्मक दृष्टिकोण पैदा हुई है उसका प्रमुख कारण परिवार को ही माना जा सकता है। ट्रांसजेंडर संतान को अपनी पौरुषता तथा कुल महिमा पर कलंक मानने वाला परिवार, जब उसे अपमानित , प्रताड़ित करे, तब समाज उसे कैसे स्वीकार करेगा। अगर परिवार ट्रांसजेंडर बच्चों को अपनाता तो शायद इनका भी जीवन आज अन्य लोगों की तरह सामान्य होता। 'मैं पायल' उपन्यास में पायल कहती है "कभी बिछुड़े माँ-बाप, भाई-बहनों को याद कर रोते रहते हैं और कल्पपना करते हैं कि कितना अच्छा होता कि हमें हमारे माता-पिता दूसरे भाई-बहनों की तरह पढ़ाते - लिखाते, अच्छी परवरिश देते और पढ़-लिखकर हम उन तमाम बुराइयों से स्वयं को बचा ले जाते जो 'किन्नर समाज' में आज भी बुरी तरह फैली हुई है।"[32] सिमरन भी बताती है कि अगर परिवार वालों ने उसे प्यार किया होता, सहारा दिया

होता, पढ़ाया होता तो आज उसकी स्थिति यह न होती। हमारे सभ्य समाज के खोखले उसूल, तथा इज्जत के नाम पर परिवार से माता-पिता भाई-बहनों के द्वारा ये निष्कासित कर दिए जाते हैं। अगर परिवार वालों ने इन्हें अपनाया होता तो समाज में कोई भी उनपर ऊँगली उठाने, उनपर हँसने का धैर्य नहीं जुटा पाते। सिमरन कहती है "मेरी जिन्दगी में अपमान, तिरस्कार, गाली-गलौज ही रह गया था जो पढ़े -लिखे सभ्य समाज के लोगों द्वारा दी जाती थी। मैं चुपचाप सुनकर निकल जाती हूँ। अगर मेरी माँ मुझे अपना लेती, तो यह सब सहन करने की जरूरत ही नहीं पड़ती।"[33] अपने सुख एवं समाज में मान मर्यादा बनाए रखने के लिए ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के भाई-बहन उन्हें अपने से दूर रखते हैं, उनसे नज़दीकी नहीं बनाते।

ज्यादातर ट्रांसजेंडर बच्चों को अपने परिवार में माँ का प्यार ही प्राप्त होता है। बाकी सदस्य उससे नफरत करते दिखाई पड़ते हैं। माँ की छाया उनपर से उठ जाने पर वे अकेले पड़ जाते हैं, घर उनके लिए नरक से भी बदत्तर बन जाता है। 'मंगलामुखी' उपन्यास में गुरु अपनी माँ के मरने के बाद अकेली पड़ जाती हैं। उनके भाई बहन उनसे दूरी बना लेते हैं गुरु के शब्दों में "फिर भी माँ से घर, घर लगता था, माँ थी तो थोड़ी बहुत ममता भी थी, मगर माँ भी एक रात सोई तो फिर न उठी...? धीरे - धीरे घरवालों का व्यवहार बदलने लगा। संग खेलने वाले भाई-बहनों ने मुझसे दूरी बनानी शुरु कर दी। उनके अपने यार दोस्त, भाई बंन्दु, हो गए थे उन्हें अब मुझे कहीं साथ ले जाने में शरम महसूस होती, एक छत के नीचे अपनों के बीच रहकर भी वह अपनेपन को तरस गई। मन में कई विचार उठते...लगता किसी से साँझा करे मगर किससे...? कोई अपना नहीं लगता। बाहर निकलती तो कोई मुझे किन्नर बुलाता, कोई हिजड़ा, मेहरा बुलाता। मेरा मन अब दुनिया से ऊब गया घर की हर चीज पराई लगने लगी..किसी चीज पर मेरा अधिकार नहीं, कोई मेरे मन की सुनने-कहने वाला नहीं। जब भी कोई मेरा नाम लेता भाई-बहन शर्मिन्दगी में डूब जाते।"[34] परिवार में ट्रांसजेंडर व्यक्ति के प्रति अन्य किसी को भी मानसिक लगाव नहीं होता।

अपनों के बीच वह पराया बनकर रह जाता है। 'मंगलामुखी' उपन्यास में गुरु अपने दुःख को व्यक्त करती है "काहे का खून का रिश्ता...अब तो सब पराये हो गये थे, किसी को मेरे सुख से कोई लेना-देना नहीं, लगता उस घर में रखकर एहसान कर रहे थे मुझपर।"[35]

जहाँ भाई-बहनों द्वारा ट्रांसजेंडर व्यक्ति का तिरस्कार होता है, वहीं भाई बहनों द्वारा उन्हें प्यार करने, उनका सहारा बनते हुए भी देखा जा सकता है। 'मंगलामुखी' उपन्यास में गुरु का मुँहबोला भाई उसे बहुत मानता था। वह उसे अपने शादी की सालगिरह पर न्यौता देता है। गुरु शकुन से कहती है "नई रीझई मेरे मुँह बोला भाई है, बहुत मानता है। वार त्यौहार घर बुलाता है मान से, भतीजे लेने आते हैं। सुबह आया था आज भैय्या-भाभी की शादी की चालीसवीं सालगिरह है। पूजा रखी है घर में...। भैया-भाभी ने कहा है बुआ को ले आओ अशिर्वाद देने...सो भतीजा बोल गया है तैयार रहना बुआ।"[36] 'अस्तित्व' उपन्यास में ट्रांसजेंडर प्रीत को अपने पूरे परिवार यथा माता-पिता, भाई-बहन सबका साथ मिलता है। वह अपनों द्वारा दिए गए अपनापन, प्यार तथा हौसले के कारण पढ़ लिखकर नौकरी हासिल करती है लेकिन घर में आये भाई की पत्नी रंजना उसे हिकारत की दृष्टि से देखती है। रंजना जब अपने पति से प्रीत के बारे में बुरा कहती है, तब प्रीत का भाई अपनी पत्नी के ऊपर गुस्सा होता है। भाई का बहन के प्रति प्यार बोल उठता है "चुप करो रंजना, नहीं तो मुझसे बुरा कोई नहीं होगा। मैं दीदी के बारे में एक शब्द भी नहीं सुन सकता। मेरी दीदी क्या है, मुझे नहीं जानना। मेरी दीदी मेरी दीदी है बस। मैं उसके खिलाफ एक शब्द भी सुनना नहीं चाहता। तुम मेरी बीबी हो, कोई और होता तो जाने क्या हो जाता।"[37]'मैं पायल' उपन्यास में तीनों बहने पायल से बहुत प्यार करती हैं और जब पिताजी पायल को पीटते हैं तब पिताजी से वे उसकी रक्षा करती हैं।

एक इंसान के सर्वांगीण विकास में परिवार का महत्वपूर्ण स्थान होता है। परिवार वह केन्द्र है जहाँ एक मनुष्य शारीरिक एवं मानसिक विकास प्राप्त करता है। परिवार के सदस्यों से हमें

प्यार, सुरक्षा एवं ताकत मिलती है जिसके बलबूते हम अपनी जिन्दगी की हर समस्या का सामना डटकर कर सकते हैं। ट्रांसजेंडर समुदाय के व्यक्ति को परिवार का साथ न मिल पाने के कारण उन्हें जिन्दगी के हर मोड़ पर दुःख का सामना करना पड़ता है। परिवारवालों से प्यार तथा सुरक्षा न मिलने के कारण उसका मानसिक विकास सामान्य बच्चों की तरह नहीं होता। अगर ट्रांसजेंडर व्यक्ति को उसका परिवार स्वीकार कर ले तो उन्हें हाशिएकृत जीवन जीने की नौबत नहीं आएगी।

5.3. पितृसत्तात्मक सोच

हमारी सामाजिक संरचना पितृसत्तात्मक है। जिसमें पुरुष पर सभी अधिकार निक्षिप्त हैं। भारतीय समाज में परंपरा से चली आ रही प्रथा है कि घर में पुरुष का अधिकार होता है, उसके निर्देश अनुसार घर के सभी सदस्य काम करते हैं। घर का सभी निर्णय पुरुष लेता है, और महिला उसके अनुरूप चलती है। घर में अहम भूमिका पुरुष निभाता है। पुरुष को परिवार का मुखिया माना जाता है। भारतीय समाज में प्राचीनकाल से लेकर पितृसत्तात्मक व्यवस्था का आधिपत्य है। पितृसत्तात्मक समाज में पुरुष कमानेवाला तथा स्त्री का कर्तव्य घर संभालना होता है। पितृसत्तात्मक समाज ने हमेशा स्त्री तथा अन्य वर्गों को हाशिए पर रखा है। ट्रांसजेंडर व्यक्ति को पितृसत्तात्मक समाज ने हाशिए पर रखा है। वे उन्हें स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं। पितृसत्तात्मक समाज के हीन सोच के कारण ही आज ट्रांसजेंडर समुदाय की स्थिति इतनी दयनीय है। अपने घर के ट्रांसजेंडर बच्चे को ये पुरुषवर्ग स्वीकार करने को तैयार नहीं होते। इन ट्रांसजेंडर बच्चों को ये अपने पुरुषत्व पर लांछन मानते हैं। जिसके कारण वे इनसे छुटकारा पाना चाहते हैं।

ट्रांसजेंडर समुदाय की दयनीयावस्था में पितृसत्तात्मक सोच का भी एक हाथ है। पितृसत्तात्मक समाज ट्रांसजेंडर समुदाय के बच्चे को हमेशा नकारता आया है। 'जिन्दगी 50-50' उपन्यास में रामलखन तिवारी पितृसत्तात्मक सोच का प्रतिनिधि है। अपने ट्रांसजेंडर बच्चे हर्षा से वे नफरत करते हैं। ट्रांसजेंडर बच्चे का जन्मदाता कहलाना उनके लिए शर्मीन्दगी की बात

है। उनका मानना है कि अगर किसी को पता चल जाए कि वह ट्रांसजेंडर बच्चे का बाप है तो सभी उसके पौरुषत्व पर सवाल करेगें, सभी उसकी खिल्ली उड़ायेंगे। हमारे समाज में प्रचलित रूढ़ि है कि पुरुष के पौरुषत्व की कमी के कारण ट्रांसजेंडर बच्चों का जन्म होता है। ऐसी गलत धारणाओं के कारण पुरुष वर्ग समाज के भय से अपने पौरुषत्व को बचाने के लिए समाज में किसी को खबर नहीं होने देते हैं कि उसके घर ट्रांसजेंडर बच्चे का जन्म हुआ है। इसके लिए या तो वे उस बच्चे को घर से बाहर कर देते हैं या उस बच्चे को जान से मार देते हैं। कई पुरुष वर्ग बच्चे को घर में रखते हैं लेकिन किसी को बाहर पता चलने नहीं देते कि बच्चा ट्रांसजेंडर है। उपन्यास में ट्रांसजेंडर हर्षा के सजने संवरने पर उसके पिताजी उसकी पिटाई करते हैं। पुरुष वर्ग को हमेशा समाज की ही सोच बनी रहती है, अपनों के बारे में वह नहीं सोचता। समाज में अपनी इज्ज़त उनको प्यारी है। अनमोल अपने पिता के बारे में कहता है "बस उन्हें अपनी इज्ज़त प्यारी थी। यह समाज उस बेटे के कारण, उन्हें कुछ न कह पाये, इस बात की फिक्र थी। जबकि उस बेटे की कतई फ़िर्क न थी, जिसके वे बाप हैं।"[38] हर्षा के जन्म पर उसकी माँ जब सबको न्यौता देने की बात अपने पति से कहती है, तब वे उनपर क्रोधित होते हैं "अरे आज के बाद न्यौता का नाम न ले लियो। तुम किसके खातिर न्यौता देना चाहती हो? जो कुछ सालों बाद हमारी हर जगह पर नाक कटवाएगा, बेइज्ज़ती करवाइगा? हर कोई इसे हिजड़ा - हिजड़ा पुकारेगा और मुझे हिजड़े का बाप।"[39] समाज में अपनी मान तथा प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए हर्षा के पिताजी उसे चूहा मारने की दवा देकर जान से मार डालने का आयोजन बनाते हैं, लेकिन अहम् वक्त पर उसके भाई तथा माता आकर उसे बचा लेते हैं।

ट्रांसजेंडर बच्चे का जन्म लेना खानदान के लिए भी शर्मनाक बात मानी जाती है। किसी पुरुष के लिए ट्रांसजेंडर का बाप कहलाना उसके लिए चुल्लु भर पानी में डूब मरने के समान है। 'किन्नर कथा' उपन्यास में राजा को अपनी बेटी सोना के ट्रांसजेंडर होने की खबर होती है तो वे

निराश हो जाते हैं। राजा अपनी बेटी सोना जो ट्रांसजेंडर है उसे मारने का निर्णय लेते हैं। उनके अंदर का पिता उसे मारना नहीं चाहता लेकिन उन्हें डर है कि समाज के सभी उनके पौरुषत्व पर सवाल करेंगे, अंत में वे बच्ची को मारने का मन बना लेते हैं "अरे क्या करने जा रहे हो जगतराज? कुल वंश-खानदान की मर्यादा आन-बान-शान के लिए, क्या-क्या त्याग नहीं करना पड़ता है। खून की नदियां बह जाती हैं। स्वाभिमान की रक्षा के लिए, मान-मर्यादा के लिए, लोग क्या से क्या नहीं कर डालते? इतिहास ऐसे कितने ही उद्दरणों से अटा पड़ा है। फिर, फिर एक हिजड़ा बच्चे के प्राण बचाकर वह क्या सिद्ध करना चाहता है? क्या कहेगा समाज? थूकेंगे लोग उस पर, हँसेंगे उसके वंश पर कि एक हिजड़ा पैदा किया है, ठाकुर जगतराज सिंह बुंदेला ने, वीर बुंदेला खानदान में हिजड़े बच्चे का जन्म, गाली एक बहुत बड़ी गाली, सरेआम करारा तमाचा, नहीं, नहीं उसने जो निर्णय लिया है, वह सही है। वह सच है, शेष बातें निरर्थक, बकवास है।"[40] राजा को अपना मान सम्मान प्रमुख था इसीलिए वह ट्रांसजेंडर सोना को मारने का मन बनाता है। पिता के ऊपर पौरुषवादी चिंतन हावी हो जाता है।

'श्रापित किन्नर' उपन्यास में अकरम के मामा के यहाँ जब ट्रांसजेंडर बच्ची पैदा होती है, तब वे उसे स्वीकार करने को तैयार नहीं होते। अपनी पत्नी के मरने के बाद वे उस बच्ची हिना से छुटकारा पाना चाहते हैं। वे हिना को श्रापित मानते हैं। अकरम तथा उसकी ट्रांसजेंडर पत्नी नरगिस हिना को गोद लेते हैं, तभी जाकर हिना को उनसे माँ-बाप का प्यार मिलता है। पुरुषवादी मानसिकता ट्रांसजेंडर बच्चे को स्वीकार करने को तैयार नहीं होता है। उसका अहं तथा रूढ़ मानसिकता प्यार के रास्ते में रोड़ा बनकर खड़ा हो जाता है। 'मेरे होने में क्या बुराई है' उपन्यास में ट्रांसजेंडर शेखर जब अपने विद्यालय के वार्षिकोत्सव में नृत्य करने लड़की की वेशभूषा धारण करता है तब उसके पिताजी को यह अच्छा नहीं लगता, वे इसका विरोध करते हैं। इसके लिए वे उससे एक सप्ताह तक बात नहीं करते, जब वह कहता है कि वह फिर कभी लड़की की वेशभूषा

धारण नहीं करेगा तब जाकर पिताजी उससे बातें करते हैं। शेखर के पिता परंपरावादी सोच रखनेवाले थे। जब शेखर शिखा बनती है तब वे उसे घर से बाहर कर देते हैं "चला जा मेरी नजरों से दूर। फिर कभी हमें अपनी शकल न दिखाना। समझ लेना हम मर गये तोरे लिए और तू हमारे लिए।"[41] उपन्यास में ट्रांसजेंडर सितारा के पिताजी भी उसके हाथों सौ रुपए का नोट देकर उसे घर से धक्का देकर निकाल देते हैं "जिधर तुम्हारे सींग समा जाएं, उधर जाओ। दुनिया बहुत बड़ी है, कहीं भी चले जाओ। बस दोबारा इधर का रुख मत करना।"[42] इस पुंसवादी मानसिकता को तोड़ने पर ही ट्रांसजेंडर व्यक्ति हमारे समाज का मुख्य हिस्सा बन पायेगा।

पुरुष वर्ग समाज में अपमानित होकर जीने से बेहतर मर जाना समझते हैं। अगर कोई उसके पौरुषत्व पर सवाल करे या उसकी खिल्ली उड़ाये तो फिर इससे बड़ा अपमान एक पुरुष के लिए आखिर क्या हो सकता है। 'वह' उपन्यास में रविन्दर के पिता को जब उसके ट्रांसजेंडर होने का पता चलता है तब वे बहुत चिंतित हो उठते हैं। वे उसका इलाज करवाते हैं लेकिन कोई फायदा नहीं होता। उन्हें निराशा ही हाथ लगता है। एक शाम खेत में काम करके लौटते वक्त कुछ लड़कों ने रविन्दर के बारे में अपशब्द कहा जिसके चलते उनके और लड़कों के बीच झगड़ा हो जाता है। उनका अंतर्मन आहत हो गया, दूसरे दिन उन्होंने आत्महत्या कर ली। 'ऐ ज़िन्दगी तुझे सलाम' उपन्यास में ट्रांसजेंडर रानी चाची अपने माता पिता की सबसे छोटी बच्ची थी। जब उसके बाप को पता चला वह ट्रांसजेंडर है तो अस्पताल में ही बच्ची को ज़मीन पर पटकने ही वाले थे, डॉक्टर और नर्स ने उन्हें यह करतूत करने से रोक लिया। पिता के डर से उसे नाना नानी के पास भेजा गया लेकिन वहाँ मामा की क्रूरता के कारण उसे माँ ने ट्रांसजेंडर को सौंप दिया। 'दरमियाना' उपन्यास में संजय उर्फ संध्या अपने पिता से पीड़ित होती है। जब वह बचपन में छिपकर बहन की फ्राक तथा माँ की बिंदिया लगाती तो उसे पिता से खूब मार खानी पड़ती। 'तीसरी ताली' उपन्यास में गौतम साहब अपने पौरुषत्व पर कोई लाँछन न आये इसके चलते

अपने ट्रांसजेंडर बेटे विनीत को समाज से छुपाकर पालते हैं। जब ट्रांसजेंडर दल नेग माँगने उनके घर आते है तब वे दरवाजा नहीं खोलते, अपने परिवार में घुटन महसूस होने पर विनीत खुद घर छोड़कर चला जाता है।

अपने पौरुषत्व पर कलंक न आये इस कारण अपने ही खून से छुटकारा पाने की इच्छा रखनेवाले पुरुष वर्ग के अलावा ऐसा भी एक पुरुष वर्ग है जो समाज की परवाह किये बिना, अपने ट्रांसजेंडर बच्चों को पालते है। 'ज़िन्दगी 50-50' उपन्यास में अनमोल अपने ट्रांसजेंडर बच्चे सूर्या के लिए पाँच सितारा होटल में पार्टी रखता है। जब जन्मदिन में आए मेहमान सूर्या के बारे में गलत कहते हैं तब वे उनका प्रतिरोध करते दिखाई पड़ते हैं "सुनिए, मैंने यहाँ किसी को कुछ भी कहने -सुनने के लिए नहीं बुलाया, पर मुझे बोलना पड़ा। सच कहूँ तो मुझे नहीं, एक पिता को बोलना पड़ा। आज के बाद आप सभी से अनुरोध है कि मेरे बेटे का एक अंग ढंग से काम नहीं करता। इसका यह मतलब नहीं कि वह जीने का हकदार नहीं है।"[43] कुछ लोग अपने पौरुषत्व को नहीं बच्चे के प्रति अपने प्यार को अहमियत देते हैं। 'हॉफ मैन' उपन्यास में गर्भ में ट्रांसजेंडर बच्चा पल रहा है जानकर भी सजल अबोर्शन करने को तैयार हुए वगैर बच्चे को पैदा करने को ठान लेती है, उस वक्त उसका पति पारस उसके निर्णय में उसका साथ देता है "ठीक है सजल, जब तुमने दुनिया के तेज बहाव वाले शाब्दिक भंवर में उतरने का मन बना लिया तो मैं तुम्हें डूबने नहीं दूंगा। तुम्हारा हमसफर सदैव तुम्हारे साथ खड़ा रहेगा।"[44] अपने ट्रांसजेंडर बेटे को पालने में पारस एक पिता का कर्तव्य पूरी ईमानदारी से निभाता है। हर कदम में अपने बेटे का साथ देता है। अंत में अर्जुन ऊँचे मुकाम में पहुँचता है, तब उसके अंदर का पिता खुश होता है। 'अस्तित्व' उपन्यास में वर्माजी अपने ट्रांसजेंडर बेटी प्रीत को पालते हैं, उसे शिक्षित करते हैं। प्रीत नौकरी हासिल करती है, वर्माजी प्रीत की शादी उसी के जैसे आदमी से कराते हैं। वे एक बच्चा गोद लेते हैं। प्रीत का भरा पूरा परिवार होता है। वर्माजी एक पिता होने का फर्ज अदा करते हैं। 'मैं भी

औरत हूँ' उपन्यास में एक पिता अपनी ट्रांसजेंडर बेटियों का ऑपरेशन कराकर उन्हें सफल जीवन जीने में सहयोग देते हैं।

पुरुष वर्ग की सोच में आज काफी हद तक सकारात्मक बदलाव आने लगी हैं। अपने यहाँ जन्म लेनेवाले ट्रांसजेंडर बच्चों को वे स्वीकार करके पिता का प्यार देने तथा उस बच्चे को समाज में सम्मानजनक जीवन जीने योग्य बनाने के लिए आज वे तैयार हैं। रूढ़िवादी सोच को नकारकर अपने ट्रांसजेंडर बच्चों को ये मार्गदर्शन दे रहे हैं। पितृसत्तात्मक समाज के दृष्टिकोण में आए बदलाव ने ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों में समाज में आगे आने की आशा की किरण फैलाई है।

5.4. विस्थापन की समस्या

विस्थापन का अर्थ है घर से उजड़ना या घर छोड़कर जाने के लिए मजबूर हो जाना। हमारे समाज में बहुत सारे लोग हैं जो विस्थापन के दंश को झेल रहे हैं, उनमें प्रमुख है ट्रांसजेंडर समुदाय के लोग। अपने लैंगिक पहचान के कारण इस वर्ग के लोगों को घर छोड़कर जाने को विवश होना पड़ता है। बहुत लोग तो खुद के परिवार द्वारा घर से निष्कासित कर दिए जाते हैं। जिस घर में ट्रांसजेंडर बच्चे का जन्म होता है उस परिवार को समाज में अवहेलना सहना पड़ता है। अपने परिवार की इज्जत बचाने के लिए बच्चे के माता - पिता उसे त्याग देते हैं। कुछ लोग उस बच्चे को अगर पालना भी चाहते हैं तो उस बच्चे के साथ परिवार को भी अवहेलना का शिकार बनना पड़ता है। अपने परिवार को समाज की क्रूरता से बचाने के लिए ये बच्चे खुद घर छोड़कर जाने को विवश हो जाते हैं। अपने परिवार से विस्थापित होकर ये ट्रांसजेंडर समुदाय में जाकर शामिल हो जाते हैं लेकिन अपनों की याद उसे कचौटती रहती है।

घर छोड़ने के बाद, जब वे इस बेरहम दुनिया में अपना पाँव रखते हैं तब उन्हें समाज की कुत्सित वास्तविकताओं का पता चलता है। परिवार से बिछड़ने का दर्द ओर गहरा हो जाता है। 'मैं पायल' उपन्यास में पायल भी इस विस्थापन के दर्द को अनुभव करती है "इतनी कम उम्र में

घर परिवार से हमेशा के लिए दूर हो जाने का दृढ़ - संकल्प बहुत बड़ा और कठोर होता है, बरसात की बहती नदी में कूद जाने जैसा होता है फिर नदी की इच्छा उसकी लहरें जहाँ बहा ले जाये, किनारे पर लगाये या भंवर में डूब जाने दे।"[45] पायल विस्थापन के दर्द को सहते जीवन जीती है। घर छोड़ने की वजह सबकी अलग अलग होती हैं लेकिन जिसमें अपना दोष न हो उस कारण घर को छोड़ने को मजबूर होना ट्रांसजेंडर लोगों की दयनीयावस्था है। घर छोड़कर आने पर कई समस्याओं से उसका सामना होता है वह भीख माँगनेवाले गिरोह के चंगुल में फँस जाती है। उसके जैसे कई बच्चे उस चंगुल में फँसे हुए थे, वे लोग भी घर छोड़कर आये हुए थे लेकिन जुगनी का घर छोड़कर आने की वजह उन बच्चों से अलग था वह कहती है "ज्यादातर बच्चे अपने घर- परिवार वालों से तंग आकर इस दलदल में फंसे थे। घर से भागने की उन सभी के पास अपनी - अपनी वजहें थीं। पर उनमें से मेरी तरह एक भी न था, जो हिजड़ा होने के कारण अपने पिता की नफरत और मार से बचने के लिए घर से भागा हो।"[46] घर से विस्थापित होने का कारण सभी ट्रांसजेंडर व्यक्ति का अलग-अलग होता है। कोई अपनों द्वारा घर से निकाले जाते हैं, तो कई खुद घर छोड़ने को मजबूर होते हैं। अन्य सभी बच्चों की तरह ये बच्चे भी अपने परिवार में माता-पिता तथा अन्य सगे संबंधियों के साथ रहने की आशा रखते हैं लेकिन सिर्फ ट्रांसजेंडर होने के कारण उन्हें या सौभाग्य प्राप्त नहीं होता।

'किन्नर कथा' उपन्यास में ट्रांसजेंडर होने के कारण तारा और सोना भी विस्थापन के दंश से पीड़ित है। राजवंश में जन्मी सोना को उसके पिताजी राजा जगतराज क्षत्रियवंश में कलंक मानते हैं तथा लोकलाज के भय से अपने परिवार की मर्यादा को बचाने के लिए उसे मारने का आदेश दे देते हैं। लेकिन मंत्री की करुणा के कारण वह ट्रांसजेंडर तारा के हाथ पहुँच जाती है। जब सोना घर से विस्थापित होती है तब वह नन्ही बच्ची थी, बड़ी होने पर उसे अपनों की याद नहीं आती। तारा की स्थिति कुछ अलग थी। अपने चौदह वर्ष की आयु में उसे विस्थापन का दंश

झेलना पड़ा। उसके ट्रांसजेंडर होने की बात पता चल जाने पर अपनों के लिए वह परायी हो जाती है। उसके माता-पिता उसे घर पर रखना तो चाहते थे लेकिन उसके बड़े भाई को उसके घर पर रहना पसंद नहीं था। बहन की शादी तथा अपने परिवार की मान-सम्मान को बनाए रखने के लिए वह घर छोड़ने को विवश हुई। अपने घर से बिछड़ने के बाद भी उसे अपनों की याद सताती रही। कोई ट्रांसजेंडर व्यक्ति नहीं चाहता है कि वह अपनों को, अपने परिवार को छोड़ घर से दूर जाए, पर परिस्थिति उसे मजबूर करती है घर छोड़ने को। ट्रांसजेंडर बच्चों का घर में होने पर समाज के लोग उस बच्चे के माता-पिता तथा पूरे परिवार का मज़ाक उड़ाते हैं। परिवारवाले सिर उठाकर समाज में जी नहीं पाते। अपने परिवारवालों को कोई बेइज्जत न करे यह सोचकर ट्रांसजेंडर बच्चा घर छोड़कर चला जाता है। वे नहीं चाहते कि उनके कारण उनके अपने दुःखी हो। 'जिन्दगी 50-50' उपन्यास में हर्षा अपने घरवालों की इज्जत धूल में न मिल जाए इस वास्ते अपनों के नज़र से दूर जाने का निर्णय लेती है "मैं उनके मन की बात समझ गयी। मैं अब अपने समुदाय में तो आ ही गयी थी। मुझे हर्षिता बने रहना ही अच्छा लग रहा था, पर एक बेटी का फ़र्ज़ निभाते हुए मैंने निर्णय किया कि कहीं दूर चली जाऊँगी, जहाँ मैं सुखी रहूँ और मेरे बाबूजी की इज्जत का यूँ मखौल भी न उड़े। आखिर मैंने मुम्बई जाने का निर्णय ले ही लिया।"[47] हर्षा अपने पिता द्वारा पीड़ित होती है, उसके पिताजी को उसे देखना तक पसंद नहीं था। एक बार उन्होंने उसे जहर देकर जान से मारने की कोशिश भी की थी, उनके उपद्रव को सहन न कर पाने के कारण वह घर छोड़ने को विवश हुई। घर छोड़कर शहर के पास रहने पर भी उसके घरवालों की इज्जत को ठेस पहुँचती है, इसीलिए वह उस शहर से दूर चले जाने का फैसला लेती है, जिससे उसके परिवारवालों की बेइज्जती न हो।

ट्रांसजेंडर बच्चों के लिए घर छोड़कर आना तथा उसके बाद अपने समुदाय के लोगों के डेरे में जो कि उसके लिए नया माहौल है, उसमें डलना उतना आसान नहीं है। हर्षा जब घर

छोड़कर ट्रांसजेंडर डेरे में आकर रहने लगती है तो उसे भी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है "आखिर मैं पहुँच गयी अपने समुदाय में मेरे लिए यह मिला-जुला सा एहसास था। एक तरफ़ मैं अपनी ज़िन्दगी उस तरह से जी सकती थी, जैसी मैं अंदर से हूँ लेकिन दूसरी तरफ़, यह एक नया समुदाय था, बाबू जी के घर से अलग यहाँ का रहन-सहन बिलकुल अलग और मेरे लिए नया था। यह मेरे लिए बिलकुल वैसी ही स्थिति थी जैसे मायका छोड़कर नयी ब्याही लड़की अपने ससुराल आ जाती है। अब यही मेरे लिए अपना घर था और इसी घर की सास कस्तूरी थी, जो अपने घर के सारे नियम - कानून मुझे बता रही थी।"[48] उपन्यास में कस्तूरी भी विस्थापन को भुगतनेवाली है।

ट्रांसजेंडर बच्चों के ज्यादातर परिवारवाले समाज में अपनी प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए उन्हें घर से बाहर कर देते हैं या उन्हें घर छोड़ने को विवश बनाते है। कई बार अपने फायदे के लिए परिवारवाले ऐसे लोगों को अपने साथ रखते हैं, काम चल जाने पर उन्हें फिर घर से दूर कर दिया जाता है। 'अस्तित्व की तलाश में सिमरन' उपन्यास में सिमरन जब तक पैसा कमाकर घरवालों को देती रही तब तक उसके घरवालों ने उसे घर में रहने को दिया लेकिन जब उसकी नौकरी हाथ से चली गई तब उसके पिता और भाई ने उसे घर से निकाल दिया। अपनों द्वारा ये बहिष्कृत होते हैं। उपन्यास में सिमरन अपनों के प्रति आक्रोश व्यक्त करती है "हमको अपने ही परिवारों से निकाला जाता है। जो बहिष्कार करते है वह हमारे अपने ही होते हैं। समाज का भी बहिष्कार झेलना पड़ता है। अपनों के द्वारा ही हमारा जीवन नरक बना दिया जाता है।"[49] उनका जीवन नरकतुल्य बनाने में उनके अपनों का ही सबसे बड़ा हाथ है।

स्त्री व पुरुष के रूप में न जन्मने के कारण उन्हें परिवार से विस्थापित कर दिया जाता है। उन्हें समाज में दर दर फटकने को विवश बनाया जाता है। 'मंगलामुखी' उपन्यास में महेन्द्री उनके जीवन के कटु यथार्थ से हमें वाकिफ कराती है "हमें तो अर्धनारीश्वर बनाकर हमारे सारे रिश्ते- नाते

छीन लिए जाते हैं...जिस परिवार और समाज में जन्मते हैं वही हमें स्वीकार नहीं करता ... कोई हमें किन्नर कहता है कोई हिजड़ा, समाज के इतने बड़े नातों के शब्दकोश में हमारे लिए महज यही एक शब्द रह गया ..? हिजड़ा। इतना ही नहीं हमारी उपस्थिति भी समाज को स्वीकार्य नहीं तभी तो जन्मते ही छोड़ दिए जाते हैं...कभी कहीं ममता का सरमाया शीतल छाँह बरसाना भी चाहे तो समाज के ताने-उलाहने हमसे वह छाया भी छीन लेते हैं। भावनाएँ तो हमारी भी जीवित हैं ... दिल तो हमारे सीने में भी औरों-सा धड़कता है...। फिर क्यों हमारे मन के आँगन में प्रेम का कोई पुष्प नहीं खिलता...? बंजर जमीन की तरह ठुकराए जाते हैं। हाँ! बंजर जमीं है तभी तो हमारी कोख में कोई बीज अंकुरित नहीं होता, न ममता का वृक्ष की छाया देता है, न भाई- बहन के प्रेम की अमर बेल ही लहराती है।"[50] उपन्यास में ट्रांसजेंडर गुरु बताती है कि उसके परिवार में उसके भाई बहन उसकी लैंगिक विकलांगता के कारण उसे पसंद नहीं करते थे। उसे अपने परिवार से हमेशा अपमान और तिरस्कार ही प्राप्त हुआ ऐसे में वह घर को छोड़ना ही अच्छा समझती है। अपने घरवालों का तिरस्कार सहने से अच्छा अपने समुदाय में अपने जैसों के साथ रहना ही है। गुरु अपने दुःख को व्यक्त करती है "सही के रइ है तू मर तो न पाई, इस सबसे अच्छा यही लगा मेरे को कि मैं उस दुनिया को छोड़कर अपनी दुनिया में चली जाऊँ। ताकि पल-पल घुटकर मरने से तो मुक्ति मिलेगी। यहाँ सभी एक जैसे हैं इसलिए उपेक्षा, अपमान का सवाल ही नही।"[51] ट्रांसजेंडर डेरे में सभी एक साथ मिलजुलकर खुशी के साथ जीवन व्यतीत करते हैं।

ट्रांसजेंडर बच्चों के घर छोड़ के जाने पर परिवारवालों को कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि समाज के डर से अपने परिवार का सम्मान बनाये रखने के लिए वे उनका जाना ही बेहतर माननेवाले होते हैं। उनके घरवाले खुद ही उनसे पीछा छुड़ाना चाहते हैं। घर छोड़ने को विवश ट्रांसजेंडर बच्चों की स्थिति घरवालों जैसे नहीं होती घर से दूर रहने पर उन्हें अपनों की यादें सताती हैं 'अस्तित्व की तलाश में सिमरन' उपन्यास में सिमरन जब घर से दूर रहती है तब उसे

अपनों की याद आती है वह इसके बारे में बताती है "मैं अक्सर अपने आस-पास परिवार के लोगों को ढूँढ़ती, सारा दिन काम मैं बीत जाता, रात काटनी मुश्किल हो जाती, अकेली को अंधेरा काटने को दौड़ता था ।"[52] घर से विस्थापित होने के बाद इनके जीवन का सफर आसान नहीं होता, इन्हें जीवन के पग-पग पर हर क्षेत्र में कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है जिसके बारे में सिमरन अपना अनुभव व्यक्त करती है "शत्रोहन से सिमरन बनने तक के सफर में बहुत खोया है। यह सफर काँटों भरा रहा। राह आसान नहीं थी। मैं इसको शब्दों में बया नहीं कर सकती क्योंकि शब्द कम पड़ जायेंगे परन्तु मेरी जिन्दगी के किस्से कम नहीं होंगे ।"[53]

ट्रांसजेंडर बच्चों में आनेवाले शारिरिक बदलाव के कारण ये समाज के लोगों के लिए हास्य का पात्र बन जाते हैं तो दूसरी ओर अपने परिवारवालों में इनके लिए तनाव पैदा होता है। समाज के दुतकार न सह पाने के कारण परिवारवाले ट्रांसजेंडर बच्चे से छुटकारा पाने की इच्छा बनाते हैं। 'मेरे होने में क्या बुराई है' । घर से अपनों के द्वारा निकाला जाना एक बच्चे के लिए बहुत पीड़ादायक होता है। उस बच्चे के दिल में क्या बीतता है, वह ही जानता है। सितारा को जब उसके पिताजी ने घर से निकाला उसवक्त वह बहुत रोयी थी, गिड़गिड़ायी थी, उसने अपने पिता से पूछा भी था कि वह इतनी रातों रात कहाँ जाएगी लेकिन उसके पिताजी को उसपर तरस नही आया, उन्होंने उससे उल्टे जबाब दिया "जिधर तुम्हारे सींग समा जाएं, उधर जाओं। दुनिया बहुत बड़ी है, कहीं भी चले जाओ। बस दोबारा इधर का रुख मत करना ।"[54] घर से अपनों द्वारा निर्दय होकर निकाल दिए जाने पर भी ट्रांसजेंडर बच्चों को अपनों के प्रति प्यार कम नहीं होता। अपने घर जाने की इच्छा तथा, माता-पिता से मिलने की ख्वाहिश उनमें होती है। घर जाने पर फिर बेइज्जत कर निकाल न दे यह सोच वे घर की तरफ दोबारा जाने की कोशिश नहीं करते। सितारा की स्थिति भी ऐसी है वह उसके घर जाने के बारे में शेखर को बताती है "नहीं। दिल में घर जाने की तड़प तो होती, मगर हिम्मत नहीं। अगर उन्होंने दोबारा इसी तरह धक्का मारकर घर

से निकाल दिया तो खुद को संभालना बहुत मुश्किल हो जाएगा। अभी तो पहले घाव नहीं भरे।"[55] अपनों द्वारा फिर से बेइज्जत होना वे नहीं चाहते।

'यमदीप' उपन्यास में नाजबीबी अपनों की खुशी के लिए घर छोड़ने का निर्णय लेती है। नंदिनी दीदी की शादी उसके कारण टूटने की वजह से वह अपने भैया नंदन के क्रोध एवं घृणा का शिकार बनती है। उसे अपने भाई-बहन तथा माता-पिता की भलाई के लिए वहाँ से दूर जाना अच्छा सुझता है, वह घर छोड़कर चली आती है। घर छोड़कर आने पर उसका मन आहत् होता है। बेबसी से घर से निकली नाजबीबी अपने माँ की याद में उनकी ब्लाऊज अपने पास रख लेती है। नाजबीबी अपने घरवालों से बेहद प्यार करती थी इसीलिए वह नहीं चाहती थी कि उसके कारण उसके घरवालों की बदनामी हो इस वजह से उसने घर छोड़ा "मम्मी, मैं आप लोगों की बदनामी के कारण अपनी दुनिया में चली आई...हिजड़ों की दुनिया में...मेरा हाथ-पैर अपंग होता, दिमाग खराब होता, तो भी शायद तुम रख सकती थी लेकिन...।"[56] घर छोड़कर आने का निर्णय करना नाजबीबी के लिए आसान नहीं था लेकिन इसके सिवाय उसके पास कोई चारा नहीं था। उपन्यास में छैला बिहारी के माता - पिता उसकी सच्चाई जानकर भी उसे अपने से अलग नहीं करते। आहिस्ता - आहिस्ता छैलू के ट्रांसजेंडर होने की खबर समाज में फैल गई और वह अपने परिवार के सम्मान पर आँच नहीं आने देना चाहता था जिस कारण वह खुद घर छोड़कर अपने जैसे लोगों के पास आ जाता है। डेरे में आकर नई परिस्थिति में घुलमिलना उसके लिए आसान नहीं था। वह अपनी नियति पर रोता है उपन्यास में उसकी मानसिक स्थिति का वर्णन है "ग्राहकों के यहाँ जाकर नाचने-गाने या ढ़ोलक बजाने की न तो अभी उसकी हिम्मत ही होती थी और न ही उसकी आत्मा साथ देती। सभी उसके मन की दशा समझते थे और समय की प्रतीक्षा कर रहे थे, क्योंकि यहाँ आनेवाले की आरंभिक मनोदशा ऐसी ही होती है। फिर धीरे-धीरे वहाँ के माहौल में

ढ़ल जाने के बाद सब कुछ सामान्य हो जाता है ।"[57] नये माहौल में आकर ढ़लने में उन्हें समय लगता है। अपनों की याद उन्हें सताती हैं।

'अस्तित्व' उपन्यास में एक ट्रांसजेंडर टी वी इंटरव्यू में एंकर को बतलाती है कि उसके पिताजी उससे घृणा करते थे। माँ के विनती करने पर भी उन्होंने उसे घर पर रखने को इनकार कर दिया। एक दिन वह खुद ही सभी के भलाई के लिए घर छोड़कर चली आई। घर छोड़कर जब वह आती है तब उसे दुनिया क्या है उसका ज्ञान होता है। अब तक तो वह पिंजड़े में बंद पक्षी की तरह थी, फिर उसे दुनिया में बहुत कुछ सहना पड़ता है "मैं घर से चल दी तो माँ कुछ पैसे देने लगी मैने पैसे लेने से मना कर दिया, और रोती हुई चुपचाप चल दी। दिन भर इधर-उधर भटकती रही जो बच्चा आज तक घर में कैद रहा हो वह क्या जाने दुनिया क्या होती है ।"[58] घर से विस्थापित होने पर उन्हें दुनिया के यथार्थ रूप का पता चलता है। घर से ट्रांसजेंडर बच्चों को निकालने के प्रति प्रीत अपनी माँ से आक्रोश व्यक्त करती है "माना कि किन्नर इंसान एक स्त्री है तो बीवी, माँ नहीं बन सकती लेकिन एक बेटी, बहन और बुआ तो बन सकती है। अगर एक किन्नर पुरुष है तो पति और पिता नही बन सकता लेकिन एक बेटा, भाई,चाचा या ताऊ तो बन सकता है। फिर उन्हें उनके परिवारवाले ही घर से क्यों निकाल देते हैं माँ ?"[59] विस्थापन की समस्या ट्रांसजेंडर समुदाय की उन्नति में एक बाधा बन जाती है।

परिवार से विस्थापित होनेवाले ये ट्रांसजेंडर व्यक्ति उचित शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाते अपनों के प्यार और संरक्षण न मिल पाने के कारण इनमें वैयक्तिक विकास परिवार में पलनेवाले सामान्य बच्चों की तुलना में कम होती है। शिक्षा के अभाव के कारण इन्हें रोजगार भी नहीं मिल पाता। एक व्यक्ति के संपूर्ण विकास में परिवार का बहुत बड़ा हाथ होता है, जो ट्रांसजेंडर व्यक्ति विस्थापन का दंश झेलते हैं वे जीवन भर यातनाओं को झेलने के लिए विवश हो जाते हैं। ट्रांसजेंडर व्यक्ति भी सामान्य मनुष्य है यह समझकर उनके परिवारवालों को उनका संरक्षण करना

चाहिए। जो माता-पिता ट्रांसजेंडर बच्चों की देखरेख न करे, उन्हें घर से बाहर निकाल दे उनके प्रति सख्त कानूनी कारवाई लेना है। ट्रांसजेंडर समुदाय के प्रति हमारी निचली सोच बदलने पर ही इनकी विस्थापन की समस्या का अंत होगा।

5.5. शिक्षा जगत की समस्या

प्राचीन काल से लेकर हमारे समाज में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा एक ऐसा औजार है जिसकी सहायता से हम अपना भविष्य उज्ज्वल बना सकते हैं। शिक्षा से ही एक व्यक्ति का पूर्ण विकास संभव हो सकता है। शिक्षा से सिर्फ हम नौकरी ही नहीं हासिल करते, बल्कि शिक्षा द्वारा हम संस्कार, आचरण आदि भी प्राप्त करते हैं। आज शिक्षा जगत में समूल विस्तार हुआ है। भारत राज्य में प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा ग्रहण कर सकने का प्रावधान उपलब्ध कराया गया है। अनुच्छेद 21(क) के अनुसार राज्य में 6 से 14 वर्ष की आयु तक के सभी बच्चों को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा देने का प्रावधान है। जहाँ हमारा संविधान सभी को शिक्षा उपलब्ध कराने का दावा करता है, वहीं हमारे समाज में एक तबका ऐसा भी मौजूद है जिन्हें उनकी लैंगिक विकलांगता के कारण शिक्षा ग्रहण कर पाने का उचित अवसर नहीं मिल पा रहा है।

हमारे यहाँ ऐसी भी शिक्षण संस्थाएँ मौजूद हैं जहाँ ट्रांसजेंडर बच्चों को दाखिला नहीं दिया जाता, इसके पीछे वे कारण बताते हैं कि ऐसे बच्चों के स्कूल में पढ़ने पर अन्य बच्चों को उनके घरवाले वहाँ भर्ती नहीं करवायेंगे तथा ऐसे बच्चों के वहाँ पढ़ने पर अन्य बच्चों पर उनका बुरा प्रभाव पड़ेगा। फिलहाल आज स्थिति में बदलाव ज़रूर देखने को मिल रहा है। आज शिक्षण संस्थाओं में इनके लिए आरक्षण भी प्रदान किया जा रहा है। शिक्षण संस्थाओं में दाखिला तो मिल जाता है लेकिन वहाँ के छात्रों, अध्यापक गण तथा अन्य कर्मचारियों द्वारा ये शारीरिक तथा मानसिक शोषण का शिकार बनते हैं। हमेशा दूसरों द्वारा हंसी- मज़ाक न सह पाने

के कारण ये विवशतावश खुद ही स्कूल जाना छोड़ देते हैं। इसीकारण शिक्षा की कमी इनकी प्रमुख समस्या बन जाती है और ये आर्थिक रूप से भी पिछड़े हो जाते हैं।

जेण्डर स्पष्ट न होने के कारण ट्रांसजेंडर बच्चों को स्कूल में दाखिला नहीं मिल पाता। 'तीसरी ताली' उपन्यास में आनंदी आण्टी अपनी ट्रांसजेंडर बेटी निकिता को भर्ती कराने स्कूल में जाती है तब उन्हें निराशा हाथ लगती है। निकिता को लड़की या लड़कों के स्कूल में भर्ती कराना है, यह बड़ा प्रश्नचिह्न बन जाता है "उन्हें दोनों जगह से एक ही जवाब मिला कि जेण्डर स्पष्ट न होने के कारण हम दाखिला नहीं दे सकते हैं...यह स्कूल सामान्य बच्चों के लिए है, बीच वाले बच्चों को दाखिला देने से स्कूल का माहौल खराब हो जाता है। आनंदी आण्टी ने हर संभव कोशिश की, लेकिन निकिता को दाखिला नहीं मिला।"[60] उपन्यास में डिम्पल मंजू जो कि साधारण बच्ची है, उसे पालती है माँ का प्यार देती है। वह चाहती है कि मंजू पढ़े लिखे लेकिन वह इस सच्चाई से अवगत है कि एक ट्रांसजेंडर द्वारा पाले गये बच्चे को कोई स्कूल में दाखिला नहीं देगा।

शिक्षण संस्थाओं में छात्रों द्वारा भी इनका हँसी -मज़ाक उड़ाया जाता है, जिससे ये मानसिक रूप से टूट जाते हैं और वे स्कूल जाना तक बंद कर देते हैं। विद्यार्थियों द्वारा भी इन्हें एहसास दिलाया जाता है कि ये न औरत है, न ही मर्द। 'ऐ जिन्दगी तुझे सलाम' उपन्यास में ट्रांसजेंडर रोशनी जब नई कक्षा में प्रवेश करती है तब कक्षा के बच्चों ने उसका मजाक उड़ाया "चलो ... इसका नामकरण हो गया। आज से हमारे क्लास रूम..नहीं स्कूल की मर्दानी है...यह।"[61] 'मैं पायल' उपन्यास में पायल पढ़ने में होशियार थी एक लड़की के रूप में स्कूल में उसको भर्ती कराया गया। पायल के पिताजी ने उसे जुगनी से जुगनू बना दिया था। जब वह लड़के के वेश में फ्राक के बदले हाफ पैंट और हाफ शर्ट तथा बाल काटकर गई तब सभी बच्चें उसे चिढ़ाने लगे, उसका मज़ाक उड़ाने लगे इस कारण वह बहुत दुःखी हुई 'किन्नर कथा' उपन्यास में तारा जो

बचपन में ताराचन्द्र अग्रवाल था वह स्कूल में लड़कियों के साथ ज्यादा सहज महसूस करता था। वह लड़कियों के साथ ज्यादा समय बिताता था और लड़कों से कटकर रहता था। स्कूल में सभी उसके स्त्रैण स्वभाव का मज़ाक उड़ाते थे। उसमें जब स्त्रैण स्वभाव बढ़ने लगा, शारीरिक बदलाव आने लगा तब उसके भाई और पिता ने उसका स्कूल जाना बंद करवा दिया। 'मेरे होने में क्या बुराई है' उपन्यास में शेखर में जब ट्रांसजेंडर होने के गुण उभरने लगे तब स्कूल के सहपाठी उसे छक्का कहकर चिढ़ाने लगे जिसके कारण उसे बहुत दुख होता है।

बुजुर्गों की पारंपरिक तथा रूढ़िग्रस्त सोच का असर बच्चों पर भी पड़ता है। बच्चे भी सोचते हैं कि ये बच्चे सामान्य नहीं है और वे उनसे भेद-भाव का नज़रिया अपनाते हैं, उनसे दूरी बनाकर रखते हैं। 'श्रापित किन्नर' उपन्यास में ट्रांसजेंडर नरगिस पढ़ने में होशियार थी। स्कूल के टीचर उससे प्यार करते थे लेकिन वहाँ के छात्र उससे बच्चे नफरत करते थे। उसके साथ कोई बैठना तथा खेलना पसंद नहीं करता था। एक लड़की उससे कहती है "चली जा हमारे स्कूल से तू तो न लड़की है ना लड़का"[62] इसका असर नरगिस के बालमन पर पड़ता है वह दुःखित होती है। 'हॉफ मैन' उपन्यास में अर्जुन को अपने कॉलेज में विद्यार्थियों द्वारा अपमानित होना पड़ता है। उसे कॉलेज के लड़के हॉफमैन कहकर संबोधित करते हैं। अर्जुन का दोस्त नीरव जब अर्जुन को हॉफ मैन पुकारने वालों पर गुस्सा होता है तब वे कहते हैं "तमीज न होती तो इसे हिजड़ा या छक्का कहता, मैंने तो सम्मान से हॉफमैन ही कहा है। सभी कहते है तुम किस किसको तमीज सिखाओगे।"[63] स्कूल और कॉलेजों में वहाँ के अन्य छात्रों द्वारा इनकी खिल्ली उड़ाया जाता है, ये समाज के हास्य पात्र बन जाते हैं, जिससे उनमें मानसिक तनाव उत्पन्न हो जाता है।

स्कूल में बच्चे ट्रांसजेंडर बच्चों का मज़ाक उड़ाते हैं, चिढ़ाते हैं तथा उनके साथ किसी भी तरह की बंदतमीजी करने से वे डरते नहीं। कभी-कभार तो उन्हें कक्षा में बैठने की भी जगह नहीं दी जाती। अस्तित्व की तलाश में सिमरन' उपन्यास में सिमरन बताती है "मेरी क्लास के

बच्चे मुझे चिढ़ाते बहुत ज़्यादा तंग करने लगे। मैं कक्षा सात में आ गई थी। मेरे बैठने का कोई स्थान नहीं था। जहाँ भी फर्श पर बैठती वहाँ कोई-न-कोई अपनी जगह बता देता और मुझे वह स्थान छोड़कर खड़ा होना पड़ता। मुझे भी शिक्षा ग्रहण करने की जिद थी तो घर से बोरा लेकर जाने लगी। अब तक मेरा कोई भी मित्र नहीं बन सका था।"[64] ट्रांसजेंडर बच्चों का स्कूल में अन्य सामान्य बच्चों द्वारा हंसी मज़ाक ही नहीं बनाया जाता बल्कि वे उन बच्चों को शीरीरिक रूप से भी शोषण करते दिखाई पड़ते हैं। जावेद जो ट्रांसजेंडर है उसे स्कूल में शारीरिक शोषण का शिकार बनना पड़ता है। स्कूल के बाथरूम में उसे बंद कर दिया जाता है तथा स्कूल में सभी उसका मज़ाक भी उड़ाते हैं। स्कूल के बच्चों ने कह दिया था कि अगर जावेद स्कूल आयेगा तो वे नहीं आयेगे इस कारण जावेद को स्कूल छोड़ना पड़ा था। स्कूल में ट्रांसजेंडर बच्चों पर होनेवाले उत्पीड़न उनके मन में डर पैदा कर देता है। जिसके कारण वे स्कूल छोड़ने का फैसला लेते हैं। स्कूल के साधारण बच्चों के लिए ट्रांसजेंडर बच्चों का मज़ाक उड़ाना, उनका दैहिक उपद्रव करना शायद मज़ाक हो लेकिन ऐसे कारनामे पर ट्रांसजेंडर बच्चों में गहरा मानसिक तनाव पैदा करता है। 'अस्तित्व की तलाश में सिमरन' उपन्यास में सिमरन बताती है उसको स्कूल में लड़कों द्वारा कई बुरे अनुभवों का सामना करना पड़ा "वह मेरे साथ मज़ाक करने लगे। मुझे धक्का देकर गिरा दिया। मेरा तब तक कोई मित्र नहीं बन सका था। मैं अकेली बहुत डर गई। वह इतना सब करने के बाद भी नहीं माने, उन्होंने मेरे हाथ पेशाब से धुलवाये। इस घटना के बाद मेरे मन में डर बैठ गया। अब मैंने पाठशाला न आने का निश्चय कर लिया।"[65]

'अस्तित्व' उपन्यास में टी वी इंटर्व्यू में एक ट्रांसजेंडर एंकर से उसे स्कूल में हुए अनुभव के बारे में बताती है "जब मैं क्लास में होती तो मेरे सहपाठी मुझे किन्नर कहकर बुलाते, बच्चा अगर ज्यादा शैतान है तो वह मुझे हिजड़ा कहने से भी नहीं चूकता था। बच्चे तो बच्चे कुछ शिक्षक भी हमारा नाम न लेकर हमारा अस्तित्व याद दिलाते थे, और कहते क्या करोगे पढ़ -

लिखकर जब तुम्हारा पेशा ही नाचना-गाना है।"[66] ट्रांसजेंडर बच्चे जब स्कूल जाते हैं तब उन्हें वहाँ के विद्यार्थियों तथा अध्यापकों द्वारा ही नहीं कर्मचारियों द्वारा भी अपमामित होना पड़ता है। 'ऐ ज़िन्दगी तुझे सलाम' उपन्यास में रोशनी जब नये स्कूल के दाखिले के कागजात में लिंग के स्थान पर हिजड़ा लिखती है तब वहाँ के कर्मचारी उसे घूरकर देखते है, तथा कटु वचन कहते हैं-"अब हिजड़े पढ़ेगे हमारे स्कूल में"[67] जब तक हमारे समाज में इस प्रकार का सोच बना रहेगा, तब तक इस समुदाय की उन्नति होना संभव नहीं।

कभी-कभार तो ट्रांसजेंडर बच्चों का स्कूल में पढ़ना वहाँ पढ़नेवाले अन्य बच्चों के घरवालों को पचता नहीं। उनकी धारणा है कि ऐसे बच्चों के स्कूल में पढ़ने से उनके बच्चों पर बुरा असर पड़ेगा। 'मंगलामुखी' उपन्यास में गुरु शकुन को बताती है कि पढ़ने लिखने में होशियार महेन्द्री को वहाँ पढ़ने वाले अन्य बच्चों के माता पिता द्वारा शिकायत करने पर उसे मजबूरन स्कूल से नाम कटवाना पड़ता है "जब तक छोटी थी पर्दा डाला रहा, एक दिन स्कूल में पेशाब करते हुए संग कई लड़कियों ने देख लिया...घर जाकर सब बोल गई, मणि की सु-सु हमसे अलग है...बस देखत ही देखत बात फैल गई। अब लड़की लोग उसके साथ बात करने, उठने, बैठने में डरने लगी। क्लास की सबसे होशियार मणि अब अपने अलग होने से सबके लिए चर्चा का विषय बन गई। सबके माँ-बाप ने आपत्ति लगाई मणि से हमारे बच्चन पर असर हो रहा...उसको हटाओ। मजबूरन माँ - बाप को स्कूल से नाम कटवाना पड़ा।"[68]

शिक्षण संस्थाओं में ट्रांसजेंडर बच्चे अध्यापकों द्वारा भी शोषण का शिकार बनते हैं। स्कूल में अध्यापक बच्चों को हौंसला देनेवाले तथा उन्हें सही राह दिखानेवाले होते हैं, लेकिन जब वही अध्यापक गण नीच हरकते करने लगे, इन बच्चों का मज़ाक उड़ाये तो क्या होगा? स्कूल में अध्यापक ही बच्चों को सीख देता है, कि जाति और लिंग के आधार पर किसी मनुष्य के साथ भेद भाव न किया जाए, लेकिन खुद अध्यापक समाज ही लिंग के आधार पर बच्चों पर

क्रूरता करे तो हमारे समाज का हित कैसे संभव होगा। 'वह' उपन्यास में अंजू के ट्रांसजेंडर होने की खबर सभी को चल जाता है। स्कूल में उसकी कक्षा की सहपाठियों ने उसके साथ बैठने से इंकार कर दिया था। उसके स्कूल के प्रधानाचार्य ने एक दिन उसे अपने कमरे में बुलाया और सभी अध्यापिकाओं की उपस्थिति में उसे उसके कपड़े उतारने का निर्देश दिया, यह उसके लिए दर्दनाक हादसा था, अपने दर्द को वह व्यक्त करती है "मैंने जब इसका विरोध किया तो दो अध्यापिकाओं ने मिलकर मेरे सारे कपड़े जबदस्ती उतार दिये। इस प्रकार मुझे निर्वस्त्र करके बहुत देर तक उनकी डाँट, उपहास और हिकारत भरी निगाहों का सामना करना पड़ा। मैंने अपनी आँखे मूंद ली थीं, फिर भी मैंने महसूस किया कि उन सबकी नज़रें मेरे शरीर के प्रत्येक अंग को बींधती हुई अंदर पहुँच रही है। मेरा ध्यान तब भंग हुआ जब एक अध्यापिका ने घृणा से मेरे वस्त्र मेरे ऊपर फेंकते हुए हुकुम सुनाया ले पहन अपनी ड्रेस और अबसे तू स्कूल कभी न आना।"[69] वाकई ये हादसा अंजू के लिए भयावह एवं हृदयभेदक रहा साथ ही साथ पूरे समाज के लिए शर्मिन्दगी की बात भी। 'ज़िन्दगी 50-50' उपन्यास में ट्रांसजेंडर हर्षा बताती है स्कूल में सभी छात्र उसका मज़ाक उड़ाते थे। कोई भी उसके पास बैठना नहीं चाहता था लेकिन अपने पिता की मार से बचने का उसके पास एकमात्र जगह था स्कूल। स्कूल की अध्यापिका का उसके प्रति व्यवहार बुरा था वह अपनी अध्यापिका रीतिका मैडम के बारे में बताती है कि रीतिका मैडम उसके नाम से अन्य बच्चों का डराती थी और कहती थी किसी ने बदमाशी की तो वे उसे हर्षा के पास बिठा देगी। समाज में शिक्षित अध्यापक वर्ग अगर इन्हें दृष्टि से देखें तो समाज के पिछड़े तट के लोगों में इस समुदाय के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण होना बड़ी बात नही है। नाजबीबी सोना को अपने पास रखकर उसका पालन पोषण करती है। वह सोना को शिक्षित करना चाहती है, उसके एड़मिशन हेतू जब वह स्कूल गई तब वहाँ अध्यापिकाएँ उसे देखकर उसका मज़ाक उड़ाते हैं।

उपन्यासों में ऐसे भी अध्यापक गण दिखते हैं जो ट्रांसजेंडर बच्चों को आगे बढ़ने को प्रेत्साहित करते हैं। 'ऐ ज़िन्दगी तुझे सलाम' उपन्यास में रोशनी के स्कूल के मास्टरजी रोशनी को हौंसला प्रदान करते हुए कक्षा में सभी बच्चों से कहते हैं "हमको इस बच्चे से बहुत उम्मीद है...यह एक दिन कामयाबी की बुलन्दियों को छुएगी। जहाँ से ...जिस जगह से यह आयी है कोई सोच नहीं सकता बट्.....इस बच्ची ने करके दिखला दिया है कि अपनों से ठुकराए यह हिजड़े भी किसी से कम नहीं हैं।...है तो सब एक जैसे फिर यह भेदभाव आपस में क्यों पाला गया है। जबरन थोपी गई मान्यताओं के आधार पर किसी इंसान को अलग कर देना निश्चित रूप से सोची समझी साजिश का एक हिस्सा है जिससे इन्हें अपने दायरे में रह कर अपने जीवन - यापन के लिए मजबूर हो जाना पड़े मैं नहीं कहता।"[70] 'अस्तित्व की तलाश में सिमरन' उपन्यास में अध्यापिकाएँ ट्रांसजेंडर सिमरन की सहायता करते हैं। सिमरन के घर में आर्थिक तंगी के कारण उसे पढ़ाई छोड़ने की नौबत आ गई थी तब उसके स्कूल की अध्यापिकाएँ उसकी मदद करती हैं, सिमरन बताती है "मेरे स्कूल की शिक्षिकाएँ बहुत अच्छे स्वभाव की थीं। एक तो मेरे लिए साक्षात भगवान समान थीं। उनका पूरा नाम तो जानती नहीं, उसको हम सब बच्चे जोशी टीचर कहते थे। वह मेरी पढ़ाई के लिए मेरी आर्थिक रूप से सहायता करने लगी।"[71] स्कूल में एक ओर टीचर थी जो सिमरन को बदतमीज लड़कों के उपद्रव से बचाती थी। ऐसे अध्यापकों का मिलना वाकई खुश किस्मती है।

समाज के डर से कई परिवार अपने ट्रांसजेंडर बच्चों को स्कूल नहीं भेजते। घरवालों को डर बना रहता है कि इनकी सच्चाई अगर स्कूल में जाहिर हो जाए तो पूरा समाज उनके बच्चे का ट्रांसजेंडर होने की खबर फैला देगी तथा समाज में उनकी इज्जत मिट्टी में मिल जायेगी। 'दरमियाना' उपन्यास में रजिन्दर का पिता भी समाज के भय सी उसे स्कूल नहीं भेजते। दूसरे बच्चों की कॉपी तथा किताब घर पर लाकर उसे दिया जाता था, इससे वह अक्षर एवं अंक सीख

गई। 'पोस्ट बोक्स 203 नाला सोपरा' उपन्यास में विनोद पढ़ने में अत्वल था, वह हमेशा प्रथम आता था लेकिन उसके माता-पिता को डर था कि कहीं हिजड़ा दल स्कूल में आकर उसे उठाकर न ले जाए इस कारण उसकी पढ़ाई रोक दी जाती है, जिससे विनोद को बहुत दुःख होता है। वह अपने पिताजी से स्कूल भेजने की गुजारिश करता है- "पप्पा! मैं घर बैठकर नहीं पढूंगा। सबके साथ पढूंगा। अपनी कक्षा में बैठकर। मुझे स्कूल जाना है।"[72] 'मंगलामुखी' उपन्यास में भी गुरु कहती है कि उनके परिवारवालों ने समाज के डर से उसे स्कूल जाने को नहीं दिया। अगर कोई उनसे बच्चे को स्कूल न भेजने का कारण पूछते तो माँ बताती थी कि उसका दिमाग कमज़ोर है डॉक्टर ने पढ़ने को मना किया है।

ट्रांसजेंडर बच्चे पढ़ने लिखने में साधारण बच्चों से पीछे नहीं हैं, सिर्फ फर्क इतना है कि इन्हें साधारण बच्चों की तरह पढ़ने का मौका नहीं मिल पाता। अपने परिवार में रहते हुए ये किसी न किसी वजह से स्कूल जा नहीं पाते अगर स्कूल में दाखिला मिलता भी है तो वहाँ छात्रों, अध्यापकों तथा अन्य कर्मचारियों के द्वारा अपमान सह ना पाने के कारण उन्हें स्कूल छोड़ना पड़ता है। बाद में ट्रांसजेंडर समुदाय में शामिल होने के बाद जो बच्चे पढ़ने की ख्वाहिश रखते हैं, वे अपनी इच्छा को साकार नहीं बना पाते क्योंकि डेरे में कई लोगों का मानना होता है कि पढ़ने लिखने से कोई फायदा नहीं है, उनका काम बधाईगिरी है जो आदिकाल से वे करते आ रहे हैं। वे शिक्षा को निरुत्साहित करते हैं। 'ऐ जिन्दगी तुझे सलाम' उपन्यास में रोशनी जो पढ़ने में हाशियार थी, उसकी पढ़ाई में सुल्ताना रोड़ा बनती है वह रोशनी से कहती है "पढ़ कर तू कौन सा तीर चला लेगी। यह हमारा आदिकाल से चला आ रहा पुश्तैनी काम है। भगवान जी ने इसी वास्ते हमारी रचना की है। हमारी बाँणी में बहुत जस है। हमें मंगलामुखी माना जाता है।"[73]

ट्रांसजेंडर समुदाय में बहुत सारे लोग शिक्षा की अहमियत को जानते हैं, वे शिक्षा को प्रमुख स्थान देनेवाले होते हैं। जब कोई बच्चा ट्रांसजेंडर डेरे में शामिल होकर पढ़ने की आग्रह

प्रकट करता है तो वे उनका साथ देते हैं, अपने से जो हो सके वह सुविधा उन बच्चों को मुहैया कराते हैं। 'ऐ जिन्दगी तुझे सलाम' उपन्यास में रज्जो अपनी गुरु निर्मला की सहायता से रोशनी को पढ़ाती है। वे लोग अपने बिरादरी का नियम रोशनी पर थोपते नहीं हैं, उन्हीं के सहयोग तथा प्रोत्साहन के कारण रोशनी पाँच सौ में से पाँच सौ अंक लाकर महाराष्ट्र में इतिहास रचती है। रज्जो डेरे में आनेवाली सभी को शिक्षित बनाने का आग्रह रखती है "अब से कोई भी बच्चा बाम्बेसेण्ट्रल के इस डेरे में आयेगा उसे रोशनी की तरह अच्छी तालीम दी जायेगी। बड़ा होकर वह खुद अपना रास्ता चुन सके। इस डेरे से रोशनी ने शुरुआत की है इसकी अलख बुझने नहीं देंगे।"[74] निर्मला गुरु रोशनी को आगे पढ़ाने के लिए सहायता करती है। वे चाहती है कि रोशनी पढ़ लिखकर उनकी बिरादरी का नाम रोशन करे।

ट्रांसजेंडर समुदाय को हमारे समाज के लोग हेय दृष्टि से देखने के कारण उनसे संबंधित सभी लोग हमारे समाज में एक तरह से पीड़ित है। अगर कोई ट्रांसजेंडर व्यक्ति सामान्य बच्चे को पालता है और उसे शिक्षा दिलाने की चाह रखता है तो सामान्य होते हुए भी उस बच्चे को भी समाज में शोषण का शिकार बनना पड़ता है। 'यमदीप' उपन्यास में नाजबीबी सोना जो सामान्य लड़की है उसे पालती है, नाजबीबी सोना के एड़मिशन के लिए जब स्कूल जाती है तब वहाँ वह अपमानित होती है, उसे जलील किया जाता है इसलिए वह निर्णय लेती है कि स्कूल में वह अपनी सच्चाई छिपाकर रखेगी। वह सोना से कहती है कि वह सबसे कहे कि उसकी माँ खटाल में काम करती है। कैसी विडंबना है कि ये ट्रांसजेंडर खुद शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते और जब ये दूसरों को शिक्षा दिलवाने की कोशिश करते हैं तब भी समाज रुकावट बनती है।

ट्रांसजेंडर बच्चे पढ़ने में अव्वल होते हैं। अगर उन्हें शिक्षा ग्रहण करने का मौका मिल जाए तो कोई शक नहीं ये ऊँचे मुकाम हासिल कर सकते हैं। लेकिन दुर्भाग्य से शिक्षण संस्थाओं में ये पढ़ाई जारी नहीं रख पाते। बहुते परिवार ट्रांसजेंडर बच्चों की लैंगिकता को छुपाकर उन्हें

शिक्षा प्राप्त करवाते हैं। बहुत सारे माता पिता ऐसे भी हैं, जो दुनिया से लड़कर अपने ट्रांसजेंडर बच्चों को पालते हैं तथा शिक्षा दिलवाते हैं, क्योंकि उन्हें एहसास है शिक्षा प्राप्त करने से ही ये बच्चे समाज में सम्मानजनक जीवन व्यतीत कर पायेंगे। 'अस्तित्व' उपन्यास में प्रीत के माता-पिता, प्रीत को पढ़ा-लिखकर उसे अपने पैरों पर खड़ा होने के लायक बनाना चाहते हैं, जिसमें वे सफल भी होते हैं। 'हॉफ मैंन' उपन्यास में पारस और सजल अपने ट्रांसजेंडर बेटे अर्जुन को पढ़ाते हैं तथा उसे IAS अफसर बनाते हैं। अर्जुन का मानना है कि शिक्षा से ही ट्रांसजेंडर समुदाय की उन्नति हो सकती है। IAS बनने का बाद वह ट्रांसजेंडर समुदाय को संबोधित करते हुए कहता है "हाँ ! और यदि तुम लोग भी चाहो तो ऐसे कलेक्टर बहुत बन सकते हैं। बस किन्नर बच्चों को नाच गाने की जगह पढ़ने लिखने की ओर ले जाना होगा। किन्नर होने के कारण जिन बच्चो को उनके माँ-बाप ने ये सोचकर छोड़ दिया है कि ये आगे जाकर उनकी बदनामी और दुःख का कारण बनेंगे, उनके लिए मैं तो जो कर सकता हूँ करूँगा ही, तुम लोग भी उन्हें अपनाकर अपने बच्चों की तरह पालो... पढ़ाओ। सरकार, कानून सब हमारे साथ हैं। देखना एक दिन हमारी दुनिया बदल जायेगी।"[75]

5.6. राजनीतिक समस्या

ट्रांसजेंडर व्यक्ति परिवार, समाज में ही नहीं बल्कि देश में भी अपने अस्तित्व स्थापित करने के लिए संघर्ष कर रहा है। भारतीय संविधान ने समाज में स्त्री और पुरुष के लिए कई सुविधाएँ उपलब्ध कराई हैं। उनकी उन्नति के लिए कई नियम एवं कानून कायदे बनाये हैं, लेकिन ट्रांसजेंडर व्यक्ति सारी सुविधाओं से वंचित हैं। अपने अस्तित्व के लिए संघर्षरत इनको राशनकार्ड, पासपोर्ट, आधारकार्ड, मतदान पहचान पत्र आदि उपलब्ध नहीं कराए गए हैं। आज के इस विमर्श के दौर में कई न्यूनपक्षीय समुदाय उभरकर आ रहे हैं, सरकार ने उनकी उन्नति के लिए कदम उठाना आरम्भ किया है, उनमें से एक है ट्रांसजेंडर समुदाय। कई ट्रांसजेंडर संगठनाएँ

भी अपनी समुदाय की उन्नति के लिए कार्यरत हैं। बहुत सारे ट्रांसजेंडर आज राजनीति से जुड़कर अपना तथा अपने समुदाय के लिए कार्य कर रहे हैं। राजनीति एक ऐसी कसौटी है जिसपर खरे उत्तरे तो नसीब ही बदल जाए।

हमारी राजनीति में चुनाव के वक्त ट्रांसजेंडर व्यक्तियों का इस्तेमाल करते हुए हम देख पाते हैं। राजनीति में पाँव पसारने के लिए इन्हें कई आरक्षण देने का वादा कर वोट बैंक के रूप में आजमाया जाता है। 'पोस्ट बॉक्स 203 नाला सोपारा' उपन्यास में विधायक जी ट्रांसजेंडर विनोद को चुनाव जीतने का ज़रिया बनाते हैं। विधायकजी विनोद उर्फ बिन्नी को ट्रांसजेंडर समुदाय की उन्नति एवं आरक्षण का झूठा प्रलोभन देके कई सपने दिखाते हैं। वे उसका इस्तेमाल चंडीगढ़ में हुए ट्रांसजेंडर के विशाल सम्मेलन में करते हैं। उनका एकमात्र लक्ष्य ट्रांसजेंडर लोगों को माध्यम बनाकर चुनाव में जीतना था, वहीं विनोद का लक्ष्य अपने समुदाय के लोगों को उनका हक दिलाना था। विनोद का राजनीति में फायदा उठाया जाता है उसका ट्रांसजेंडर होना उनके लिए सौभाग्य था तिवारीजी विनोद से कहते हैं "दुर्भाग्य से मैं ब्राह्मण हूं और सौभाग्य के धनी, तुम किन्नर !"[76]

चुनाव लड़नेवाले प्रत्येक दल का लक्ष्य अपना स्वार्थ साधना तथा सांप्रदायिकता की आड़ में चुनाव में अपने को स्थापित करना होता है। लेकिन ट्रांसजेंडर जब चुनाव लड़ता है तो उसमें स्वार्थता तनिक भी नहीं होता। 'तीसरी ताली' उपन्यास में ट्रांसजेंडर सोनिया मौसी इस नग्न सच्चाई को सामने रखती है "देश की दोनों बड़ी पार्टियों कांग्रेस और भाजपा ने धर्म के नाम पर देश को बाँट दिया है। भाजपा सामने से मारती है और कांग्रेस पीछे से। सांप्रदायिकता की आड़ में सत्ता पर कब्जा किया जाता है। एक हमारी बिरादरी है, जिसमें सभी धर्मों को माननेवाले एक साथ रहते हैं। होली-दीवाली, ईद-बकरीद एक साथ मनाते हैं। हज करने जाते हैं तो चारों धाम

की यात्रा भी करते हैं। चर्च में भी हमें सिर झुकाने में शर्म नहीं आती। राजनेताओं पर बरसते हुए उन्होंने कहा कि हममें और उनमें कोई फर्क नहीं है। वे पर्दे के पीछे हिजड़े हैं और हम सामने के।"[77]

आज हमारे समाज में भ्रष्टाचार का बोलबाला है। चुनाव में नामांकन से लेकर चुनाव में जीतने तक हरेक राजनीतिक नेता बड़े-बड़े वादे जनता से करते हैं लेकिन चुनाव जीतने पर वे अपना यथार्थ स्वरूप बाहर दिखाते हैं। अपनी जेब भरना ही उनका लक्ष्य होता हैं।अपना स्वार्थ साधने वे जनसामान्य का उपयोग्य करते हैं। 'तीसरी ताली' उपन्यास में शोभा का मानना है कि ट्रांसजेंडर समुदाय ही हमारे समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार पर रोक लगा सकते हैं "नेता और भ्रष्टाचार दोनों एक - दूसरे के दो नाम हैं। हम हिजड़े ही समाज को दीमक की तरह चाट रहे नेताओं से बचा सकते हैं। हम ही भ्रष्टाचार को दूर कर सकते हैं। उसने कहा कि हमारे न तो कोई रिश्तेदार हैं और न ही इसकी संभावना। हमें तो पैदा होते ही गटर में फेंक दिया जाता है। ऐसे में हम भ्रष्टाचार किसके लिए करेंगे।"[78] जहाँ सभ्य समाज के कुछ लोग अपनी जेब भरने के लिए राजनीति में उतरते हैं वहाँ ट्रांसजेंडर समुदाय एक ऐसा वर्ग है, जो राजनीति में दूसरों की भलाई करने के लिए अपनी भागीदारी लेता है। राजनीति में आकर लोगों का परोपकार करना तथा समाज की उन्नति इनका लक्ष्य होता है। 'दरमियाना' उपन्यास में आशु के मित्र पत्रकार सुधीर ट्रांसजेंडर दयारानी का साक्षात्कार लेता है, तब वह उनसे कहती है वह इससे पहले मेयर तथा लोकसभा का चुनाव लड़ चुकी है। इस बार विधान सभा की लड़ रही है। वह अपना अनुभव बताती है "बाबू, हम किसी पार्टी के बड़े नेता तो हैं नहीं!...न ही हमारे पास हराम का पैसा और गुंडे - बदमाश हैं!...हम तो अपनी ईमानदारी के बल पर ही लड़ते हैं।"[79] चुनाव हारने पर उसका कहना था कि "कोई बात नहीं बाबू!...जीवन में हार-जीत तो चलती ही रहती है।"[80]

आज ट्रांसजेंडर समुदाय के लोग अपने अधिकार के प्रति सचेत होकर राजनीति में उतर रहे हैं तथा वे भी चुनाव लड़ रहे हैं। इसके विपरीत कुछ इनमें ऐसे भी लोग हैं, जो आज भी कुएँ

का मेढ़क बने जी रहे हैं। वे समाज में आगे बढ़ना ही नहीं चाहते। उनका मानना है कि उनका जन्म बधाईगिरी तथा भीख माँगने के लिए हुआ है। वे अपना परंपरागत पेशे को ही अपनाना चाहते हैं। एक तरह से उनके मन में भविष्य के बारे में सोचकर डर बना रहता है, उनका सोचना है कि राजनीति में ज़्यादा से ज़्यादा कुछ साल ही रहा जा सकता है, उसके बाद क्या होगा, कैसे गुजारा होगा? भविष्य की चिंता उन्हें पारंपरिक रोजगार करने में विवश करती हैं। 'तीसरी ताली' उपन्यास में चेन्नई से आई गुरु कलावती का कहना है कि "हम राजनीति में घुस जायेंगे तो शादियों में गाना कौन गायेगा। राजनीति एक - दो साल! उसके बाद तो हमें तालियाँ ही बजानी हैं। उन्होंने शबनम मौसी का उदाहरण देते हुए कहा कि उसकी विधायकी धरी -की -धरी रह गई। चुनाव में हारने के बाद अब पेट भरने के लिए तालियाँ ही पीट रही है। इसी तरह इलाहाबाद से आई रम्मोबाई का कहना था कि हमें अपनी परंपरा का पालन करना चाहिए...हमें राजनीति से कोई लेना देना नहीं है" ।[81] 'तीसरी ताली' उपन्यास में उपन्यासकार ट्रांसजेंडर समुदाय के उद्धार के लिए अलग पार्टी बनाने की बात पर ज़ोर देते हैं। उपन्यास में एक ट्रांसजेंडर उम्मीदवार का मानना है "अपनी ही बिरादरी के कुछ लोग अब भी हाशिये में रहना चाहते हैं। उन्हें समझाये जाने की ज़रूरत है। आप लोगों के उत्साह को देखकर मुझे लगता है कि अभी आखिरी जंग लड़ना बाकी है।....हमें लोगों के बीच जाकर बताना होगा कि हम असली हिजड़े नहीं है। असली हिजड़े तो वे हैं जो जनता के वोटों से संसद और विधान सभा में जाकर उन्हीं का खून चूसने की योजनाएँ बनाते हैं और अपना पेट भरते हैं। हमें अपनी पार्टी बनानी होगी। हमारी पार्टी का नाम होगा-तीसरी योनि और नारा होगा-नकली को परखा अब असली को परखो।"[82]

ट्रांसजेंडर समुदाय के कई लोग आज चुनाव में उतर रहे हैं। अपने समुदाय के लोगों के हक के लिए तथा उन्हें मानव के रूप में प्रतिष्ठित करने के लिए वे राजनीति को हथियार बना रहे हैं। उनमें कई इस जंग में खरे उतर रहे हैं, तो कई लोग हार रहे हैं। तीसरी ताली उपन्यास में

उपन्यासकार ने शबनम मौसी का विधायक बनना भारतीय राजनीति में अमूल्य घटना माना है "देश की किसी विधान सभा में पहली बार अगर कोई हिजड़ा विधायक बना था तो वह थीं शबनम मौसी। उसका विधायक बनना भारतीय राजनीति और वर्षों से सामंती ताने-बाने में अकड़े -जकड़े समाज के लिए कोई मामूली घटना नहीं थी। जिन हिजड़ों को भारतीय समाज दया, उपेक्षा और इन सबसे बढ़कर घृणा का विषय मानता हो, उन्हीं में से एक को जब लाखों लोग अपना प्रतिनिधि चुन लें, तो इसे किसी भी हालात में आम घटना नहीं माना जा सकता।"[83] ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों को अपने समुदाय की उन्नति के लिए राजनीति में खरा उतरना होगा। राजनीति ही वह जरिया है जिसके बल पर वे अपने अस्तित्व को समाज में स्थापित कर सकते हैं एवं समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार को समाप्त कर दुनिया में शांति बना सकते हैं। हमारे देश में तमिलनाडु में 1994 में पहलीबार ट्रांसजेंडर को मतदान का अधिकार मिला। तथा 1998 में मध्यप्रदेश के विधानसभा चुनाव में सुहागपुर मतदाता संघ से शबनम मौसी विधायक के रूप में चुनी गई तथा 2000 में कमलाजान मध्यप्रदेश के कटनी शहर की महापौर बनी तथा आशा देवी भी गोरखपुर की महापौर बनी। कमलाजान का चुनाव न्यायालय ने महिलाओं हेतु आरक्षित घोषित किया क्योंकि वह महिला नहीं ट्रांसजेंडर थी। इसी प्रकार आशा देवी के चुनाव को भी अवैध माना गया।

5.7. यौन शोषण

किसी के द्वारा जबरदस्ती यौन संबंध बनाना यौन शोषण है और यौन संबंध बनाने का आग्रह कर दूसरे व्यक्ति को इसके बदले इनाम का लालच देना भी यौन शोषण कहलाता है। इसमें एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के सहमति के बिना उससे शारीरिक संबंध बनाता है। यौन शोषण को यौन उत्पीड़न भी कहा जाता है। प्राचीन काल से ही भारत में यौन उत्पीड़न का बोलबाला है, आज यौन शोषण की तीव्रता कुछ ज़्यादा बढ़ गई है। हमारे समाज में पुरुष वर्ग द्वारा स्त्री का

यौनशोषण साधारण तौर पर हम सुनते आए हैं, लेकिन आज ट्रांसजेंडर समुदाय के लोग भी भारी संख्या में यौन शोषण का शिकार बन रहे हैं। हमारे भारतीय संविधान में यौनिक उत्पीड़न एक अपराध है, तथा यौन शोषण करनेवाले अपराधी को कानून सख्त से सख्त सजा भी देती है, लेकिन ट्रांसजेंडर वर्ग के प्रति जो पुरुष वर्गद्वारा यौन उत्पीड़न होता है उस अपराध के बारे में हमारे कानूनी नियम के तहत कुछ बोला नहीं गया है, हो सकता है इसीकारण इनके प्रति ज्यादा यौनशोषण हो रहा है।

हमारे समाज में ट्रांसजेंडर लोगों को देखते ही समाज के पुरुषवर्ग को घृणा आ जाती हैं, ये उन्हें मनहूस से कम नहीं मानते। ट्रांसजेंडर का आसपास भटकना भी इन्हें सुहता नहीं। लेकिन रात के अंधेरे में या इन्हें अकेले पाने पर ये पुरुष वर्ग इन्हें अपने हवश का शिकार बनाने से नहीं चूकते। अपनों से भी ये यौन उत्पीड़न का शिकार बनते हैं। 'मेरे होने में क्या बुराई है' उपन्यास में सितारा को उसके सात साल की उर्म में उसके ननिहाल में एक शादी के दौरान उसके दूर के मामू उसका यौन शोषण करते हैं। वह उसके साथ घटित हादसे का वर्णन करती है, "उलझन, उधेड़-बुन, हैरानी, बेचैनी, बेसुकूनी का पहला बीज मेरे दिल और दिमाग से में सात साल की उम्र में पड़ा, जब ननिहाल की एक शादी में रिश्तेदारों की भीड़ में, अपने हम उम्र ममेरे और दूसरे साथियों के साथ मौजमस्ती करते खाते-पीते अचानक एक शाम दूर-दराज के बड़ी उम्र के मामू ने कमरे में टांगे दबवाने के लिए बुला लिया। मैं भी खुशी - खुशी उनकी टांगों पर ऐसे चहलकदमी कर रहा था, जैसे घुटने से टख़ने की नहीं, बल्कि किसी ढलान पर फिसल रहा हूँ। फिर न जाने उन्हें क्या सूझी कि उन्होंने फुर्ती से उठकर एकदम मुझे दबोच लिया। मैं छटपटाने लगा, चिल्लाने लगा तो उन्होंने अपने बड़े मुँह से मेरा मुँह भरकर मेरी आवाज़ बन्द कर दी। मेरी सांस रुकने लगी, मेरी आवाज़ मेरे अन्दर ही घुटती रही और फिर उन्होंने अपना बदन मेरे अंदर पेबस्त कर दिया। मैं दर्द से कराहता रहा। मेरी आँखें बरसती रही। मैं उनकी लाल आँखें देखकर सहम गया। नादान

मासूम बच्चा समझ ही न सका कि खेलते-कूदते यह मेरे साथ क्या हो रहा है। फिर उन्होंने हांफते हुए अपनी पकड़ से मुझे आज़ाद करते हुए डराया - धमकाया कि अगर मैंने किसी को बताया तो मेरी अम्मा को जान से मार डालेगा।"[84]

तथाकथित सभ्य समाज का पुरुष वर्ग, एक छोटी बच्ची को अकेले पाने पर उसकी बेवसी का फायदा उठाने से भी नहीं हिचकिचाता। उसे यह भी फर्क नहीं पड़ता कि वह ट्रांसजेंडर है या साधारण लड़की। 'मैं पायल' उपन्यास में घर छोड़कर निकलने पर पायल को अनेक जगहों पर हिंसक पशुतुल्य, पुरुषवर्ग के वासना का शिकार होना पड़ा। ट्रेन में अकेले यात्रा करनेवाली पायल को एक प्रौढ़ व्यक्ति अपनी वासना का शिकार बनाता है "प्रौढ़ की हरकतें बढ़ती जा रही थीं उसने मेरा पैर अपने घोड़े के ऊपर जा रख लिया था। हे भगवान! मैं डर गयी, मारे घबराहट के मेरी सिट्टी-पिट्टी घुम हो गयी उसका हाथ मेरी पिंडली से ऊपर सरकने लगा था।"[85] किसी तरह जुगनी उस प्रौढ़ व्यक्ति के हाथों से बच निकली लेकिन स्टेशन पर उतरने पर उसे सोते देख रेलवे का एक मुच्छड़ सिपाही उसके साथ गलत हरकतें करता है। सभ्यसमाज के लोगों की हैवानियत को देखकर जुगनी समझ गई कि अगर इन जैसे हैवानों से बचना है तो लड़की की बजाय लड़के के रूप में रहना होगा। अंत में वह लड़कों के कपड़े पहनकर लड़कों की तरह रहने लगी। लड़के के वेश में वह अपने को सुरक्षित पाती है। अप्सरा टॉकीज़ में काम करते वक्त वहाँ कामकरनेवाला कामुक प्रमोद उसकी सच्चाई को जब जान जाता है तब वह भी उसे अपने हवस का शिकार बनाने की कोशिश करता है। जब तक पायल लड़के के रूप में रही सुरक्षित रही लेकिन उम्र के बढ़ते उसमें शारीरिक बदलाव आ गया था, जिसे छुपाकर रखना आसान नहीं था। पायल समझ गयी थी पुरुष वर्ग के यौन शोषण से बचकर रहना आसान नहीं है।

'जिन्दगी 50-50' उपन्यास में हर्षा भी स्कूल से आते वक्त एक आदमी के हवस का शिकार बनती है। एक दिन स्कूल से उसे अकेले आते देख उसपर पिछले कुछ दिनों से नज़र डाले

रखे एक आदमी ने उसे दबोच लिया। हर्षा ने उस भेड़िये से उसे छोड़ने की बहुत विनती की लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ "पर वह मेरी कहाँ सुननेवाला था। मेरी चीख और दर्द का उसके ऊपर कोई असर नहीं पड़ रहा था। मेरे घुटनों में बहुत तेज दर्द हो रहा था। शायद गिरने की वजह से वे छिल गये होंगे। मैं दर्द के मारे तड़प रही थी और उसे अपनी तड़प के आगे मेरी तकलीफ दिखाई नहीं दे रही थी। उसकी इस हवस को देखकर मेरे शरीर में लगी चोटों का दर्द कहीं दूर भाग गया। मैं बस आगे होने वाले दर्द से डरकर उससे हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाने लगी, भैया छोड़ दो। बहुत चोट लग गयी है।"[86] शारीरिक शोषण करने के बाद उन्हें डरा धमका कर चुप रहने पर मजबूर कर दिया जाता है। हर्षा को भी उसके प्रति हुए शारीरिक शोषण को छुपाये रखने की धमकी दी जाती है, "कपड़े पहन के चुपचाप घर चले जाना ! और सुन, अगर कौनों से बताया तो तेरी और अमन की कहानी जगज़ाहिर कर दूँगा।"[87] अपने ऊपर बीते इस भयानक शोषण के बारे में हर्षा किसी को बताकर अपना दुःख कम करना चाहती थी उस हैवान को उसके हैवानियत की सजा दिलाना चाहती थी, लेकिन अपनों की इज्ज़त धूल में न मिल जाए यह सोच वह सबकुछ सहन कर जाती है "मैं किसी की बाँहों में खूब ज़ोर से रोना चाहती थी पर आँसुओं पर काबू रखना था। इन चोटों पर मरहम लगाना था पर किसी को बताने की हिम्मत न थी। इस जालिम को सज़ा दिलवाने का मन कर रहा था पर बाबूजी की इज्जत का ख्याल था।"[88] अक्सर इनके ऊपर घटित ऐसे हादसे का दोषी इन्हें ही ठहराया जाता है बजाय उन्हें आश्वासन देने के, उनका हिम्मत बढ़ाने के। कितना घोर अन्याय है उसके मर्जी के खिलाफ उसके देह का शोषण होता है और उसी को इस क्रूर कृत्य के लिए दोषी ठहरा दिया जाता है। हर्षा के साथ भी ऐसा ही होता है।

बहुत सारे लोग ट्रांसजेंडर लोगों को पैसे की लालच देकर उनकी शरीर को अपनाना चाहते हैं। हर्षा की मुलाकात रास्ते में ऐसे एक आदमी से होता है जो उसे पैसा देकर खरीदना चाहता है वह इसके बारे में कहती है "वह थोड़ी देर मेरी तरफ़ खामोशी से देखता रहा फिर अपना

दायाँ हाथ अपने नितम्बों की तरफ़ ले जाने लगा। मैं समझ गयी कि वह पैसा निकाल रहा होगा। पीछे से बटुआ निकालते समय उसका चेहरा देखते ही बन रहा था। उसकी आँखें बन्द हो गयी थीं, होंठ हल्के कष्ट से फैल गये थे, जिसके कारण आँखों पर झुरियाँ पड़ गयीं। फिर शीशा खोलते हुए मेरी तरफ़ एक कागज़ बढ़ाया। जैसे ही मैंने कागज़ हाथ में लिया, उसने मेरा हाथ छूते हुए कहा था, मेरे साथ आजा! तेरा भीख माँगना छूट जायेगा।"[89] सिर्फ बुजुर्ग ही नहीं युवा वर्ग भी ट्रांसजेंडर बच्चों का शारीरिक शोषण करते हैं। 'अस्तित्व की तलाश में सिमरन' उपन्यास में सिमरन जब खेल रही थी तब वहाँ खेलने वाला एक लड़का उसे गली से दूर ले जाकर उसका शारीरिक शोषण करता है। वह इस हादसे का वर्णन इस प्रकार करती है "उस सुनसान जगह पर पहुँचकर देखा तो वह एक ईट भृट्टा था। मैं डर गई। वह लड़का मेरे साथ गलत हरकत करने लगा। उसकी हरकतें बढ़ती जा रहीं थीं। वह मेरे साथ क्या कर रहा था? मेरी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था। वह अपनी मनमर्जी करके मुझे ऐसी हालत में छोड़कर भाग गया।"[90] घर, स्कूल, खेलने की जगह, नौकरी करने की जगह हर कहीं ट्रांसजेंडर व्यक्ति यौनिक उत्पीड़न का शिकार बनता है।

स्कूल में भी बच्चे उनसे बदतमीजी पेशाने में चूकते नहीं। सिमरन बताती है "मेरे स्कूल के दो लड़कों ने मुझे रास्ते में पकड़ लिया और वह जबरदस्ती करने लगे। एक ने मेरे हाथों को पकड़ लिया तथा दूसरे ने मेरा गला दबाने की कोशिशि की। वह मेरे शरीर से चिपके हुए थे। मैं उठ नहीं सकती थी उठना क्या हिल भी नहीं सकती थी।"[91] अगर ट्रांसजेंडर ऐसे हादसे को घर में बताते हैं तो उन्हें दोषी ठहराया जाता या उनका स्कूल जाना बंद कर दिया जाता है इसी कारण ट्रांसजेंडर व्यक्ति अपने ऊपर घटित जुल्मों को घर में बता नहीं पाता और सह जाता है। सिमरन यहाँ अपने ऊपर हुए जबरदस्ती के बारे में अपने घरवालों को बताती तो है लेकिन कोई फायदा नहीं होता बल्कि वह कहती है "सारी घटना घरवालों को बताई लेकिन कोई जवाब नहीं दिया। बल्कि मुझे ही यह सब घटना बताने से रोक दिया और कहा कि तू यह सब किसी को नहीं

बतायेगी। इसी कारण यह घटना किसी को भी बता नहीं पा रही थी। वह मुझे रोज तंग करने लगे। इस बार उनकी संख्या दो नहीं चार थी।"[92] सिमरन जिस व्यक्ति को अंकल पुकारती है, जिसे वह भला आदमी मानती थी उससे भी वह पीड़ित होती है। सिमरन बताती है पिताजी के दुकान के पास उस अंकल का प्लास्टिक का फैक्टरी था एक दिन वह उसे अपने साथ कारखाने ले जाकर उसका शारीरिक शोषण करते हैं। सिमरन के दुकान पर एक ओर बुजुर्ग व्यक्ति आकर उसपर मर्दानगी दिखाता था। वह इसके बारे में अपने पिताजी से कहना चाहती थी लेकिन उसकी सुननेवाला कोई नहीं था "सब अपने थे, लेकिन मेरी सुनने के लिए कोई नहीं था। किसी का साथ नहीं मिल रहा था।"[93] अपनों के होते हुए भी इस समाज के लोग अकेलेपन की त्रासदी से जूझते हैं। सिमरन खुद साहस बटोरकर उस आदमी का विरोध करती है पर वह आदमी उसके पिताजी से उसपर बदतमीजी करने का अरोप लगाकर शिकायत कर देता है। वह आदमी उसके पिताजी से कहता कि सिमरन ने उसका लिंग पकड़ना चाहा। सिमरन इस झूठे आरोप का विरोध करती है लेकिन उसके पिता उसकी बात सुनने के तैयार नहीं होते और उसकी खूब पिटाई करते हैं। कैसी विडम्बना है उसे खुद शोषण का शिकार होना पड़ा और ऊपर से उसपर ही गलत इंजाम थोप दिया गया। कोई भी सिमरन की बात सुनने या उसपर विश्वास करने को तैयार नहीं होता इस कारण वह नित्य किसी न किसी के द्वारा शोषण का शिकार होती गई। उसके ऊपर होनेवाले अत्याचार का विरोध कोई नहीं करता। सिमरन खुद इसके बारे में बताती है "सबसे ज्यादा यौन शोषण हमारा (यानि किन्नरों का) ही होता है। हम दर्द सहते-सहते छोटे से बड़े हो जाते हैं।"[94]

हमारे संरक्षक यानि कानून के रखवाले जो समाज में शोषकों से हमारी रक्षा करनेवाले होते हैं वे ही कई बार पशुतुल्य व्यवहार करते दिखाई पड़ते हैं। 'गुलाम मंडी' उपन्यास में अंगूरी पुलिस से पीडित होती है। वह कहती है "मेरे दाढ़ी-मूँछ नहीं निकले। आवाज़ छोरियों जैसी रह गई तो सब मेरे को मारते-चिढ़ाते खिझाते थे। बाप भी जब देखों, तब हाथ छोड़ देता था। तो मैं

घर से भाग गई पर भूखी मर गयी, कोई काम भी नहीं देता था। लोगों के घर वर्तन मांजने गई तो बोले,“हिजड़े से बरतन मजवाएंगे क्या? मैंने कह दिया,... से बर्तन थोड़ी मांजते हैं, मांजते तो हाथ से ही है ना। तो घराती ने थाने में रिपोर्ट कर दी कि हिजड़ा घर औरतों को छेड़ रहा है। अश्लील बातें कर रहा है। पुलिस मुझे पकड़कर ले गयी। मारा भी और रेप भी किया।”[95] ट्रांसजेंडरों को भी सामूहिक बलात्कार का शिकार होना पड़ता है। ‘मंगलामुखी’ उपन्यास में सिमरन सामूहिक बलात्कार का शिकार बनती है। हरि सिमरन से शादी करता है, सुहागरात को हरि को जब पता चलता है सिमरन एक ट्रांसजेंडर है तब वह उसे रातों रात घर से धक्के मारकर निकाल देता है। रात में अकेली सिमरन को देख कुछ लोग उसे गाँव पहुँचाने का वादा कर अपने साथ ले जाते हैं और उसका शारीरिक शोषण करते हैं “मैं सोची भगवान ने मेरे को मदद के लिए भेजा है सो उनके साथ चल दी वो धीरे धीरे चार हो गये....मनचले ये ससुरे, हमदर्दी का लेप लगाने के बहाने गहरे जख्म दे गए....नासपीटे! मैं तो सोच भी नइ सकती कि किसी के दुःख में भी लोगों के दिमाग में इतनी गंदगी आ सकती है। एक सुनसान जगह पर ले जाकर उनने मेरे साथ वो कुकर्म लिया....जिसके लिए हरी ने मेरे को ठुकरा दिया था.....।”[96] अमीर लोग अपने मनोरंजन के साधन के रूप में ट्रांसजेंडर को देखते हैं। ‘पोस्ट बॉक्स 203 नाला सोपारा’ उपन्यास में पूनम जोशी का सामूहिक बलात्कार विधायकजी के भतीजे बिल्लु तथा उसके साथियों द्वारा होता है। बिल्लु तथा उसके मित्र ट्रांसजेंडर लोगों के जननांग को देखने की जिज्ञासा रखते हैं। उनके द्वारा पूनमजोशी पर किया गया कृत्य दर्दनाक था “वह डरे नहीं कपड़े वे बदल देगे उसके बस? वह उनकी एक दिली ख्वाहिश पूरी कर दे। हिजड़ों का गुप्तांग नहीं देखा है उन्होंने। कैसा होता है उनका गुप्तांग? ”[97]

दिन के उजाले में सभ्य कहे जानेवाले आदमी का मुखौटा पहननेवाले पुरुष ट्रांसजेंडर व्यक्ति को हेय की दृष्टि से देखता है लेकिन अपनी हवस को शान्त करने के लिए ये ट्रांसजेंडर

व्यक्तियों का इस्तेमाल करते हैं। निस्साहाय ट्रांसजेंडर लोगों का ये शोषण करते हैं। पुरुष वर्ग अपनी सेक्स की भूख मिटाने के लिए सिर्फ लड़कियों का ही नहीं ट्रांसजेंडर लोगों का भी इस्तेमाल करते हैं, इसका खुलासा 'ऐ जिन्दगी तुझे सलाम' उपन्यास में रज्जो मौसी करती हैं। वे रोशनी से कहती हैं –"बेटा यह समाज है। यहाँ अच्चे बुरे हर किस्म के लोग हैं। जो जैसा व्यवहार करता है उससे वैसे पेश आते हैं हम। हमारे तौर-तरीके और आचरण ही हमें बचाते हैं नहीं तो और लड़कियों की तरह हिजड़ों की भी इज्जत लुटती दिखाई देती है।"[98]

5.8. नकली ट्रांसजेंडर

ट्रांसजेंडर समुदाय को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। समाज एवं परिवार से बहिष्कृत इस वर्ग के लोगों को हर क्षेत्र में मुश्किलों का सामना करना पड़ता है, वहीं नकली ट्रांसजेंडर के कारनामे भी इनके लिए भारी पड़ता है। नकली ट्रांसजेंडर लोगों को परिवार बाल-बच्चे होते हैं। ये लोग ट्रांसजेंडर लोगों की वेशभूषा धारण कर सिग्नल ट्रेन, बस अड्डों पर जाकर पैसों की वसूली करके आराम से अपना जीवन यापन करते हैं। शारीरिक मेहनत किए बिना पैसा जुगाड़ करने के लिए ये ट्रांसजेंडर का वेश धारण करते हैं। ये लोग जनमानस में ट्रांसजेंडर लोगों के अस्तित्व पर नकारात्मक दृष्टिकोण पैदा करते हैं। नकली ट्रांसजेंडर पैसा कमाने की लालच में ट्रांसजेंडर लोगों की वेशभूषा धारण कर पैसा ऐंठने के लिए गंदी - गंदी हरकते करते हैं, जिसके कारण समाज के लोगों में ट्रांसजेंडर लोगों के प्रति नफरत तथा घृणा पनप गया है।

नकली ट्रांसजेंडर बस अड्डे, रेलगाड़ी, एवं रेलवे प्लाट्फोम तथा अन्य सार्वजनिक जगहों पर पैसा वसूल करते दिखाई पड़ते हैं। ये लोग यात्रियों से बड़ी रकम पूँछते हैं, माँगी रकम न मिलने पर ये गंदी हरकते करते हैं, गाली देते हैं, कपड़े उठाकर दिखाते हैं। इन हरकतों की वजह से सामान्य जनों में ट्रांसजेंडरों के प्रति भय एवं घृणा पैदा हुई है। 'मंगलामुखी' उपन्यास में चंदा नाम का आदमी ट्रांसजेंडर वेश धारणकर ट्रेन में पैसा वसूल करता है, जब इसकी खबर ट्रांसजेंडर

व्यक्तियों को लगता है तब वे उसे पकड़कर खूब पीटते हैं और नंगा करके उसे सजा देते हैं। ट्रांसजेंडर लोग उसपर अपना आक्रोश प्रकट करते हैं "नासपीटे! भड़वे! हमारा रूप धर के हमारे पेट पर लात मार रया! आए! हमें तो मालिक ने ही ऐसा बनाया...तुमने हमारे जीने के सारे रास्ते बंद कर लिए जब हम माँगने निकले...तुम तो अच्छे भले मरद होकर नपुंसक निकले...।"[99] नकली ट्रांसजेंडर पैसों के लिए गैर कानूनी कारनामे करते हैं, जिससे असली ट्रांसजेंडरों का समाज में बदनामी होता है। मेहनत किए बगैर आसानी से पैसा कमाने के लिए ट्रांसजेंडर का रूप धारण करनेवाले नकली ट्रांसजेंडर देह धंधा भी करते हैं, जिससे सभ्य समाज के लोगों में ट्रांसजेंडर लोगों के प्रति बुरा बिंब पैदा होता है। नकली ट्रांसजेंडर की वजह से समाज के लोगों में यह धारणा पनप गई है कि ये ट्रांसजेंडर समुदाय पैसों के लिए जिस्मफरोशी करते हैं। 'ऐ जिन्दगी तुझे सलाम' उपन्यास में रज्जो मौसी नकली ट्रांसजेंडरों के बारे में कहती है "हम लोग भी अगर कोशिश करते तो कुछ अलग कर सकते थे। रखा ही क्या है अपने धंधे में। जब से नकली हिजड़ों ने हमारे धन्धे पर सेंध मारी है, हमारी बदनामी ही होवे है। रहा - सहा हमारे उन साथियों ने चौपट कर दिया जो पैसों के लालच में जिस्म फरोशी करने लगी हैं।"[100]

बेरोजगारी के कारण कई युवावर्ग पैसा बनाने का आसान तरीका के रूप में ट्रांसजेंडर का रूप धारण करते हैं। सामान्य जन अगर भीख माँगे तो कोई पैसा नहीं देता लेकिन ट्रांसजेंडर लोगों को सभी भय के कारण पैसा देते हैं। बधाईगिरी में जाकर नाच-गाने पर भी मुहमाँगा पैसा मिल जाता है। इस कारण बेरोजगारी का सामना करनेवाले लोग नकली ट्रांसजेंडर बनने का फैसला बनाते हैं। 'किन्नर कथा' उपन्यास में अब्दुल और रहमान बेरोजगारी और गरीबी से तंग आकर नकली ट्रांसजेंडर बनते हैं। वे रात में ट्रकों के ड्राइवरों की ज़रूरत पूरी करते हैं तथा दिन में शादी ब्याह में नाच-गाकर हजारों रूपये कमा लेते हैं। नकली ट्रांसजेंडर सार्वजनिक जगहों तथा विवाह, बच्चे जन्म लेने आदि अनेक मंगल अवसरों में असली ट्रांसजेंडर पहुँचने के पहले जाकर पैसा

कमा लेते है, जिस कारण असली ट्रांसजेंडर लोगों को आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ता है। 'किन्नर कथा' उपन्यास में तारा ने लंबू को जोकि गरीबी और लाचारी के कारण ट्रांसजेंडर बनकर नाच गाकर पेट पाल रहा था उसे अपने यहाँ आश्रय दिया था। धीरे-धीरे लंबू जैसे नकली ट्रांसजेंडरों की संख्या बढ़ गयी। लंबू ने अपना डेरा बना लिया और वह गुरु बन गया। उनकी वजह से असली ट्रांसजेंडरों को भुखमरी का सामना करना पड़ रहा था। बाद में लंबू और तारा में दुश्मनी हो गई।

असली ट्रांसजेंडर के हक का पैसा नकली ट्रांसजेंडरों द्वारा वसूल किए जाने के कारण आर्थिक तंगी पैदा हो जाती है। असली और नकली ट्रांसजेंडर में इस बात पर मारपीट भी होने लगती है। 'मंगलामुखी' उपन्यास में जब चंदा नाम का आदमी ट्रांसजेंडर वेश धारण कर ट्रेन पर पैसा वसूल कर रहा था तब असली ट्रांसजेंडर वहाँ पहुँचकर उसे खूब मारा, "रज्जू ने एक झटके में उसके देह से साड़ी अलग कर दी...गजब की ताकत है इनमें, हम सब देखते रह गए। अब वह चंदा अपना पेटीकोट कसकर पने हाथों में भींचे विनती करने लगी। मगर अब यह जलजला थमने का नाम नहीं ले रहा था, रजिया, माला, हरिया, रज्जू चारों उसे घेरकर खड़े थे, उनका गुस्सा देख किसी की हिम्मत नहीं हो रही थी कि चंदा के पक्ष में गुहार लगाये। एक पल में चंदा का सारा श्रृंगार उनके हाथों में था...नकली बालो की चोटी, सिलीकॉन से बनाई नकली छाती और अंग के सारे कपड़े....जैसे ही अंतिम वस्त्र रज्जू ने खींचा वहाँ खड़े सभी पुरुष हत- प्रभ रह गए।... ये...ये तो आदमी है! तो क्या आदमी किन्नर बनकर माँग रहा है। छि! सबकी संवेदनाएँ जो अब तक चंदा के साथ थीं..घृणा में बदल गईं। वह तथाकथित किन्नर अब हथेली से अपना पुरुषत्व ढ़कने का असफल प्रयास कर रहा था।"[101] ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों का आय का प्रमुख जरिया उनका पारंपरिक पेशा बधाईगिरी तथा भीख होता है। नकली ट्रांसजेंडर असली ट्रांसजेंडर के पहुँचने के पहले ही घरों में पहुँचकर बधाईगिरी का पैसा वसूल कर लेने के कारण इनकी आमदनी

में घाटा होता है। सार्वजनिक जगहों में ये नकली ट्रांसजेंडर लोगों से पैसा ऐंठते है, पैसा न मिलने पर ये गंदी हरकते करते हैं, जिससे लोगों में ट्रांसजेंडर समुदाय के प्रति खौफ तथा घृणा पैदा हो गया है।

सामान्य जनता असली ट्रांसजेंडर और नकली ट्रांसजेंडर में फर्क को नहीं समझ पाते। इसीलिए नकली ट्रांसजेंडर द्वारा किए गये बुरी हरकतों के कारण सामान्य जन असली ट्रांसजेंडरों को भय तथा घृणा की दृष्टि से निहारते हैं। यह ज़रूरी है कि सभी असली तथा नकली ट्रांसजेंडरों में फर्क को समझ पाये नहीं तो नकली ट्रांसजेंडर असली ट्रांसजेंडर पर हर तरह से मुसीबत बन जायेगा। 'किन्नर कथा' उपन्यास में नगीना जिलाधिकारी को असली तथा नकली ट्रांसजेंडर के बीच का फर्क समझाती है "हमा बता देंगे हुजूर! असली हिजड़ा कभी दो चार रूपयों के लिए मेले - ठेले में भीख सी - माँगते नहीं घूमते। पैसा न मिलने पर किसी को कोसते नहीं है और न ही लड़ाई-झगड़ा करते हैं;जिसने जो प्रेम से दे दिया, ले लिया। ये नहीं कि गुस्से में घाघरा उठाकर दिखा दिया। ये सब काम नकली हिजड़ा करते हैं, हम लोग कभी नहीं। असली हिजड़ा मन व आत्मा से स्त्री होता है। शरीर उसका पुरुष की तरह हो सकता है, पर मन से वह एक पुरुष का साथ चाहता है, स्त्री की तरह उसकी चाहत पुरुष से जुड़ने की होती है, जबकि नकली हिजड़े पुरुष होते हैं और सेक्स के लिए स्त्री की चाहत रखते हैं।"[102]

असली ट्रांसजेंडर पर नकली ट्रांसजेंडर भारी पड़ते नज़र आ रहे हैं। नकली ट्रांसजेंडर की वजह से असली ट्रांसजेंडर लोगों की कमाई में घाटा पड़ रहा है, साथ ही साथ नकली ट्रांसजेंडर के बुरी करतूतों के कारण समाज में असली ट्रांसजेंडर के प्रति सभी में डर एवं घृणा पैदा हो रही है। नकली ट्रांसजेंडर के खिलाफ सक्त कारवाई लेना है। ट्रांसजेंडर का वेश धारण कर पैसा बनानेवाले नकली ट्रांसजेंडर के कारण भुखमरी से जूझ रहे असली ट्रांसजेंडर को बचाना है तो इन

नकली ट्रांसजेंडर को सख्त से सख्त सजा मिलनी होगी, जिससे आगे कोई पैसा कमाने के लिए ट्रांसजेंडर का वेश धारण न करें।

5.9. ट्रांसजेंडर - ट्रांसजेंडर का दुश्मन

सभ्य समाज के लोगों से जहाँ ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों को शारीरिक तथा मानसिक रूप से यातना और अवहलेना झेलनी पड़ती हैं, वहीं ट्रांसजेंडर लोग दूसरे ट्रांसजेंडर का दुश्मन बन बैठे हैं। कई ट्रांसजेंडर अपने अस्तित्व को समाज में स्थापित करने के लिए जंग कर रहे हैं, तो दूसरी ओर एक वर्ग उनकी राह में मुश्किले पैदा कर रहे हैं। वे नहीं चाहते ये आगे बढ़े तथा उनकी पहचान स्थापित करें। अपनों के हित की मनोकामना इनमें कुछ लोगों को नहीं होती। एक ट्रांसजेंडर अपने ही समुदाय के दूसरे व्यक्ति का दुश्मन बन जाता है।

सामान्य मनुष्य की तरह इनमें भी मनुष्य सहज भावनाएँ, प्रेम द्वेष, भय, अहंकार आदि होते हैं। इनमें भी आपसी मुठ भेड देखने को मिलती हैं। कई ट्रांसजेंडर व्यक्ति अपने पारंपरिक पेशे को न अपनाकर पढ़ लिखकर अपने पैरों पर खड़े होने की जिज्ञासा रखते हैं। ट्रांसजेंडर परिवार में अगर कोई व्यक्ति पढ़ने की ख्वाहिश रखता है तो, वहाँ कुछ लोग उनको प्रोत्साहन देते हैं, तो कुछ उनके खिलाफ खड़े हो जाते हैं। उनकी राय में उनके पढ़ने लिखने से कोई फायदा नहीं। 'ऐ ज़िन्दगी तुझे सलाम' उपन्यास में रोशनी को रज्जो मौसी उसके इच्छानुसार पढ़ाती है, और रोशनी अच्छे अंक में पास भी होती है। वह अपनी उच्च शिक्षा ज़ारी रखती है। इसीबीच रज्जो मौसी का देहान्त हो जाता है। रज्जो मौसी के चल बसने पर रोशनी को कई कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। नये गुरु सुलताना तथा अन्य ट्रांसजेंडर उसे पीड़ित करते हैं। जिस काम को करना वह अपने स्वाभिमान के विरुद्ध समझती थी उन कार्यों को उसे करना पड़ा। बधाई में नाच-गाना तथा रेल यात्रियों से पैसा वसूलने के अंदाज से वह वाकिफ नहीं थी, इस कारण उसे डांट फटकार मिलती है –“अरे नासपीटि यह रोना धोना बंद कर तू तो धंधा ही चौपट कर देगी

हमारा। जैसा हम कह रहे हैं...उस तरह से करने में तेरी माँ मरती है।"[103] 'पोस्ट बॉक्स नं 203 नाला सोपारा' उपन्यास में विनोद को बधाई पर जाना पसंद नहीं था। वह अपने को पुरुष मानता है। ट्रांसजेंडर डेरे पर आकर वहाँ के वातावण को वह स्वीकार नहीं कर पाता और वह वहाँ से भाग जाता है। डेरे के लोगों से वह बच नहीं पाता वे लोग उसे पकड़ लाते हैं, तथा उसपर अत्याचार करते हैं। जिसके बारे में वह अपनी माँ को लिखे खत में कहता है "कहीं और भाग सकता नहीं। एक बार भागा था, बा। पड़ोस के बेकरी वाले हामिद मियां के आश्वासन पर। सोचा था, दिल्ली से अलीगढ़ दूर है। नहीं ढूँढ़ पाएँगे लेकिन गलतफहमी में था। एक दिन सुबह पाया, बेकरी का शटर उठाया ही था की दल के सरदार तितलीबाई को प्रेत सा सामने खड़ा पाया। देसी कट्टा सीने पर तना था। हामिद मियां ने गिड़गिड़ाते हुए हाथ उठा दिए थे। उस रोज ठिकाने पर पहुंचते ही सरदार ने जिस बेरहमी से मुझे मारा था, बा। खोपड़ी में चार टांके आए थे। निचले जबड़े के दो दांत हिल गए थे। सफदरजंग के दाँतों के विभाग में उन दाँतों को तार से कसा गया था।"[104] कहा न मानने पर शारीरिक रूप से पीड़ित करने को भी वे चूकते नहीं थे।

जो ट्रांसजेंडर व्यक्ति पारंपरिक पेशे से हटकर मेहनत करके जीना चाहते हैं, उन्हें खुद उनके समुदाय के लोग उनकी इच्छानुसार जीने की छूट नहीं देते। वे जबरदस्ती उन्हें उनके पारंपरिक धंधा करने पर लगाते हैं। वे नहीं चाहते कि उनमें से कोई मुख्य धारा समाज से जुड़े। उनकी तरह ही हाशिएकृत जीवन बिताने को वे दूसरे ट्रांसजेंडर व्यक्ति को भी मजबूर करते हैं। शायद इसी विचारधारा के रहने के कारण ट्रांसजेंडर वर्ग आज भी हाशिएकृत जीवन जी रहे हैं। 'ज़िन्दगी 50-50' उपन्यास में हर्षा डेरे के लोगों द्वारा मानसिक तथा शारीरिक रूप से पीड़ित होती है। हर्षा दूसरे ट्रांसजेंडरों की तरह देह धंधा करके पैसा कमाना नहीं चाहती जब वह इसका विरोध करती है तब वह उनके द्वारा पीड़ित होती है, वह इसका वर्णन करती है "जब मेरे पास से लगातार राधिका को कम पैसे मिलने लगे तो वह मुझसे अलग तरह का बर्ताव करने लगी। ठीक

वैसे ही जैसे बेरोजगार लड़कों को बाप भी कम प्यार करने लगता है और कभी-कभी हिस्सेदारी में भी कम देने की धमकी देता है। वह भी शादी-बारात में मुझे छोड़कर जाने लगी। खाना भी सबसे बाद में दिया जाता। यहाँ तक कि सबके लिए तखत था पर मुझे ज़मीन पर सोने की जगह दी गयी। हर जगह पर मेरी तौहीन होने लगी।"[105] 'मैं पायल' उपन्यास में पायल को ट्रांसजेंडर समुदाय के लोग जबरदस्ती पकड़कर डेरे में ले आते हैं। गुरुमाई ने वहाँ के अन्य ट्रांसजेंडर के साथ उसे बधाई में जाने को कहा लेकिन वह नहीं मानती, वह मेहनत करके कमाना चाहती थी। उन्होंने अपनी ओर से पायल को ताली बजाना, ढ़ोलकबजाना, नाचना-गाना सिखाने की कोशिश की लेकिन वह इसके लिए तैयार नहीं होती है। गुरुमाई को उसपर गुस्सा आ जाता है और वे उसे कमरे में बंद करके भूखा रखते हैं "एक हफ्ते से तू यहाँ पड़ी-पड़ी रोटियाँ तोड़ रही हैं। तेरे बाप - दादा लाकर रख गये थे क्या? काम नहीं तो खाना नहीं....बंद कर दो इस हरामजादिन को और खबरदार! जो किसी ने इसे पानी को भी पूछा।"[106] तीन दिन भूख से वह तड़पी थी और अंत में लाचार होकर वह बधाई में जाने को तैयार होती है। 'अस्तित्व की तलाश में सिमरन' उपन्यास में सिमरन भी अपने समुदाय के लोगों द्वारा पीड़ित होती है। मेहनत करके जीने की चाह रखनेवाली सिमरन से उसके गुरु भीख माँगने जाने तथा अपने खुद के परिवार से संबंध न बनाये रखने को कहती है।

ट्रांसजेंडर बच्चों के जन्म की खबर मिलने पर ट्रांसजेंडर बिरादरी बच्चों को अपने साथ ले जाने वहाँ पहुँच जाते हैं। ट्रांसजेंडर बच्चे के कहीं जन्म लेने की खबर मिलने पर वे वहाँ पहुँचकर उस बच्चे को अपने साथ ले आकर अपनी बिरादरी में शामिल करते हैं। वह बच्चा उनकी डेरे में जीवन व्यतीत करता है। 'ज़िन्दगी 50-50' उपन्यास में हर्षा के जन्म की खबर मिलते ही ट्रांसजेंडर बिरादरी उनके घर पहुँच जाती है, तथा उसके पिता से नेक के रूप में बच्चे को उनके हवाले करने को कहते हैं। पिता द्वारा बच्चे को ना सौंपने पर वे क्रोधित होते हैं। उनका मानना है जन्म लेनेवाले हर ट्रांसजेंडर बच्चे पर सिर्फ उनका ही हक होता है। उस बच्चे को

उनके बिरादरी में पलना तथा बढ़ा होना है, उन्हीं के आचार-अनुष्ठान को मानना है। ट्रांसजेंडर समुदाय के लोग नहीं चाहते कि कोई ट्रांसजेंडर बच्चा अपने परिवार की देखरेख में पले बढ़े। वे अपनी ही तरह आनेवाली पीढ़ी को बनाना चाहते हैं इसीलिए ट्रांसजेंडर बच्चे के कहीं जन्म लेने का खबर मिलते ही वे उस बच्चे को लेने आ जाते हैं।

किसी ट्रांसजेंडर को अच्छी जिन्दगी नसीब हो कई बार डेरे के अन्य ट्रांसजेंडरों से यह बरदाश्त नहीं होता। 'श्रापित किन्नर' उपन्यास में नरगिस से अकरम जो कि सामान्य पुरुष है वह उससे प्यार करता है। अकरम नरगिस से शादी करके उसे अपनी जिन्दगी का हिस्सा बनाना चाहता है, लेकिन अकरम और नरिगस के इस रिश्ते को ट्रांसजेंडर बिरादरी पसंद नहीं करते। नरगिस इसके प्रति कहती है "मैं अपनी जिन्दगी शुरु करने जा रही थी और यह सब मेरी हिम्मत बनने की जगह मेरी राहों में कंकड़ डाल रहे हैं।"[107] इसी प्रकार जब नरगिस बारहवीं कक्षा में अच्छे नंबर से पास होती है और वह आगे कॉलेज की पढ़ाई करना चाहती है। वहाँ डेरे के अन्य ट्रांसजेंड़रों को उसका आगे पढ़ना सुहता नहीं, वे गुरु माँ से कहते हैं "नरगिस बहुत कुछ सीख चुकी है। बेहत्तर है कि यह अब हमारे साथ ही रहे इसको क्या करना है आगे पढ़कर।"[108] ट्रांसजेंडर वर्ग को आगे लाने के लिए, उन्हें मुख्यधारा से जोड़ने के लिए हमारे संविधान ने कई आरक्षण पद्धतियाँ तथा प्रावधान लागू किये हैं लेकिन सरकार द्वारा कानूनी तौर पर नियमों को लागू करने से कोई फायदा नहीं है। ट्रांसजेंडर व्यक्ति को खुद एवं इनके समुदाय के लोगों को भी आगे आकर समाज में अपने जीवन को सुधारने का प्रयास करना होगा। उन्हें अपने रूढ़ीग्रस्त सोच में बदलाव लाना होगा। पारंपरिक पेशे से हटकर, मेहनत करके जीना होगा। ट्रांसजेंडर समुदाय के सभी को एक दूसरे के हित को ध्यान में रखकर आगे बढ़ना है। अपने आगे आनेवाली पीढ़ी को समाज में उनका मानवीय हक दिलाकर उन्हें मुख्यधारा से जोड़ना है।

'वह' उपन्यास में तप और ट्रांसजेंडर अंजू मिलकर ट्रांसजेंडर लोगों के पुनर्वास के लिए एन. जी. ओ बनाते हैं। उनका साथ सुनैना, आरती और निशांत देते हैं। अंजू, सुनैना और आरती ने मिलकर भिक्षार्जन करने वाले ट्रांसजेंड़रों का काउन्सिलिंग किया, जिससे प्रभावित होकर उमा तथा प्रियंका नामक दो ट्रांसजेंडर कौशल विकास केन्द्र में दाखिल हुए। उसके बाद धीरे-धीरे कई ट्रांसजेंडर इस संस्था से आकर जुड़ने लगे । जब मीना गुरु को उसकी मंडली की नम्रता और नरगिस के कौशल केन्द्र में जुड़ने का समाचार मिला तब वह संध्या तथा अन्य चार पाँच ट्रांसजेंडरों के साथ कौशल केन्द्र में आकर गाली - गलौज तथा हंगामा मचाने लगी। पुलिस के आने पर वे संभले मीना को अपनी सिंहासन हिलने का भय था, बाद में उसने ट्रांसजेंडर लोगों को इस केन्द्र के खिलाफ भड़काकर तथा वहाँ गुंडे भेजकर एन. जी. ओ बंद करवाने की अपनी तरफ से पूरी कोशिश की थी। ट्रांसजेंडर लोगों की उन्नति के लिए एन. जी. ओ बनाये जाते हैं लेकिन बहुत सारे ट्रांसजेंडर इन एन. जी. ओ से दूर रहते हैं। वे परंपरिक रूप से जीने की चाह रखते हैं। आगे बढ़ने की इच्छा रखनेवालों को भी वे उनकी इच्छानुसार जीने की छूट नहीं देते । 'दरमियाना' उपन्यास में ट्रांसजेंडर संध्या अपना ऑपरेशन कराकर अपने मन के अनुरूप शरीर पाना चाहती है। आशु अपने जर्मनी के दोस्त प्रो.दयानंद अरोड़ा से कहकर संध्या के सर्जरी का इंतजाम करता है। सर्जरी के लिए आवश्यक 8 लाख रुपयों की जुगाड़ संध्या करने लगती है। जब प्रतापगुरु को उसके जर्मनी जाने का पता चलता है, तब वह संध्या को पकड़कर जबरदस्ती छिबरा बना देता है, तथा वह संध्या को धमकी देता है "देख चेली, अगर तू बच गई और तूने किसी को कुछ बताया, तो तुझे हम मार देंगे।...वैसे ठीक हो जाए, तो मेरे पास आ जाना....तुझे सबसे प्यारी चेली बनाकर रखूँगी।...गहनों से लाद दूँगी, समझी न!"[109] अनचाहा शरीर में जीना एक ट्रांसजेंडर व्यक्ति के लिए कष्ट दायक होता है। मन के अनुरूप शरीर प्राप्त करने की इच्छा ये रखते हैं। सर्जरी कराकर एक ट्रांसजेंडर व्यक्ति मन चाहा शरीर प्राप्त कर सकता है। इस सर्जरी के

लिए भारी रकम की आवश्यकता होती है। इसी कारण ज्यादातर ट्रांसजेंडर अनचाहे शरीर में जीने को विवश हैं। सरकार द्वारा इनके सर्जरी कम पैसों में कराने के लिए कदम उठाये गये हैं, जो बिलकुल इनके लिए संतोष जनक बात है।

बहुत सारे ट्रांसजेंडर पढ़-लिखकर अपना मुकाम बनाना चाहते हैं। लेकिन साधारण सभ्य समाज के लोगों के साथ ही साथ उनके खुद के समुदाय के लोग भी अपनों की भलाई नहीं चाहते। ट्रांसजेंडर लोगों को काबिल न बनने देने में उनके समाज का भी कम हाथ नहीं है। बुजुर्ग हो चुके ट्रांसजेंडर आज भी अपने समुदाय को पारंपरिक रहने में ही भला समझते हैं। लेकिन ट्रांसजेंडर समुदाय के नई पीढ़ी आज आगे आने की चाह रखनेवालों में है, वे अपना आस्तित्व समाज में स्थापित करना चाहते हैं। सभ्य समाज के लोगों की बराबरी वे करना चाहते हैं। ट्रांसजेंडर समुदाय के लोग समाज के हर क्षेत्र में अपना योगदान देना चाहते हैं। समाज की मुख्यधारा से जुड़ने के लिए आतुर इस समुदाय के लोगों के लिए खुद इन्हीं के समुदाय के लोग रोड़े बन जाते हैं, उनकी आपसी सहयोग से ही ये मुख्यधारा से जुड़े सकते हैं और समाज का अहम हिस्सा बन सकते हैं।

5.10. ट्रांसजेंडर और मानवाधिकार की समस्या

हमारे समाज में हाशिएकृत समुदाय माने जानेवाले ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों को हरेक व्यक्ति को मिलने वाला मानवाधिकार प्राप्त नहीं हो पा रहा है। एक तरह से कहें तो ट्रांसजेंडर व्यक्ति मानवाधिकार से वंचित है। मानवाधिकार किसी भी व्यक्ति को किसी भी धर्म, जाति, लिंग या यौनिक अभिन्यास के आधार पर भेदभाव न किए शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा, समानता और सम्मान का अधिकार देना है। ये मानवाधिकार एक व्यक्ति को ज़िंदगी में प्राप्त होनेवाले अधिकार हैं। एक ट्रांसजेंडर व्यक्ति को शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य, आवास आदि अनेक क्षेत्रों में पर्याप्त सुविधाएँ प्राप्त नहीं हो पा रही हैं। ये अपने अनेक मूलभूत सुविधाओं से वंचित हो रहे हैं।

हमारे भारत देश में शिक्षा प्राप्त करने का मौलिक अधिकार सबको प्राप्त है। हमारे भारतीय संविधान में सभी को शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रावधान ज़ारी किए गए हैं लेकिन ट्रांसजेंडर समुदाय के व्यक्ति को उचित मात्रा में शिक्षा हासिल नहीं हो पा रहा है। सरकार द्वारा दिए जा रहे सुविधाओं से ये लाभान्वित नहीं हो पा रहे हैं। इनमें से बहुत कम लोग शिक्षण केन्द्रों में दाखिला पाकर शिक्षा हासिल कर रहे हैं। शिक्षण केन्द्रों में इन्हें वहाँ के अध्यापकगण, कर्मचारियों तथा छात्रों से मानसिक तथा शारीरिक रूप से पीड़ित होना पड़ता है। जिसके चलते बहुत ट्रांसजेंडर व्यक्ति शिक्षण केन्द्रों में दाखिल ही नहीं होते ओर जिन्होंने दाखिला पाया हो, वे भी वहाँ अपनी पढ़ाई ज़ारी नहीं कर पाते। इन्हीं कारणों से ट्रांसजेंडर समुदाय के ज्यादातर लोग अशिक्षित बन जाते हैं तथा उन्हें रोजगार पाने में भी अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। शिक्षा प्राप्त न कर पाने के कारण इनकी स्थिति बड़ी दयनीय है। शिक्षा ही इनके लिए एकमात्र औजार है जिसके ज़रिए ये उन्नति पा सकेंगे। शिक्षित न होने के कारण रोजगार हासिल करने में भी ये पिछड़े रह जाते हैं तथा कई संस्थाओं में ट्रांसजेंडर होने के कारण इन्हें रोजगार भी नहीं दिया जाता। सरकारी रोजगार के आवेदन प्रपत्रों में ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के लिए नाम का विकल्प न होने के कारण सरकारी कामकाजों में भी ये पिछड़े रह जाते हैं। शिक्षा जगत में इनसे किए जानेवाले भेदभाव का उल्लेख कई उपन्यासों में हमें देखने को मिलता है।

एक व्यक्ति के लिए उसका स्वास्थ्य बहुत मायने रखता है। स्वास्थ्य जगत में भी ट्रांसजेंडर व्यक्ति के साथ भेद-भाव का रवैया अपनाया जाता है। अस्पतालों में डॉक्टर एवं वहाँ के अन्य कर्मचारी ट्रांसजेंडर व्यक्ति को घृणा की दृष्टि से देखते हैं तथा कई बार तो वे उनके साथ बदसलूकी से पेशाते हैं। अस्पताल की कतार में खड़े होते वक्त तथा वार्ड में भर्ती होते वक्त एक ट्रांसजेंडर व्यक्ति के लिए समस्या पैदा हो जाती है कि उनका स्थान कहाँ है, उसे पुरुष या महिला के स्थान पर कहाँ रहना है। कई उपन्यासों में स्वास्थ्य जगत में ट्रांसजेंडर व्यक्ति को झेलने

पड़नीवाली दुविधाओं का वर्णन देखने को मिलता है। ‘मेरे होने में क्या बुराई है’ उपन्यास में सितारा के वक्तव्य से व्यक्त होता है कि अस्पतालों में ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के प्रति अछूतों सा व्यवहार किया जाता है “पढ़े - लिखे डॉक्टर, नर्स भी हमें अछूत समझते हैं, अच्छी तरह हाथ लगाने, मुआयना करने से भी हिचकिचाते हैं।”[110] डॉक्टर लोग जो भगवान तुल्य माने जाते हैं, वे उनके सामने शारीरिक समस्याओं के साथ पहुँचनेवाले ट्रांसजेंडर व्यक्तियों का इलाज सही तरीके से करने में हिचकिचाते हैं। कई बार डॉक्टर तो इन्हें देखने को भी तैयार नहीं होते। ‘वह’ उपन्यास में कोमल अंजू को रानी के निधन के बारे में जब बताती है, तब रानी के साथ अस्पताल में हुए भेदभाव का खुलासा होता है। भयंकर बुखार के साथ जब रानी को अस्पताल में लाया जाता है तब पहले अस्पताल में गार्ड घुसने नहीं देता बाद में वे किसी तरह जब डॉक्टर के पास पहुँचते हैं, तब उनसे झूठ कहा जाता है कि डॉक्टर चले गये हैं। जब वे दूसरे अस्पताल में पहुँचते हैं तब डॉक्टर उसे बिना जाँचे दवाई लिखकर दे देते हैं, उपन्यासकार जिसका विवरण इस प्रकार करते हैं “पहले तो पब्लिक ने ही हमें वहाँ से धक्के मारने शुरु कर दिये। जैसे हमारी बीमारी कोई बीमारी ही न हो। किसी तरह हम थकियाते - थकियाते डॉक्टर के समीप पहुँचने में कामयाब हो गये। वह हमें ऐसे घूरने लगा, जैसे उसके सामने हम किसी इंसान को नहीं, वरन् जानवर को ले आए हों। वह रानी को हाथ लगाने से कतरा रहा था।”[111] अस्पताल में ट्रांसजेंडर समुदाय के प्रति किए जानेवाले भेदभाव के कारण इन्हें कई शारीरिक पीड़ाओं को सहना पड़ता है। कभी-कभार ट्रांसजेंडर लोग खुद ही दवाई दुकानों में जाकर दवाई का उपयोग करते दिखाई पड़ते हैं, जिसका इनकी सेहत पर बुरा असर पड़ता है।

एक व्यक्ति को सुरक्षा प्रदान करनेवाला कानून है। कानून के रखवाले पुलीसकर्मी भी इनसे बुरा बर्ताव करते दिखाई पड़ते हैं। कानून की नज़र में भी ये अपराधी तथा बुरे किस्म के लोग हैं। कानून के तहत भी ट्रांसजेंडर व्यक्ति अपने आप को सुरक्षित नहीं पाता। हमारी कानूनी

व्यवस्था ट्रांसजेंडर व्यक्ति को संरक्षण देने में नाकामयाब है। 'ऐ जिन्दगी तुझे सलाम' उपन्यास में जब रूपा द्वारा पालित ट्रांसजेंडर बच्ची को ट्रांसजेंडर घरानेवाले ले जाने आते हैं तब रूपा के कहने पर पड़ोस का सुरेश ट्रांसजेंडर डेरेवालों को पुलीस की धमकी देता है, तब उनमें से एक ट्रांसजेंडर कहता है "हायss...हाय...बड़ा कानून झाड़ रहा है...पुलिस क्या कर लेगी हमारा। ऐसे बच्चों के लिए सारे कानून फेल हैं...जानू भईया।"[112] उपन्यासकार ने कानून पर व्यंग्य कसा है तथा इसके माध्यम से एक कटु यथार्थ को हमारे सामने रखा है। जिस प्रकार समाज के लोग ट्रांसजेंडर व्यक्ति को चोरी-डकैती करनेवाले मानते हैं, उसी प्रकार कानून भी इनपर दूसरों के कहने पर आँख मूंदे इनपर चोरी का इलजाम मढ़ देते हैं। पुलिस सच्चाई का पता लगाने की कोशिश ही नहीं करते। 'गुलाम मंडी' उपन्यास में अंगूरी के ऊपर चोरी का इंजाम जब दूसरे लोग लगाते हैं तब पुलिस सच्चाई का पता लगाए वगैर दूसरों का कहा सुन अंगूरी को गिरफ्तार कर लेते हैं तथा उसका वे रेप भी करते हैं। 'वह' उपन्यास में अनशन में बैठे ट्रांसजेंडर लोगों पर पुलिस अत्याचार करते हैं तथा ट्रांसजेंडर अंजू उस मारपीठ में पुलिस द्वारा घायल होकर मर जाती है। 'मैं पायल' उपन्यास में उपन्यासकार ने कानून के सिपाही द्वारा ट्रांसजेंडर छोटी बच्ची पायल के साथ यौन शोषण करने का प्रयास भी दिखाया है। उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों के माध्यम से यह दिखाने की कोशिश की है कि ट्रांसजेंडर समुदाय का व्यक्ति कानून के समक्ष सुरक्षित नहीं है। ट्रांसजेंडर व्यक्ति को खुद उन्हीं के घर में भी रहने के लिए स्थान नहीं मिलता। ट्रांसजेंडर होने के कारण उन्हें घर से बाहर निकाल दिया जाता है। भारतीय संस्कृति के अनुसार पारंपरिक रूप से बच्चों को अपने पूर्वजों के जायदाद में अधिकार होता है लेकिन एक ट्रांसजेंडर व्यक्ति को परिवारवाले कोई हक जायदात में नहीं देते। इस समुदाय के लोगों के बाहर भी रहने का ठिकाना मिलना मुश्किल होता है। ट्रांसजेंडर होने का पता चलने पर कोई भी इन्हें रहने के लिए मकान

नहीं देते। 'अस्तित्व की तलाश में सिमरन' उपन्यास में सिमरन बताती है उसे रहने के लिए कोई घर देने को तैयार नहीं था, कोई तैयार होता है तो उसके बदले उन्हें उसका शरीर चाहिए होता था।

एक ट्रांसजेंडर व्यक्ति होने के कारण हर क्षेत्र में उन्हें मानव होने का दर्जा नहीं मिल पा रहा है। उनके मानवीय अधिकारों का हनन हो रहा है। ज़रूरत है कि हम उन्हें पहले मनुष्य होने का दर्जा दे तथा एक व्यक्ति को मिलनेवाले मौलिक अधिकार उन्हें प्राप्त करायें। उनके प्रति हमारा जो नजरिया है उसे बदले।

5.11. जागृति : समस्याओं से राहत

जागृति का अर्थ जागरण है। अपने अस्तित्वबोध तथा अस्मिता के प्रति आज ट्रांसजेंडर लोग जागृत हो गए हैं। अपने अधिकारों के प्रति ट्रांसजेंडर व्यक्ति सचेत है। हमारे समाज में ट्रांसजेंडर व्यक्ति को पिछड़ा वर्ग माना गया है तथा उन्हें हमेशा हाशिए पर रखा गया है। ट्रांसजेंडर होने के कारण परिवार से तिरस्कृत होकर मरने तक समाज में दर - दर ठोकरें खाना अपनी किस्मत माननेवाले ये ट्रांसजेंडर लोग आज अपने अस्तित्व को समाज में स्थापित करने के लिए संघर्षरत दिखाई पड़ रहे हैं। सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक हर क्षेत्र में पिछड़े यह वर्ग अपनी कमजोरियों को पहचानकर, अपनी कमजोरियों को दूर करके एक साधारण मनुष्य की भाँति समाज में अपना स्थान बनाने का प्रयास कर रहे हैं। हमारे केन्द्र तथा राज्य सरकार की ओर से भी इस हाशिएकृत समुदाय की उन्नति के लिए कई कार्यक्रम बनाये जा रहे हैं। कई एन.जी.ओ भी इन्हें एक मनुष्य को प्राप्त सभी अधिकार दिलाने के लिए जुटे हुए हैं। जागृति केवल ट्रांसजेंडर व्यक्ति में ही नहीं हो रही है बल्कि ट्रांसजेंडर व्यक्ति के परिवारवाले भी आज उन्हें मनुष्य का दर्जा दे रहे हैं, दोनों हाथ फैलाकर सहर्ष इन्हें स्वीकार कर रहे हैं। आज जनों की सोच में बदलाव आने लगा है, कल तक जो माता- पिता ट्रांसजेंडर बच्चों को स्वीकार करने को तैयार नहीं थे, वे आज उन बच्चों को अपना रहे हैं। उनका पालन-पोषण कर उन्हें जीवन जीने योग्य बना रहे हैं। ट्रांसजेंडर व्यक्तियों

तथा समाज के अन्य व्यक्तियों तथा स्तरों में आयी जागृति को हम ट्रांसजेंडर केन्द्रित उपन्यासों में देख सकते हैं। उपन्यासकारों ने ट्रांसजेंडर व्यक्ति तथा समाज में आये सकारात्मक बदलाव को दिखाया है।

5.11.1. आम लोगों में ट्रांसजेंडर समुदाय के प्रति जागृति

हिन्दी उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में सामाज के लोगों की मानसिकता में आये सकारात्मक नज़रिये को प्रस्तुत किया है। ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को जहाँ समाज में हीनता की दृष्टि से लोग देखते हैं, वहीं एकतरफा लोग आज उन्हें मनुष्य का दर्जा दे रहे हैं। सभ्य समाज के लोगों में आयी यह जागृति ट्रांसजेंडर समाज के लोगों के लिए बड़ा ही हितदायक है। 'किन्नर कथा' उपन्यास में ट्रांसजेंडर चंदा को पहले उसके पिता राजा जगतराज स्वीकार नहीं करते, उसे मारने का इरादा भी वे बनाते हैं लेकिन उपन्यास के अंत में उनकी मानसिकता में बदलाव आता है, उनके अंदर पिता का हृदय भावुक हो जाता है तथा वे चंदा को स्वीकार कर लेते हैं। पूरा परिवार चंदा को स्वीकार करता है।

सोना उर्फ चंदा की बहन रूपा की सास शोभना उच्च चिन्तन रखनेवाली औरत के रूप में हमारे सामने आती है। उनका विचार पाठकों में जागृति पैदा करती है "आप निश्चिन्त रहें समाधिनजी! रूपा के साथ ही हम चंदा को भी अपने साथ कनाडा ले जायेंगे, वहां सोना का चेकअप करायेंगे, अब तो विज्ञान का युग है, नयी-नयी टेक्नोलॉजी आ गयी हैं। साइंस ने बहुत तरक्की कर ली है।"[113] रूपा की सास का यह वक्तव्य पाठकों को दिलासा दिलाता है कि टेक्नोलॉजी के इस युग में शारीरिक विकृति पर विजय हम पा सकते हैं। मनीष द्वारा चंदा से शादी करने का विचार आदि प्रसंगों के माध्यम से मुख्यधारा समाज के लोगों में आयी जागृति को उपन्यासकार हमारे सामने रखते हैं।

'जिन्दगी 50-50' उपन्यास में अनमोल के ट्रांसजेंडर भाई हर्षा के जन्म होने पर उसके पिता दुःखी होते हैं तथा वे हर्षा पर बहुत अत्याचार भी करते हैं। उस बच्चे से वे बहुत घृणा करते थे लेकिन इसके विपरीत जब अनमोल के यहाँ ट्रांसजेंडर बच्चा पैदा होता है तब वह निर्णय लेता है कि उसके भाई को जो दुःख एवं दर्द अपने परिवार से प्राप्त हुए, वह उसके बच्चे को कभी नहीं देगा, वह अपने ट्रांसजेंडर बच्चे को एक अच्छा जीवन देने को ठानता है "मैने अपनी मुट्ठी बाँध ली, अपने होठों को दबा लिया। मैंने निर्णय ले लिए था, ऐसा निर्णय जो एक पिता को लेना चाहिए, ऐसा निर्णय जो एक इंसान को लेना था, ऐसा निर्णय जो एक भाई को लेना था। मैंने अपनी नकारात्मक ऊर्जा का एक फुटबॉल की तरह लात मारकर कहीं दूर फेंक दिया था, इतना दूर कि वह कभी मेरे पास वापस न आ सके। उसके भागते ही चेहरे पर मुस्कान आ गयी थी। सकारात्मकता की लहर दौड़ गयी, पिता बनने की खुशी वापस आ गयी। यह मुस्कान, यह सकारात्मकता और ये खुशियाँ कतई झूठी नहीं थीं, बल्कि एक पिता का कर्तव्य निर्वाह करने की शुरुआत करने की खुशी थी।"[114] 'ऐ ज़िन्दगी तुझे सलाम' उपन्यास में रूपा पगलिया की बच्ची को गोद लेने का विचार बनाती है। बच्ची का लंगोट बदलते सरस्वती दायी को पता चलता है कि बच्ची ट्रांसजेंडर है। जब दायी इस सच्चाई से रूपा को अवगत कराती है तब रूपा दुखित जरूर होती है लेकिन बच्ची को गोद लेने के विचार से वह डगमगाती नहीं। अपने निर्णय पर वह अडिग रहती है उसका मानना है "अरे बच्चिया हिजड़ा भइल ता का हुवा...हेय तो इंसान....दो हाथ, दो पैर...ओही की तरह बोलता हैये... वइसन रोवत हेय...जानवर नाही हेय।"[115] जिस समाज में खुद का परिवार बच्चा ट्रांसजेंडर है जानने पर उससे मुक्ति पाने को सोचता है, वहाँ रूपा जैसे मानवीय संवेदना रखनेवाले लोग इन बच्चों को भी सामान्य बच्चा मानकर ममता प्रकट करते हैं। उस बच्ची के खातिर रूपा अपने पति को जो उस बच्ची को स्वीकार करने तैयार नहीं होता उसे छोड़कर चली जाती है। अंत में रूपा के पति कलुआ को, रूपा का बच्ची के प्रति जो

ममता है, उसके आगे हार मानकर उस बच्ची को अपनाना पड़ता है। इतना ही नहीं बच्ची के मेले में खो जाने पर रूपा पागल हो जाती है। एक ट्रांसजेंडर बच्ची को अपनाने की मनोवृत्ति जागृति का सूचक है।

'अस्तित्व' उपन्यास में मध्यवर्गीय परिवार के वर्माजी तथा सुधा अपने ट्रांसजेंडर बच्ची प्रीत को अपने साथ रखने का निर्णय बनाते हैं। वे अपने घरवालों से भी बच्ची के ट्रांसजेंडर होने की सच्चाई छुपाते हैं क्योंकि वे उस बच्ची को समाज में उपहास का पात्र बनाने को तैयार नहीं थे। प्रीत की माँ प्रीत के लिए दुनिया से लड़ने को भी तैयार है। वह अपनी माँ को बताती हैं "मैं अपनी बेटी के हक के लिए इस पूरे समाज से लड़ लूँगी पर माँ मुझ पर दया कर किसी को मेरी बेटी का राज मत बताना।"[116] प्रीत के माता पिता उसे पढ़ा-लिखाकर रोजगार प्राप्त कराके समाज में जीने लायक बनाते हैं। उपन्यास में एक पुरुष पात्र द्वारा कहना कि "अब तो हमारे देश में किन्नरों को नौकरी करने की अनुमति भी है, वे राजनैतिक जिम्मेदारियों में हिस्सा ले रहे हैं। आप लोग स्त्री नहीं तो क्या हुआ, इंसान तो हो, आपको भी भगवान ने एक ही दिल-दिमाग दिया है।"[117] साधारण जनों में इनके प्रति उत्पन्न सकारात्मक सोच को प्रकट करता है। 'गुलाम मंडी' उपन्यास में कल्याणी का ट्रांसजेंडर अंगूरी के प्रति प्यार तथा सहानुभूति लोगों में ट्रांसजेंडर वर्ग के प्रति उनकी भावनाओं में आए बदलाव को दिखाता है। जहाँ सभ्य समाज के लोग इस वर्ग के आसपास भटकने पर ही इनसे दूरी बना लेते हैं, वहाँ कल्याणी इन्हें अपने घर में बेस्ट क्राकरी में चाय पिलाती है। कल्याणी अंगूरी को देह तस्करी के चंगुल से बचाती है तथा उसका ऑपरेशन कराने में मददकर उसे उसका मनचाहा शरीर प्राप्त कराने में सहायता प्रदान करती है।

आज के युवा पीढ़ी में ट्रांसजेंडर वर्ग के प्रति जो रूढ़ीग्रस्त सोच है उसमें बदलाव आ रहा है। युवा पीढ़ी अपने बुजुर्गों की तरह ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को हीनता की दृष्टि से नहीं देखते। वे उन्हें अपनी ही तरह मनुष्य का दर्जा देते हैं एवं उनकी उन्नति के लिए तथा उन्हें मुख्यधारा से

जोड़ने के लिए कठिन परिश्रम भी करते नज़र आ रहे हैं। 'वह' उपन्यास में तप ट्रांसजेंडर समुदाय के लिए एक एन.जी.ओ.बनाने का फैसला लेता है। इसके लिए ट्रांसजेंडर अंजू का सहयोग भी उसे प्राप्त होता है। एन.जी.ओ बनाने के लिए तप अपनी पुश्तैनी ज़मीन को बेचता है। उसका दोस्त निशांत तथा निशांत की पत्नी एन.जी.ओ बनाने में उसकी सहायता करते हैं। अंजू के नेतृत्व में तप की पत्नी आरती, निशांत की पत्नी भीख माँगनेवाले ट्रांसजेंडर लोगों को एन.जी.ओ से जोड़ते हैं तथा इन ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को उनकी शिक्षा तथा उनकी अभिरुचि के अनुसार उन्हें प्रशिक्षण देते हैं। उपन्यास में एन.जी.ओ को आगे चलाने में जब आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ता है, तब ट्रांसजेंडर अंजू और उसके साथी सरकार से एन.जी.ओ के लिए वित्तीय सहायता माँगकर आमरन अनशन में बैठते हैं। उस वक्त उस अभियान का पूरा खर्चा विमल नामक आदमी उठाता है, क्योंकि उसका बच्चा भी ट्रांसजेंडर है। वह ट्रांसजेंडर समुदाय के लिए कुछ करना चहता था।

'हॉफ मैन' उपन्यास में ट्रांसजेंडर अर्जुन के माता - पिता सजल और पारस को अर्जुन के जन्म से पहले ही पता था कि गर्भ में पलनेवाला बच्चा ट्रांसजेंडर है लेकिन वे उस बच्चे को गिराते नहीं उस बच्चे को जन्म देकर उसे पालते हैं, तथा उसे IAS बनाते हैं। बच्चे को जन्म देने का सजल और पारस का निर्णय इस समुदाय के प्रति सभ्य समाज का जो नकारात्मक रवैया है उसके ऊपर करारा तमाचा है। 'पोस्ट बोक्स 203-नाला सोपारा' उपन्यास में विनोद उर्फ विमली के माता का अपने ट्रांसजेंडर बेटे से किये गलती के लिए माफी माँगना माता पिता को जागृति का संदेश देता है "मैं वंदना बेन शाह, पत्नी श्री हरीन्द्र शाह - सार्वजनिक रूप से घोषणा करती हूं,दिनांक 22 नवंबर, 2011 को अपने पूरे होशोहवास में कि मैं अपने तीनों बेटे सिद्धार्थ शाह, विनोद शाह, मंजुल शाह में से मंझले बेटे विनोद शाह, जिसे लिंग दोष के चलते बरसों पहले हमने जबरन किन्नर चंपाबाई को सौंपकर दुर्घटना में उसकी मृत्यु होने का नाटक रचा था, लोकापवाद

के भय से, उस भूल का परिष्करण करना चहती हूँ।"[118] 'मेरे होने में क्या बुराई है' उपन्यास में ट्रांसजेंडर शिखा का प्रेमी राशिद शिखा और उसकी साथियों के लिए एक सेंटर खोलने में सरकार की ओर से उन्हें आर्थिक सहायता दिलवाने में उसकी मदद करता है तथा राशिद अपने दोस्तों के साथ मिलकर ट्रांसजेंडर लोगों के लिए एन.जी.ओ बनाने का विचार बनाता है।

तकनीकी के इस आधुनिक युग में सभ्य समाज के लोगों की मानसिकता में बदलाव आ रहा है। ट्रांसजेंडर समुदाय के प्रति परंपरा से चली आ रही रूढ़िग्रस्त सोच को आज की नई पीढ़ी नहीं मानती। आज की नई पीढ़ी सभी हाशिएकृत लोगों को मनुष्य मानने पर बल देते हैं। हमारे साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से ट्रांसजेंडर समुदाय के प्रति लोगों में जागरण लाने का प्रयास किया है और वे एक हद तक सफल भी हुए हैं।

5.11.2. ट्रांसजेंडर समुदाय की जागृति

समाज में हाशिएकृत माने जाने वाले ट्रांसजेंडर समुदाय के लोग आज मुख्यधारा से जुड़ रहे हैं। पहले ट्रांसजेंडर समुदाय के व्यक्ति परंपरागत पेशे को अपनाकर जीवन यापन करते थे, लेकिन आज वे शिक्षित होकर अच्छे खासे रोजगार करते हुए दिखाई पड़ रहे हैं। अपने अधिकारों के लिए खुद संघर्ष करके समाज का अभिन्न हिस्सा ये बनना चाहते हैं। परिवार एवं समाज से कटकर संघर्षमय जीवन व्यतीत करने को ट्रांसजेंडर जन आज तैयार नहीं हैं। परिवारवालों द्वारा घर से बाहर कर दिए जाने पर बेबस होकर ताली पीटकर पूरे जीवन जीने को वे तैयार नहीं हैं। वे समाज में अपनी अस्मिता बनाना चाहते हैं। वे भी सामान्य जीवन जीने की ख्वाहिश रखते हैं।

हिन्दी उपन्यासों में कई पात्र ऐसे देखने को मिलते हैं, जो अपने परंपरागत पेशे को अपनाने को तैयार नहीं हैं, वे मेहनत की कमाई करके जीना चाहते हैं। ये शिक्षित होकर आगे बढ़ना चाहते हैं। 'तीसरी ताली' उपन्यास में विनीत उर्फ विनीता परिवार से तिरस्कृत होने के बाद

नाचने गाने के बजाय अपना ब्यूटीपार्लर खोलती है तथा वह ब्यूटी की दुनिया में अपना नाम रोशन करती है । उपन्यास का अन्य पात्र विजय ट्रांसजेंडर होने के कारण नाच गाकर जीवन बिताना नहीं चाहता । वह अपनी पहचान छुपाकर कड़ी मेहनत करके नाम कमाता है । 'मैं पायल' उपन्यास में पायल ताली बजाना, बधाई गाना नहीं चाहती । वह समाज में सबके द्वारा अपमानित होकर जीना नहीं चाहती । पायल मेहनत करके पेट भरना चाहती है । ट्रांसजेंडर होने के कारण अपने वजूद से हटकर वह जीने को तैयार नहीं होती । वह चाय की दूकान में कामकर, टॉकीज में प्रोजक्टर चलाने का काम करके जीती है । 'अस्तित्व' उपन्यास की प्रीत समाज से संघर्ष करके अपना अस्तित्व स्थापित करती है । प्रीत पढ़-लिखकर नौकरी प्राप्त करती है । प्रीत के अंदर की जागृति ही उसे समाज से ठक्कर लगाने को प्रेरित करती है । उपन्यासकार प्रीत के माध्यम से दिखाना चाहते हैं कि वह जमाना गया जब ट्रांसजेंडर व्यक्ति समाज में छिप-छिपाकर जीते थे, अब वे खुद अपनी असलियत को समाज में दिखाना चाहते हैं ।

आज ट्रांसजेंडर समुदाय के व्यक्ति शिक्षित बनने को आतुर दिखाई पड़ रहे हैं । उपन्यासों में कई ऐसे पात्र हैं, जो शिक्षित बनकर उच्च पद हासिल करते हैं तथा दूसरों को भी आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं । 'हॉफ मैन' उपन्यास में अर्जुन को ट्रांसजेंडर होने की वजह से कई कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है । उसे दूसरों के हँसी मजाक का पात्र बनना पड़ता है, लेकिन वह हार नहीं मानता तथा अंत में वह IAS बनता है । IAS बनने पर अर्जुन को सभा में जब सम्मानित किया जाता है, तब वह कहता है मैं अर्जुन राज जो कॉलेज के छात्रों के बीच हॉफ मैन के संबोधन से पहचाना जाता था । "मैंने वर्षों इस अधूरेपन की पीड़ा को महसूसा है, परन्तु कलेक्टर बनकर आज जिस पूर्णता का एहसास हो रहा है उसे शब्दों में कहना मुश्किल है । हमारे जीवन की उपलब्धियाँ जाघों के बीच का हिस्सा तय नहीं करता, बल्कि हमारी मेहनत, मानसिक शक्ति और हमारा दृढ़ संकल्प तय करता है कि हम क्या बनेंगे? हमारे मन में उमड़ती संवेदनाएँ ही हमारे

देश और समाज के लिए कुछ कर सकने के लिए हमें प्रेरित करती हैं, और यही सोच हमारे जीवन को एक सार्थकता दे सकते हैं।"[119] 'ज़िन्दगी 50-50' उपन्यास में सूर्या क्रिमिनॉलजी की पढ़ाई के बाद प्राइवेट डिटेक्टीव बनता है। आज का ट्रांसजेंडर समुदाय अपनी अस्मिता बनाने के लिए संघर्ष कर रहा है। 'श्रापित किन्नर' उपन्यास में नरगिस डेरे में रहकर पढ़लिखकर नौकरी हासिल करती है। नरगिस के साथ उसका मैनेजर जब बदसलूकी करता है, तब वह मैनेजर को उसके बदसलूकी के लिए मूँह तोड़ जवाब देकर नौकरी छोड़ देती है "आपकी नौकरी आपको मुबारक मैं उन किन्नरों की तरह नहीं हूँ जो पैसे के लिए लोगों को खुश करते हैं ! मेरी अपनी अस्मिता है। मैं अकरम की पत्नी हूँ। मैं पढ़ी लिखी किन्नर हूँ, अनपढ़ नहीं जो समाज की पैरों की जूती बन कर रह जाए, नमस्ते।"[120] 'मेरे होने में क्या बुराई है' उपन्यास में शेखर अपना अस्तित्व बनाना चाहता है। शेखर उर्फ शिखा को बचपन से ही नाचने गाने का शोक था। पिताजी का विरोध सहकर भी वह नाच सीखती है। ट्रांसजेंडर डेरे में जाकर वह अपना शोक नहीं छोड़ती। वह डांस एकेडमी चलाती है, जिसकी चर्चा दूर-दूर तक फैलती है और वह नाम कमाती है।

ट्रांसजेंडर को हीन नजरों से देखनेवाले लोगों का सोचना है कि ट्रांसजेंडर सिर्फ नाचना-गाना, भीख माँगना तथा देहधंधा करना जानते हैं, लेकिन ये धारणाएँ गलत हैं। उचित शिक्षा तथा अपनों का साथ मिलने पर वे ऊँचे मुकाम पर पहुँच सकते हैं। राजनीति में भी खरे उतरने का जज़्बा भी ये रखते हैं। 'दरमियाना' उपन्यास में दयारानी राजनीति में अपना नाम दर्ज करती है, 'मैं पायल' उपन्यास में पायल भी राजनीति का हिस्सा बनती है। शिक्षा की कमी के कारण उन्हें नौकरी नहीं मिल पाती, वे ताली पीटकर जीने को या भीख माँगने, देहधंधा करने को बेबस हो जाते हैं। एक तरह से कहे तो हमारे समाज ने इन्हें बेबस बनाया है। लोगों की जो सोच है कि ये सिर्फ ताली पीटने, भीख माँगने लायक है इस सोच का खंडन, 'पोस्ट बोक्स नं 203 नाला सोपारा' उपन्यास में विनोद करते हुए कहता है "किन्नरों के धड़ के नीचे लिंग न सही – धड़ के

ऊपर मिस्तिष्क भी नहीं है, यह कैसे सोच लिया आपने।"[121] विनोद उर्फ बिन्नी साधारण मनुष्य के रूप में जीना चाहता है। विनोद कंप्यूटर सीखता है तथा चंडीगढ़ के विधायक के पास पहुँचकर वहाँ काम करता है। एक ट्रांसजेंडर होने मात्र के कारण वह ताली पीटकर जीने को तैयार नहीं है, उसका कहना है "स्त्रैण लक्षण मुझमें कभी नहीं रहे। अब भी नहीं हैं और जो लक्षण मुझमें नहीं हैं, उन्हें सिर्फ इसलिए स्वीकारू कि मेरी बिरादरी के शेष सभी उन हाव भाव को अपना चुके हैं।"[122] विनोद अपनी बिरादरी की पारंपरिक पेशे को स्वीकारता नहीं, वह मेहनत करके जीना चाहता है।

ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों को अगर परिवार तथा समाज का सहारा मिले तो वे कभी भी अपने पारंपरिक पेशा बधाई में जाने तथा भीख माँगने एवं देह धंधा करने को मजबूर नहीं होंगे। आज खुद ट्रांसजेंडर व्यक्ति शिक्षित बनकर ऊँचे मुकाम को छूने की चाह रखता है, जिसके लिए वह प्रयत्न भी करता नज़र आ रहा है। आजकल ट्रांसजेंडर लोगों ने अपनी कड़ी मेहनत तथा मनोबल से अपना वजूद कई क्षेत्रों में जैसे राजनीति, शिक्षाजगत, सिनेमा, कानून में स्थापित किया है। ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों ने यह साबित कर दिखा दिया है कि वे किसी से कम नहीं हैं। हर क्षेत्र में वे चमक सकते हैं।

5.12. निष्कर्ष

कई अर्सों से हमारे समाज में हाशिएकृत जीवन जी रहे ट्रांसजेंडर समुदाय के लोग आज साहित्य के केन्द्र में हैं। हिन्दी उपन्यास जगत में साहित्यकारों ने इस उपेक्षित हाशिएकृत जीवन जीने को मजबूर ट्रांसजेंडर व्यक्तियों की पीड़ा, आक्रोश, उनके द्वारा भोगी जानेवाली समस्याओं तथा उनकी संवेदनाओं को साहित्य के माध्यम से वाणी देकर पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

ट्रांसजेंडर समुदाय के व्यक्ति को हमारे समाज में कई तरह के मानसिक तथा शारीरिक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। परंपरागत रूढ़िग्रस्त सोच तथा पितृसत्तात्मक

नकारात्मक रवैये के कारण खुद के परिवार से इन्हें बाहर किया जाता है। खुद के परिवार से निष्कासित ये समाज में हर क्षेत्र में शारीरिक तथा मानसिक शोषण का शिकार बन जाते हैं। शिक्षित न होने के कारण आर्थिक रूप से ये पिछड़े बन जाते हैं। ट्रांसजेंडर होने के कारण रहने के लिए इन्हें कोई जगह नहीं देता। तथाकथित सभ्य समाज के लोग हीनता की दृष्टि से इन्हें देखते हैं। जो पुरुषसत्तात्मक समाज इन्हें अपने घर में पनाह नहीं देता, जो लोग उन्हें घृणा की दृष्टि से देखते हैं, वह पुरुष वर्ग इनका यौन शोषण करता है। जिस भारतीय संविधान ने सभी भारतीयों को शिक्षा प्राप्त करने का प्रावधान बनाया है वहाँ यह ट्रांसजेंडर समुदाय के लोग शिक्षा हासिल नहीं कर पा रहे हैं। शिक्षण संस्थानों में कई प्रकार के शोषण का ये शिकार बनते दिखाई पड़ते हैं। कानून के दरवाजे भी इनके लिए बंद हैं। कानून भी इनको सुरक्षा प्रदान करने में असक्षम हैं। राजनीति के क्षेत्र में इन्हें वोट बैंक के रूप में आजमाकर मुहरा बनाया जाता है।

एक तरफ समान्य जनता इन्हें मनुष्य का दर्जा न देकर, समाज की मुख्यधारा से जोड़ना नहीं चाहती, वहीं खुद ट्रांसजेंडर लोग भी अपने समुदाय के लोगों के लिए दुश्मन बन बैठते हैं। कई ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को दूसरे ट्रांसजेंडर व्यक्ति का साधारण जीवन बिताना पसंद नहीं है। वे चाहते हैं कि वे भी उन्हीं की तरह उनकी पारंपरिक धंधे में संलग्न रहें। ताली पीटते, नचाते-गाते जीवन गुजारे। नकली ट्रांसजेंडरों द्वारा इनकी आजिविका पर आतिक्रमण इनपर भारी पड़ता है। मानव होकर भी मानवाधिकारों से वंचित इस समुदाय के लोग जन्म से लेकर मरते वक्त तक अनेक समस्याओं का सामना करते नज़र आते हैं। आज आधुनिक तकनीकी युग में इनकी स्थिति में सुधार जरूर आया है। जो सभ्य समाज आज तक इन्हें अन्य ग्रह जीवियों की भाँति देखता था, आज वे लोग इनके बारे में सोचने लगे हैं। साधारण जनों में इनके प्रति नकारात्मक सोच जो थी, उसमें कुछ सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिलता है। साधारण जनों में इनके प्रति जागृति आयी है , तथा खुद यह वर्ग आज अपनी उन्नति के लिए भरसक प्रयत्न करते नज़र आ

रहे हैं। इन्हें एहसास हो गया है कि, इनकी स्थिति में तब ही सुधार होगा जब ये खुद जंग के मैदान में उतरेंगे। आज कई ट्रांसजेंडर व्यक्ति एवं समूह ट्रांसजेंडर लोगों की उन्नति के लिए कार्यरत हैं। समाज की मुख्यधारा से जुड़कर अपना वजूद समाज में स्थापित करना उनका मुख्य उद्देश्य है।

संदर्भ - सूची

1. मोनिका देवी, अस्तित्व की तलाश में सिमरन, पृ.सं.23.
2. महेन्द्र भीष्म, किन्नर कथा, पृ.सं.8 (प्राक्कथन)
3. हरभजन सिंह मेहरोत्रा, ऐ ज़िन्दगी तुझे सलाम, पृ.सं.84.
4. भगवंत अनमोल, ज़िन्दगी 50-50, पृ.सं.143-144.
5. वही, पृ.सं.144.
6. महेन्द्र भीष्म, किन्नर कथा, पृ.सं.66.
7. निर्मला भुराड़िया, गुलाम मंडी, पृ.सं.12.
8. गिरिजा भारती, अस्तित्व, पृ.सं.53.
9. श्री गोपाल सिंह सिसोदिया- निसार, वह,पृ.सं.83.
10. नीरजा माधव, यमदीप, पृ.सं.93.
11. भगवंत अनमोल, जिन्दगी 50-50, पृ.सं.35.
12. भुवनेश्वर उपाध्याय, हॉफ मैंन (ए.पेनफुल-जर्नी) पृ.सं.44.
13. गिरिजा भारती, अस्तित्व, पृ.सं.29.
14. भगवंत अनमोल, ज़िन्दगी 50-50, पृ.सं.74.
15. वही, पृ.सं.44.
16. वही, पृ.सं.58.
17. वही, पृ.सं.162.
18. श्री गोपाल सिंह सिसोदिया, वह,पृ.सं.70.
19. महेन्द्र भीष्म, किन्नर कथा, पृ.सं.8 (प्राक्कथन)
20. वही, पृ.सं.25.

21. वही, पृ.सं.45.
22. वही, पृ.सं.64.
23. डॉ. मुक्ति शर्मा, श्रापित किन्नर, पृ.सं.24.
24. भुवनेश्वर उपाध्याय, हॉफ मैन (ए पेनफुल जर्नी), पृ.सं.13.
25. भगवंत अनमोल, ज़िन्दगी 50-50, पृ.सं.44.
26. डॉ.लता अग्रवाल, मंगलामुखी, पृ.सं.62.
27. वही, पृ.सं.63.
28. रेनू बहल, मेरे होने में क्या बुराई है, पृ.सं.62.
29. नीरजा माधव, यमदीप, पृ.सं.248.
30. मोनिका देवी, अस्तित्व की तलाश में सिमरन, पृ.सं.54.
31. महेन्द्र भीष्म, मैं पायल, पृ.सं.77-78.
32. वही, पृ.सं.118.
33. मोनिका देवी, अस्तित्व की तलाश में सिमरन, पृ.सं.93.
34. डॉ.लता अग्रवाल, मंगलामुखी, पृ.सं.61.
35. वही, पृ.सं.61.
36. वही, पृ.सं.76.
37. गिरिजा भारती, अस्तित्व, पृ.सं.81.
38. भगवंत अनमोल, ज़िन्दगी 50-50, पृ.सं.40.
39. वही, पृ.सं.53.
40. महेन्द्र भीष्म, किन्नर कथा, पृ.सं.33.
41. रेनू बहल, मेरे होने में क्या बुराई है ,पृ.सं.46.

42. वही, पृ.सं.26.
43. भगवंत अनमोल, ज़िन्दगी 50-50, पृ.सं.59-60.
44. भवनेश्वर उपाध्याय, हॉफ मैन (ए पेनफुल जर्नी) पृ.सं.14.
45. महेन्द्र भीष्म, मैं पायल, पृ.सं.53-54.
46. वही, पृ.सं.74.
47. भगवंत अनमोल, ज़िन्दगी 50-50, पृ.सं.165.
48. वही, पृ.सं.163.
49. मोनिका देवी, अस्तित्व की तलाश में सिमरन, पृ.सं.9.
50. डॉ.लता अग्रवाल, मंगलामुखी, पृ.सं.17.
51. वही, पृ.सं.62.
52. मोनिका देवी, अस्तित्व की तलाश में सिमरन, पृ.सं.58.
53. वही, पृ.सं.94.
54. रेनू बहल, मेरे होने में क्या बुराई है, पृ.सं.26.
55. वही, पृ.सं.27.
56. गिरिजा भारती, अस्तित्व, पृ.सं.51.
57. वही, पृ.सं.17.
58. गिरिजा भारती, अस्तित्व, पृ.सं.51,
59. वही, पृ.सं.62.
60. प्रदीप सौरभ, तीसरी ताली, पृ.सं.42.
61. हरभजन सिंह मेहरोत्रा, ऐ ज़िन्दगी तुझे सलाम, पृ.सं.90.
62. डॉ.मुक्ति शर्मा, श्रापित किन्नर, पृ.सं.12.

63. भुवनेश्वर उपाध्याय, हॉफ मैन (ए पेनफुल जर्नी),पृ.सं.125.

64. मोनिका देवी, अस्तित्व की तलाश में सिमरन, पृ.सं.24.

65. वही, पृ.सं.12

66. गिरिजा भारती, अस्तित्व, पृ.सं.54-55.

67. हरभजन सिंह मेहरोत्रा, ऐ ज़िन्दगी तुझे सलाम, पृ.सं.88.

68. डॉ.लता अग्रवाल, मंगलामुखी, पृ.सं.55.

69. श्री गोपाल सिंह सिसोदिया, वह, पृ.सं.199.

70. हरभजन सिंह मेहरोत्रा, ऐ ज़िन्दगी तुझे सलाम, पृ.सं.91.

71. मोनिका देवी, अस्तित्व की तलाश में सिमरन, पृ.सं.26.

72. चित्रा मुद्गल, पोस्ट बोक्स नं.203 नाला सोपारा, पृ.सं.15.

73. हरभजन सिंह मेहरोत्रा, ऐ ज़िन्दगी तुझे सलाम, पृ.सं.134.

74. वही, पृ.सं.93.

75. भुवनेश्वर उपाध्याय, हॉफ मैन (ए पेनफुल जर्नी) पृ.सं.172-173.

76. चित्रा मुद्गल, पोस्ट बोक्स नं.203 नाला सोपारा, पृ.सं.155.

77. प्रदीप सौरभ, तीसरी ताली, पृ.सं.137.

78. वही, पृ.सं.138.

79. सुभाष अखिल, दरमियाना, पृ.सं.114.

80. वही, पृ.सं.114.

81. प्रदीप सौरभ, तीसरी ताली, पृ.सं.135.

82. वही, पृ.सं.139.

83. वही, पृ.सं.138.

84. रेनूबहल,मेरे होने में क्या बुराई है, पृ.सं.18-19.
85. महेन्द्र भीष्म, मैं पायल, पृ.सं.43.
86. भगवंत अनमोल, ज़िन्दगी 50-50, पृ.सं.157.
87. वही, पृ.सं.159.
88. वही, पृ.सं.160.
89. वही, पृ.सं.172
90. मोनिका देवी, अस्तित्व की तलाश में सिमरन, पृ.सं.15.
91. वही, पृ.सं.19.
92. वही, पृ.सं.19.
93. वही, पृ.सं.21.
94. वही, पृ.सं.22.
95. निर्मला भुराड़िया, गुलाम मंडी, पृ.सं.71.
96. डॉ.लता अग्रवाल, मंगलामुखी, पृ.सं.50.
97. चित्रा मुद्गल, पोस्ट बॉक्स नं.230 नाला सोपारा, पृ.सं.203.
98. हरभजन सिंह मेहरोत्रा, ऐ ज़िन्दगी तुझे सलाम, पृ.सं.130.
99. डॉ.लता अग्रवाल, मंगलामुखी, पृ.सं.81.
100. हरभजन सिंह मेहरोत्रा, ऐ ज़िन्दगी तुझे सलाम, पृ.सं.97.
101. डॉ.लता अग्रवाल, मंगलामुखी, पृ.सं.81.
102. महेन्द्र भीष्म,किन्नर कथा, पृ.सं.91.
103. हरभजन सिंह मेहरोत्रा, ऐ ज़िन्दगी तुझे सलाम, पृ.सं.133.
104. चित्रा मुद्गल, पोस्ट बॉक्स नं.203 नाला सोपारा, पृ.सं.26.

105. भगवंत अनमोल, ज़िन्दगी 50-50, पृ.सं.171.

106. महेन्द्र भीष्म, मैं पायल, पृ.सं.95.

107. डॉ. मुक्ति शर्मा, श्रापित किन्नर, पृ.सं.29.

108. वही, पृ.सं.18.

109. सुभाष अखिल, दरमियाना, पृ.सं.52.

110. रेनू बहल, मेरे होने में क्या बुराई है, पृ.सं.37.

111. श्री गोपाल सिंह सिसोदिया- निसार, वह, पृ.सं.71,

112. हरभजन सिंह मेहरोत्रा, ऐ ज़िन्दगी तुझे सलाम, पृ.सं.66.

113. महेन्द्र भीष्म, किन्नर कथा, पृ.सं.177.

114. भगवंत अनमोल, ज़िन्दगी 50-50, पृ.सं.43.

115. हरभजन सिंह मेहरोत्रा, ऐ ज़िन्दगी तुझे सलाम, पृ.सं.27.

116. गिरिजा भारती, अस्तित्व, पृ.सं.29.

117. वही, पृ.सं.75.

118. चित्रा मुद्गल, पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा, पृ.सं.222

119. भुवनेश्वर उपाध्याय, हॉफ मैन (ए पेनफुल जर्नी) पृ.सं.10.

120. डॉ.मुक्ति शर्मा, श्रापित किन्नर, पृ.सं.45.

121. चित्रा मुद्गल, पोस्ट बॉक्स नं.203 नाला सोपारा, पृ.सं.192.

122. वही, पृ.सं.10.

उपसंहार

हिन्दी के लेखकों ने विभिन्न क्षेत्रों से जुड़ी समस्याओं से पाठकों को अवगत कराने का प्रयास किया है। 21 वीं सदी में लेखकों ने स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, पर्यावरण विमर्श, आदिवासी विमर्श जैसे अनेक विमर्शों पर विविध विधाओं में अपनी लेखनी चलाई है। इन विधाओं के माध्यम से साधारण जनों में उनके प्रति जागरण पैदा कराने का प्रयास किया गया है। ट्रांसजेंडर विमर्श पर आज प्रचुर मात्रा में लेखक कार्य हो रहा है। कई सालों पहले तक लोग इनके बारे में सोचते तक नहीं थे। ये हमारी ही तरह मनुष्य हैं, लेकिन समाज की मुख्यधारा में शामिल न होने के कारण इनका अस्तित्व ही जैसे समाज में न के बराबर था। 21 वीं सदी में ट्रांसजेंडर विमर्श उभरकर आया है। कई विधाओं के माध्यम से रचनाकारों ने इनके बारे में लिखना प्रारंभ किया। इनका अस्तित्व, रीति-रिवाज, संस्कृति इनके द्वारा भुगते जाने वाली समस्याओं का पुख्ता जीता जागता चित्रण हिन्दी साहित्यकारों ने पाठकों के सामने पेश किया। समाज में अंधकारमय जीवन व्यतीत करनेवाले ट्रांसजेंडर समुदाय के बारे में जानने की जिज्ञासा लोगों में साहित्यकारों ने पैदा की है। सामान्य जनता इनके बारे में ज़्यादा जानने की जिज्ञासा रखने लगी है।

ट्रांसजेंडर वे लोग हैं जिनके जननांग पूरी तरह विकसित न हो पाए हों अथवा जिनकी लैंगिक पहचान या अभिव्यक्ति उस लिंग से अलग है जो उसे उसके जन्म के समय प्राप्त होती है। ट्रांसजेंडर शब्द अंग्रेजी के Trans + Gender दो शब्दों के मेल से बना हुआ है। Trans का अर्थ 'के उस पार' या 'के परे है', तो Gender का अर्थ 'लिंग' है। भारत में ट्रांसजेंडर को अनेक शब्दों से संबोधित किया जाता है, जैसे हिजड़ा, छक्का, नपुंसक, किन्नर आदि। भिन्न-भिन्न प्रदेशों के लोग इनके लिए भिन्न-भिन्न नामों का प्रयोग करते दिखाई पड़ते हैं। भारत में ज्यादातर लोग इनके लिए ट्रांसजेंडर, हिजड़ा तथा किन्नर शब्दों का प्रयोग करते हैं। विभिन्न विद्वानों ने ट्रांसजेंडर को परिभाषित करने की कोशिश भी की है। जीव वैज्ञानिक मान्यता के अनुसार स्त्री में XX क्रोमोसोम होते हैं तथा पुरुष में XY क्रोमोसोम। स्त्री के X क्रोमोसोम के साथ पुरुष के Y क्रोमोसोम के मिलने

पर लड़का पैदा होता है , तथा स्त्री के X क्रोमोसोम के साथ पुरुष के X क्रोमोसोम के मिलने पर लड़की पैदा होती है। जब विपरीत क्रोमोसोम का मिलन होता है तब ट्रांसजेंडर जैसे बच्चों का जन्म होता है। ट्रांसजेंडर शब्द एक छाता के समान है जिसमें कई प्रकार के लैंगिंक पहचान वाले लोग आते हैं जैसे ट्रांससेक्सुअल, गे, लेस्बियन, उभयलिंगी, क्रॉसड्रेसर, अलैंगिक, शिमेल, डबल डैकर, पैनसेक्सुअल, इंटरसेक्स, एंट्रोगायन आदि।

पाश्चात्य जगत में नारीवाद की दूसरी लहर के रूप में लिंग सिद्धांत विकसित होता है। पहले लिंग को सेक्स के पर्याय के रूप में प्रयोग किया जाता था। रॉबर्ट स्टोलर द्वारा लिखित पुस्तक 'सेक्स एंड जेंडर : ऑन द डेबलपमेंट ऑफ मैस्क्युलिनिटी एंड फेमिनिटि' में सर्वप्रथम सेक्स तथा जेंडर पर विचार किया गया। इनमें ट्रांसजेंडर तथा ट्रांसवेस्टिज्म का उल्लेख है। लिंग सिद्धांत यह कहता है कि पुरुष या महिला की पहचान उसके यौन अंगों पर आधारित नहीं है बल्कि वे अंदर से क्या महसूस करते हैं उसपर आश्रित है। यथार्थ में जेंडर, सेक्स तथा कामुकता सभी एक दूसरे से भिन्न हैं।

जेंडर सिद्धान्त का उद्भव सन् 1950 के आसपास हुआ, जिसमें सिमोन द बोउ आर को प्रमुख स्थान दिया जाता है। जेंडर सिद्धान्त के निर्माण में शुलमिथ फायरस्टोन, एंजेला डेविस जैसे विद्वानों का योगदान रहा है। विभिन्न यौन पहचान और लिंग पहचान के लोग आज क्वीर के अंतर्गत आते हैं। 1970 के फेमिनिस्ट स्कूल की प्रतिक्रिया में क्वीर सिद्धान्त का उदय हुआ। क्वीर सिद्धान्त के अनुसार लिंग स्थिर नहीं बल्कि तरल है। विषमलैंगिकता ही सामान्य है इस सिद्धांत को क्वीर सिद्धांत ने नकारा। एक व्यक्ति का व्यवहार, वेशभूषा, चालचलन आदि विशेषताओं से उसकी लिंग अभिव्यक्ति व्यक्त होती है। लिंग अभिव्यक्ति पर सामाजिक रूढ़ियाँ आज भी कठोर बनी हुई हैं। एक व्यक्ति के लिंग के बारे में उनकी अपनी आंतरिक पहचान उसकी लिंग पहचान है। एक

व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति के प्रति भावनात्मक तथा यौन रूप से आकर्षण उसका यौन रुझान कहलाता है। संयुक्त राज्य अमेरिका न्यूयोर्क के ग्रीनवीच विलेज में हुए स्टोनवेल विद्रोह ने क्वीर समुदाय के लोगों को सम्मान दिलाया। इस दंगे के बाद से जून में दुनिया भर एल जी बी टी प्राइड परेड तथा प्राइड मंत मनाया जाता है। आज भारत सरकार द्वारा भी इनकी उन्नति के लिए कई कार्य हो रहे हैं। केन्द्र सरकार तथा राज्य सरकार इनको उनका मानवीय हक दिलाने के लिए प्रयास कर रही हैं। भारतीय सर्वोच्च न्यायालय ने ट्रांसजेंडर समुदाय को तीसरे लिंग के रूप में मान्यता दी है। संविधान के अनुच्छेद 14,15,16 और 21 के तहत ट्रांसजेंडर को समान अधिकार एवं सुरक्षा प्रदान की गई है। ट्रांसजेंडर अधिकार विधेयक 2014,2019 तथा 2020 के तहत ट्रांसजेंडर को उसके अधिकारों को मुहैया कराने का प्रयास किया गया है, जिससे वे आज समाज की मुख्य धारा से जुड़े हुए हैं।

पौराणिक ग्रंथों तथा धार्मिक आख्यानों में ट्रांसजेंडर का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। महाभारत में अरावन, शिखण्डी, अर्जुन तथा बृहन्नला आदि प्रसंग महत्वपूर्ण हैं। रामायण में राम द्वारा ट्रांसजेंडर को आशीर्वाद देने का प्रसंग है जिसके अनुसार भगवान राम से इनको वरदान मिला था कि इनका दिया गया आशीर्वाद फलीभूत होगा। इसीकारण लोग इनका आशीर्वाद पाने के लिए शुभ अवसरों पर इन्हें अपने घर स्वागत करते हैं। ऐसा माना जाता है इनका श्राप भी फलीभूत होता है।

आज हिन्दी साहित्यकारों ने साहित्य की विविध विधाओं के माध्यम से इस उपेक्षित ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों की पीड़ा, संघर्ष, संस्कृति आदि को चित्रित किया है। शिक्षित ट्रांसजेंडर आज खुद ही अपने जीवन-संघर्ष को आत्मकथा के माध्यम से समाज के सामने ला रहे हैं। 21 वीं सदी में लेखकों द्वारा ट्रांसजेंडर समुदाय पर केन्द्रित कहानी, उपन्यास, कविता, नाटक, तथा आत्मकथा लिखे जा रहे हैं। पहले हिन्दी साहित्य में ट्रांसजेंडर पर केंद्रित रचनाएँ न के बराबर थीं, यदि उनका चित्रण साहित्य में कहीं मिलता भी था तो हास्य-व्यंग्य पात्रों के रूप में। ट्रांसजेंडरों का

मुख्य पात्र के रूप में चित्रण नहीं हुआ था। ट्रांसजेंडर केंद्रित कई मौलिक कहानी संग्रह आज प्राप्त हैं जिनमें एम फ़ीरोज़खान के संपादकत्व में प्रकाशित 'हम भी इंसान हैं', विजेंद्र प्रताप सिंह और रविकुमार गोंड की 'कथा और किन्नर', राकेश शंकर भारती की 'इस ज़िन्दगी के उस पार', तथा राजकुमार घोटड़ और लता अग्रवाल की 'किन्नर समाज की लघु कथाएँ' आदि रचनाएँ प्रमुख हैं। इसके साथ ही अन्य भाषाओं से हिन्दी में अनूदित कहानी संग्रह भी प्राप्त हैं। इन कहानियों में ट्रांसजेंडर व्यक्ति का परिवार तथा समाज से बहिष्कृत होने का दर्द, इनमें उत्पन्न मानसिक तनाव, अपनों द्वारा तथा समाज के लोगों द्वारा इन पर होनेवाले यौन शोषण, दूसरों के द्वारा हँसी मज़ाक उड़ाने पर इनको होनेवाले दुःख, इनकी संस्कृति, रीति-रिवाज़, जीवनयापन से जुड़ी समस्यायें आदि का चित्रण किया गया है। ट्रांसजेंडर संबंधित नाम मात्र के कविता संग्रह आज प्राप्त हैं। कविता संग्रह में प्रमुख हैं डॉ. विजेंद्र प्रताप सिंह के संपादकत्व में प्रकाशित काव्य संग्रह, 'अस्तित्व और पहचान' और 'पंखुडियाँ अंतर्द्वन्द्वों की', लता अग्रवाल की 'सिसकती दास्तान', गीतिका वेदिका की 'नवगीत संग्रह', 'अधूरी देह' आदि। महेन्द्र भीष्म का प्रसिद्ध उपन्यास 'किन्नर कथा' का काव्य रूप, 'किन्नर काव्य' की पाण्डुलिपि आशिष कुलश्रेष्ठ ने प्रेषित की है। 'ज़िन्दगी की दास्तान', ट्रांसजेंडरों द्वारा लिखित कविताओं, कहानियों और साक्षात्कारों का संग्रह है। ट्रांसजेंडरों से संबंधित हिन्दी नाटक बहुत कम ही लिखे गए हैं। ट्रांसजेंडर समस्याओं को उकेरता रजनीश कुमार गुप्ता का नाटक है 'प्रश्न चिह्न', महेश दत्तानी का 'सेवन स्टेप्स एराउंड द फायर' (आग के सात फेरे), हरीश बी शर्मा का लघुनाटक 'हरारत', मच्छिंदर मोरे का 'जानेमन', रमा पाण्डेय की 'लल्लन मिस' आदि। ट्रांसजेंडर व्यक्ति द्वारा खुद भोगी हुई यातनाओं तथा संघर्षों को हिन्दी में आत्मकथा के माध्यम से व्यक्त करते नज़र आ रही है। आत्मकथा के माध्यम से साधारण जनता को ट्रांसजेंडर के अनुभवों को जानने का मौका मिलता है। हिन्दी में ट्रांसजेंडर संबंधित आत्मकथा जो प्राप्त हैं वे हैं 'पुरुष तन में फँसा मेरा नारी मन', जोकि मानोबी बंधोपाध्याय की आत्मकथा है तथा 'मैं हिजड़ा...

मैं लक्ष्मी' ट्रांसजेंडर लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी की आत्मकथा है। ट्रांसजेंडर व्यक्ति द्वारा लिखी गयी आत्मकथा एक व्यक्ति के संघर्ष को ही नहीं बल्कि पूरे ट्रांसजेंडर समुदाय के संघर्ष एवं पीड़ा का बयान करती है।

हिन्दी कथा साहित्य में आज प्रचुर मात्रा में उपन्यास लिखे जा रहे हैं। इन उपन्यासों में हमारे समाज में उपेक्षित ट्रांसजेंडर समुदाय के दर्द, संघर्ष, आर्थिक समस्या, संस्कृति, जीवनयापन आदि से जुड़ी बातों को परखा गया है तथा उसे साधारण जनता तक पहुँचाने का प्रयास किया गया है। ट्रांसजेंडर केंद्रित प्रमुख उपन्यास हैं – मैं भी औरत हूँ (अनसूया त्यागी), तीसरी ताली (प्रदीप सौरभ), किन्नर कथा (महेन्द्र भीष्म), गुलाम मंडी (निर्मला भुराड़िया),मैं पायल (महेन्द्र भीष्म), पोस्ट बॉक्स नं.203 नाला सोपारा (चित्रा मुद्गल), जिंन्दगी 50-50 (भगवंत अनमोल), अस्तित्व (गिरिजा भारती), दरमियाना (सुभाष अखिल), यमदीप (नीरजा माधव), श्रापित किन्नर (डॉ.मुक्ति शर्मा), अस्तित्व की तलाश में सिमरन (मोनिका देवी), ऐ जिन्दगी तुझे सलाम (हरभजन सिंह मेहरोत्रा), मंगलामुखी (डॉ.लता अग्रवाल), मेरे होने में क्या बुराई है (रेनू बहल), वह (श्री गोपाल सिंह सिसोदिया), हॉफ मैन -ए पेनफुल जर्नी (भुवनेश्वर उपाध्याय) आदि।

इन उपन्यासों के माध्यम से उपन्यासकारों ने ट्रांसजेंडर समुदाय के व्यक्ति जोकि हमारे समाज में रहकर भी उपेक्षित हाशिएकृत जीवन जी रहे हैं उनकी सामाजिक,जैविक, आर्थिक, राजनीतिक पीड़ा तथा अन्य संघर्षों को अभिव्यक्त किया है। ट्रांसजेंडरों की संस्कृति, जीवन शैली आदि को मार्मिक ढंग से पाठकों तक पहुँचाने का कार्य भी उपन्यासों द्वारा उपन्यासकारों ने किया है। उपन्यासकारों ने इस समुदाय के लोगों तथा उनकी परिस्थितियों पर विचार विमर्श करने के लिए बड़ा फलक पाठकों के सामने खोल दिया है।

ट्रांसजेंडर समुदाय के जीवनयापन का प्रमुख स्रोत उनका पारंपरिक पेशा बधाई है। आम जनता में ऐसा विश्वास है कि ट्रांसजेंडरों द्वारा दिया गया आशीर्वाद फलीभूत होता है, लेकिन आजकल लोगों का इस बात पर से विश्वास उठ गया है, जिसके तहत उनके पारंपरिक पेशे में घटौती आ गई हैं। पेट भरने के लिए ये सार्वजनिक जगहों में भीख माँगते हैं तथा कभी-कभार तो ये वेश्यावृत्ति करते हुए भी नज़र आते हैं। ट्रांसजेंडर लोगों की अपनी अलग संस्कृति है। इनके आचार, अनुष्ठान, रीति रिवाज, खानपान, रहन-सहन, पूजा-पाठ, वेश-भूषा आदि समाज में रहनेवाले अन्य लोगों से भिन्न हैं। ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों का अपना डेरा होता है जहाँ सभी एकता के साथ मिल-जुलकर रहते हैं। अपनों से अलग होने के बाद इसी डेरे के सदस्यों के साथ ट्रांसजेंडर व्यक्ति के कई संबंध जुड़ते हैं। डेरे में गुरु का प्रमुख स्थान होता है। डेरे का नियंत्रण गुरु पर निहित होता है। गुरु डेरे में रहनेवाले सभी चेलों का ध्यान रखते हैं। ट्रांसजेंडर लोग बहुचरा माता, अरावन देवता पर असीम विश्वास रखते हैं तथा इनकी पूजा करते हैं। कुवागम में स्थित कठनद्वार मंदिर इनका तीर्थस्थल है। वहाँ साल में एक बार मेला लगता है, जहाँ जाकर ये एक दिन के लिए भगवान अरावन से शादी रचाते हैं तथा दूसरे दिन उनकी विधवा बन जाती हैं।

ट्रांसजेंडर घराने में नये-नये शामिल हुए ट्रांसजेंडर व्यक्ति का लिंग छेदन किया जाता है, जिसे निर्वाण या निर्वाणा कहा जाता है। निर्वाण प्रक्रिया से गुजरने के बाद ही एक व्यक्ति पूर्ण रूप से असली ट्रांसजेंडर माना जाता है। ट्रांसजेंडर समुदाय में ऐसा विश्वास है कि निर्वाण प्राप्त व्यक्ति ही वरदान देने की शक्ति रखता है। ट्रांसजेंडर समुदाय में लोगों के मरने पर उनका दाह संस्कार रात को सभी से छुपाकर किया जाता है। ऐसा करने के पीछे उनका कहना है, इनकी शवयात्रा साधारण जनता देख ले तो पुनः अगले जन्म में भी इन्हें ट्रांसजेंडर रूप में जन्म लेना होगा। ट्रांसजेंडर समुदाय में धार्मिक समन्वय की भावना हम देख पाते हैं। अपने-अपने धर्म में विश्वास रखनेवाले सभी ट्रांसजेंडर डेरे में सौहार्द के साथ जीवनयापन करते हैं। कोई ऊँच - नीच की भावना इनमें नहीं होती। ट्रांसजेंडर

डेरे में सभी हरेक धर्म को मानते हैं तथा हर त्योहार को मिल-जुलकर मनाते हैं। अपनों द्वारा बहिष्कृत ये लोग अपनों से बेहद प्यार करते हैं। इनमें मनुष्यता तथा प्रेम की भावना हम देख पाते हैं।

ट्रांसजेंडर होने की वजह से हमारे समाज में ट्रांसजेंडर व्यक्ति अनेक समस्याओं का सामना कर रहे हैं। समाज का सदस्य होते हुए भी समाज के लोग उनके साथ अछूतों जैसा व्यवहार करते हैं। समाज ने ट्रांसजेंडर व्यक्तियों का जीवन हाशिएकृत एवं अंधकारमय बना दिया हैं। ये समाज में ही नहीं खुद के परिवार से भी पीड़ित हैं। अपने माता-पिता, भाई-बहन तथा सगे संबंधियों से इन्हें प्यार नहीं मिलता। खुद का परिवार समाज में अपना मान-सम्मान बनाए रखने के लिए इन्हें घर से बाहर कर देते हैं। पितृसत्तात्मक समाज में ये मानसिक तथा शारीरिक रूप से पीड़ित हैं। सदियों से चली आ रही यह विचारधारा कि पुरुष के पुरुषत्व की कमी के कारण ऐसे बच्चों का जन्म होता है, यह धारणा इन ट्रांसजेंडर बच्चों पर भारी पड़ता है। पुरुष सत्तात्मक समाज ट्रांसजेंडर बच्चों को अपने पुरुषत्व पर कलंक मानते हैं। घर में आसरा न मिल पाने के कारण इन्हें उचित शिक्षा प्राप्त नहीं हो पाता। कुछ माता-पिता इनकी असलियत छुपाकर अपने पास रखते हैं तथा इन्हें शिक्षण संस्थानों में भेजते हैं। लेकिन सच्चाई जाहिर हो जाने पर इन्हें शिक्षण संस्थानों में शारीरिक तथा मानसिक रूप से पीड़ित किया जाता है। पुरुष समाज इन्हें जहाँ हाशिएकृत मानते हैं वहाँ ये इनका यौन शोषण भी करते हैं। ये ज्यादातर अपनों द्वारा ही यौन शोषण का शिकार बनते हैं। मानव होकर एक मानव को जिन अधिकारों को मिलना चाहिए वे सब इन्हें नहीं मिल पाता। राजनीति के क्षेत्र में इन्हें वोट बैंक के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। मानवाधिकारों से वंचित ये जीवन के हर पग पर दुविधापूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं। राज्य सरकार तथा केन्द्र सरकार ने अनेक संवैधानिक प्रावधान इनके लिए मुहैया कराए ज़रूर हैं लेकिन उनका उचित मात्रा में व्यावहारिक तौर पर इनपर नियम लागू नहीं हो पा रहे हैं या यह खुद यह वर्ग उन प्रावधानों का उचित मात्रा में उपयोग नहीं कर रहे हैं।

ट्रांसजेंडर समुदाय को सार्वजनिक जगहों में जैसे शिक्षा संस्थानों, अस्पताल, सार्वजनिक गाड़ियों, वृद्धाश्रम, अनाथालय आदि में भेदभाव का सामना करना पड़ता है। कानूनी तौर पर भी इन्हें सुरक्षा प्राप्त नहीं होता। एक व्यक्ति को सुरक्षा प्रदान करनेवाले पुलिस कर्मचारी भी इनके साथ अमानवीय ढंग से व्यवहार करते हैं। पुरुष वर्ग द्वारा स्त्री के साथ किए जानेवाले यौन शोषण पर कानून ने सख्त नियम बनाये हैं, उसके तहत पुरुष को कड़ी सज़ा देने का भी प्रावधान है, लेकिन पुरुष वर्ग द्वारा ट्रांसजेंडर पर किए जाने वाले यौन शोषण पर अभी कानूनी नियम नहीं बनाए गए हैं। वैसे तो परिवार की संपत्ति पर घर के सभी बच्चों का बराबर हक होता है, लेकिन ट्रांसजेंडर बच्चे को अपने परिवार की संपत्ति पर भी हक नहीं दिया जाता। समाज में व्याप्त रूढ़ मानसिकता के कारण यह समुदाय समाज में हाशिएकृत जीवन जीने को मजबूर है। पितृसत्तात्मक समाज ट्रांसजेंडर बच्चों को स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं। ट्रांसजेंडर बच्चों पर पिता द्वारा किए जानेवाले शारीरिक तथा मानसिक शोषण पर सख्त कारवाई करनी होगी जिसके तहत इन्हें परिवार से निष्कासित नहीं होना पड़ेगा एवं परिवार की संपत्ति पर इनका अन्य बच्चों की तरह बराबर का हक मुहैया कराने का प्रावधान सरकार की ओर से जारी करना होगा।

शिक्षण संस्थानों में इनके साथ जो भेद भाव किया जा रहा है, उसपर रोक लगाना होगा। शिक्षा जगत में इन्हें आज आरक्षण प्राप्त कराया गया है उनका इस्तेमाल ये उचित ढंग से नहीं कर रहे हैं, इन्हें सरकार द्वारा प्राप्त आरक्षण के प्रति सचेत कराना होगा। अपने पेट की भूख मिटाने के लिए इन्हें रोजगार प्राप्त कराना होगा। जीवनयापन के लिए लघु कुटीर उद्योग का प्रशिक्षण यदि इन्हें उपलब्ध कराया जाए तो ये बेहतर जिन्दगी जी पायेंगे। शादी करने तथा बच्चा गोद लेने का अधिकार इन्हें सरकार की ओर से देना होगा तथा इनके लिए आवास व्यवस्था, वृद्धाश्रम, अनाथालय आदि सुविधाएँ उपलब्ध कराने के साथ-साथ सरकारी संस्थानों तथा सार्वजनिक जगहों पर इनपर हो रहे जुल्म के खिलाफ सख्त कारवाई सरकार की तरफ से होनी चाहिए। जिस प्रकार

लड़कियों की उन्नति के लिए बेटी पढ़ाओ आदि अभियानों की शुरुआत की गई है, उसी प्रकार इनके लिए भी वैसे ही अभियान प्रारंभ करे तो इनकी स्थिति में बदलाव आयेगा तथा इनकी उन्नति संभव होगी। स्कूल के पाठ्यक्रम में लैंगिक संरचना से संबंधित विषय शामिल करने पर लोगों में मनुष्य के शारीरिक संरचना तथा लिंगीय भेद का अवबोध उत्पन्न होगा। सिर्फ सरकार की ओर से कठोर नियम लागू करने से ट्रांसजेंडर समुदाय आगे नहीं बढ़ सकता, ट्रांसजेंडर समुदाय को आगे आना है तथा मुख्यधारा समाज में शामिल होना है तो खुद इन्हें भी आगे आना होगा एवं सरकार द्वारा उपलब्ध कराये आरक्षणों का उचित ढंग से उपयोग करना होगा। अपने अधिकारों के प्रति इन्हें सचेत होना है समाज की मुख्यधारा से इन्हें जुड़ना होगा तभी जाकर ट्रांसजेंडर समुदाय की स्थिति में सुधार संभव होगा।

संस्तुतियाँ (Recommendations)

21 वीं सदी में कई विमर्श चल रहे हैं, जिसमें किसान विमर्श, दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, पर्यावरण विमर्श, वृद्ध विमर्श, आदिवासी विमर्श, ट्रांसजेंडर विमर्श, प्रवासी विमर्श आदि प्रमुख हैं। ट्रांसजेंडर विमर्श पर आज बहुत लेखनकार्य एवं चर्चाएँ चल रही हैं। समाज में सदियों से ही इनकी मौजूदगी रही है। वेदों, पुराणों, तथा धार्मिक ग्रंथों में इनका वर्णन मिलता है। प्राचीन काल में इनकी स्थिति आज से बेहत्तर थी। इन्हें मनुष्य के रूप में स्वीकार किया जाता था, लेकिन ब्रिटीश शासन के आगमन के बाद आज तक इन्हें हाशिए पर रखा गया है। भारत में विभिन्न जगहों में विभिन्न नामों से पहचाने जाने वाले यह ट्रांसजेंडर समुदाय के लोग हर क्षेत्र में अनेक समस्याओं का सामना कर रहे हैं। अपने अस्तित्व तथा वजूद स्थापित करने के लिए वे सभ्य समाज में संघर्षरत हैं।

प्रस्तुत अध्ययन 'हिन्दी उपन्यासों में ट्रांसजेंडर विमर्श : एक अध्ययन' में 17 उपन्यासों को चुना गया है। जिसमें उनकी जीवन-रीति, संस्कृति, उनके जीवन संघर्ष तथा उनके द्वारा हर क्षेत्र में भुगते जानेवाले समस्यायें आदि का वर्णन किया गया है। 21 वीं सदी में हिंदी उपन्यासकार इस हाशिएकृत ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों पर जो समाज का अहम हिस्सा होते हुए भी, समाज के मुख्यधारा से कोसों दूर हैं, विचार विमर्श तथा लेखन कार्य कर रहे हैं।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के दौरान इस विषय से जुड़ी अन्य शोध दिशाएँ भी मिली हैं, जिसपर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान किया जा सकता है। कुछ प्रमुख मुद्दे निम्नलिखित हैं –

- हिन्दी उपन्यासों में ट्रांसजेंडरों की सामाजिक-राजनीतिक स्थिति
- हिन्दी उपन्यासों में ट्रांसजेंडरों का सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन
- ट्रांसजेंडरों की बदलती, आर्थिक स्थिति

- वर्तमान समय में ट्रांसजेंडर समाज की बदलती मानसिकता हिन्दी उपन्यासों के संदर्भ में
- ट्रांसजेंडर समाज के उत्थान में साहित्य एवं मीडिया का योगदान
- ट्रांसजेंडर समाज तथा बेरोजगारी की समस्यायें
- हिन्दी उपन्यासों में ट्रांसजेंडरों के पारिवारिक जीवन का अंतद्वंद्व
- भारत में विविध ट्रांसजेंडर समुदाय की ज़िन्दगी – एक तुलनात्मक अध्ययन

सहायक ग्रंथ-सूची

आधार-ग्रंथ

1. अनुसूया त्यागी : मैं भी औरत हूँ
परमेश्वरी प्रकाशन, दिल्ली
2011

2. गिरिजा भारती : अस्तित्व
विकास प्रकाशन, कानपुर
2018

3. चित्रा मुद्गल : पोस्ट बॉक्स नं.203 नाला सोपारा
सामयिक प्रकाशन
दरियागंज, नई दिल्ली
2017

4. निर्मला भुराड़िया : गुलाम मंडी
सामयिक प्रकाशन
दरियागंज, नई दिल्ली
2016

5. नीरजा माधव : यमदीप
सुनील साहित्य सदन, नई दिल्ली
2018

6. प्रदीप सौरभ : तीसरी ताली
वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
2011

7. भगवंत अनमोल : ज़िन्दगी 50-50
राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली
2017

8. भुवनेश्वर उपाध्याय : हॉफ मैन
अमन प्रकाशन, कानपुर
2020

9. महेन्द्र भीष्म : किन्नर कथा
सामयिक बुक्स, नई दिल्ली
2014

10. महेन्द्र भीष्म : मैं पायल
अमन प्रकाशन, कानपुर
2016

11. डॉ. मुक्ति शर्मा : श्रापित किन्नर
अमन प्रकाशन, कानपुर
2019

12. मोनिका देवी : अस्तित्व की तलाश में सिमरन
माया प्रकाशन, कानपुर
2019

13. रेनू बहल : मेरे होने में क्या बुराई है
सामयिक प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली
2020

14. डॉ. लता अग्रवाल : मंगलामुखी
विकास प्रकाशन, कानपुर
2020

15. सुभाष अखिल : दरमियाना
अमन प्रकाशन, कानपुर
2018

16. हरभजन सिंह मेहरोत्रा : ऐ जिन्दगी तुझे सलाम
अमन प्रकाशन, कानपुर
2020

17. श्री गोपाल सिंह सिसोदिया 'निसार' : वह
श्वेतांशु प्रकाशन, नई दिल्ली
2020

सहायक-ग्रंथ

1. अकरम हुसैन, मनीषकुमार गुप्ता (सं) : थर्ड जेण्डर कथा की हकीकत
अनुसंधान पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स
कानपुर, 2018

2. डॉ. अभिषेक सिंह : हिन्दी कथा साहित्य में ट्रांसजेंडर
विकास प्रकाशन, कानपुर
2022

3. आशिष कुमार 'दिपांकर' (सं) : भारतीय समाज में किन्नरों का यथार्थ
अनुसंधान पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स
कानपुर
2018

4. डॉ. इकरार अहमद (सं) : किन्नर विमर्श साहित्य के आइने में
वाङमयबुक्स, अलीगढ़
2017

5. ऋषि कुमार (अनु) : महाभारत (भीष्मपर्व)
सनातनधर्म यंत्रालय
मुरादाबाद, 1917

6. गीतिका 'वेदिका' : अधूरीदेह
: क्वालिटी बुक्स पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स
2016

7. पंड़ित गिरिजाप्रसाद द्विवेदी (अनु) : मनुस्मृति अर्थात मानवधर्मशास्त्र
नवलकिशोर विद्यालय,
गोमती तट, लखनऊ, 1917

8. गोपाल राय : हिन्दी उपन्यास का इतिहास
राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली
2019

9. स्वामी द्वारिकादास शास्त्री (सं.एवं.अनु) : सिद्धसिद्धान्तपद्धति
चौखम्बा विद्याभवन
वारणसी, 2014

10. डॉ. दिलीप मेहरा (सं) : हिन्दी कथा साहित्य में किन्नर समाज
माया प्रकाशन, कानपुर
2018

11. डॉ. देव्यानी महिड़ा : किन्नर साहित्य : व्यथा, यातना और संघर्ष
रोशनी पब्लिकेशंस, जवाहर नगर, कानपुर
2019

12. प्रियंका नारायण : किन्नर सेक्स और सामाजिक स्वीकार्यता
वाणी प्रकाशन
2021

13. डॉ. एम.फीरोज़खान (सं) : थर्ड जेंडर अतीत और वर्तमान
(उपन्यासों पर केंद्रित आलोचनात्मक ग्रंथ)
विकास प्रकाशन, कानपुर
2018

14. डॉ. एम.फीरोज़खान (सं) : थर्ड जेंडर अतीत और वर्तमान (भाग-2)
विकास प्रकाशन, कानपुर
2018

15. डॉ. एम.फीरोज़खान (सं) : थर्ड जेंडर अनूदित कहानियाँ
अनुसंधान पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स
कानपुर
2017

16. डॉ. एम.फीरोज़खान (सं) : थर्ड जेण्डर : आत्मकथा और जीवन संघर्ष
विकास प्रकाशन, कानपुर
2019

17. डॉ. एम.फीरोज़खान (सं) : थर्ड जेण्डर और जिन्दगी 50-50
विकास प्रकाशन, कानपुर
2018

18. डॉ. एम.फीरोज़खान (सं) : थर्ड जेण्डर और साहित्य
विकास प्रकाशन, कानपुर
2018

19. डॉ. एम.फीरोज़खान (सं) : थर्ड जेण्डर कथा आलोचना
अनुसंधान पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स
कानपुर, 2017

20. डॉ. एम.फीरोज़खान (सं) : थर्ड जेण्डर पर केन्द्रित हिन्दी का प्रथम
उपन्यास यमदीप
विकास प्रकाशन, कानपुर
2018.

21. डॉ. एम.फीरोज़खान (सं) : थर्ड जेण्डर साक्षात्कार के आइने में
विकास प्रकाशन, कानपुर
2020

22. डॉ. एम.फीरोज़खान (सं) : थर्ड जेंडर हिन्दी कहानियाँ
अनुसंधान पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स
कानपुर, 2017

23. डॉ. एम.फीरोज़खान (सं) : सिनेमा की निगाह में थर्ड जेण्डर
डॉ. शिप्रा किरण : विकास प्रकाशन, कानपुर
2018

24. डॉ. एम.फीरोज़खान (सं) : हम भी इंसान हैं
वाङमय बुक्स, अलीगढ़
2018

25. डॉ. मधु खराटे : हिन्दी उपन्यासों में किन्नर विमर्श
विद्या प्रकाशन, कानपुर, उत्तरप्रदेश,
2018

26. मिलन विश्नोई (सं) : किन्नर विमर्श साहित्य और समाज
विद्या प्रकाशन, कानपुर
2018

27. मिलन विश्नोई : मैं हिजड़ा...मैं लक्ष्मी में किन्नर-विमर्श
विद्या प्रकाशन, कानपुर
2018

28. रचना भोला यामिनी (अनु) : पुरुष तन में फँसा मेरा नारी मन
राजपाल एण्ड सन्ज़
2018

29. राकेश शंकर भारती : इस ज़िन्दगी के उस पार
अमन प्रकाशन, कानपुर, उत्तरप्रदेश
2019

30. राजकुमार : थर्ड जेंडर : भाषा वैज्ञानिक अध्ययन
विकास प्रकाशन, कानपुर
2019

31. रामकुमार घोटड (सं) : किन्नर समाज की लघु कथाएँ
डॉ. लता अग्रवाल
साहित्य चंद्रिका
2019

32. रामप्रताप त्रिपाठी शास्त्री (अनु) : वायुपुराणम्
काव्यतीर्थ, साहित्यरत्न
हिन्दी साहित्य सम्मेलन,
प्रयाग,1987

33. डॉ. लता अग्रवाल : सिसकती दास्तान
विकास प्रकाशन, कानपुर, उत्तरप्रदेश
2020

34. प्रो. एम.पी.व्यास : भारतीय इतिहास में थर्ड जेंडर : नाज़िर (हिजड़ा) वर्ग
एसोसिएट बुक कंपनी, जोधपुर
2018

35.	वनजा के	:	क्वीर विमर्श लेस्बियन, गे, बाई-सेक्सुअल ट्रांसजेंडर वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 2021
36.	डॉ. विजेन्द्र प्रताप सिंह (सं) डॉ. रवि कुमार गोंड	:	अस्तित्व और पहचान अमन प्रकाशन कानपुर 2019
37.	डॉ. विजेन्द्र प्रताप सिंह (सं) डॉ. रवि कुमार गोंड	:	कथा और किन्नर अमन प्रकाशन कानपुर 2018
38.	विजेन्द्र प्रताप सिंह (सं)	:	थर्ड जेण्डर पौराणिक काल से वर्तमान तक विकास प्रकाशन, कानपुर 2023
39.	डॉ. विजेन्द्र प्रताप सिंह (सं)	:	पंखुडियाँ अंतर्द्वंद्वों की अमन प्रकाशन, कानपुर 2019
40.	डॉ. विजेन्द्र प्रताप सिंह (सं) डॉ. रवि कुमार गोंड	:	भारतीय साहित्य एवं समाज में तृतीय लिंग विमर्श अमन प्रकाशन, कानपुर 2016

41.	डॉ. विजेन्द्र प्रताप सिंह	:	हिन्दी उपन्यासों के आइने में थर्ड जेंडर अमन प्रकाशन, कानपुर 2017
42.	विद्या राजपूत (सं) रविना बरिहा	:	जिन्दगी की दास्तान विकास प्रकाशन, कानपुर 2020
43.	विनय कुमार पाठक	:	लैंगिक विकलांग – विमर्श दशा और दिशा भावना प्रकाशन, दिल्ली 2021
44.	डॉ. विमल ग्यानोबाराव सूर्यवंशी (सं)	:	थर्ड जेण्डर चर्चित कहानियाँ रोशनी पब्लिकेशंस जवाहर नगर, कानपुर, 2018
45.	वैष्णव पी वी	:	थर्ड जेण्डर विमर्श (उपन्यास तीसरी ताली और फिल्म शबनम मौसी के संदर्भ में) अनुसंधान पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स कानपुर, 2018
46.	डॉ. शगुफ़्ता नियाज़ (सं)	:	थर्ड जेंडर के संघर्ष का यथार्थ (चित्रा मुद्गल कृत नाला सोपारा के संदर्भ में) विकास प्रकाशन, कानपुर 2018
47.	डॉ. शगुफ़्ता नियाज़ (सं)	:	थर्ड जेंडर तीसरी ताली का सच विकास प्रकाशन, कानपुर 2018

48. जी.पी.शर्मा : बन्द गली से आगे
विकास प्रकाशन, कानपुर
2021

49. शीला डागा : किन्नर गाथा
वाणी प्रकाशन,दरियागंज
नई दिल्ली,
2020

50. शशिकला राय (अनु) : मैं हिंजडा... मैं लक्ष्मी
वाणी प्रकाशन
दरियागंज, नई दिल्ली
2015

51. सफलता सरोज : किन्नर विमर्श : कल, आज और कल
अमन प्रकाशन
कानपुर
2019

52. डॉ. सविता शर्मा : तीसरी ताली और पोस्ट बॉक्स नं.203 नाला सोपारा में अभिव्यक्त किन्नर समाज
विकास प्रकाशन
कानपुर, 2022

53. डॉ.हिंदूराव रामचंद्र घरपणकर : लिंग विद्यालय एवं समाज
विनय प्रकाशन
कानपुर
2017

54. डॉ.एस.वाय. होनगेकर (सं) : 21 वीं शती का हिन्दी साहित्य नव विमर्श
डॉ.आरिफ़ महात
विश्वनाथ सुतार (सह सं)
ए.बी.एस. पब्लिकेशन
वाराणसी
2018

मलयालम - ग्रंथ

1. रश्मि जी, अनिलकुमार के. एम : ट्रांसजेंडर : चरित्रम् संस्कारम प्रतिनिदानम
चिंता पब्लिशर्स, तिरुवनन्तपुरम
जुलाई,
2016.

2. पी. सुरेन्द्रन : हिजड़ाकलुडे पोरुल
डी.सी.बुक्स, कोट्टयम
2008.

संस्कृत ग्रंथ

1. गोस्वामी दामोदर शास्त्री
कामसूत्रम्
जयकृष्णदास-हरिदास गुप्ता
बनारस
1921

अंग्रेज़ी-ग्रंथ

1. Dr. Mohd. Shahim (Editors) : The Invisible Minority in Literature
Dr. Noor Fatima
and Society, Haunting Tragedies
Vangmaya Books, Ed 2016.

2. Dr. Ramar R : Gender School and Society
Lalithalakshmi. K Published by -Namit Wasan
Sivaram R T Discovery Publishing House Pvt Ltd
2018

3. Dr. Uma A. R : Perspectives on Transgender Literature
Gaurav Books, Kanpur
2016.

कोश-ग्रंथ

1. Longman Dictionary, Person Education Limited, 2009.
2. Shorter Oxford English Dictionary, Oxford University Press Inc, New York, 1994.
3. T. Ramalingam Pillai, English & Malayalam Dictionary, Kottayam, 2010.
4. रामचन्द्र वर्मा : संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर
नागरी प्रचारिणी सभा
काशी, 1989
5. रामचन्द्र वर्मा : मानक हिंदी कोश
हिन्दी साहित्य सम्मेलन
प्रयाग, 1966
6. लीलाधर शर्मा 'पर्वतीय' : भारतीय संस्कृति कोश
राजपाल एण्ड सन्ज़
दिल्ली, 2008

पत्रिकाएँ

1. संग्रथन : जुलाई 2011
2. हंस : मार्च 2011
3. निरूप्रह : सितम्बर – नवम्बर 2015 (किन्नर विमर्श विशेषांक)
4. तमिलनाडु साहित्य बुलेटिन : मई 2016
5. जनकृति अंतराष्ट्रीय पत्रिका : अगस्त 2016 (थर्ड जेंडर विशेषांक)
6. अनुसंधान शोध त्रैमासिक : अक्तूबर – दिसंबर 2017
7. अनुसंधान शोध त्रैमासिक : अप्रैल – जून 2018
8. सामयिक सरस्वती : अप्रैल – सितंबर 2018
9. अनुसंधान शोध त्रैमासिक : जुलाई – दिसम्बर 2018
10. बोहल शोध मञ्जुषा : मई 2019 (साहित्य, समाज और किन्नर विशेषांक)
11. सरस्वती सुमन : अक्तूबर, 2022 (किन्नर विशेषांक)

वेबसाइट

1. https://en.m.wikipedia.org/wiki/History_of_bisexuality
2. https://gayety.co/history-of-the-word-transgender
3. https://www.amarujala.com/uttar-;radesh/allahabad/petition-for-identification-of-real-kiners-city-new
4. https://www.masterclass.com/articles/queer-theory
5. https://www.herzindagi.com/hindi/society-culture/transgender- persons-act-details-articles-233082
6. https://www.legalserviceindia.com/legal/article-6958-rights-of-transgender-under-the-indian-legal-system-html
7. https://www.drishtiias.com/hindi/daily-news-analysis/transgender - persons-protection-of-rights-bill-2019

8. https://blog.ipleaders.in/transgender-persons-protection-right-act-2019-gross-violation-human-rights/

9. https://www.legalservicesindia.com/legal/article-6958-rights-of-transgender-under-the-indian-legal-system.html

10. https://prsindia.org/billtrack/the-transgender-persons-protection-of-rights0bill-2016

11. https://prsindia.org/billtrack/draft-transgender-persosns-protection-of-rights-rules-2020

12. https://hindi.feminismindia.com/2023/09/06/gender-trouble-judith-butter-hindi/

13. https://archive.org/details/in.ernet.dli.2015.22683/page/n4/mode/1up